7103

1. Title Bhāgavat Purāṇa
Caturtha Skandha.
2. Accession No. 5590
3. Folio No./Pages 104
4. Lines 13-16
5. Size 34 × 18 Cm
6. Substanc Paper
7. Script Devānagarī
8. Language Avadhī
9. Period Not available
10. Beginning "श्री गणेशाय नमः अव चतुर्थ स्कंध को प्रारम्भ करै हैं वहां मैत्रेय जी कहै हे विदुर स्वायंम् मनुकैस..."
11. End "वर्णन करै परम् भक्त राजा इनके चरित्र सुनते मन वांछित कामना सिधि हो है 31-11"
12. Colophon No
13. Illustrations No
14. Source Donation
15. Subject Purāṇa
16. Revisor No
17. Author Not Known
18. Remarks Pages are not in order, bound.

भा॰ च॰
१०४

विदुरजी ने मैत्रेयजी सौं प्रश्न तौ बहुत कीये तृतीय स्कंध में परंतु हरि की भक्त प्रचेतान्ह कि कथा सुनि के हरि में भक्ति होइ आई तब विदुरजी पर्वत के प्रश्न तें उपराम ले हस्तनापुर कौं जात भए राजा उत्तानपाद के वंस के परम भागवत हरि में अर्पण कीये हे चित्त जिनन्ने तिनकौ चरित्र जो सुन्यो सो आयु धन यस मंगल ताय प्राप्त होइ हे अंत मे हरि कों पाय ये चतुर्थ स्कंध मे वर्णन करे परम भक्त राजा इनके चरित्र सुने तें मन वांछित काम ना सिद्धि होते ३१ इति श्री भागवते महापुराणे चतुर्थ स्कंधे टीकायां नाम एकत्रिंशो ध्याय ३१ समाप्त ४

लक्ष्म॰
१०४

भा॰ च॰
१०३

ते प्रचेता हे नारद के कहवे ते निकस्यो जो लोकन कौं मेल दूर करवे वारो हरि कौ यस सुन कर हरि के चरणारविंद कौ ध्यान करत हरि ही कों प्राप्ति होत भयो २४ हे विदुर यह जो तेने पूछौ प्रचेता नारद कौ संवाद हरि कौ जामें कीर्त्तन सो तेरे आगे कह्यौं २५ शुक देवजी कहे हे परीक्षत यह मैंने तेरे आगें स्वायंभुव मनु कौ बेटा उत्तानपाद कौ वंस वर्णन कीयौं अब प्रियव्रत राजा को बडो भैय्या ता कौ वंस सुनि २६ जो प्रियव्रत नारद तें आत्मविद्या पाय पेर पृथ्वी कौ भोग कर ता पीछें हरि के परम पद कूं प्राप्त होत भयो २७

एवं तेऽभिहितं क्षत्तर्यन्मां त्वं परिपृष्टवान् प्रचेतसां नारदस्य संवादं हरिकीर्तनं २४ श्रीशुकोवाचः य एष उत्तानपादो मनवस्यान्ववर्णितः वंशः प्रियव्रतस्यापि निबोध नृपसत्तम २५ यो नारदादात्मविद्यामधिगम्याऽपुनर्महीं भुक्त्वा विभज्य पुत्रेभ्यः ऐश्वरं समगात्पदं २७ इमां तु कौषारविणोपवर्णितां क्षत्ता निशम्याजितवादसत्कथां प्रवृद्धभावोऽश्रुकलाकुलो मुनेर्दधार मूर्ध्ना चरणं हृदा हरेः २८ विदुर उवाचः सोऽयमद्य महायोगिन् भवता करुणात्मना दर्शितस्तमसः पारो यत्राकिंचिनगो हरिः २९ इत्यानम्य तमामंत्र्य विदुरो गजसाह्वयं स्वानां दिदृक्षुः प्रययौ ज्ञातीनां निर्वृताशयः ३० एतद्यः शृणुयाद्राजन् राज्ञां हर्यर्पितात्मनां आयुर्धनं यशः स्वस्ति गतिमैश्वर्यमाप्नुयात् ३१
इति श्रीमद्भागवते महापुराणे चतुर्थ स्कंधे एकत्रिंशो ध्यायः ३१

या भांत मैत्रेयजी ने वर्णन करी हरि के निरूपण सुं दर कथा ताय सुनि कें तास्कं बडो है भाव जा कौ प्रेम के आंसू न कर व्याप्त सो विदुर मैत्रेय मुनि के चरण माथे पे धारण करत भयो और हृदय के विषें हरि के चरण धारण करत भयो और मैत्रेयजी सों यह बोलत भयो २८ हे तात मैत्रेयजी हे अचिंत्य प्रभाव तुम बडे करुणावान् तातें मैंने संसार कौ पार मो हि दिखाय दीनौं तहां निष्कंचन कै योग्य हरि हे २९ ऐसे कहके मैत्रेयजी सो नमस्कार कर आज्ञा माग प्रसन्न जाको चित्त ऐसे विदुरजी अपने ज्ञात बेनन्ह के देखवे की इच्छा कर हस्तनापुर कौ जात भये ३०

१०३

श्री

और लीन होहै ऐसे आकास सदृश सर्ग हरि लीला में प्रपंच को उत्पत्ति और लय ये होहै १७ तातें तुम सब देहधारी नें आत्मा काल प्रधान रूप परमात्मा पुरुष अपने तेज कर ध्वस्त है प्रपंच जामें ता हरि कों अभेद कर आत्मा कूं एक ही भाव करि सानात भजन करो १८ तहां हरि भजन को साधन कहै हैं सब प्राणी मात्र में दया जो मिले ता में संतोष और सब इंद्रियन में शांति इनकर हरि जलदी प्रसन्न होहै १९ दूर भई है सब कामना जाते ऐसो निर्मल मन ता विषें निरंतर वढी जो भावना ताकर वुलाये प्रसंपर हि सो साधन के हृदय तें न ही जाहै अपन पेंकूं अपने भक्त कूं आधीनता दिखावत सदां भक्त के हृदय में रहे है २० वे हरि साधून

दययासर्वभूतेषु संतुष्ट्या येन केनचः सर्वेंद्रियोपशांत्या च तुष्यत्याशु जनार्दनः १९ अपहत सकलैषिणा मलात्मन्य विरत मेधित भावनोपहूतः निजजनवशगत्व मात्मनो यन्न सरति छिद्रवदक्षरः सतां हि १९ न भजति कुमनीषि णां सर्ईज्यां हरिरधनात्म धनप्रियो रसज्ञः श्रुत धन कुल कर्मणां मदैर्ये विदधति पापमकिंचनेषु सत्सु २० अयमनुचर तित दर्थनवद्ध विपदपतीनू विवुधांश्च यत्स्वपरणीः न भजति निज भक्त वर्गतंत्रः कथममुमुद्विसृजेत्सु मान् कृतज्ञः २१ मैत्रेय उ० इति प्रचेतसो राजनन्याश्च भागवत्कथाः श्रावयित्वा ब्रह्मलोकं ययौ स्वायंभुवो मुनिः २२ तेनतेनुरवनि यीतं यत्लोको कमलापतं हरेर्नि सम्यतत्याई ध्यायंतस्तज्जति यव : २३

केवसहे कुडधीन की तो पूजा ह नहीं लैहै जो निरधन है तीन के भगवान ही धन है तेई साधु ते प्रिय जिन के ऐसे हरि होहै कोन से उपन की पूजा नही लेइ है अभ्यपन कुल वडे कर्म इन कर जे निरकंचन साधन को अपकार करें तिन की पूजा नही लेहै २१ जो भगवान अपने निष्काम भक्तन के आधीन है सेवा करत जो लक्ष्मीनाथ और वा लक्ष्मी की चाह करवेवारे सभी राजा और देवता इन ने नहीं भजे है इन की चाहना नही करे है आप ही पूर्ण है ता हरि को ऐसो कृतज्ञ कोन जो छोडैगो २२ ऐसे प्रचेतान कूं भगवान नारद कथा सुनाय ब्रह्मलोक कूं जात भयो। २३

भा०च०
१०२

सब श्रेयन के परा काष्ठा परमार्थ रूप हरि ही है जो सब प्राणीन के आत्मा अविद्या हरकर स्वरूप के प्रकास करे है और भक्तन कूं वल्लभ सब श्रेयन को देवेवारो ब्रह्म रूप परमानंद स्वरूप है याते सब कूं प्रिय है १३ और सब देवतान की प्रीति हरि है सो हरि की प्रसन्नता कर तो है और देवतान के आराधन कछु न ही होहै जैसे वृक्षन की जड में जल डारे ते वा के जो गुद्दे शाखा पत्र पुष्प फल ये सब तृप्ति होते हैं और जड छोड के जो जल साखान पे डारे तो नही तृप्ति होहै और जैसे मुख द्वारा कर प्राणीन कूं भोजन ले सब देही तृप्ति होहै और न्यारे २ कर्ण नासिका में ग्रास देये तें न ही तृप्ति होहै ऐसे ही हरि के पूजन में सब की तृप्ति होहै १४ सब के मूल हरि है

श्रेयसामपि सर्वेषामात्मा ह्यवधिरर्थतः सर्वेषामपि भूतानां हरिरात्माऽऽत्मदः प्रियः १३ यथा तरोर्मूलनिषेचनेन तृप्यंति तत्स्कंधभुजोपशाखाः प्राणोपहाराच्च यथेंद्रियाणां तथैव सर्वार्हणमच्युतेज्या १४ यथैव सूर्यात्प्रभवंति वार पुनश्च तस्मिन्प्रविशंति काले भूतानि भूमौ स्थिरजंगमानि तथा हरावेव गुणप्रवाहः १५ एतत्पदं तज्जगदात्मनः परं सकृद्विभातं सवितुर्यथा प्रभा यथासवो जाग्रत सुप्तशक्तयो द्रव्यक्रियाज्ञानभिदाभ्रमात्ययः १६ यथा नभस्यभ्रतमः प्रकाशा भवंति भूयान भवंत्यनुक्रमात् एवं परे ब्रह्मणि शक्तयस्त्वमू रजस्तमः सत्त्वमिति १६ तेनैवमात्मानमशेषदे हिनां कालं प्रधानं पुरुषं परेशं स्वतेजसा ध्वस्तगुणप्रवाहमात्मैकभावेन भजध्वमद्धा १७

जैसे वर्षा काल में सूर्य ते जल होहै और ग्रीष्म में वा ही में प्रवेश करै है और जैसे स्थावर जंगम प्राणी पृथ्वी में होहै और वा ही में जाइ है तैसे ई चेतनात्मक प्रपंच सव हरि ही में है १५ यह जो विश्व सो सर्वोपाधि रहित भगवान् ही को स्वरूप है याते उत्प न्न है याते न्यारो नहीं जैसे सूर्य की प्रभा सूर्य ते न्यारी नही सो कहूं गंधर्व नगर की सी नाही फुरै है जैसे इंद्री जाग्रत में इंद्री फुरै है सुषुप्त में सोइ ये है प्राण जिन की ऐसी ही यत जाहै ऐसे ही हरि में जव यह विश्व फुरै है तब हू लीन होहै त्रिविधि अहंकार के कार्य जो द्रव्य क्रिया ज्ञान तिन निमित्त भेद भ्रम मैं है जाते १६ हम चेना तो जैसे आकास में वादरन संग अंधकार और प्रका

सबको पोषक सोही परवश होमें कमसमल है

हेस्वर्थिं तुलोरो भलो आगमन भयो जो तुम्हारो दर्शन भयो और हेब्रह्मन् तुम्हारो भ्रमण सब प्राणीन के कल्याण के अर्थ है जैसे सूर्य को भ्रमण सब के कल्याण के अर्थ है हे नारद जो हम को भगवान् शिवजी ने उपदेश कीयो सो तो ग्रहस्थाश्रम में आ सक्तमति करके विस्मरण होइ गयो सो वस्तु मम को स्वरूप दिखाय के वारे अध्यात्म ज्ञान कहो जा ज्ञान कर दुस्तर संसार समुद्र को हम तिर जाय ७ मैत्रेय कहै है हे विदुर ऐसे प्रचेतान ने पूछे भगवन् नारद मुनि उत्तमश्लोक भगवान में प्र तीष जा को चित ऐसे नारद प्रचेतान ते यह बोले ८ हे प्रचेताहो वही जन्म वही कर्म वही आयु वही मन वचन कर षित्वाल

प्रचेतस ऊचुः स्वागतं ते सुरर्षेऽद्य दिष्ट्या नो दर्शनं गतः तव चंक्रमणं ब्रह्मन्नभयाय यथा रवेः येनां जलातरिष्या मो दुस्तरं भवसागरं ७ मैत्रेय उवाच इति प्रचेतसां पृष्टो भगवान्नारदो मुनिः भगवत्युत्तमश्लोक आविष्टात्माब्रवीन्नृपान् ८ नारद उवाच तज्जन्म तानि कर्माणि तदायुस्तन्मनो वचः नृणां येन हि विश्वात्मा सेव्यते हरिरीश्वरः ९ किं जन्मभि स्त्रिभिर्वेह सौक्रसावित्रयाज्ञिकैः कर्मभिर्वा त्रयीप्रोक्तैः पुंसोऽपि विबुधायुषा १० श्रुतेन तपसा वा किं वचोभिः श्चित्तवृत्तिभिः बुध्या वा किं निपुणया बलेनेंद्रियराधसः ११ किं वा योगेन सांख्येन न्यासस्वाध्याययोरपि किं वा श्रेयोभिरन्यैश्च न यत्रात्मप्रदो हरिः १२

भगवान् हरि को ईश्वर करैं नहीं तो सब वृथा है ९ जो हरि भगवान् में भावन भयो तो सौत्रसावित्र यज्ञन कर कहा और तीन प्रकार के कैसे न कर कहा और वेदत्रयी में कहा और कर्मन कर कहा और देवतान हूं की सी आयुर्बल कहा १० और सास्त्र श्रवण तप वाणिवला स और सुंदर चित्त वृत्ति इन कर हू कहा है और निपुण बुद्धि भई तो कहा और बल इंद्रीन की पाटवता भई तो कहा जे हरि में मन लग्यो तो योग सांख्य संन्यास वेदाध्येन और सब श्रेय के साधन हूं कहा है जहां अपन पेद वे वारे हरि नहीं तहां इन साधन करैं न कर कहा हसिधि नाही भी नहैं १२

भा॰ च॰ ७३ जिन साधन को भक्ति योग कर अहंकार लीनचित्त न सिद्धि होइ वा हरि के विषैं न मैं विभ्रमन होय और हम को गुण रूप गुण में लय न पावैं तब वह भक्ति तुम्हारे स्वरूप को देषे है ५८ जा विषैं यह विश्व प्रकाश करै है और विषैं जो प्रकाशमान है सो तुम जो तिरूप गुण में वृन्नाप्या का की सी नाई सब में विस्तृत हो ६० जो तुम वहु तर है रूप जा के ऐसी माया कर सी यही या विश्व को रचत भए फेर माया ही कर पालन करौ हो ऐसे निरस्त भेद तुम ही ऐसे हम जाने है ६१ यद्यपि हो तो तुम निर्भेद ब्रह्म तथापि जो कोई

न यस्य चित्तं बहिरर्थविभ्रमं तमो गुहायां च विशुद्धमाविशत् यद्भक्तियोगानुगृहीतमंजसा मुनिर्विचष्टे ननु तत्र ते गतिम् ५८ यत्रेदं व्यज्यते विश्वं विश्वस्मिन्नवभाति यत् तत्त्वं ब्रह्म परं ज्योतिराकाशमिव विस्तृतं ६० यो माययेदं पुरुरूपयाऽसृजद्विभर्ति भूयः क्षपयत्यविक्रियः यद्भेदबुद्धिः सदिवात्मदुःस्थया तमात्मतंत्रं भगवन्प्रतीमहि ६१ क्रियाकलापैरिदमेव योगिनः श्रद्धान्विताः साधु यजंति सिद्धये भूतेंद्रियांतःकरणोपलक्षितं वेदे च तंत्रे च त एव कोविदाः ६२ त्वमेक आद्यः पुरुषः सुप्तशक्तिस्तया रजःसत्त्वतमो विभिद्यते महानहं खं मरुदग्निवार्धराः सुरर्षयो भूत गणा इदं यतः ६४

तुम्हारे साक्षात् रूप को पूजैं हैं तेई निपुण है जो भ्रम नहीं ग्रंतः करण इन कर लषिये है ६२ इन के नियंता तुम जो तुम्हे क्रियात्मक हइन कर जे योगी पूजैं हैं जो सिद्धि के लीये श्रद्धा युक्त होइ ते ई निपुण है और या स्वरूप को अनादर कर जे केवल ज्ञान में प्रवृ त्त है ते पूर्ण नहीं है ६३ तुम सब की आदि हो एक रूप हो सोई माया स्वरूप शक्ति पा की पीछे याही माया कर रजोगुण तमोगुण हो है जिन गुणन ते महत्तत्व अहंकार आकाश पवन अग्नि जल पृथ्वी देवता ऋषि भूतगण ये सब होत भये ६४ ७३

10

कैसो वह रूप है दूरि न दयौं ते प्रल्हादादिकनको भय जानें देगुरो या ते तुम प्रज्ञानी नके मार्गदिखायवेवारे गुरू हो जोकोई अपनी बुद्धियोग अभय दैवेवारो है ५३ सब देहधारीनकूं दुर्लभ तुम ओर भक्ति मांगते हो मिलो हो जो तुम स्वर्ग मेंजाको राज्य ताको वांछितो ओर एकांत करवे तांदी की गति है ५४ सो तुम दुराराध्य ता हिसा धूनकूं दुर्लभ जो कांति भक्ति तावर आराधन करते हैं जो तुम्हारे चरणारविंदको छोड़ि ऐसो जो नहैं जो स्वर्गादिक सुख मांगें ५५ कैसे चरण हैं सोपद

एतद्रूपमनुध्येयमात्मच्छिद्रमनीप्सतां यद्भक्तियोगोऽभयदः स्वधर्ममनुतिष्ठतां ५३ भवान्भक्तिमतां लभ्यो दुर्लभः सर्वदेहिनां स्वराज्यस्याप्यभिमत एकांतेनात्मविद्गतिः ५४ तं दुराराध्यमाराध्य सतामपि दुरापया एकांतभक्त्या को वांछेत्पादमूलं विना बहिः ५५ यत्र निर्विष्टमरणं कृतांतो नाभिमन्यते विश्वं विध्वंसयन्वीर्यशौ सौदर्यविस्फूरितभ्रुवं ५६ क्षणार्द्धेनापि तुलये न स्वर्गं नापुनर्भवं भगवत्संगिसंगस्य मर्त्यानां किमुताशिषः ५७ अथानघांघ्रेस्तव कीर्तितीर्थयोरंतर्बहिः स्नानविधूतपाप्मनां भूतेष्वनुक्रोशसुसत्वशीलिनां स्यात्संगमोऽ

काल प्रभाव उत्साह इनकर सोभित जो भ्रुकुटी ताकर विश्वको नाश हरे रे हैं परंतु ऐसें काल हू अभिमान नहीं करे हैं ५६ तुम्हारे चरणारविंद में जो प्रविष्ट ताको काल को भय नहीं यह को नसी वान है जो तुम्हारे भक्तन को ही संग है वल ऐसो है जो सब तुम्हारे विषे अर्पन कीजो क्षि जाके पीछे येरस नहीं है भगवत्संगसाधन कों जो संग ताकी तुलाहीन नहीं है ५७ याही तें पाप के दूर करवेवारे हैं चरण जिनके ऐसे जो तुम तातुम्हारे कीर्तिरूप गंगा श्रेवती घ तिनतें श्रम कर भीतर बार को असनान ताकर दूर भए है पाप जिनके यही तुम्हारो अनुग्रह है ५८

मा.च.
७२

देदीप्यमान है मुकुट कुंडल हार नूपुर मेखला जामे ओर सोवे चक्र शंख पद्म वनमाला कौस्तुभमणि इनकर कें उत्तम उत्कर्ष जा को ५८ सिंहके से जाके धातिनें कुंडल ताकरि जनकी दीप्तता लहि धारण करें हैं ओर सो भाग्यमान है ग्रीवा जाकी ऐसो जो वक्ष स्थता कर सोभायमान है जो रूप ताहि दिखाओ ६० स्वासो श्वास कर सवित्रवंच वलजे त्रिवली तिन कर मनोहर अश्वत्थ पत्र की सहस है उदर जामें ओर अतिगंभीर जो नाभि ता मे प्रवेश करें हैं ऐसी गंभीर नाहै ५० ओर स्याम नितंब कर अधिक

स्फुरत्किरीटवलयहारनूपुरमेखलं शंखचक्रगदापद्ममालामण्युत्तममद्धिमत् ५८ सिंहस्कंधत्विषो बिभ्रत्सौभगं ग्रीवकौस्तुभम् श्रियानपायिन्याक्षिप्तनिकषश्मोरसोल्लसत् ५९ पूररेचकसंविग्नवलिवल्गुदलोदरम् प्रतिसंक्रामयद्विश्वं नाभ्यावर्तगभीरया ५० श्यामश्रोण्यधिरोचिष्णुदुकूलस्वर्णमेखलं समचार्वंघ्रिजंघोरुनिम्नजानुसुदर्शनं ५१ पदा शरत्पद्मपलाशरोचिषा नखद्युभिर्नोंतरघं विधुन्वता प्रदर्शय स्वीयमपास्तसाध्वसं पदं गुरो मार्गगुरुस्तमोजुषः ५२

देदीप्यमान पीतांबर जामें स्वर्णमयी मेखला जामें समान ओर मनोहर हैं अंघ्रि जंघा उरू जामें ओर सुंदर हैं घोंटू जामें सोभायमान हैं दर्शन जाको ऐसो रूप ताहि दिखाओ ५१ सरद ऋतु को जो कमल ताको जो पत्र ताकी ताके तिनकी ओर नवीन जाकी कांति तिनकर हमारे भीतर को जो अज्ञान ताहि दूर करत ऐसें जो चरणारविंद ताकर उपलक्षित ऐसो जो अपनो रूप ताहि दिखाओ ५२

11

तेईस सब कर्मन के फल दाता सर्वज्ञ ता तुम्हारे अर्थ प्रणाम है परम धर्म मीमांसा ग्रंथ जाकी बुद्धि ता के अर्थ प्रणाम है ४२ पुरा
ण पुरुष संज्ञा जो पुरुष ईश्वर ता जनी के पाति न प्राप्ति न वर पुरुष रूप अहंकार रूप तान्त्रिक क्रिया रूप वासी नकी है विविध सिद्धि जाके
ऐसे जे स्वरूप ता तुम्हें प्रणाम है ४३ देखो चाहत जे हम तिन को तिन को भागवतन कर स कृत अपनो दर्शन देत स्वरूप दि
खावो जो स्वरूप न जिन को अति सुप्रिय है और सब इन्द्रीन को विषय को प्रकाश करै है ४४ सचिवन वर्षा ऋतु के जो मेघ तिन

नमो धर्मविपाकाय मन्त्रवेदस्वरूपाय च नमस्ते त्रिधामधामने कारणात्मने ४२ नमो धर्माय बृहते कृष्णाय
कुण्ठमेधसे पुरुषाय पुराणाय सांख्ययोगेश्वराय च ४३ शक्तित्रयसमेताय मीढुषेऽहंकृतात्मने चेत आकूतिरू
पाय नमो वाचो विभूतये ४४ दर्शनं नो दिदृक्षूणां देहि भागवतार्चितम् रूपं प्रियतमं स्वानां सर्वेन्द्रियगुणांज
नम् ४५ स्निग्धप्रावृड्घनश्यामं सर्वसौन्दर्यसंग्रहम् चार्वायतचतुर्बाहु सुजातरुचिराननं ४६ पद्मकोशपला
शाक्षं सुंदरभ्रु सुनासिकं सुद्विजं सुकपोलास्यं समकर्णविभूषणं ४६ प्रीतिप्रहसितापाङ्गमलकैरुपशोभि
तं लसत्पंकजकिंजल्क दुकूलं मृष्टकुण्डलं ४७

श्याम सर्व सौंदर्य को है संग्रह जा विषे और मनोहर बडी है सुंदर चार भुजा जाकी रूप में रुचिर है सर्वोपर मस्तक
स्व जा विषे ४५ फेर वह रूप कैसो है कमल को जो पत्र ता सदृश हैं नेत्र जामें सुंदर है भृकुटी जामें सुंदर जामें नासिका
सुंदर जामें दांत सुंदर जामें कपोल ऐसो मुख जामें समान कर्ण तिनि है भूषण जामें ४६ प्रीत कर सहित अपांग है क
टाक्ष जामें और अलकन कर शोभित है दीप्यमान जे कमल के पराग तिन करि वस्त्र जामें उज्वल है कुंडल जामें ४७

भा॰च॰
७१

इन्द्रियन को ईस जो मन तत्त्व रूप और अमित रूप तिन तुम्हारे अर्थ प्रणाम है सूर्य रूप तुम तेज करि विश्वव्यापी सय दृष्टि
रूप ता तुम्हारे अर्थ प्रणाम है ३६ स्वर्ग और मोक्ष को द्वार नित्य पवित्र अंतःकरण में स्थित जाको ऐसे सूर्य रूप तिनें दंडोत है औ
र हिरण्य रूप है वीर्य जाको ऐसे अग्नि रूप चातुर्होत्र कर्म को साधन जाके विस्तार करै ता तुम्हारे अर्थ प्रणाम है ३७ देवतान के अन्न
और पितरन के अन्न और वेदत्रयी के पति सोम रूप ता तुम्हारे अर्थ दंडोत है ३८ पृथ्वी रूप सब प्राणिन के देह और विराट देह

नमो नमोऽग्निरूपाय हृषीकेशांशात्मने नमः परमहंसाय पूर्णाय निभृतात्मने ३६ स्वर्गापवर्गद्वाराय नित्यं शु
चिषदे नमः नमो हिरण्यवीर्याय चातुर्होत्राय तन्तवे नम ऊर्ज इषे त्रय्याः पतये यज्ञरेतसे ३७ तृप्तय च भूतानां
नमः सर्वरसात्मने सर्वसत्त्वात्मदेहाय विशेषाय स्थवीयसे ३८ नमस्त्रैलोक्यपालाय सह ओजोबलाय च
अर्थलिंगाय नभसे नमोऽन्तर्बहिरात्मने ३९ नमः पुण्याय लोकाय अमुष्मै भूरिवर्चसे प्रवृत्ताय निवृत्ताय पितृदे
वाय कर्मणे ४०

ता तुम्हारे अर्थ प्रणाम है त्रिलोक के पालक वायु रूप सत् ओज बल रूप ता तुम्हारे अर्थ दंडोत है ३९ अर्थन के ज्ञाप
क आकाश रूप भीतर बाहिर व्यवहार के आश्रय ता तुम्हारे अर्थ दंडोत है बडो जाको तेज ऐसे पवित्र स्वर्ग रूप ता
तुम्हारे अर्थ दंडवत है ४० प्रवृत्ति कर्म रूप पितर देवमार्ग फल दाता रूप और अधर्म के फल रूप मृत्यु और दुर्मीन के दुःखदाता

अर

याते तुम भगवान्‌ह्रीको ऐसे प्यारे हो तैसें भगवान्‌ और तुमहूं मोमें प्रीति करनी जोग्य हैं जो भगवान्‌ और तु
महें सौ मो समान अति प्रीय करिवे जोग्य दोई प्यारो नहीं ३० याते मंगल करी परम पवित्र कल्याण कारी जपवे को जोग्य जो स्तो
त्र सो में तुम्हारे आगे कहत हूं मन दै के सुनो ३१ ऐसे दयापूर्वक नारायण परायण ऐसे महादेवजी तथा जिन ने जोरे ऐसे
से राजकुमार तिन सौं यह वचन बोलत भये ३२ हे प्रभो तुम्हारो जो उत्कर्ष सो आत्मवेत्ता न में श्रेष्ठ तिने आनंद लाभ के

अथ भागवतानां प्रियः प्रियस्य न भगवान्‌न्यथा न भागवतानां च प्रेयानन्योस्ति कर्हिचित्‌ ३० इदं विविक्तं जप्यं
पवित्रं मंगलं परं निःश्रेयसकरं चापि श्रूयतां तद्वदामि वः ३१ मैत्रेय उवाच इत्यनुक्रोशहृदयो भगवानाह
ताञ्छिवः बद्धाञ्जलीन्‌ राजपुत्रान्नारायणपरो वचः ३२ रुद्र उवाच जितं त आत्मविद्धुर्यस्वस्तये स्वस्तिरस्तु मे भव
ताराधसा राद्धं सर्वस्मा आत्मने नमः ३३ नमः पंकजनाभाय भूतसूक्ष्मेंद्रियात्मने वासुदेवाय शांताय कूटस्था
य स्वरोचिषे ३४ संकर्षणाय सूक्ष्माय दुरंतायांतकाय च नमो विश्वप्रबोधाय प्रद्युम्नायांतरात्मने ३५

अर्थ हे तातें मो हूं कौं आनंद होत अहो और आत्मा सर्वरूप तुम तातें तुम्हारे अर्थ प्रणाम हैं ३३ कमल हैं नाभ में
जाके भूत सूक्ष्म इंद्रीय न के नियंता वासुदेव शांति निर्विकार आप ने ही तेज ज्यों को प्रकाश तातें तुम्हारे अर्थ प्र
णाम हैं ३४ अहंकार अधिष्ठाता संकर्षण रूप अव्यक्त सबके अंतकर वे वारे और आप अनंत विश्व कौं हैं प्रबोध
जाके बुद्धि के अधिष्ठाता तुम तातें तुम्हारे अर्थ प्रणाम हैं ३५

भा॰ च॰
७०

बाईस में सरोवर तें निकसे महादेवजी पार्षदन सहित तिन को दर्शन करत भए जो महादेवजी देवतान में श्रेष्ठ हैं गंधर्व जि
न के चरित्र गावे हैं २४ तप्त सुवर्ण सदृश देहकांति जिन की नीलकंठ कौं कंठ। तीन जिन के नेत्र प्रसाद के सन्मुख ता हि देख
कर प्रचेतान के बड़े कौतुहल तें भयो २५ और प्रणाम करत भये सो शिव सरणागत तिन के दुःख हरि वे वारे धर्म में जिन को वत्स
ल्य सो धर्मज्ञ शील संपन्न जे प्रचेता तिन सौं प्रसन्न होइ यों बोले २६ तुम प्राचीन बर्हि के पुत्र हो तुम्हारो चिकीर्षित में ने जान्यो

तमर्थवसरस्तस्मान्निष्क्रामंतं सहानुगं उपगीयमानममरप्रवरं विबुधानुगैः २४ तप्तहेमनिकायाभं शितिकंठं
त्रिलोचनं प्रसादसुमुखं वीक्ष्य प्रणेमुर्जातकौतुकाः २५ स तान्प्रपन्नार्तिहरो भगवान्धर्मवत्सलः धर्मज्ञान्
शीलसंपन्नान्प्रीतः प्रीतानुवाच ह २६ रुद्र उवाच यूयं वेदिषदः पुत्रा विदितं वश्चिकीर्षितं अनुग्रहाय भद्रं वा
एवं मे दर्शनं कृतम्‌ २७ यः परं रंहसः साक्षात्त्रिगुणाज्जीवसंज्ञितात्‌ भगवंतं वासुदेवं प्रपन्नः स प्रियो हि मे
२८ स्वधर्मनिष्ठः शतजन्मभिः पुमान्विरिंचतामेति ततः परं हि माम्‌ अव्याकृतं भागवतोथ वैष्णवं पदं यथा
हं विबुधाः कलात्यये २९

जो तुम्हारो भगवत्‌ आराधन में मन है और तुम पें अनुग्रह के लीयें में ने तुम्हें दर्शन दीयो है २७ सत्त्वादि जो त्रिगुण प्र
धान और जीव संज्ञक पुरुष इनके नियंता भगवान्‌ वासुदेव तिन की जो शरण होत हैं सो मो हि प्यारो है सो तुम हू
भगवत शरण हो यातें प्यारे हो २८ स्वधर्मनिष्ठ जो पुरुष सो बहुत जन्म न करि ब्रह्मा की पदवी को प्राप्त होत है ता पीछे
पुण्य अति सय कर मोहु प्राप्त होत है और भागवत जो है सो तो आत्मकृत जो वैष्णव पद ता हि प्राप्त है जैसे में और सब देवता
जिनके अधिकार के अंत में देह भंग होत है ते वैष्णव पद को
प्राप्त होत है २९

है जो लक्षणन में श्रेष्ठ मैत्रेय शरीर धारीनमें शिवजी को संगम बहुत दुर्लभ है मुनिश्वर वैराग्य लें शिव को ध्यान करत साक्षात न पावत भए जो शिव मुनीनहूं कूं वांछित है १७ हे विदुर आत्माराम हू हैं महादेवजी परंतु लोक रचना के पालन के अर्थ घोर शक्ति करि विचरै हैं १८ हे विदुर गुरु की आज्ञा करें तिन को शिवजी को दर्शन होतें सो सिद्धि होई जो वे प्रचेता पिता की आज्ञा माथे पे धर बडे साधु पश्चिम दिशा को चालत भए तप करवे में है चित्त जिन को समुद्र के समान विस्तीर्ण बडो सरोव

सङ्गमः खलु विप्रर्षे शिवेनेह शरीरिणां दुर्लभो मुनयो दध्युरसंगाद्यमभीप्सितं १७ आत्मारामोपि यस्त्वस्य लोककल्पस्य राधसे शक्त्या युक्तो विचरति घोरया भगवान्भवः १८ मैत्रेय उवाचः प्रचेतासः पितुर्वाक्यं सिरसादाय साधवः दिशं प्रतीचीं प्रययुस्तपस्यादृतचेतसः १९ ससमुद्रमुप विस्तीर्णमपश्यन्सुमहत्सरः महन्मन इव स्वच्छं प्रसन्नसलिलाशयं २० नीलरक्तोत्पलांभोजकल्हारेंदीवराकरं हंससारसचक्राह्वकारंडवनिकूजितं २१ मत्तभ्रमरसौस्वर्यहृष्टरोमलताङ्घ्रियं पद्मकोशरजो दिक्षु विक्षिपत्पवनोत्सवम् २२ तत्र गंधर्वमाकर्ण्य दिव्यमार्गमनोहरं विसिस्म्यू राजपुत्रास्ते मृदंगपणवाद्यनु २३

र देखत भये जो सरोवर महापुरुषन की नाई स्वच्छ है और प्रसन्न है मत्स्यादिक जामें जो सरोवर नील कमल रक्त कमल अंभोज कल्हार इन को जन्मस्थान है और सारस चकवा कारंडव इन कर कूजित है २१ मत्त भ्रमरन को स्वर तिन कर हर्ष है रोम जिन के ऐसे लता वृक्ष जामें और कमलन को मकरंद दिशान में फैलावत जो पवन ताकर के है उत्साह जामें ऐसो सरोवर है २२ ता सरोवर में दिव्य मार्ग जिन कर मनोहर गान ता यस्तुति और मृदंग ढोल की शब्द सुनि कर वे राजकुमार बडे विस्म

भा० च
६५

सो प्राचीनबर्ही समुद्र की बेटी सतद्रुती जा को नाम ताहि ब्रह्मा के करे ते विवाहत भयो जैसे सप्तर्षिन की अवस्था सुंदर अलंकृत अग्नि की जा विरियां प्रदक्षिणा कर वे लगी तब अग्नि ह चाहत करत भयो जैसे सप्तर्षिन की कांता करि अग्नि सें शुकी रूप धारणी स्वाहा तें चाहत करत भयो ११ जाने चढाई है पाय न पैंजनि धनि की ध्वनि मात्र करि देवता असुर गंधर्व मुनि सिद्धि किन्नर नारायण सब जीत लीये १२ प्राचीनबर्हि के शतद्रुती रानी तें दश पुत्र होत भए तुल्य है नाम आचार जिन को और

समुद्रीं देवदेवोक्तामुपयेमे शतद्रुतिं यां वीक्ष्य चारुसर्वांगीं किशोरीं सुष्ठ्वलंकृतां ११ परिक्रमंतीमुद्वाहे चकमेग्निः शुकीमिवा विबुधासुरगंधर्वमुनिसिद्धनरोरगाः विजिताः सूर्यया दिक्षु क्वणयंत्यैव नूपुरैः १२ प्राचीनबर्हिषः पुत्राः शतद्रुत्यां दशाभवन् तुल्यनामव्रताः सर्वे धर्मस्नाताः प्रचेतसः १३ पित्रादिष्टाः प्रजासर्गे तपसेर्णवमाविशन् दशवर्षसहस्राणि तपसार्चंस्तपस्पतिम् १४ यदुक्तं पथि दृष्टेन गिरिशेन प्रसीदता तद्ध्यायंतो जपंतश्च पूजयंतश्च संयताः १५ विदुरउवाचः प्रचेतसां गिरित्रेण यथासीत्पथि संगमः यदुताह हरः प्रीतस्तन्नो ब्रह्मन्वदार्थवत् १६

धर्म में पारंगत प्रचेता नाम कहाये १३ पिताने प्रजा के सृजवे की आज्ञा दई तब तप करवे को समुद्र में प्रवेश करत भए १४ उनको मार्ग में महादेवजी मिले तिन पे प्रसन्न होइ जो उपदेश करयो ताहि हरि को ध्यान करत जप करत पूजन करत भये १५ हे मैत्रेय जैसे प्रचेतान को मार्ग में महादेव कर संग भयो और महादेव ने प्रसन्न होइ जो उन सों कह्यो सो तुम हमारे आगे कहो सो

पावकपवमानशुरु सुचि एतीन्यों पतिलें अग्निहैं इहां वाशिष्ठ के सापतें उत्पन्न भए फेर योगगति कों प्राप्ति होत भए ५ नभस्व तीदूसरी स्त्री तामें अंतरधान राजा है सो विधान नामा पुत्र तासिं उपजावत भयो जो अंतरधान घोड़ा कों हरिवे वारो इंद्र है ताहि जा नकें हू न मारत भयो ५ सो अंतरधान राजान की वृत्ति कर दंड भेद इनकर दारुण है यह मान वडे सत्र के बहाने कर्म कों त्याग करत भयो ६ जो सर्व कह हू में परमात्मा भगवान् कों पूजन करत पुन्य रूप समाधि कर लोकन कों प्राप्ति होत भयो ७ हविर्धान तें हविर्धी

पावकः पवमानश्च शुचिरित्यग्नयः पुरा। वशिष्ठशापादुत्पन्नाः पुनर्योगगतिं गताः ४ अंतर्धानो नभस्वत्यां हविर्धानम विन्दत। य इन्द्रमश्वहर्तारं विद्वानपि न जघ्निवान् ५ राज्ञां वृत्तिं करादानदंडशुल्कादिदारुणाम्। मन्यमानो दीर्घसत्रव्या जेन विससर्ज ह ६ तत्रापि हंसं पुरुषं परमात्मानमात्मदृक्। यजंस्तल्लोकतामाप कुशलेन समाधिना ७ हवि र्धानाद्धविर्धानी विदुरासूत षट् सुतान्। बर्हिषदं गयं शुक्लं कृष्णं सत्यं जितव्रतम् ८ बर्हिषत्सु महाभागो हावि र्धानिः प्रजापतिः। क्रियाकांडेषु निष्णातो योगेषु च कुरूद्वह ९ यस्येदं देवयजनमनुयज्ञं वितन्वतः। प्राचीनाग्रैः कुशैरासीदास्तृतं वसुधातलम् १०

नकी स्त्री छे पुत्र उपजावत भई वर्हिषद गय शुक्ल कृष्ण सत्य और जितव्रत ये छे पुत्र भये ८ इन में वडो प्राचीन व र्हि विद्वान् कों पुत्र प्रजापति क्रियाकांडन में और मर्यादा हू इनमें निपुण होत भयो ९ जानें राजयज्ञ जज्ञ रची यो ताके समीप ही और यज्ञ कीयो ऐसे यज्ञन कों राजा करे हैं ताके पूर्व कों जिनके अग्र तिनकें यमांग कुशान कर पृथ्वीतल व्याप्त होत भयो याही तें प्राचीनवर्हि नाम परयो १०

भा.च.
६८

जो कोई या चरित्र कूं सुनके विजय कों चाहे तिनकों आगे ही आप कें राजा भेट दै हैं सो पृथु कों देखत भयो ३५ छोड़ो है और संग जानें ऐसो भगवान् में निर्मल भक्ति करत राजा पृथु कों पवित्र चरित्र ताहि सुनें सुनावें और पढ़ें ताके सब म नोरथ पूर्ण होइ ३७ हे विदुर भगवान् के महात्म्य कों सूचक यह चरित्र मैं कह्यो यामें कोई जो है हे द्विजान ऐसो मनुष्य राजा पृथु की सी गति पावे हैं ३८ दिन २ प्रति आदर कर या पृथु के चरित्र कों कहत सुनत विमुक्त संग होइ संसार समुद्र में

विजयाभिमुखो राजा श्रुत्वैतदभियाति यान्। बलिं तस्मै हरन्त्यग्रे राजानः पृथवे यथा ३५ मुक्तान्यसंगो भगवत्य मलां भक्तिमुद्वहन्। वैन्यस्य चरितं पुण्यं शृणुयाच्छ्रावयेत्पठेत् ३६ वैचित्रवीर्याभिहितं महन्माहात्म्यसूचकम्। अस्मिन् कृतमतिमर्त्यः पार्थवीं गतिमाप्नुयात् ३७ अनुदिनमिदमादरेण शृण्वन् पृथुचरितं प्रथयन्विमु क्तसंगः। भगवति भवसिंधुपोतपादे सचनिपुणां लभते गतिं मनुष्यः ३८ इति श्रीभागवते चतुर्थस्कंधे त्रयोविंशोऽध्यायः २३ मैत्रेय उवाच। विजिताश्वोऽधिराजासीत् पृथुपुत्रः पृथुश्रवाः। यवीयोभ्योऽददात्काष्ठा भ्रातृ भ्यो भ्रातृवत्सलः १ हर्यक्षायादिशत्प्राचीं धूम्रकेशाय दक्षिणाम्। प्रतीचीं वृकसंज्ञाय तुर्यां द्रविणसे विभुः २ अं तर्धानगतिं शक्राल्लब्ध्वान्तर्धानसंज्ञितः। अपत्यत्रयमाधत्त शिखण्डिन्यां सुसंमतम् ३

है सो का सरीके चरणजावें ऐसे हर में मनुष्य गति पावे है ३८ इति श्रीभागवते चतुर्थे त्रयोविंशो २३ पृथु के पीछें वड़ो यशवालो पृथु कों बेटा विजिताश्व नाम होत भयो राजा जो भ्रातवत्सल है यातें छोटे भैयान कों चारों दिसान कों राज्य देत भयो १ धर्म ह्र्य कों पूर्व दिशा देत भयो धूम्रके शा कों दक्षिण वृक कों पश्चिम और द्रविण कों उत्तर देत भयो २ पृथु के यज्ञ समे अश्व हरण में इंद्र पे तें अंतरधान गति पाई अंतर धानवाली ते जो गो नाम ऐसो सिखंडनाकी में तीन पुत्र उपजावत भयो ३

ऐसे देवतान की स्त्री अस्तुति करें हैं तें अर्चि रानी पतिलोक कौं जात भई जा लोक में आत्मवेत्तान में श्रेष्ठ सिरोमणि आदिराज पृथु प्राप्ति भये तानि लोक में रानी जात भई २९ या भांति को जाको प्रभाव सो राजा पृथु भगवद्भक्तन में श्रेष्ठ है उदार जाको आश्रय सो राजा पृथु ताको चरित्र है विदुर मैंने तेरे आगे कह्यौ ३० परम बड़ो पवित्र पृथु चरित्र ताहि श्रद्धा कर सावधान होइ पढ़े सुने सुनावें राजा नर राजा पृथु की पदवी कौं प्राप्ति होत हैं ३१ जा चरित्र कौं ब्राह्मण सुनै तो ब्रह्म तेज बढ़ै क्षत्री सुनै तो पृथ्वीपति होत हैं

श्रीमैत्रेय उवाच: स्तुवतीष्वमरस्त्रीषु पतिलोकं गतां वधूं यं वा आत्मविदां धुर्यो वैण्यः प्रापाच्युताश्रयः २९ इत्थंभूतानुभावोसौ पृथुः स भगवत्तमः कीर्तितं तस्य चरितं प्रछामि चरतस्यते ३० य इदं सुमहत्पुण्यं श्रद्धयावहितः पठेत् श्रावयेच्छृणुयाद्वापि स पृथोः पदवीमियात् ३१ ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चस्वी राजन्यो जगतीपतिः वैश्यः पठन् विट्पतिः स्याच्छूद्रः सत्तमतामियात् ३२ त्रिः कृत्व इदमाकर्ण्य नरो नार्यथवादृतः अप्रजाः सुप्रजतमो निर्धनो धनवत्तमा ३३ अस्पष्टकीर्तिः सुयशा मूर्खो भवति पंडिता इदं स्वस्त्ययनं पुंसाममंगल्यनिवारणं धन्यं यशस्यमायुष्यं स्वर्ग्यं कलिमलापहं ३३ धर्मार्थकाममोक्षाणां सम्यक्सिद्धिमभीप्सुभिः श्रद्धयैतदनुश्राव्यं चतुर्णां कारणं परं ३४

वैश्य सुनै तौ चौधरी शूद्र सुनैं तौ अतिसय कर साधुता कौ प्राप्ति होई ३२ स्त्री वा पुरुष या चरित्र कौं तीन बेर जो प्रेम कर सुनैं तौ जाके संतान न होइ तौ पाछे सुनैं तें संतान होइ निर्धन अतिसय कर धनवान् होई ३३ धन कौं देवेवारौ यश कौं देवेवारौ अर्थ कौ बढ़ायवे स्वर्ग कौं देवेवारौ कल्मष कौं दूर करवेवारौ यह चरित्र है और धर्म अर्थ काम मोक्ष इन कौं मनलीभो

भा॰ च॰
६१

वीरन में श्रेष्ठ पृथु कौं अपने पति तिनके संग स्वर्ग कौं जात जो रानी अर्चि ताहि देखि कर देवता सतत स्त्री आदि देवतान की स्त्री बड़ाई करत भई २३ ता मंदराचल की सिखर पें फूलन की वर्षा करत परस्पर रानी अर्चि की बड़ाई करत भई और देवता अनेक बाजे बजावत भए २४ देखो हो आश्चर्य परम धन्य है जो सब राजान को पति राजा पृथु ताय सब प्रकार भजन करत भई जैसें पति भगवान् कौं लक्ष्मी भजन करे है २५ सो यह पतिव्रता नारी इ अर्चि तक्ष अपने कर्मन कर हरि उच्च घन कारि जारा पृथु

विलोक्यानुगतां साध्वीं पृथुं वीरवरं पतिं तुष्टुवुर्वरदा देवैर्देवपत्न्यः सहस्रशः २३ कुर्वत्यः कुसुमासारं तस्मिन्मंदरसानुनी नदत्स्वमरतूर्येषु गृणंति स्म परस्परम् २४ देव्य ऊचुः अहो इयं वधूर्धन्या या चैवं भूभुजां पतिः सर्वात्मना पतिं भेजे यज्ञेशं श्रीर्वधूरिव २५ सैषा नूनं व्रजत्यूर्ध्वमनु वैण्यं पतिं सतिः पश्यतास्मानतीत्यार्चिर्दुर्विभाव्येन कर्मणा २६ तेषां दुरापं किं त्वन्यन्मर्त्यानां भगवत्पदम् भुवि लोलायुषो ये वै नैष्कर्म्यं साधयंत्युत २७ स वंचितो बतात्मध्रुक् कृच्छ्रेण महता भुवि लब्ध्वापवर्ग्यं मानुष्यं विषयेषु विसज्जते २८

अपने पति तिनके संग निश्चै करि ऊपर के लोकन कौं जाय है २६ चंचल जिनकी आयु ऐसें जे पुरुष या पृथ्वी के विषे तिनमें जो कोई इह हरिपूजा करत तिनकौं कहा दुर्लभ है कछु दुर्लभ नहीं है २७ और जो हरि ते विमुख है सो माया ते ठग्यो है और आत्मघाती है जो बड़ो करि या पृथ्वी में मोक्ष को साधन मनुष्य देह ताय पाय के विषयन में आसक्त होत है २८

सब गुणन कौ है स्थित जामें ऐसो मैं महत्तत्व ता हि माया उपाधि प्रधान जो जीव तामें मिलावत भयो ता उपाधि कौ यह राजा पृथु ब्रह्म में स्थित लित होइ ज्ञान वैराग्य के बल कर त्याग त भयो १८ अर्चि नाम महारानी पृथु की स्त्री राजा के संग वन में जात भई अति सुकुमारी जो पायन कर पृथ्वी कौ स्पर्श कैवे या लायक नहीं परि पति व्रता है जाते जात भई १९ अति सय कर कै जो अमि सय नाह्निक पति कौ व्रत ता धर्म की जो निष्ठा कर ऋषि और पति की शुश्रूषा कंद मूल फल कौ भक्षण ता कर कैं कृष है गई पर

तं चानुशयमात्मस्थमसावनशायी पुमान् ज्ञानवैराग्यवीर्येण स्वरूपस्थोजहात्प्रभुः १८ अर्चिर्नाम महाराज्ञी तत्पत्न्यनुगता वनं सुकुमार्यतदर्हा च यत्पद्भ्यां स्पर्शनं भुवः १९ अतीव भर्तुर्व्रतधर्मनिष्ठया शुश्रूषया चार्षदेहयात्रया नाविन्दतार्तिं परिकर्शितापि सा प्रेयस्करस्पर्शनमाननिर्वृतिः २० देहं विपन्नाखिलचेतनादिकं पत्युः पृथिव्या दयितस्य चात्मनः आलक्ष्य किंचिच्च विलप्य सा सती चितामथारोपयदद्रिसानुनि २१ विधाय कृत्यं ह्रदिनीजलाप्लुता दत्त्वोदकं भर्तुरुदारकर्मणः नत्वा दिविस्थांस्त्रिदशांस्त्रिः परीत्य विवेश वह्निं ध्यायपदं
भर्तृपदम् २२

नु ऐसी रानी दुःख कौं न प्राप्ति होत भई २० एक दिन नष्ट है सब चेतनादिक जामें ऐसे अपने प्यारे कौ सरीर देष कर कछुक एक विलाप कर परवत की शिखर पै चिता बनाई वामें पति को शरीर राखत भई २१ वासमै उचित जो कृत्य ता ही करकें सरोवर के जल में स्नान कर और पति कौं जल देकर और स्वर्ग में स्थित जे देवता तिन्हैं प्रणाम कर अग्नि की तीन प्रदक्षिणा कर पति के चरणारविंद कौ ध्यान करत अग्नि मैं प्रवेश करत भई २२

ऐसै वीरन में (श्रेष) जा पृथु परमात्मा में प्रीत कौं मिलाई ब्रह्म भूत होत भयो और अपने शरीर कौं त्याग करत भयो १३ अब राजा कौ देह त्याग कहते हैं एड़ीन कर गुदा कौ दाबि कैं प्राण वायु कूं चढ़ाय धीरे धीरे पेट कमल में लाय हृदय वक्षस्थल कंठ शिर इन में लाय ऊपरे कौ उठावत भयो १४ ऐसै क्रम कर प्राणन कौं उठाय ब्रह्म रंध्र में प्रवेश कर निस्पृह होई पवन मैं शरीर कौं और पृथ्वी मे और तेज मे मिलावत भयो १५ और इंद्रीयन के छिद्रन कौं आकाश मिलावत भयो और द्रव आसन कौं जल मैं ऐसे यथा स्थान वि

एवं स वीरप्रवरः संयोज्यात्मानमात्मनि ब्रह्मभूतो दृढं काले तत्याज स्वं कलेवरं १३ संपीड्य पायुं पार्ष्णिभ्यां वायुमुत्सारयञ्छनैः नाभ्यां कोष्ठेष्ववस्थाप्य हृदुरःकंठशीर्षणि १४ उत्सर्पयंस्तु तं मूर्ध्नि क्रमेणावेश्य निःसंगः वायुं वायौ क्षितौ कायं तेजस्तेजस्ययूयुजत १५ खान्याकाशे द्रवं तोये यथास्थानं विभागशः क्षितिमंभसि तत्तेजस्यदो वायौ नभस्यमुम् १६ इंद्रियेषु मनस्तानि तन्मात्रेषु यथोद्भवम् भूतादिनामून्युत्कृष्य महत्यात्मनि संदधे १७ तं सर्वगुणविन्यासं जीवे मायामये न्यधात् १७

भाग सौं मिलावत भयो ताकौ तेज मे तेज कौं पवन में पवन कौं आकास में आकाश कौं मिलावत भयो १६ तामस अहंकार कार्य जो आकास पर्यंत लैनकें अवसात्विक राजस अहंकार के कार्यन कौ लय करै है इंद्रीय मन कौ विषयन में षैचै हैं याते मन कौ इंद्रीयन में मिलाय तिन पांचौं इंद्रीयन कौं शब्दादिक तन्मात्रान में मिलाय ता अहंकार सहित

सबकौं महतत्व मैं मिलावत भयो

सहनसील होइ मौनतैं जितेंद्रीय होइ जितेंद्री जीतीहैं इंद्री और मन जानें ऐसो होइ श्रीकृष्णचंद्रको आराधन करि
यौ चाहत सो उत्तम तप करत भयो ७ ऐसें क्रम करि अनेक प्राप्ति होत भयो जो उत्तम तप ताकरि ध्वस्त है कर्म जाकौ याहीतें मिल
ताकौं प्राणायामन करि रोकी हैं छेउ इंद्री जानें औ दृष्टि भई है वासना जाकी ८ सनतकुमार भगवान् जो ज्ञानयोग कहत भए
ताहि योग करि हरिकौ भजन करत भयो ९ भगवद्धर्मी साधु श्रद्धा करि सदा यत्न करत जो राजा पृथु ताकी भगवान् ब्रह्म
मैं अनन्य भक्ति और प्रीति होत भई १० हरिकी परिचर्या करि शुद्ध सत्व है मन जाकौ ऐसे राजा पृथु हरिके स्मरण करिकै परणांत।

तितिक्षुर्यतवाग्दान्त ऊर्द्ध्वरेता जितानिलः आरिराधयिषुः कृष्णमचरत्तप उत्तमम् ७ तेन क्रमानुसिद्धेन ध्वस्त
कर्मा मलाशयः प्राणायामैः सन्निरुद्धषड्वर्गश्छिन्नबंधनः ८ सनत्कुमारो भगवान्यदाहाध्यात्मिकं परं योगं तेनैव पुरुष
मभजत्पुरुषर्षभः ९ भगवद्धर्मिणः साधोः श्रद्धया यततः सदा भक्तिर्भगवति ब्रह्मण्यनन्यविषयाभवत् १०
तस्यानया भगवतः परिकर्मशुद्धसत्वात्मनस्तदनुसंस्मरणानुपूर्त्या ज्ञानं विरक्तिमदभून्निशितेन येन चिच्छे
द संशयपदं निजजीवकोशम् ११ छिन्नान्यधीरधिगतात्मगतिर्निरीहस्तत्तत्यजेऽच्छिनदिदं वयुनेन येन तावन्न
योगगतिभिर्यतिरप्रमत्तो यावद्गदाग्रजकथासु रतिं न कुर्यात् १२

जाकी होत भई ऐसो भक्ति वैराग्यवान् ज्ञान होत भयो
जा ज्ञान करि संभावनादिक आश्रय जो अपनी हृदय ग्रंथि ताहि काटत भयो ११ गई है आत्मबुद्धि जाकी और पायो है आत्मस्व
रूप जानें याहीतें निश्चेष्ट स्वतः सिद्धि प्राप्त भई जो सिधि तिनहूंमें जाको चाह न ऐसो राजा ज्ञान करि हृदय ग्रंथि काटत भयो
ता ज्ञानहू के यत्नतें उपराम कौ प्राप्ति होत भयो सिद्धीन में सो राजा तो श्रीकृष्ण कथा रति है याते सिद्धीन में लोभ न करत

भा॰च॰ ६५

ऐसो राजा पृथु बढ़ायो है अंतःपुर ग्रामादिक अपनो कियो जानें सो राजवृद्धपन आपे कौं हमि जानि निर्वेद होत भयो १ जो राजा स्था
वर जंगम को आजीविका देनेवारो साधुन के धर्म कों धारण करवे वारो और जाके लीये जन्म लीयो है सो प्रजापालनरूप हरि
की आज्ञा जानें पूरी करी है और ईश्वर हू लें रुदन करै है मानों ऐसी पृथ्वी ताहि बेटान कों सौंपि और वन जाय के कौं मन करत भए
तासमें प्रजा सब चिंतातुर होत भई तो उ राजा स्त्री सहित वन कौं जात भए तहां वन में जाइ विघ्न करि रहित है नियम जाको

मैत्रेय उवाच: दृष्ट्वात्मानं प्रवयसमेकदा वैन्य आत्मवान् आत्मना वर्द्धिताशेषस्वानुसर्गः प्रजापतिः १ जगतस्तस्थु
षश्चापि वृत्तिदो धर्मभृत्सतां निष्पादितेश्वरादेशो यदर्थमिह जज्ञिवान् २ आत्मजेष्वात्मजां न्यस्य विरहाद्रुदतीम
िव प्रजासु विमनःस्वेकः सदारोऽगात्तपोवनम् ३ तत्राप्यदाभ्यनियमो वैखानससुसंमते आरब्ध उग्रतप
सि यथा स्वविजये पुरा ४ कंदमूलफलाहारः शुष्कपर्णाशनः क्वचित् अब्भक्षः कतिचित्पक्षान्वायुभक्षस्ततः
परं ५ ग्रीष्मे पंचतपा वीरो वर्षास्वासारषाण्मुनिः आकंठमग्नः शिशिर उदके स्थंडिलेशयः ६

ऐसो राजा वानप्रस्थ कौ जो उग्र तप तामें प्रवृत्ति होत भयो जैसें पहिलें पृथ्वी के विजय में प्रवृत्त भयो हो ४ कंदमू
ल फल ही जाके आहार कबहूं सूके पत्र ही भक्षण करै हैं कछु दिन जल ही पीकें रह्यो तातें पीछे कछु दिन पवन ही भ
क्षण करि कें रहत भयो ५ ग्रीष्म में पंचाग्नि तप तपत भयो वर्षा में वर्षा की संपात सहत भयो शिशिर तांई ऋतु में कं
ठ तांई जल में डूबो ऐसें पै तप करत भयो और पृथ्वी में सयन करत भयो ६

समुद्रजैसेगंभीरताकरनहीजानीजायहैं सत्वकरसुमेरकीसीनांईहैं सीक्षादेवेमेधर्मराजसरीखोहैं आश्च
र्यमेंहिमाचलसरीखोहैं ५८ कुवेरकेसेभंडारकरयुक्तहैं वरुणकीसीनांईगुप्तजाकेद्रव्यऐसेहैं वलतेजऔरअ
सकरपवनकीसीनांईसर्वत्रसंचारसकैहैं ५९ अविसह्यताकरभगवानरुद्रकीतुल्यहैं मनस्वीसिंहकीसीनांईहैं ६०
मनुष्यकेवात्सल्यमेस्वायंभुवमनुकीसीनांईहैं प्रभुत्वमभगवानब्रह्माकीसीनांईहैं ब्रह्मवादमेराजापृथुबृहस्पतिसरीखो

वर्षतिस्मयथाकामंपर्जन्यइवपर्ययन समुद्रइवदुर्बोधःसत्वेनाचलराडिव ५७ धर्मराडिवशिक्षायामाश्चर्ये
हिमवानिव ५८ कुवेरइवकोशाढ्योगुप्तार्थोवरुणोयथा मातरिश्वेवसर्वात्मावलेनमहसौजसा ६० अविषह्य
तयादेवोभगवान्भूतराडिव कंदर्पइवसौंदर्येमनस्वीमृगराडिव ६१ वात्सल्येमनुवन्नृणांप्रभुत्वेभग
वानजः बृहस्पतिर्ब्रह्मवादेआत्मवत्वेस्वयंहरिः ६२ भक्त्यागोगुरुविप्रेषुविश्वक्सेनानुवर्तिषु ह्रियाप्रश्र
यशीलाभ्यामात्मतुल्यःपरोद्यमे ६३ कीर्त्योर्ध्वगीतयापुंभिस्त्रैलोक्येतत्रतत्रह प्रविष्टःकर्णरंध्रेषुस्त्रीणांरा
मःसतामिव ६४ इतिश्रीभागवतेचतुर्थस्कंधेद्वाविंशोध्याय २२

है जितेन्द्रीताकरमानौंहरिहीहैं ६१ गौगुरु
ब्राह्मणवैष्णवइनमैंभक्तिकरऔरलज्जानम्रताशीलइनकरऔरअर्थउद्यमइनकरअपनीतुल्यआ
पुहीहैं औरत्रैलोक्यमेजहांतहांपुरुषननैंऊपरगाईकीर्तिताकरसवकेकर्णरंध्रमेराजाऐसेप्रविष्टहैंजैसे
सीतापतिरामचंद्रसाधुनकेकर्णरंध्रमेप्रविष्टहैं ६३ इतिश्रीभागवतेचतुर्थस्कंधेद्वाविंशोध्यायः २२

भा॰ च॰
६४

सूर्यकीसीनांईकहंआसक्तिनहोतभये ५२ ऐसेंज्ञानयोगकरकर्मनकौंआचरणकरत अर्चिरनीमेंआपप्रारीकेपां
चपुत्रनकोउपजावतभए ५३ विजिताश्वधूम्रकेशहर्यक्षद्रविणवृक ये पांचपुत्रहोतभए औरआपुहीएकसबलोकपाल
नकेन्यारेन्यारेगुणनकौंधारणकरतभयो ५४ जगतकीरक्षाकेलीये समयमेलोकपालनकेगुणधारणकरतभए
औरअच्युतसत्पतीहैं सौम्यवाणीकारिऔरगुणतिनकरप्रजानकीरचनाकरत मानौंदूसरोचंद्रमाहीराजाहैं ५५

गृहेषुवर्तमानोपीससाम्राज्यश्रियान्विता नासज्जतेंद्रियार्थेषुनिरहंमतिरर्कवत ५२ एवमध्यात्मयोगना
कर्माण्यथसमाचरन् पुत्रानुत्पादयामासपंचार्चिष्यात्मसंमतान् ५३ विजयाश्वंधूम्रकेशंहर्यक्षंद्रविणंवृकं
सर्वेषांलोकपालानांनधारैकःपृथुर्गुणान् ५४ गोपीथायजगत्सृष्टेःकालेस्वेस्वेऽच्युतात्मका मनोवाग्वृति
भिःसौम्यैर्गुणैःसंरंजयन्प्रजा ५५ राजेत्यधांनामधेयंसोमराजइवापरः सूर्यवद्विसृजन्गृह्णन्प्रतपंश्चभु
वोवसु ५६ दुर्धर्षस्तेजसेवाग्निर्महेंद्रइवदुर्जयः तितिक्षयाधरित्रीवद्यौरिवाभीष्टदोनृणाम ५७

सूर्यकीसीनांईपृथवीकौंदुग्धलेतभयो औरसमयपैदेतभयो तपतेंऔरतेजकरअग्निकीसीनांईदुर्जयहैं
औरमहेंद्रसरीखोदुर्जयहैं ५६ सहनसीलताकरपृथ्वीसरीखोहैं स्वर्गकीनांईमनुष्यनकौंअभिष्टफलदे
वेवारेहैं औरपर्जन्यकीसीनांईसवकीकामनाकरतसफलकरत सवकेमनोरथकीवर्षाकरेहैं ५७

श्रोर श्रपनेही है सब कछु तो सर्वस्व देकरि गुरुकौ प्रत्युपकार न हीं करसकै है जो वेदवेत्ता तुम तिननैं श्रात्मविचार मैं भगवान् के सन्मुख कीयो सो तुम बडे करुणावान् श्रपने हीं सों उद्धार करमें कर श्रापुहीसे तुष्ट होउ श्रोर श्रेसौ कौन है जो तुम्हारे कीये उपकार पै प्रत्युपकार करै एक उपहास कौ पात्र होहै ४७ मैत्रेयजी बोले हे विदुर तिन नें सनकादिक श्रात्मयोग के पति राजा पृथुने पूजन जिनकौ कीयो सो राजा के शील की बडाई करत मनुष्य के देषत श्राकास मार्ग करब्रह्मलोक कोजात

येरीहृषी भगवतो गतिरात्मवादएकांततो निगमभिः प्रतिपादितानः त्वया त्व दृञ्ज करुणा स्व कृतेन नित्यं को नाम तत्प्रतिकरोति विनोदपात्रम् ४७ मैत्रेय उवाचः त आत्मयोगपतय आदिराजेन पूजितः शीलं तदीयं शंसन्तः खेऽभवन्मिषतां नृणाम् ४८ वैन्यस्तु धुर्यो महतां संस्थित्याध्यात्मशिक्षया आप्तकाम इवात्मानं मेने आत्मन्यवस्थितः ४८ कर्माणि च यथाकालं यथादेशं यथाबलम् यथोचितं यथावित्तं मकरोद्ब्रह्मसात्कृतम् ५० फलं ब्रह्मणि विन्यस्य निर्विषंगः समाहितः कर्माध्यक्षं च मन्वान आत्मानं प्रकृतेः परम् ५१

भए ४८ राजा पृथु बडेन मैं मुख्य श्राध्यात्म शीक्षा करि जो एकाग्रता करश्रात्मा मैं स्थित होई श्रापेकूं पूर्णकाम मानत भयो ४८ जैसो कालजैसो वलय थाजोग्य यथावित्त ब्रह्म मैं श्रर्पण करि राजा पृथु कर करत भयो ५० कर्मन मैं श्रनासक्त होइ ब्रह्म मैं फल श्रर्पण करि श्रोर श्रात्मा प्रकृती ते परे है कर्मन को साक्षी उदासीन श्रेसे मानत श्रेसे कर्म करत भयो ५१ घरन हूमें वर्त्तमान है श्रोर चक्रवर्तीन की सेपत करपुकारे परंतु श्रहंकार रहित न

भा॰च॰
६३

मैत्रेयजी बोले हे विदुर श्रेसें ब्रह्मण्य वेता ब्रह्मपुत्र सनत्कुमार तिनने दिखायो है श्रात्मस्वरूप जाकौं श्रेसो राजा पृथु नत्ती भांति बडाई करउ न सो यह बोल्यो हे ब्रह्मन् दीनन पै कृपा करवे वारे हरिने मो पै बडो श्रनुग्रह कीयो ता श्रनुग्रह कौ संपादन करिवे कौं तुम श्राए हो ४२ तुम बडे दयालु तिन ने एक एअनुग्रह संपादन कीयो श्रब मैं तुम कूं गुरुदक्षिणा में कहा दउं मेरे तो देह वार सहित सब राज्यादिक महतों को उच्छिष्ट है सो सन्तन की कृपा प्रसाद रूप करदीयो है पिताने ही योजो रूप ताहि को दूनो रूप गुरन ही

श्रीमैत्रेय उवाचः स एवं ब्रह्मपुत्रेण कुमारेणात्ममेधसा दर्शितात्मगतिः सम्यक् प्रशस्योवाच तं नृपः ४१ राजोवाचः कृतो मेऽनुग्रहः पूर्वं हरिणार्तानुकंपिना तमापादयितुं ब्रह्मन् भगवन् यूयमागताः ४२ निष्पादितश्च कात्स्न्र्येन भगवद्भिर्घृणालुभिः साधूच्छिष्टं हि मे सर्वमात्मना सह किं ददे ४३ प्राणा दाराः सुता ब्रह्मन् गृहाश्च सपरिच्छदाः राज्यं बलं मही कोश इति सर्वं निवेदितम् ४४ सैनापत्यं च राज्यं च दंडनेतृत्वमेव च सर्वलोकाधिपत्यं च वेदशास्त्रविदर्हति ४५ स्वमेव ब्राह्मणो भुंक्ते स्वं वस्ते स्वं ददाति च तस्यैवानुग्रहेणान्नं भुंजते क्षत्रियादयः ४६

दीजिये ४३ याते प्राण स्त्री पुत्र श्रोर सब परिवार सहित गृह राज्य भंडार देह सैन्या यह सब मैंने तुमकौ निवेदन कीयो है तुम्हारो तु महीं को सौंप्यो जैसें भृत्य राजा को श्रर्थ राज्य राजा ही के नाई बुलाय कै सेवा रूप कर श्रर्पन करे है ४४ सैनापत्य श्रोर राज्य श्रोर दंडनेतृत्व श्रोर सब लोकन कौ श्रधिपति ता ही वेद शास्त्र कौं जानवे वारो ब्राह्मण ही जोग्य है ४५ श्रपने श्राप ही ब्राह्मण भोजन करै है श्रपने ही वस्त्र पहरै है श्रपनो ही श्राप देहै श्रोर ब्राह्मणन के श्रनुग्रह कर क्षत्री यादिक भोग भोगै है

वेदन मे स्वतेज की तो भी सब माल ब्राह्मण नहीं गोरहै ४६

28

29

जो॰१

याते हे राजन् देहमें रतिहै मोतें अनर्थ कोई देतुहै ताते देह ई श्री प्राणभृद्विश्व इंकार तुनकर आहृत जे स्थान स्थावर जंगम तिनके हृदयमें जो प्रारकरे ताहि तुजानि प्रभा व करसोई मैंहूं मोधिना और कोई नहीं सोजानि ३७ जापरमेश्वरमें यह विश्व उत्कर्ष निकर्षभाव कर कार्यकारणभाव करि सोयहीभासैहै सोनित्य मुक्तपरिशुद्ध विशुद्ध स्वरूप राव करि कर्म नकरमलीन प्रकृति जानें ताहि मैं सरणहूं ऐसे भजन कर ३८ जाके चरणारविंदकी अंगुली तिनकी जो कांति ताके चरणकरि

तत्वं नरेंद्र जगतामथ तस्थुषांच देहेंद्रियासुधिषणात्मभिरावृतानां यः क्षेत्रवित्तपतया हृदि विश्वगाविः प्रत्यक्च कास्ति भगवांस्तमवेहि सोऽस्मि ३७ यस्मिन्निदं सदसदात्मतया विभाति मायाविवेकविधुते स्रजिवाहिबुद्धिः तं नित्यमुक्तपरिशुद्धविशुद्धतत्वं प्रत्यूढकर्मकलिलप्रकृतिं प्रपद्ये ३८ यत्पादपंकजपलाशविलासभक्त्या कर्माशयं ग्रथितमु द्ग्रथयंति संतः तद्वन्न रिक्तमतयो यतयोऽपि रुद्धस्रोतोगणास्तमरणं भज वासुदेवम् ३९ कृच्छ्रो महानिह भवार्णवमप्लवेशां षड्वर्गनक्रमसुखेन तितीर्षयंति तत्वं हरेर्भगवतो भजनीयमंघ्रिं कृत्वोडुपं व्यसनमुत्तर दुस्तरार्णं ४०

संतेजो है ते कर्म कर अहंकार रूप जो हृदय में ग्रंथ ताहि काटै है ताते सरणागतीपालक वासुदेव ताहि तू नाशीक र भज ३९ नहीं है तरवे कों और इनोका जिनकें ओर ई अवद ही लिनकी भक्ति रहित ज्ञान वैराग्य वारे न कों संसार समु द्र ताहि तरिवे में दुःख कष्ट वडो है जा संसार समुद्र में छै ई न्द्री रूप ग्राह हैं ताहि वडे दुःख करि तरवे की इछा करे है ताते हे राजन् भजन करवे लायक हरि के चरणारविंद ताहि ले दुस्तर संसार समुद्र ताहि तरि ४०

भा॰ च॰ और देह में रति संसार कों हेतु यही है गुणानें पकों करत जे पुरुष तिन कों ई न्द्री विषयन कर आकर्षन करी येहै सो जल तें ले हैं और लख्यों नहीं परे है ३१ बुद्धि की चेतना गये पीछे स्मृति पराजे संधान जात रहे हैं और स्मरण गयो है ज्ञान भ्रष्ट हो जाय ते या लो क में पुरुष कों पावन कर और को ई स्वार्थ कों नास नहीं जो आत्मबुद्धि कर विषयन कों प्रिय करताही ते आपुही कर आत्मा को आ पही स्वार्थ कों आपु नास होहै ३२ अर्थ को ध्यान और ध्यान यही पुरुषन को सब अर्थ कों नास करिये जा ध्यान कर ज्ञान विज्ञा

६२

अत्यन्तस्मृतिविध्वंसं ज्ञानभ्रंशः स्मृतिक्षये तद्रोधं कवयः प्राहुरात्मापह्नवमात्मनः ३१ नातः परतरो लोके पुंसः स्वार्थ व्यतिक्रमः यदध्यन्यस्य प्रेयस्त्वमात्मनः स्वव्यतिक्रमात् ३२ अर्थेंद्रियार्थाभिध्यानं सर्वार्थापह्नवो नृणाम् भ्रंशितो ज्ञान विज्ञानाद्येनाविशति मुख्यतां ३३ न कुर्यात्कर्हिचित्संगं तमस्तीव्रं तितीरिषुः धर्मार्थकाममोक्षाणां यदत्यंतविघातकं ३४ तत्रापि मोक्ष एवार्थ आत्यंतिकतयेष्यते त्रैवर्ग्योर्थो यतो नित्यं कृतांतभयसंयुतः ३५ परेवरे च ये भावा गुणव्यतिकरा दनु न तेषां विद्यते क्षेममीशविध्वंसिताशिषाम् ३६

न ते भ्रष्ट होई पुरुष स्थावरता कों प्राप्ति होहै ३३ तामें मुख्य अर्थ को है याते जो कोई तीव्र संसार कों तरयों चाहै जो कोई कों संग न करे जो संग धर्म अर्थ काम मोक्ष अत्यंत विघात कर्ता है ३४ तिन च्यारयों पदार्थन में मोक्षही अत्यं त कृपा कर श्रेष्ठ कही ये है जाते त्रिवर्ग रूप जो अर्थ सो तो काल के भय करि युक्त है ३५ परब्रह्मादिक और सूक्ष्म हादिक राग्य गुण क्षोभ ते पी छै होइ है ताते काल ने विध्वंस करी ये हैं आशिष जिनकी तिनको क्षेम नहीं है संसार मपही है ३६

जब ब्रह्म मैं निष्ठा करि लहो है तब आचार्यमान होय ज्ञान वैराग्य के बल करि निर्विषय जो जीव को आवरण ताकु दहि लिंगदेह पंच महाभूतमय धान ताहि पुरुष जरावै है जैसे प्रज्वलित अरणी को अग्नि जरावै है २६ दग्ध हृदय उपाधि जाकी ताहि ते छोडे है सकल तस्मादि गुण जाने याते पुरुष आत्मा ते बाहिर घटादिक को भी तरस्तु सुख दुःखादिक तिनैं नहीं देखै है जाने हृदयादि रूप जो भेद जो अभिहितो हो ताके नाश भये संते जैसें स्वप्न में और देषण को योसे न्यादि रूप आत्मा और हृदय से न्यारा ताहि जैसे स्वप्न

यदा रतिर्ब्रह्मणि नैष्ठिकी पुमानाचार्यवान् ज्ञान वैराग्य रंहसा दहत्यवीर्यं हृदयं जीवकोशं पंचात्मकं योनिमिवोत्थितोऽग्निः २६ दग्धाशयो मुक्त समस्त तद्गुणो नैवात्मनो बाहिरंतर्विचष्टे परात्मनोर्यद्व्यवधानं पुरस्तात्स्वप्ने यथा पुरुषस्तद्विनाशे २७ आत्मानमिंद्रियार्थं च परं यदुभयोरपि सत्याशय उपाधौ वै पुमान्पश्यति नान्यदा २८ निमित्ते सति सर्वत्र जलादावपि पूरुषः आत्मनश्च परस्यापि भिदां पश्यति नान्यदा २९ इंद्रियैर्विषयाकृष्टैराक्षिप्तं ध्यायतां मनः चेतनां हरते बुद्धेः स्तंबस्तोयमिव ह्रदात् ३०

अवस्था नाश में नहीं देखै है तैसें २७ आत्मा हृद और दृश्य विषे और दोउन के संबंधि को हेतु अहंकार ताय अंत करि है संतें जाग्रत स्वप्न में देखै है और सुषुप्ति में नहीं देखै है २८ और लोक में सर्वत्र जल दर्पणादि निमित्त भए संते जाग्रत स्वप्न में देखे है और सुषुप्ति में नहीं देखे है पानी में विंब हून को भेद देखै है २९ और जलादिक के अभाव में नहीं देखै है असेही दृश्यादि प्रतीत उपाधि कृत है वास्तव ते नहीं असैं वैराग्य और आत्मरति यातो मोक्ष को हेतु है सो कहौ ३०

भा॰ च॰
६१

शास्त्रन के मैं यही निश्चय कीयो है सम्यग विचारवान् नृ में क्षेम को हेतु यही है जो देहादि व्यतिरिक्त आत्मा जो निर्गुण ब्रह्म तामे दृढ प्रीत और देहादिकन मैं वैराग्य यही निश्चय कीयो है २१ सो ब्रह्म मैं रति श्रद्धा करि होइ और भगवद्धर्म के आचरण करि नित्य हरि कथा श्रवण करि होय है २२ जो कोई अर्थ निपुनता में सो और काम निष्ठा जिन्ह सो तिन के संग जो गोष्ठी तामें तृष्णा न करि और तिन के संमत जे अर्थ काम तिन के अपरिग्रह करि और एकांत मे रुचि करि आत्मा में संतोष करि परंतु हरि के गुण

शास्त्रेष्वियानेव सुनिश्चितो नृणां क्षेमस्य सध्र्यग्विमृशेषु हेतुः असंग आत्मव्यतिरिक्त आत्मनि दृढा रतिर्ब्रह्मणि निर्गुणे च या २१ सा श्रद्धया भगवद्धर्मचर्यया जिज्ञासयाध्यात्मिक योगनिष्ठया योगेश्वरोपासनया च नित्यं पुण्यश्रवः कथया पुण्यया च २२ अर्थेंद्रियाराम सगोष्ठ्यतृष्णया तत्संमतानामपरिग्रहेण च विविक्तरुच्या परितोष आत्मन् विना हरेर्गुणपीयूषपानात् २३ अहिंसया पारमहंस्यचर्यया स्मृत्या मुकुंदाचरिताग्र्यसीधुना यमैरकामैर्नियमैश्चाप्यनिंदया निरीहया द्वंद्वतितिक्षया च २४ हरेर्मुहुस्तत्परकर्णपूरगुणाभिधानेन विजृंभमाणया भक्त्या ह्यसंगः सदसत्यनात्मनि स्यान्निर्गुणे ब्रह्मणि चांजसा रतिः २५

गुणवाद रूप अमृत तिन विना एकांत की रुचि हूं भली नही और आत्मा मैं संतोष हून करनो २३ अहिंसा उपसमादि वृत्ति अरु हित को अनुबंधा मुकुंद को चरित्र भयो सोई अमृत ताके स्मरण को उत्कर्ष करि निष्कामनियमरूप मय और काहू की निंदा न करनी निरीह ताथी तो द्वन्द्वादिक द्वंद्व को सहिवो करनो करि है मैं रति होत है २४ हरि भगवान के गुणन के व्याख्यान करवे ही जो भक्ति तावार कारण रूप जो आत्मा वितरिक्त पदार्थ तिन विषै वैराग्य होइ और निर्गुण ब्रह्म मैं अनायास प्रीति होई २५

है नाथ रहैं विषयन ही को पुरुषार्थ जानत और दुःखन को क्षेत्र जो संसार तामें अपने कर्मन करिके जो हम तिनकूं
कहं कुशल है १४ और तुम तो आत्माराम हो तुम में कुशल प्रश्न बनै नहीं जिन में कुशल अकुशल मति की वृत्ति है ई नहीं १४
तातें मैं विश्वास करि भक्तन के हितकारी तुम तिनें मैं पूछूं हूं या संसार में अनायास सें कौन प्रकार होत है सो कहो १५ तुम
विश्वधारीन के आत्मा प्रकाश करवे वारे अपने भक्तन के अनुग्रह के अर्थ सिद्धि स्वरूप धर हरि ही विचरो हो १६

कच्चिन्नः कुशलं नाथ इन्द्रियार्थार्थवेदिनां व्यसनावाप एतस्मिन् पतितानां स्वकर्मभिः १३ भवत्सु कुशलप्रश्न आत्मा
रामेषु नेष्यते कुशलाकुशला यत्र न सन्ति मतिवृत्तयः १४ तदहं कृतविश्रम्भः सुहृदो वस्तपस्विनां संपृच्छे भव एतस्मिन्
क्षेमः केनाञ्जसा भवेत् १५ व्यक्तमात्मवतामात्मा भगवानात्मभावनः स्वानामनुग्रहायेमां सिद्धरूपी चरत्यजः १६
मैत्रेय उवाच: पृथोस्तत्सूक्तमाकर्ण्य सारं सुष्ठु मितं मधु स्मयमान इव प्रीत्या कुमारः प्रत्युवाच ह १७ सनत्कुमार उवा॰
साधु पृष्टं महाराज सर्वभूतहितात्मना भवता विदुषा चापि साधूनां मतिरीदृशी १८ संगमः खलु साधूनां
उभयेषां च संमतः यत्संभाषणसंप्रश्नः सर्वेषां वितनोति शं १९ अस्त्येव राजन् भवतो मधुद्विषः पादारविंदस्य
गुणानुवादने रतिर्दुरापा विधुनोति नैष्ठिकी कामं कषायं मलमन्तरात्मनः २०

गंभीर जामें अर्थ थोरे जामें अक्षर
कानन कों प्यारो ऐसो पृथु को वचन सुनिकें प्रसन्न होइ हसि के सनत्कुमार यह बोलत भए १७ हे महाराज सब प्राणीन
को हितकारी और विद्यमान हू तु मन तातु मन ने भली पूछी साधुन की बुद्धि ऐसी ही होत है १८ पृथु के संग की आप हू बड़ाई करे हे राजन्
हरि के चरणारविंद को गुणानुवाद तामें प्रीत सो तेरे है ही जो दुर्लभ है जो प्रीत भीतर के कल्मष कामादिकनि ने दूरि करै है २०।२०

स्वर्ण के सिंहासन में बैठे मानों अपने स्थान में अग्नि ही बैठे हैं ऐसे महादेव हू के बड़े भैया सनत्कादिकनि में प्रसन्न होइ अग्र
पृथु राजा यह बोलत भयो ६ हे मंगल के स्थान मैंने ऐसो कहा मंगल आचरण कीयो है बड़े अैश्वर्य जो योगी तिन हू को दुर्लभ तु
म्हारो दर्शन सो मो को होत भयो ७ जा पै ब्राह्मण और शिव परवार सहित विष्णु पै प्रसन्न होइ है ताको या लोक परलोक
में अतिसय दुर्लभ कहा है सब सुलभ है ८ लोकन में डोलत जो तुम तिन्हें ये लोक नहीं लखें हैं जैसे या विश्व को हेतु म

हाटकासन आसीनान् स्वधिष्ण्येष्विव पावकान् श्रद्धासंयमसंयुक्तः प्रीतः प्राह भवाग्रजान् ६ पृथुरुवाच: अहो
आचरितं किं मे मंगलं मंगलायनाः यस्य वो दर्शनं ह्यासीद् दुर्दर्शानां च योगिभिः ७ किं तस्य दुर्लभतरमिह लोके
परत्र च यस्य विप्राः प्रसीदन्ति शिवो विष्णुश्च सानुगः ८ नैव लक्षयते लोको लोकान्पर्यटतोऽपि यान् यथा स
र्वदृशं सर्व आत्मानं येऽस्य हेतवः ९ अधना अपि ते धन्याः साधवो गृहमेधिनः यद्गृहा ह्यर्हवर्याम्बुतृणभूमी
श्वरावराः १० व्यालालयद्रुमा वै तेष्वरिक्ताखिलसंपदः यद्गृहास्तीर्थपादीयपादतीर्थविवर्जिताः ११ स्वागतं वो
द्विजश्रेष्ठा यद्व्रतानि मुमुक्षवः चरन्ति श्रद्धया धीरा बाला एव बृहन्ति च १२

हृदय के सब को द्रष्टा आत्मा ताय नहीं लखें हैं ९ जो साधु गृहस्थन के घर में पूजन के जोग्य है जल तृण भूमि घर को स्वामी अ
रु सेवकादिक ते निर्धन हू हैं परंतु वे धन्य हैं १० और पूर्ण हैं सब संपत्ति जिन कें ऐसे हू घर हैं परंतु वे भक्तन के चरण प्रक्षालन
को जल उन में न पर्‍यो तो सर्पन के रहवे के तुल्य वे घर हैं ११ हे द्विजश्रेष्ठ हो तुम्हारो भलो आगमन भयो जो तुम्हारे व्रतन को भक्ति मन ये चा

[illegible]

औरहूं नो मैं प्रवेश करि विश्व कौ पालन करौं ऐसो वडौ जाकौ पराक्रम ता पृथु की लोक सव वडाई करे है इतने मैं वा स्यो सनकादिक मुनि सूर्य कोसौ जिनको तेज सो आवत भए अहो वृत्तपाल्या तुम हो तातुम्हारे अर्घ प्रणाम है १ तव सि धन के ईश्वर आकास मैं तें उतरे हैं लोकन कौ निष्पाप करे हैं कांति करि सनकादिक हीहै ऐसे जाने थे है तिने परवार स हत राजा पृथु देखत भयो २ उनके दर्शन करि आगे लैकें विकसे जो प्राण तिन्नें प्राप्त होके मानो राजा पृथु अस सत उठत

मैत्रेय उवाच: जनेषु प्रगृणत्स्वेवं पृथुं पृथुलविक्रमं तत्रोपजग्मुर्मुनयश्चत्वारः सूर्यवर्चसः १ तांस्तु सिद्धेश्वरान् राजा व्योम्नोऽवतरतोऽर्चिषा लोकानपापान् कुर्वत्या सानुगोऽचष्ट लक्षितान् २ तद्दर्शनोद्गतान् प्राणान् प्रत्यादि त्सुरिवोत्थितः ससदस्यानुगो वैन्य इंद्रियेशो गुणानिव ३ गौरवाद्यंत्रितः सभ्यः प्रश्रयानतकंधरः विधिवत्पू जयांचक्रे गृहीताध्यर्हणासनं ४ तत्पादशौचसलिलैर्मार्जितालकबंधनः तत्र शीलवतां वृत्तमाचरन्मा नयन्निव ५

भयो जैसें जीव गंधादिक गुणन कौ देषतिन के सन्मुख होहैं ३ उनके गौरव करनन्ने वस कीयो है और प्रेम करन म्रजा की ग्रीवा ऐसो राजा पूजन करत भयो: कैसें वे शनकादिक है ग्रहण कीयो है अर्घ और आसन जिनने ४ तिन के च रणारविंद के जलन करि प्रक्षाल ले है के पावे धजा कौ ऐसो राजा शीलवान् न के वृत्त कौ मानत आप हू आचरण करत भयो ५

भा·च·
५६

ऐसें करत जो राजा पृथु ताहि पितर देवता ब्राह्मण साधु ये सव प्रसन्नमन होई वहोत वडाई करत भये ४४ अहो राजा श्रुति ऐसें कहत जो राजा पृथु ताहि पितर देवता ब्राह्मण साधु ये सव प्रसन्नमन होई ... पुत्र करि उत्तम लोकन कौ प्राप्ति होहै सो सत्य है जो ब्रह्म दंड सह हनन्नो वेणु तुम्हारी प्रजापति सो नरकको तरत न मैं जो कह्यो है पुत्र करि उत्तम लोकन कौं प्राप्ति होहै सो सत्य है जो ब्रह्मदंड ... वेण तुम्हारो ... पृथु नरकन कौ पार होत न यौं ४५ ऐसे ही हिरण्यकस्यप हू भगवन्निंदा करि नरक में परयो चाहै है परंतु प्रल्हाद पुत्र के प्रभाव तें नरकन कौ पार होत भ यो ४५ ऐसें ही हिरण्यकस्यप हू भगवन्निंदा करि ... नरक मैं परयो चाहै है ... जाके रीस सव लोकन मैं कृष्ण ऐसी भक्ति ... है ४७ हे पृ भयो ४६ हे वीरन मैं श्रेष्ठ पृथ्वी के पिता वहुत वर्षन ताई जीऊ ... ५४ ... साधवादेन साधवः ४४ पुत्रेण जापते

मैत्रेय उवाच: इति ब्रुवाणं नृपतिं पितृदेवद्विजातयः तुष्टुवुर्हृष्टमनसः साधुवादेन साधवः ४४ पुत्रेण जापते लोकानिति सत्यवती श्रुतिः ब्रह्मदंडहतः पापो यद्वेनोऽत्यतरत्तमः ४५ हिरण्यकस्यपश्चापि भगवन्निंदया तमः विविक्षुरत्यगात्सूनोः प्रल्हादस्यानुभावतः ४६ वीरवर्य पितः पृथ्व्याः समाः संजीव शाश्वती र्यस्येदृस्यच्यु तभक्तिः सर्वलोकैकभर्तरि ४७ अहो वयं ह्यद्य पवित्रकीर्ते त्वयैव नाथेन मुकुंदनाथाः य उत्तमश्लोकतम स्यविष्णोर्ब्रह्मण्यदेवस्य कथां विनक्ति ४८ नात्यद्भुतमिदं नाथ तवाजीव्यानुशासनं प्रजानुरागो महतां प्रकृ तिः करुणात्मनां ४८ अद्य नस्तमसः पारस्त्वयाचसादितः प्रभो भ्राम्यतां नष्टदृष्टीनां कर्मभिर्दैवसंज्ञितैः ५० नमो विवृद्धसत्त्वाय पुरुषाय महीयसे यो ब्रह्म क्षत्रमाविश्य विभर्तीदं स्वतेजसा ५१ इति श्रीभागवते चतुर्थे एकविंशो २१

वित्र कीर्ति आज हम तो नाथ करि सनाथ है जिनके नाथ ऐसे भक्ति जो तुम उत्तम श्लोक जे भगवान् ब्राह्मण्य की कथा द मादिक आगे विस्तारे है ४८ हे नाथ सेवकन कौ सिक्षा देनी यह तुम मैं आश्चर्य नहीं है प्रजान मैं अनुराग करवो यह करु णात्मा महत्पुरुषन कौ स्वभाव होहै ४८ हे प्रभो आज तुमने हमैं संसार के पार लगाए जो तमक मैं न करम न मैं ते नष्ट है जिनको हरि भक्ति कीयो ५० अब राजा पृथु को हृषि करि ब्राह्मण आदिकन नमस्कार करे है जो ब्राह्मण जात मैं वेठ है क्षत्री को पोष

हरिकों मुख ब्राह्मणही हैं जो ईश्वर दिक्न के नाम न करि ब्राह्मणन के मुख मैं श्रद्धा करि होम कीयो सो भगवान भोजन करैं हैं तैसे चित्त इहि प्रीति मैं नहीं भोजन करैं हैं याते होंम जज्ञ कों आश्रय छोडि ब्राह्मणन कों भोजन करावै संतुष्ट करनों यही जोग्य हैं ४० जो ब्राह्मणनि नित्य अम्लान मंगल मौन संजम समाधि इन करवे जाको धारण करै हैं और इस अर्थ हूं कों विचारै हैं जा वेद मैं यह विश्व दर्पण की नाई भासै हैं ४१ राजा पृथु कहै हैं हे प्रजा हो मैं तो जब ताई

आत्मा त्पनंत: खलु तत्त्व कोविदे: श्रद्धा तं यन्मुखइज्यनामभि: नैव तथा चेतनया वहिः कृते हुताशने पारमहंस्य पर्यगु: ४० यद्ब्रह्म नित्यं विरजं सनातनं श्रद्धा तमो मंगल मौन संयमै: समाधिना बिभ्रति हार्थ दृष्टये यत्रेदमादर्श इवावभासते ४१ तेषामहं पादसरोजरेणुमार्या वहेयाधिकिरीटमायु: यं नित्यदा बिभ्रत आशु पापं नश्यत्यमुं सर्वगुणा भजन्ति ४२ गुणायनं शीलधनं कृतज्ञं वृद्धाश्रयं संवृणुतेनु संपद: प्रसीदतां ब्रह्मकुलं गवां च जनार्दन: सानुचरश्च मा हम ४३

जीउं तव ताई ब्राह्मणन की चरणरेणुं मुकुट के उपर धारन करूं यह प्रार्थना करूं हूं जो कोई ब्राह्मणन की चरनरेनु माथे पे धारण करै है ताके सब पाप नष्ट होंहैं और सब गुण वाही कों सेवन करै हैं जो गुणन कों स्थान है शीलही जाके धन हैं और वडेन को आश्रय राखै है ताइ सब संपत्य वरै है ताते ब्राह्मण को कुल और गोउन को कुल अनुचरन सहित जनार्दन से वो ताई ते मैं प्रसन्न होहौं ४३

भा॰च॰
५८

अब हरिभक्ति दृढ करवे को ब्राह्मण भक्ति कहै हैं वडो जो समृद्धि तिन करि जो राजकुल कों जैसें जस हरि ही है देवता जिनके ऐसे ब्राह्मणन के कुल मैं प्रभाव मति करौ विद्या करि देदीप्यमान है याते सदां सेइवे कों जोग्य है ३६ महात्मान मैं मुख्य ब्रह्म और जगत कों पवित्र करवे वारो यश ताय प्राप्ति होत भये ३७ जिन ब्राह्मणन की सेवा करि सर्वांतरजामी ईश्वर भगवान् बहु प्रसन्न होइ है ताते जो कोई विष्णु धर्म परायण तिन कों ब्राह्मणन ही कुल सेवा करवे कों जोग्य है ३८ जा ब्राह्मणकु

मा जातु तेज: प्रभवेन्महर्द्धिभिस्तितिक्षया तपसा विद्यया च: देदीप्यमाने जितदेवतानां कुले स्वयं राजकुलाद्विजानां ३६ ब्रह्मण्य देव: पुरुष: पुरातनो नित्यं हरिर्यच्चरणाभिवंदनात् अवाप लक्ष्मीमनपायिनीं यशो जगत्पवित्रं च महत्तमाग्रणी: ३७ यत्सेवयाशेषगुहाशयास्वराड् विप्रप्रियस्तुष्यति काममीश्वर: तदेव तद्धर्मपरैर्विनीतै: सर्वात्मना ब्रह्मकुलं निषेव्यताम् ३८ पुमाँल्लभेतानतिवेलमात्मन: प्रसीदतोत्यंतशमं स्वत: स्वयम् यन्नित्यसंबंधनिषेवया तत: परं किमत्रास्ति मुखं हविर्भुजाम् ३९

न को नित्य सेवन कीये तें स्वतें ही रागाभ्यास रहित यह पुरुष अति उत्तम मोक्ष कों प्राप्ति होइ है जिन की सेवा कीये तें श्री हरी चित्त शुद्धि होइ हैं याते ब्राह्मणन तें आगे कहा देवतान कों श्रेष्ठ मुख है नहीं तें ब्राह्मणन की सेवा ही करे तें यज्ञादिकन कों फल ज्ञान प्राप्ति सो सब होइ है जाते ब्राह्मण जा संसार मैं श्रेष्ठ है ३९

५८

दूरि भए हैं सब मन के मैल जाके ओर ज्ञान वैराग्य जो है विशेष बल जाको ओर हरि के चरणारविंद में कीयो है स्थान जानें ऐसो पुरुष फेर क्लेश देवे वारे संसार को नहीं प्राप्ति होहे ३१ सो तुम महत् ध्यान तुमि परस्थित यो करि हि निस्कपट होइ वा ही हरि के चरणारविंद को भजो सो चरणारविंद सब कामनान के देन वारे हैं तुम जैसे होय या अधिकारी समाप्त हैं अर्थी सिद्धि जन को ३२ सो भगवान् ही स्वरूप तें विज्ञान घन होहें परंतु अवतक गुणवान् यज्ञ रूप से पदेन कहीयें हे ओर द्रव्य गुण क्रिया अ

विनिर्धूताशेषमनोमलः पुमान् संगविज्ञानविशेषवीर्यवान् यदंघ्रिमूले कृतकेतनः पुनर्न संसृतिं क्लेशवहां प्रपद्यते ३१ तमेव यूयं भजतात्मवृत्तिभिर्मनोवचः कायगुणैः स्वकर्मभिः अमायिनः कामदुघांघ्रिपंकजं यथाधिकारावसितार्थसिद्धयः ३२ असावि हानेकगुणो ऽगुणो ऽध्वरः पृथग्विधद्रव्यगुणक्रियोक्तिभिः संपद्यते ऽर्थाशय लिंगनामभिर्विशुद्धविज्ञानघनः स्वरूपतः ३३ प्रधानकालाशयधर्मसंग्रहे शरीर एष प्रतिपद्य चेतनां क्रियाफलत्वेन विभुर्विभाव्यते यथानलो दारुषु तद्गुणात्मकः ३४ अहो ममामी वितरंत्यनुग्रहं हरिं गुरुं यज्ञभुजामधीश्वरं स्वधर्मयोगेन यजंति मामका निरंतरं क्षोणितले दृढव्रता ३५

र्थ आशय लिंगनाम देह इन करवे ही यज्ञ रूप हैं ३३ प्रधान लोक आशय अदृष्ट इन करि उपज्यो सरीर ता विषे चेतना उकारि विषया कार बुद्धि जाकी ऐसो जीव आने द्रूप जो क्रिया फल ता कर भासे हैं ऐसा भोक्ता भोग रूप ही हैं ३४ ताते जो कोई पृथ्वी तल में स्वधर्म योग करि के भजन करे हें तिनपे बडो अनुग्रह करे हें जो हरि सब के गुरु यज्ञ भोक्तान को ईश्वर हें ताही को सब भजन करे हें ऐसे पृथु ने कही ३५

40

न२

भा॰ च॰ ५७

सो तुम पितर देवता ऋषि या वालको अनुमोदन करो जा धर्म करवे वारे को सीखा देवे वारे को अनुग्रह करवे वारे को परलोक में तुल्य फल होइ हें याते तुम सव अनुमोदन करो २५ हे प्रजा जन मो ही कोई के मत में यज्ञपति परमेश्वर कर्म फल को दाता हे वा ईश्वर ही को सव कर्म फल अर्पण करे हें तिन को या लोक पर लोक में कांति मान होहें ओर मनु ग न्यायवारी ऐसे दिखाई देहे २६ स्वायंभू मनु उत्तानपाद राजा ध्रुव प्रियव्रत राजर्षि ओर हमारे वावा अंग इनको मत यही है जो कर्म फल दाता ईश्वर है २७

एषां नश्चानुमोदध्वं पितृदेवर्षयो ऽमलाः कर्तुः शास्तुरनुज्ञातुस्तुल्यं यत्प्रेत्य तत्फलं २५ अस्ति यज्ञपतिर्नाम केषांचिदर्हसत्तमाः इहामुत्र च लक्ष्यंते ज्योत्स्नावत्यः क्वचिद्भुवः २६ मनोरुत्तानपादस्य ध्रुवस्यापि महीपतेः प्रियव्रतस्य राजर्षेरंगस्यास्मत्पितुः पितुः २७ ईदृशानामथान्येषामजस्य च भवस्य च प्रह्लादस्य बलेश्चापि कृत्यमस्ति गदाभृता २८ दौहित्रादीनृते मृत्योः शोच्यान् धर्मविमोहितान् वर्गस्वर्गापवर्गाणां प्रायेणैकात्म्यहेतुना २९ यत्पादसेवाभिरुचिस्तपस्विनामशेषजन्मोपचितं मलं धियः सद्यः क्षिणोत्यन्वहमेधती सती यथा पदांगुष्ठविनिःसृता सरित् ३०

41

ऐसे ओर नहू को ब्रह्मा महादेव प्रह्लाद राजा वलि इनको अवस्य फल दाता भगवान हैं ऐसो मत है २८ मृत्यु को दोहितो वेणु ताते आदि दें सोच करवे को जो अपना धर्म में मोहित तिना विना ओर सव को मन में त्रिवर्ग स्वर्ग मोक्ष इन को देतु परमेश्वर ताहि कर्म फल दाता कहे हे २९ जो भगवान के चरणारविंद की सेवा की रुचि दिन दिन वढे संते तपस्वीन के अनेक जन्म की बुद्धि के मैल दूर करे हें सो हरि के चरण के अंगुष्ठ ताते निकसी गंगा सो मन के मैल दूरि करे हें ३० ३०

५७

हे सभापति हो जो साधु तुम इहां आए हो ते मेरो विचित्र वाक्य सुनो धर्म कीयो चाहत जो पुरुष तिन कर अपने विचार साधुन के आगे निवेदन करवो जोग्य है याते मे प्रजान की रक्षा के लीये जिज्ञासा ती करूं हूं धर्म न कीयं हूं तुम सों २० मे विधाता ने प्रजान को दंड देवे वारो और रक्षा करवे वारो वनायो हूं और अपनी २ मर्यादा मे चलायवे वारो वना यो हूं २१ ता मोकूं प्रजा की रक्षा के लीये अनुष्ठान कीये ते प्राकृत कर्म सो सीई ईश्वर जा मे जा पे प्रसन्न होई ता को वेदवा

राजोवाच: सभ्याः शृणुत भद्रं व: साधवो य इहागता: सत्सु जिज्ञासुभिर्धर्ममावेद्यं स्वमनीषितम् २० अहं दं डधरो राजा प्रजानामिह योजित: रक्षिता वृत्तिद: स्वेषु सेतुषु स्थापिता पृथक् २१ तस्य मे तदनुष्ठानाद्यानाहुर्ब्र ह्मवादिना लोका: स्यु: कामसंदोहा यस्य तुष्यति दिष्टदृक् २२ य उद्धरेत्करं राजा प्रजा धर्मेष्वशिक्षयन् प्र जानां शमलं भुंक्ते भगं च स्वं जहाति स: २३ तत्प्रजा भर्तृपिंडार्थं स्वार्थमेवानसूयव: कुरुताधोक्षजधि यस्तर्हि मे नुग्रह: कृत: २४

दी जिन लोकन कों कहे हैं तीन लोक मो नो होय जो काम नान के परण करवे वारे २२ और जो राजा प्रजान कों ध र्म सीखान देइ और कर लेत है सो प्रजान को पाप भोगे है अपने ऐश्वर्य नों हूं यो देहि जन में त्याग है २३ ताते हे प्रजा हो नरता जो मेला मेरे पिंड हान की सी नाई जा परलोक मे हित करवे को स्वधर्म ही मे स्थित होउ और सो वा सुदेवार्पण द्वेष कर करोगे तो मेरे ऊपर वडो अनुग्रह करोगे २४ श्री कृष्णायन मो नम: हरे कृष्णाय्यो नम: २४

भा॰ च॰ २६

कमल से अरुण जाके नेत्र सुंदर है मुख जाको सौम्य पुष्ट जाके कंधा सुंदर है दंत जाके और मंद मुसिकान जाकी १५ विसी ली जा को वक्षस्थल वडे र जाके नितंब त्रिवली हार सुंदर पीपर के पतो आली नाई उपर विस्तीर्ण नीचे कूं है संकुचित उदर जा को जव की आवर्त की सी नाई और ओंडी है नाभि जा की सुवर्ण वत् उज्वल है उरु जाके उन्नत है अग्र भाग मे चरण जाके १६ मतार टेडे स्याम घूघरवारे है केश जाके तीमरे शाकर अग्नि मंगा खसी है ग्रीवा जाकी वहुमोल की धोती उपरना पहरि

प्रांसु: पीनायतभुजो गोर: कंजारुणेक्षण: सुनास: सुमुख: सौम्य: पीनांस: सुद्विजस्मित: १५ व्यूढवक्षा बृहच्छ्रो णीर्वलिवल्गुदलोदर: आवर्तनाभिरोजस्वी कांचनोरुरुदग्रपात् १६ सूक्ष्मवक्रासितस्निग्धमूर्द्धज: कंबुकं धरा: महाधने दुकूलाग्रे परिधायोपवीय च १७ व्यंजिताशेषगात्रश्रीर्नियमे न्यस्तभूषण: कृष्णाजिन धर: श्रीमान्कुशपाणि: कृतोचित: १८ शिशिरस्निग्धताराक्ष: समैक्षत समंतत: ऊचिवानिदमु र्वीश: सद: संहर्षयन्निव: चारुचित्रपदं श्लाक्ष्णं मृष्टं गूढमविक्लवं १९

यमली यों है जाने और त्यागे है सव भूषण जाने सव अंगन मे प्रगट कीनी है सुभाव की सोभा जाने १७ सो राजा पृथु वकुल न के वस्त्र मृग चर्म तिने धारण करे हैं ता सोभा कर भज्ञा है कुश जाके हाथ में कीने है उचित जाके जाने और सव लापके तरवे वारे ता ते तारि को असे समाज में देषत भयो १८ पृथ्वीपति राजा सव सभा को आनंद देत दर वाकुं: वाल्यों जो वाक्य श्रवण न को प्यारो विचित्र जामे पद मनोहर शुद्ध गंभीर जामे अर्थ व्याकुलता जामे न ही असो वाक्य वोले: १९

सो राजा पृथु कौं ब्राह्मणननें जब अभिषेक कीयौं पाई है सब देवतान नैं भेट जामैं और भुजान में वैस्नव तेज कौं धारण करें है जिन भुजान कर पृथ्वी गौ दुहत भयौ सो राजा और कहा कर्म करत भयौ यह मेरे आगे कहो ९ या राजा पृथु की कीर्त्ति ऐसो कौन है सो न सुनें जाको पराक्रम पृथ्वी कों दुहत जातिको उचिष्ट तुल्य कामना सब राजा लोकपाल आश्रय कर अबताई जीवें हैं ता पृथु कौ सुद्ध कर्म मेरे आगे कहो १० गंगा यमुना दोऊन के बीच में जो है क्षेत्र तामें वसत

विदुर उवाच: सोभिषिक्तः पृथुर्विप्रैर्लब्धाशेषसुरार्हणः बिभ्रत्स वैष्णवं तेजो बाह्वोर्याभ्यां दुदोह गाम् ९ को न्वस्य कीर्तिं न शृणोत्यभिज्ञो यद्विक्रमोच्छिष्टमशेषभूपाः लोकाः सपाला उपजीवन्ति काममद्यापि तन्मे वद कर्म शुद्धं १० मैत्रेय उवाच: गंगायमुनयोर्नद्योरंतरा क्षेत्रमावसन् आरब्धानेव बुभुजे भोगान्पुण्यजिहासया ११ सर्वत्रास्खलितादेशः सप्तद्वीपैकदंडधृक् अन्यत्र ब्राह्मणकुलादन्यत्राच्युतगोत्रतः १२ एकदासीन्महासत्रदीक्षा तत्र दिवौकसां समाजो ब्रह्मर्षीणां च राजर्षीणां च सत्तम १३ तस्मिन्नर्हत्सु सर्वेषु स्वर्चितेषु यथार्हतः उत्थितः सदसो मध्ये ताराणामुडुराडिव १४

भयौ पुण्य क्षय कौं इच्छा कर प्रारब्ध के जो भोग तिनैं भोगवत भयौ और भोगांतर के लीयें कर्म करत भयौ ११ एक ब्राह्मण वैस्नव विना सर्वत्र अखंडित जाकी आज्ञा: सातौं द्वीपन में एक दंड धारन करनवारो होत भयो १२ एक वार राजा पृथु कै महा यज्ञ दीक्षा होत भई तामैं देवता ब्रह्मर्षि राजर्षिनो समाज होत भयो १३ ता सत्र में सब कौ पूजा यथा जोग्य करे सतें सभा के मध्य उठिकें चारों ओर राजा पृथु देषत भयो १४ कैसो राजा है जैसें तारा की मध्य उड्राज चंद्रमा सोहे है

फिर कैसो है चंदन अगर के जल कर भीज्यो है गली चौक राजमार्ग जामें पुष्प अक्षत फलन सहत हरित पल्लव माला दीपक तिन कर सोभायमान है २ गहरन कर सहित केरान के खंभ और सुपारीन के वृक्षन कर द्वार द्वार प्रति अलंकृत है और आम्र पल्लव वन की वंदनवार कर अलंकृत है ३ धारण करी जो दध्यादिक मंगल वस्तु तिन कर सोभायमान है और दीपक न की पंक्ति तिन कर सोभायमान है प्रजा सव तामें उज्वल कुंडल करि मंडित मुख जिन के ऐसी कंन्या राजा के लेवे कौं आवत भई ४ निरहंकार राजा संख नगारे भेरि सहनाईन के शब्द कर और ऋत्विजन की वेद ध्वनि कर गीयमान सो राजा नगर में प्रवेश करत भयौ ५ परम पूजित प्रिय वरन कौं दे

चंदनागुरुतोयार्द्ररथ्याचत्वरमार्गवत् पुष्पाक्षतफलैस्तोक्मैर्लाजैरर्चिभिरर्चितम् २ सवृंदैः कदलीस्तंभैः पूगपोतैः परिष्कृतैः तरुपल्लवमालाभिः सर्वतः समलंकृतम् ३ प्रजास्तं दीपबलिभिः संभृताशेषमंगलैः अभीयुर्मृष्टकन्याश्च मृष्टकुंडलमंडिताः ४ शंखदुंदुभिघोषेण ब्रह्मघोषेण चर्त्विजां विवेश भवनं वीरः स्तूयमानो गतस्मयः ५ पूजितः पूजयामास तत्र तत्र महायशाः पौरांजानपदांस्तांस्तान्प्रीतः प्रियवरप्रदः ६ स एवमादीन्यनवद्यचेष्टितः कर्माणि भूयांसि महान्महत्तमः कुर्वन्शशासावनिमंडलं यशः स्फीतं निधायारुरुहे परं पदं ७ सूत उवाच: तदादिराजस्य यशो विजृंभितं गुणैरशेषैर्गुणवत्सभाजितं क्षत्ता महाभागवतः सदस्पते कौषारविं प्राह गृणंतमर्चयन् ८

वे वाडो महा यसस्वी राजा पुरवासी देसवासीन कौं सन्मान करत भयौं ६ या प्रकार वडे यासीं ले महात्मा राजा पृथु वडे कर्मन कौं करत पृथ्वी मंडल कौं पालत भयौ और वडो यस या पृथ्वी मे विस्तारे हरि के परम पद की ओर ऊंचा लोक प्राप्ति होत भयौ ७ सूत जी कहै हे हे सौनकादिक हे या भांत कर सव गुण उज्वल गुणवान कर सेवत राजा पृथु के यस कुं सुनि करि परम भागवत विदुर जी सो करत जो मैत्रेय तिन कौं सन्मान करत विदुर यह बोले ८

गा

अठारह करी राजा ने एजन जिन कौं कीयों ऐसे भगवान् जायवे की बुद्धि करत भए ३४ देवता ऋषी पितर गंध
र्व सिद्ध चारिण नाग किंनर अपसरा मनुष्य खग और विष्णु पार्षद अनेक भी णी यज्ञेश्वर बुद्धि कर ज्ञाने वांणी वि
त अचल भक्ति इन कर एजन जिन कौ कीयों ऐसे योगेश्वर विष्णु विष्णुपारषद सव अपने अपने लोकन कूं ज

तत्वं कुरु मयादिष्टमप्रमत्तः प्रजायते महादेषकरो लोकः सर्वत्राप्नोति शोभनं ३५ देवर्षिपितृगंधर्वसिद्ध
चारण पन्नगा किंनराप्सरसो मर्त्याः खगा भूतान्यनेकशः ३४ यज्ञेश्वराधिया राज्ञा वाग्वित्तांजलिभक्तितः
सभाजिताः ययुः सर्वे वैकुंठानुगतास्ततः ३५ भगवानपि राजर्षेः सोध्यायायस्य चाच्युतः हरन्निव मनो
मुख्य स्वधाम प्रत्यपद्यत ३६ अदृष्टाय नमस्कृत्य नृपः संदर्शितात्मने वासुदेवाय देवानां देवाय
स्वपुरं ययौ ३७ इति श्री भागवते महापुराणे चतुर्थस्कंधे नामविंशोध्यायः २० मैत्रेय उवाच मौक्तिकैः
कुसुमैः स्रग्निर्दुकूलैः स्वर्णतोरणैः महासुरभिभिर्धूपैर्मंडितं तत्र तत्र वै १

46

तभए ३५ भगवान् हरिहू उपाध्यायन सहत राजर्षि पृथु के मन कूं हराव त अपने धाम कों जात भए ३६ कृपा कर दिखायो
अपनो स्वरूप जानें ऐसे भगवान् देवतान के देव वासुदेव ने इमार्गले अगोचर होत भए तिन कों प्रणाम कर राजा पृथु
अपने पुर कों जात भयो ३७ इति श्रीमद्भागवते महापुराणे चतुर्थस्कंधे टीकायां विंशोध्यायः २ मैत्रेय जी कहै हैं हे विदुर
राजा के पुर कौ वर्णन सुनि वरम कापल नकी माला दुकूल सुवर्ण के तोरण महासुगंधि धूपनि कर जहां तहां मंडित है १

भा॰ च॰
५४

जातें दीनवत्सल हैं अपने स्वरूप में रत जो तुम ता तुमकौं लक्ष्मी कर कहा प्रयोजन है याते ये लक्ष्मी कों आदर नहीं देहीं २८ याही तें दूरि
भयों हैं माया गुण विलास जामें तातु महीं कौ भजै हैं और तुम्हारे चरण विना उनसा धन कौं कछु और फल वांछित नहीं हम यह जानें
हैं २९ परंतु भक्तन कौं जो तुम सोही कौं तुम वर मांगो सो तुम्हारी वांणी इन लोकन कौं मोह करवेवारी हैं यह मानें हैं जो तुम्हारी वां
णी रूप तें जन्या रियत जन नवं धी होइ तो कर्म कर वे कौं वरतान में लोभ होय तुम्हारी माया ने तुम सर्व आत्मा जातें यह जन खंडित

मन्ये गिरं ते जगतां विमोहिनीं वरं वृणीष्वेति भजंतमात्थ यत् वाचा नु तंत्या यदि ते जनोऽसितः कथं पुनः कर्म करोति
मोहितः २९ त्वन्मायया द्धाजन ईश खंडितो यदन्यदाशास्त ऋतात्मनोऽबुधः यथा चरेद्बालहितं पिता स्वयं तथा त्वमेवा
र्हसि नः समीहितुं ३० मैत्रेय उवाच इत्यादिराजेन नुतः स विश्वदृक् तमाह राजन्मयि भक्तिरस्तु ते दिष्ट्येदृशी
धीर्मयि ते कृता यया मायां मदीयां तरति स्म दुस्त्यजां ३१ तत्वं कुरु मयादिष्टमप्रमत्तः प्रजापते मदादेशकरो
लोकः सर्वत्राप्नोति शोभनं ३२ इति वैन्यस्य राजर्षेः प्रतिनंद्यार्थवद्वचः पूजितोऽनुगृहीत्वैनं गंतुं चक्रेऽच्युतो मतिं

47

प्यारो कीयो है जो तुम ने छोड़ि लोकादिकन कौं चाहे हैं परंतु जैसें पिता वालक कौ हित करे है तैसें ईं तुम विना हित कौन
करें है हमारो भक्तन कौ हित करवो जोग्य है ३१ ऐसे पृथु ने प्रस्तुति जा की करी सो ई विश्व के द्रष्टा भगवान् पृथु सों
वोले हे राजन् मों में तेरी भक्ति होहु और वड़ो मंगल भयो जातें ने मो में ऐसी बुद्धि करी जाकर दुस्तर मेरी माया
ताकूं तरत भयो ३२ हे प्रजापति सो तू सावधान होइ मेरी आज्ञा करि मेरी आज्ञा करवेवारो लोक सर्वत्र मंगल
कौं प्राप्त होहै ३३ मैत्रेय जी कहै हैं हे विदुर ऐसे राजा पृथु को अर्थवान् वाचन ताय अभिनंदन करि वा पै २८

उत्तमश्लोकभगवत्तुम्हारेयशकौंमुखतेनिकस्योंतुम्हारेचरणारविंदमकरंदकोलेशताकौंलेग्रासंवधीजोपवन ग्रर्थात्तत्
छुश्रवणमात्रसोईस्मृत्योंहेतत्वमार्गजिनने ग्रेसेकुयोगीजिनकोफिरतत्वज्ञानविचरैहैं यातेभक्तनहूकेभक्तहोकेभ्रादि
कनहीवन्योंहमनोसारग्राहीतिनकौंग्रंतरभावहैयातें २५ हेमंगलकीर्तितिहारोमंगलरूपजोयशताहिसाधुनकेसंगमें
एकवारहूजोइच्छाकरसुनैहैं सोजोगुणज्ञहोइतोकैसेंविरामकोप्राप्तहोयएकपशुविना लक्ष्मीहूसवपुरुषार्थनकेसंग्रहकी

सउत्तमश्लोकमहन्मुखच्युतोभवत्पदांभोजसुधाकणानिलः स्मृतिंपुनर्विस्मततत्ववर्त्मनांकुयोगिनांनोवितर
त्यलंवरैः २५ यशःशिवंसुश्रवग्रार्यसंगमेंयदृच्छयाचोपशृणोतितेसकृत् कथंगुणज्ञोविरमेद्विनापशुंश्रीर्यत्प्र
वव्रेगुणसंग्रहेच्छया २६ ग्रथाभजेत्वाखिलपूरुषोत्तमंगुणालयंपद्मकरेवलालसः ग्रप्यावयोरेकपतिस्पृधोः
कलिर्नस्यात्कृतत्वच्चरणैकतानयोः २७ जगज्जनन्यांजगदीशवैशसंस्यादेवयत्कर्मणिनःसमीहितम् करोषि
फल्ग्वप्युरुदीनवत्सलः स्वएवधिष्ण्येभिरतस्यकिंतया २८ भजन्त्यथत्वामतएवसाधवोव्युदस्तमायागुणविभ्र
मोदयम् भवत्पदानुस्मरणादृतेसतांनिमित्तमन्यद्भगवन्नविद्महे २९

इच्छाकरजायसकौंग्रंतपरफरवरणीनकरतभई २६ यातेसवपुरुषनमेंउत्तमगुणनकौंस्थानतुमताहितलक्ष्मीकीसीनाई उ
तातुमकरभजनकरुंगो परंतुतपकौंरवैमेंजैसेंइहीनकेसाथकलहभई ग्रेसेंपतिमेंरैग्रनुरागजिनकी ग्रेसोमेंग्रोरलक्ष्मीतिन
मेंतिनमेंकहाकलहनहोइगी ग्रोरजोकहोमेग्रपनेग्रपनेसमयमेंसेवाकरवेमेनहीहोइगी परंतुतिनमेंकलहहोयगो२७
परंतुकलहहोइतोहोमेहहमजगि ग्रोरजगजननीलक्ष्मीतामेंविरोधहोइगो जाकर्ममेंहमारीइच्छाहोइहै तथापिजैसेंइन्द्रकोवि
रोधमेंमैनेयज्ञपातकीयो ग्रेसेकबहूकरुंगो जोभक्तनकौंथोरहूगुणताईवहोतग्रदरमानैहैं २८

भा॰च॰ ५३

सोग्रादिराजाएथुहाथजोरेंजोरेंग्रांसूनेत्रनमेंभरलायें सोहरिकीग्रस्तुतिकरवेकौंसमर्थनहीभयो ग्रोरुग्रांसूनकरध्यानकरकरछ
वोलनकौंचुपहोइहृदयमेंहरिकौधारणकरतभयो २० याकेपीछेंग्रांसूपोछिग्रतृप्तनेत्रनकौविशेषभूतभगवानग्रोरदेवता
पांउनरपृथ्वीकौस्पर्शकीनहैंरहै २१ परंतुहरिकृपाकरिवसतोहनहीनेंथीगे ग्रापेकोपापभरपृथ्वीकौस्पर्शकरतनहीं तोउगरुडके
कंउठलेउठकेंउचेकांधेपैराख्योहैहाथजिननें नापथुत्तोराजाएथुयतवोल्यो २२ हेप्रभोवरदेनवारेनमेंईश्वरजोतुमतातेदेहा

ग्रथावसज्याञ्जुकलाविलोकयन्नतृप्तदृग्गोचरमाहपूरुषं यदास्पृशंतंक्षितिमंसउन्नतेविन्यस्तहस्ताग्रमुरंगविद्वि
षः २२ पृथुरुवाच वरान्विभोत्वद्वरदेश्वराद्बुधः कथंवृणीतेगुणविक्रियात्मनाः येनारकाणामपिसंतिदेहिनांता
नीशकैवल्यपतेवृणेनच २३ नकामयेनाथतदप्यहंक्वचिन्नयत्रयुष्मच्चरणांबुजासवः महत्तमांतर्हृदया
न्मुखाच्युतोविधत्स्वकर्णायुतमेषमेवरः २४

भिमानीनकेभोगविषयतिनैं विवेकीकैसैंमागेगो ग्रोरजोमागैतोविवेकीहीननोविषैनारकीजीवग्रनुभवतिनहूकैं
होहैं तातेहेकैवल्यपतेउनेमैंनहीमांगहूं २३ ग्रोरजोतुमयहग्रासंकाकरोगेजोमोक्षमांगेगोसोउनहीचाहोहौं संतनकेश्रेष्ठ
तरहृदयसोमुखद्वाराहैंनिकरौ ग्रेसोतुम्हारोयशकौंश्रवणादिकसुख जामेंसोमागूंहूं मोक्षहूकौमैंनहीमांगहूं
तातेहेप्रभोतुम्हारेयशश्रवणकेलियेंदशहजारकानदेहुयहीमेरोवरहै २४

हे राजा नकूं प्रजाकौ पालन ही श्रेष्ठ है जो राजा पालन करै है सो परलोक मैं प्रजान कौ पुन्यता मै ते छटौं अंश पावै है और जो पालन न करै तौ प्रजानै हरी है धन्य जाको ऐसो कर कौ ही लेन वारौ राजा प्रजान कौ पाप ताहि भोगै है १४ ऐसे ब्राह्मनान के संमत परंपरा प्राप्ति जो धर्म सो ई है मुख्य जाकै और प्रसंगी कहै अर्थ काम जाके और धर्मादि कन हू मै अनासक्त अनुरक्त हैं लोक जामै १५ हे मान वैं ह तमो ते कछु वर मांग मैं ते मैं गुणशील करि वस करूं हूं मैं यज्ञ तप जोग इन करि सुलभ नही हूं जिन के समान चि

एवंद्विजाग्र्याऽनुमतानुवृत्त धर्मप्रधानोऽन्यतमोऽवितास्याः ह्रस्वेन कालेन गृहोपयातान् द्रष्टासि सिद्धाननुरक्तलोकाः १५ वरं च मत्कंचन मानवेन्द्र वृणीष्व तेऽहं गुणशीलयंत्रितः नाहं मखैर्वै सुलभस्तपोभिर्योगेन वा यत्समचित्तवर्ती १६ मैत्रेय उवाच स इत्थं लोकगुरुणा विष्वक्सेनेन विश्वजित् अनुशासित आदेशं शिरसा जगृहे हरेः १७ स्पृशंतं पादयोः प्रेम्णा व्रीडितं स्वेन कर्मणा शतक्रतुं परिष्वज्य विद्वेषं विससर्ज ह १८ भगवानथ विश्वात्मा पृथुनोपहृतार्हणः समुज्जिहानया भक्त्या गृहीतचरणांबुजः १९ प्रस्थानाभिमुखोऽप्येनमनुग्रहविलंबितः पश्यन्पद्मपलाशाक्षो न प्रतस्थे सुहृत्सतां १९ स आदिराजो रचितांजलिर्हरिं विलोकितुं नाशकदश्रुलोचनः न किंचनोवाच च बाष्पविक्लवो हृद्युपगृह्यामुमधाद्व्यवस्थितं २०

तामिन ही मै मै वश्य वौ करूं हूं १६ मैत्रेयजी कहै हैं हे विदुर ऐसे लोकन के गुरू भगवान न जो श्राज्ञा दई ताइ राजा पृथु शिर करि ग्रहण करत भयौ १७ पाउन मै प्रेम करि स्पर्श करत और खोटा जो तासौं लाजमें करि लाज्जि त जो इन्द्र ताहि प्रस्नेह करि आलिंगन करि द्वेषा कौ त्याग करत भयौ १८ पृथु नें अर्पण कीयौ है पूजन जिनकूं और बडी भक्ति ताकरि ग्रहण करे हैं चरणारविंद जानैं ऐसे साधन के हित कारी कमलदललोचन भगवान अन्य रहकरि वैकुंठ कौ जात भये २०

यह आत्मा एक ब्रह्म स्वप्रकाश निर्गुण कौं आश्रै सर्व व्यापक आवरण रहित साक्षी देहादिसंबंधि रहित ऐसो है ७ ऐसे देह मै स्थित आत्मा ताय जो पुरुष जानै है सो देह मै स्थित है परंतु देह विकारन करि नहीं प्राप्ति होवै है ब्रह्म ही मैं स्थित है ८ हे राजन जो कोई निःकाम होइ श्रद्धा युक्त होइ स्वधर्म करि मोहि भजै ता कौ मन हे राजन प्रसन्न होइ है ९ जब प्रसन्न मन होवै तब त्यागे हैं गुण जानैं ऐसो समदर्शी होइ है तब शांत स्वरूप संम्यक उदासीन ताकौ कर इ स्थित भयो केवल ब्रह्मता य प्राप्ति होहै १० वही आत्मा देह ज्ञान कर्म इंद्रिन कौ

एकः शुद्धः स्वयंज्योतिर्निर्गुणोऽसौ गुणाश्रयः सर्वगोऽनावृतः साक्षी निरात्मात्मात्मनः परः ७ य एवं संतमात्मानमात्मस्थं वेद पूरुषः नाज्यते प्रकृतिस्थोऽपि तद्गुणैः स मयि स्थितः ८ यः स्वधर्मेण मां नित्यं निराशीः श्रद्धयान्वितः भजते शनकैस्तस्य मनो राजन्प्रसीदति ९ परित्यक्तगुणः सम्यग्दर्शनो विशदाशयः शांतिं मे समवस्थानं ब्रह्मकैवल्यमश्नुते १० उदासीनमिवाध्यक्षं द्रव्यज्ञानक्रियात्मनां कूटस्थमिममात्मानं यो वेदाप्नोति शोभनं ११ भिन्नस्य लिंगस्य गुणप्रवाहो द्रव्यक्रियाकारकचेतनात्मनः दृष्टासु संपत्सु विपत्सु सूरयो न विक्रियंते मयि बद्धसौहृदाः १२ समः समानोत्तममध्यमाधमः सुखे च दुःखे च जितेंद्रियाशयः मयोपक्लृप्ताखिललोकसंयुतो विधत्स्व वीराखिललोकरक्षणं १३ श्रेयः प्रजापालनमेव राज्ञो यत्सांपराये सुकृतात् षष्ठमंशं हर्तान्यथा हृतपुण्यः प्रजानामरक्षिता करहारोऽघमत्ति १४

अध्यक्ष की सी नाई स्थित ताय जो जानै सो कल्याण कौं प्राप्ति होहै ११ आत्मा तैं भिन्न द्रव्य क्रिया कारक चेतनात्मक लिंग देह ताय वह संसार है आत्मा को नहीं जानैं जो विवेकी मो मैं जिन नें स्नेह बांधो है ते दृषि जो संपत्य मैं और विपत्यमें विकार कों नही प्राप्ति होहैं १२ तू विवेकी हे राजा याते सुख दुःख मै समान है उत्तम मध्यम अधम जाकै नहीं जीती है इंद्री और आसा जानै ऐसो तू मैने रचे जे सब लोक अनादिक तिनकी है वीर तू लोकन की रक्षा कर १४

करो है अब न्हतस्नान जाने बडो है कर्म जाको असे पृथु बडो है यस जिनको तिनके यज्ञमें तपसे देवता तेवर देत भए ४०
श्रद्धा कर पाई है दक्षिणा जिनने असे ब्राह्मण सत्य जिनके वाक्य ते राजा पृथु के अर्थ अनेक आसीर्वाद देत भए ४१ हे महाबाहु
हो तुमने हम बुलाये तुम्हारे यज्ञ में सब प्रकार पितर देवता ऋषि मनुष्य तिनको भलो सन्मान तुमने करो असे संतुष्ट होई
सब कहत भए ४२ इति श्री भागवते चतुर्थस्कंधे एकोनविंशोध्याय: १९ मैत्रेय कहे है हे विदुर भगवान् वैकुंठनाथ यज्ञपति इंद्र को

कृत्वावभृथस्नानाय पृथवे भूरिकर्मणे वरान्ददुस्ते वरदा ये तद्बर्हिषि तर्पिता ४० विप्रा: सत्याशिष: तुष्टा: श्रद्धया लब्धदक्षि-
णा आशिषो युयुजु: क्षत्तरादिराजाय सत्कृता ४१ त्वयाहूता महाबाहो सर्व एव समागता पूजिता दानमानाभ्यां पितृदेवर्षि-
मानवा ४२ इति श्रीभागवते चतुर्थस्कंधे एकोनविंशोध्याय: १९ मैत्रेय उवाच: भगवानपि वैकुंठ: साकं मघवता विभु: य
ज्ञैर्यज्ञपति: तुष्टो यज्ञभुक् तमभाषत: १ भगवानुवाच: एष तेकारषीद्भंगं हयमेधशतस्य ह क्षमापयत आत्मानममु
ष्य क्षंतुमर्हसि: २ सुधिय: साधवो लोके नरदेव नरोत्तमा: नाभिद्रुह्यंति भूतेभ्यो यर्हि नात्मा कलेवरं ३ अत: कायमिमं वि
द्वानविद्याकामकर्मभि: आरब्ध इति नैवास्मिन्प्रतिबुद्धोनुषज्जते ५ असंसक्त: शरीरेस्मिन्नमुनोत्पादिते गृहे अपत्ये द्रवि
णे वापि क: कुर्यान्ममतां बुध: ६

करसहित यज्ञभोक्ता यज्ञन कर प्रसन्न होइ राजा पृथु सों यह बोले १ हे राजन् यह इंद्र तेरे सौ १०० पे अश्वमेधयज्ञको भंग करत भयो
सो अपराध क्षमा करावे है तुम अपराध क्षमा करवे कूं योग्य हो २ हे राजन् जो कोई लोक में सुबुद्धि साधु हैं ते प्राणी मात्र सों द्रोह नहीं करें और जो तुम सारके ही पुरुष देवमाया कर मोहित होइ गये तो
देहै जो यह देह आत्मा नहीं याते या के अभिमान कर प्राणीन में द्रोह करें हैं ऐसे जो कोई जाने ते आत्मा सो या में अभिमान कि
वडो वृद्धसेवा करके केवल श्रम ही भयो ४ याते अविद्या काम कर्मन कर व्याप्त यह सरीर ऐसे जो कोई ... या में ममता करे गो ६

५

भा॰ च॰
५१

अपनी आत्मा जो ईश्वर ताके अर्थ जो कछु कर वे कूं जो पन नहीं हैं तुम होउ ही उत्तम श्लोक कौ स्वरूप हौ ३३ तो ह यह समाप्त को ध्यान करत जो
राजा तासों यो बोलो हे भरत राजा या विधि में चिंता मत करो और प्रीतियुक्त होइ यह तुम्हारो वचन सुनो तातें देव रहत जो कार्य ताय
चिंत मन करत जो मनुष्य ताकौ अति ... जो मन ... में प्रवेश करें हैं शांति को नहीं प्राप्त होहे ३४ ताते यह तुम्हारो
यज्ञ पूरण होउ और जो कहो इंद्र को मनें करो तो हे वत्स तान में बडो दुराग्रह हो है मानें नहीं जो तुम्हारे यज्ञ में इंद्र के करे पाषंड और धर्मको

पृथु की प्रियधीं नृपा तहे कोन शान् क्रतु: अलं ते क्रतुभि: स्विष्टैर्यद्भवान्मोक्षधर्मवित् ३३ नैवात्मने महेंद्राय रोषमाहर्तुमर्हसि
उभावपि हि भद्रं ते उत्तमश्लोकविग्रहौ ३४ मास्मिन्महाराज कृथा: स्म चिंतां निशामयास्मद्वच आदृतात्मा यद्ध्यायतो दैव ह
तं नु कर्तुं मनोति रुष्टं विशते तमोंधं ३५ क्रतुर्विरमतामेष देवेषु दुरवग्रह: धर्मव्यतिकरो यत्र पाषंडैरिंद्रनिर्मितै: ३६ ए
भिरिंद्रोपसंसृष्टै: पाषंडैर्हारिभिर्जनं ह्रियमाणं विचक्ष्वैनं यस्ते यज्ञध्रुगश्वमुट् ३७ भवान्परित्रातुमिहावतीर्णो धर्मं जनानां स
मयानुरूपं वेणापचारादवलुप्तमद्य तद्देहतो विष्णुकलासि वैण्य ३८ स त्वं विमृश्यास्य भवं प्रजापते संकल्पनं विश्वसृजां
पिपीपृहि इंद्रीं च मायामुपधर्ममातरं प्रचंडपाखंडपथं प्रभो जहि ३९ मैत्रेय उवाच: इत्थं स लोकगुरुणा समादिष्टो विशां
पति तथा च कृत्वा वात्सल्यं मघोनापि च संदधे ३८

नासलो है ३५ जे इंद्र ने सृजे चित्त के आकर्षक पाखंड तिन कर या जग में हरो जानि जो इंद्र तेरे यज्ञको द्रोही घोडा चुरायवेवारो तातें
ये पाखंड सृजे हैं देखहु राग्रत ३६ नाना नाना स्वरूप के स्वरूप जो धर्म ताइ रक्षा करवे कूं तुम अवतीर्ण भए हो जो धर्म वेणके
अन्याय ते नष्ट भयो ताकी रक्षा को वा की देह ते विष्णु की कला तुम भए हो ३७ हे प्रजापति सो तुम या विश्व को उद्भव विचार
जितनैं तुम सों यह इंद्र की माया उपधर्मन की जननी ताय नष्ट करो ३८ मैत्रेय जी कहे है हे विदुर या भांत लोकन के गुरु
ब्रह्माने जब आज्ञा दई तब यज्ञ को आग्रह छोड इंद्र सों स्नेह करत लाड करत भयो ३८

नहितजेन कपटकौंधारण और लोकधर्मकीसीजिनकी उपमाहैं औरप्रधर्मीतिनमें यहीधर्महैं ऐसें अज्ञानीनकी बुद्धिभ्रमजातिहै
है जेपापरूप धर्ममें रमण यह और घृ ककोजिनमेचातुर्यहै २५ बडोजाकोपराक्रम ऐसोजोपृथु यह इन्द्रकोपापजानके वाके मारिवे
कोंधनुष बाणलेतभयौ २६ इन्द्र केवधको अभिप्रायजानें औरदुःप्रेक्ष्य असह्यजाकोवेग ताराजाको ऋत्विजयौं निवारणकरतभये
अहोमहामति पापकर्ममें न योंजो यज्ञकोवधताविना औरकौवधकरवैनलोकहौंते २७ तुम्हारेकाजकोनासकरवेवारेतुम्हारे
यशतेहतहोगयेहैं तेजजाको इन्द्रकौं अभिचार बिना दोषवान् मंत्र ऐसे के लावतहैं और होमकरहैंगे जोइन्द्र तुम्हारौ वैरी हैजाते २८ ऐसें
कीर्तिकरनष्टजाकी कांतिताहि बडोजिनमें वीर्यऐसे वेदमंत्रकरतमहीं अग्निमें होमकरहैंगे

धर्मइत्युपधर्मेषु नग्नरक्तपटादिषु प्रायेणसज्जते भ्रांत्या पेशलेषु च वाग्मिषु २५ तदभिज्ञाय भगवान्पृथुः पृथुपराक्रमः
इंद्राय कुपितो बाणमादत्तोद्यतकार्मुकः २६ तमृत्विजः शक्रवधाभिसंधितं विचक्ष्य दुष्प्रेक्ष्यमसह्यरंहसं निवारयामासुरहो
महामते न युज्यतेऽत्रान्यवधः प्रचोदितात् २७ वयं मरुत्वंतमिहार्थनाशनं ह्वयामहे त्वच्छ्रवसा हतत्विषम् अयात
यामोपहवैरनंतरं प्रसह्य राजन् जुहवाम तेऽहितं २८ इत्यामंत्र्य क्रतुपतिं विदुरास्यर्त्विजो रुषा स्रुग्घस्तान् जुह्वतो
ऽभ्येत्य स्वयंभूः प्रत्यषेधत २९ न वध्यो भवतामिंद्रो यद्यज्ञो भगवत्तनुः यं जिघांसथ यज्ञेन यस्येष्टास्तनवः सुरा ३०
तदिदं पश्यत महद्धर्म्मव्यतिकरं द्विजाः इंद्रेणानुष्ठितं राज्ञः कर्म्मैतद्विजिघांसता ३१।३२

यज्ञकरु राजासौं आज्ञा मांगकर हे विदुर ऋत्विक रुष्टवा जिनके हाथमें ऐसे होमजो करैत्र तिनैं ब्रह्माआपके मनै
करतभयो २९ ताइन्द्रको तुमयज्ञकरमारोहौ औरयज्ञकरपूज्य देवताजाकी मूर्तिहै सोइन्द्र तुमकौ मारवेकैजोग्य नहीं याते
यज्ञनाथइन्द्र यह भगवान्ही कौ अवतारहै ३० हे द्विजहौं तुम देखोजो यह इन्द्रने अन्यावकरौ वडोपाखंडमार्ग रच्यौ यातेइन्द्र
तेमित्रता करलेउ नहीं फेर पाखंड रचैगो ३१ वडीहै कीर्ति जाकी ऐसे राजापृथु एकघाट सौ यज्ञ तेउ इन्द्रतें वडीकीर्ति पावें
गो फेर ब्रह्मा राजापृथुसौं बोले हे राजन् तू मोक्षधर्मकौ जानवेवारौहै यातेयज्ञनकर हठ कर्णको ३२

वधतें निवृत्त भयौं जोपृथु ताकरइन्द्रकेमारवेकौं फेर नेजकभयौं तायज्ञकेनासकरवेवारें देवतानमें नीच जोइन्द्र तेताहि मारि २५ ऐसें करी
यपृथुकौ पुत्र उत्ताय तो आकासमें जायजोइन्द्र ताकैपीछें ऐसें दौरो जैसेंहरणकेमारवेकौं जटायु दौरौ हौं १६ तवइन्द्र घोडा औरस्वरूप
अपनो ताकै अर्थ छोडचोरि अंतर्हितहोतभयौं तव पृथुकौ पुत्र अपने घोडाकूं लेपिताके यज्ञमें जातभयो १७ तापृथुके पुत्रको ऋषि
रणअद्भुत कर्म देख कर विजिताश्व यह नाम धरतभए १८ फिरवलइन्द्र नीच अंधकार रजकर स्वर्णकीजाकी वागडोर ऐसे घोडाकौं छि

वधान्निवृत्तं तं नूपो हतवन्नरचोदयत् जहियज्ञहनं तात महेंद्रं विबुधाधमं १५ एवं वैण्यसुतः प्रोक्तः स्त्वरमाणं विहायसा
अन्वद्रवदभिक्रुद्धो रावणं गृध्रराडिव १६ सोऽश्वं रूपं च तद्धित्वा तस्मा अंतर्हितः स्वराट् वीरः स्वपशुमादाय पितुर्यज्ञमुपेयि
वान् १७ तत्तस्य चाद्भुतं कर्म विचक्ष्य परमर्षयः नामधेयं ददुस्तस्मै विजिताश्व इति प्रभो १८ उपसृज्य तमस्तीव्रं जहा
राश्वं पुनर्हरिः चषालयूपतश्छन्नो हिरण्यरशनं विभुः १९ अत्रिः संदर्शयामास त्वरमाणं विहायसा कपालखट्
वांगधरं वीरो नैनमबाधत २० अत्रिणा चोदितस्तस्मै संदधे विशिखं रुषा सोऽश्वं रूपं च तद्धित्वा तस्थावंतर्हितः स्व
राट् २१ वीरश्चाश्वमुपादाय पितृयज्ञमथाव्रजत् तदवद्यं हरे रूपं जगृहुर्ज्ञानदुर्बला २२ यानि रूपाणि जगृहे इन्द्रो हय
जिहीर्षया तानि पापस्य चिन्हानि लिंगं खंडमिहोच्यते २३ एवं मिन्द्रे हरत्यश्वं वैण्ययज्ञजिघांसया तद्गृहीतविसृष्टेषु पाखंडेषु

पकरयज्ञमेंतें वागडोरसहितलैजातभयौं १९ फेरहूआकासमार्ग करजातजोइन्द्र कपालखट्वांगधरें ताकौ अत्रि देखतभयौ
परंतु पृथुपुत्र न मारतभयो २० अत्रिनेइन्द्रकेमारवे कूं पेरयौ पृथुपुत्र कोतवशर बाणनकेसंधानकरतभयो तवइन्द्र घोडा
औरस्वरूपछोडअंतरहितस्थितहोतभयौं २१ वह वीर अपनो घोडालेपिताके यज्ञमें जात भयौ सो वहनिंद्यजो इन्द्र कौ रूपताहि जे मौ
ऊज्ञानमें दुर्बल सोग्रहणकरतभए २२ तेपापकेचिन्हकहियेहैं ऐसे पृथुकेयज्ञनाशकरवेकोंलीये इन्द्रनेघोडाहरे सतेताइन्द्रनेजेगृह
णकरें और छोडे पाखंड जिनने तिनमें मनुष्यनकीबुद्धिभ्रमहोतिभई २५

सिद्धविद्याधर दैत्य दानव गुह्यकादिक सुनंद नंद जिन में मुख्य ऐसे हरि के पार्षद ५ कपिल नारद दत्तात्रेय सनकादिक योगेश्वर और हरि की सेवा में जिनकों उत्साह ऐसे भगवान् हरि के पीछे सब राजा पृथु के यज्ञ में जात भए ६ जहां यजमान राजा पृथु के यज्ञ में पृथ्वी गौरूप होइ कै सब कामना राजा की पूरण करत भई ७ यज्ञ में नदी सब दूध दही अन्न घृत इत्यादि रस तिनें बहावत भई बडे जिन के शरीर ऐसे वृक्ष मधु श्रवत भए ८ समुद्र रत्न समूहन को बाहर निकासत भए पर्वत रत्न प्रगट खान करत भए ९ चार प्रकार को अन्न भक्ष्य भोज्य चोष्य लेह्य ताय प्रगट करत भए और सब लोकपाल राजा को भेट देत भए ८ अधोक्षज है नाथ जाको ता पृथु को परम उदै जामें

सिद्धैर्विद्याधरैर्दैत्यैर्दानवैर्गुह्यकादिभिः सुनंदनंदप्रमुखैः पार्षदप्रवरैर्हरेः ५ कपिलो नारदो दत्तो योगेशाः सनकादयः तमन्वीयुर्भागवता ये च तत्सेवनोत्सुकाः ६ यत्र धर्मदुघा भूमिः सर्वकामदुघा सती दोग्धि स्माभीप्सितानर्थान्यजमानस्य भारत ७ ऊहुः सर्वरसान्नद्यः क्षीरदध्यन्नगोरसान् तरवो भूरिवर्ष्माणः प्रासूयंत मधुच्युतः ८ सिंधवो रत्ननिकरान्गिरयोन्नं चतुर्विधं उपायनमुपाजह्रुः सर्वे लोकाः सपालकाः ९ इति चाधोक्षजेशस्य पृथोस्तु परमोदयम् असूयन्भगवानिंद्रः प्रतिघातमचीकरत् १० चरमेणाश्वमेधेन यजमाने यजुष्पतिम् वैन्ये यज्ञपशुं स्पर्द्धन्नपोवाह तिरोहितः ११ तमत्रिर्भगवानैक्षत्त्वरमाणं विहायसा आमुक्तमिव पाखंडं योधर्मे धर्मविभ्रमः १२ अत्रिणा चोदितो हंतुं पृथुपुत्रो महारथः अन्वधावत संक्रुद्धस्तिष्ठ तिष्ठेति चाब्रवीत् १३ तं तादृशाकृतिं वीक्ष्य मेने धर्मं शरीरिणं जटिलं भस्मनाच्छन्नं तस्मै बाणं न मुंचति १४

ऐसो जो कर्म ता यज्ञ सू तिन्हें जो इंद्र सो विघ्न करत भयो १० निर्माण में यज्ञ तौ राजनै कीये परसों यो यज्ञ ता करिके इंद्र जा करे चाहे ऐसो जो कर्म ताय न सहत जो इंद्र सो विघ्न करत भयो ११ कवच ली सी नाई पाखंड वेष धर आकाश मार्ग घोडा ली ये जाय है ताय अत्रि ताने देख्यो ... करि घोडा हरत भयो ११ ... पृथु को पुत्र महारथी जो ... सर ... है याय अधर्म में धर्म है या में भ्रांत करै है १२ तब अत्रि इंद्र के मारवे कूं अत्रि ने प्रेरयो पृथु पुत्र महारथी जो ... करै है ... तिष्ठ तिष्ठ कहत दौरयो १३ तब पृथु को पुत्र जटा धरै भस्म करि वा सर ऐसी आकृति देख ताप धर्म धारी को के मारवे कूं सेरो और हाहो रहे ऐसे करत भयो १३

भा॰च॰
४८

याके अनंतर राजान के राजा महाराज पृथु प्रजान के आजीवका नू के देन वारे पिता की सी नाई जहां तहां प्रजान के रहवे के स्थान रचत भए ३० ग्राम रचे जिन में ब्राह्मण नै हाट बहु पुर जिन में हाट हवेली बडे बडे सहर जहां में है नाना प्रकार के गढ जे जल के पर्वतन के वन के प्रजान को गढ ऐसे गढ रचत भए अहीरन के रहवे की जगै घोष गायन के रहिवे के अर्थ ब्रज सेनान के रहवे के स्थान छिवर ग्राम खेट किसानन के ग्राम खर्वट पर्वतन की तरैटी के ग्राम इतने रचत भए ३१ राजा पृथु ते पहिले पुर ग्रामन की रचना न हुती जहां चाहत तहां रहती अकुतोभय प्रजा रहती राजा पृथु ने पुर और ग्रामन भी मयो दावो ही रे ३२

चूर्णयन्स्वधनुष्कोट्या गिरिकूटानि राजराट् भूमंडलमिदं वैन्यः प्रायश्चक्रे समं विभुः २९ अथास्मिन्भगवान्वैन्यः प्रजानां वृत्तिदः पिता निवासान्कल्पयांचक्रे तत्र तत्र यथार्हतः ३० ग्रामान्पुरः पत्तनानि दुर्गाणि विविधानि च घोषान्व्रजान्सशिबिरानाकरान्खेटखर्वटान् ३१ प्राक्पृथोरिह नैवैषा पुरग्रामादिकल्पना यथासुखं वसंति स्म तत्र तत्राकुतोभयाः ३२ इति श्रीभागवते चतुर्थस्कंधे अष्टादशोध्यायः १८ मैत्रेय उवाच अथादीक्षत राजा तु हयमेधशतेन सः ब्रह्मावर्ते मनोः क्षेत्रे यत्र प्राची सरस्वती १ तदभिप्रेत्य भगवान्कर्मातिशयमात्मनः शतक्रतुर्न ममृषे पृथोर्यज्ञमहोत्सवं २ यत्र यज्ञपतिः साक्षाद्भगवान्हरिरीश्वरः अन्वभूयत सर्वात्मा सर्वलोकगुरुः प्रभुः ३ अन्वितो ब्रह्मशर्वाभ्यां लोकपालैः सहानुगैः उपगीयमानो गंधर्वैर्मुनिभिश्चाप्सरोगणैः ४

इति श्री भागवते चतुर्थस्कंधे अष्टादशोध्यायः १८ मैत्रेयजी कहै है हे विदुर जा के अनंतर राजा पृथु ब्रह्मावर्त मनु क्षेत्र में जहां पूर्व वाहनी सरस्वती है तहां सौ १०० अश्वमेध यज्ञ की दीक्षा लेत भयो १ सो इंद्र आपने अतिशय राजा पृथु के कर्म जान करके तिन जो पृथु को यज्ञमहोत्सव ताइ न सहत भयो २ ता राजा पृथु के यज्ञ में साक्षात् यज्ञपति भगवान् हरि ईश्वर सर्वात्मा सब लोकन के गुरु प्रभु प्रत्यक्ष दिखाई देत भयो यह देख के इंद्र ने अति शाप भयो ३ ब्रह्मा महादेव करके अरु लोकपाल अनुगन सहित लोकपालन करके अरु गंधर्व मुनि अपसरान के गणन कर के गीयमान् जाकी कीर्ति ऐसे भगवान् पृथु के यज्ञ में ये सब आवत भए ४ दरैनम:

लाईश्वरके गुण सर्ग मायाकर मोहित है चित्त मार्ग जिनके तिन पुरुषन कर समर्थ नेलरि भक्ति तिनकी कोचे षितनहीं नायो जाहै
लोपरमेश्वर कौ कर्ता तेजान्योंजायगो ऐसे वीरनकेयश्रानढाईवेवारे हरि भक्ति ते हैं परमेश्वर रूप है तिनकों मेरो दंडोत है ३७ इति
श्रीभागवते चतुर्थस्कंधे सप्तदशो ध्यायः १७ ऐसे कोपकर फुरक्यो है अधर जाके ता पृथुकी प्रस्तुतिकर पृथ्वी पेरुभयमान मनको
स्थिरकर बोली १ हे प्रभो कोप शांत करो और मेरी विनती सुन्यो विवेकी सब औरतें सार लेहैं जैसे भौंरा कमलको सार लेत है
औरपेहन्नहींदेहै सब वस्तुगंध लेजात है २ यालोकमें परलोकमें सब पुरुषार्थनकी प्राप्ति अर्थ तत्वदर्शी मुनि उपाय देखे हैं अते

नूनं जनैरीहितमीश्वराणामस्मद्विधैस्तद्गुणसर्गमायया न ज्ञायते मोहितचित्तवर्त्मभिस्तेभ्योनवीरयशस्करेभ्य ३७
इतिश्रीभा० चतुर्थ० सप्तदशो० १७ मैत्रेयउवाच: इत्थंपृथुमभिष्टूयारुषाप्रस्फुरिताधरं पुनराहावनिर्भीता संस्तभ्यात्मा
मैत्रं नमात्मना १ संनियच्छाभिभो मन्युं निबोध श्रावितं च मे सर्वतः सारमादत्ते यथा मधुकरो बुधः २ अस्मिन्लोकेऽथ
वामुष्मिन्मुनिभिस्तत्वदर्शिभिः दृष्टायोगाः प्रयुक्ताश्च पुंसां श्रेयः प्रसिद्धये ३ तानातिष्ठति यः सम्यगुपायान्पूर्वदर्शितान्
अवरः श्रद्धयोपेत उपेयान्विंदतेञ्जसा ताननादृत्य योऽविद्वानर्थानारभते स्वयम् तस्य व्यभिचरन्त्यर्था आरब्धाश्च पुनः पुनः ४ पुरा
सृष्टा ह्योषधयो ब्रह्मणा या विशांपते भुज्यमाना मया दृष्टा असद्भिरधृतव्रतैः ५ अपालितानादृता च भवद्भिर्लोकपालकैः चोरी
भूतेऽथ लोकेऽहं यज्ञार्थेऽग्रसमोषधीः नूनं ता वीरुधः क्षीणा मयि कालेन भूयसा तत्र योगेन दृष्टेन भवानादातुमर्हसि ७

ध्यान करे हैं यालोकमें कृष्यादिक परलोकमें अग्निहोत्रादिक ३ जिन बडेनने देखाये उपायनमैं जो कोई अर्वाचीन श्रद्धायुक्त स्थित होहै
ताके वारंवार आरंभ कीये हू जे अर्थ नहीं सिद्धि होइ ४ जे ब्रह्माने पहले औषधी रची ते दुष्टनने भोग करी मैंने देखी और मोकूं तु
मसारखे लोकपालनने पालन कीयों और आदर कीयों और लोक चोरसरीखे होत भए तब मैं यज्ञके लीये औषधीनको ग्रहण कर
लई ६ सो वे औषधी मोमें बहुत काल करन क्षीण भई जीर्णताको प्राप्ति भई तामें जो उपाय होइ ताय कर वे कूं जोग्य हो ७ हरेनमः ॥

भा० च० ४१

जो विधाता तुमनें जीवनके रहवेकी जगै मेंरचीहूं जामेंमैं चतुर्धा भूतसमूहनको धारण हैं सोई तुम स्वतंत्र मोहि मारवेकों उद्यत भ
ए अब मैं और कौनकी शरण लउं ३० जो तुम पहले अनंत जो जीव विषई माया ताकर स्थावर जंगम जगतको सत भयो सोई तुम
मायाकर रक्षाकरउद्यत भए सो तुम धर्मपरायण अब मोहि मारवेकी कैसें इच्छा करो हो ३१ जा तुम्हारी दुर्धरष मायाकर विक्षिप्त जि
नके चित्त तिनकर तुम्हारी चेष्टित नहीं देखिये है जो तुम स्वतंत्र कर्ताको करत भए ब्रह्मा द्वारा स्थावर जंगम जगतको करावत भए

येनाहमात्मायतनं विनिर्मिता धात्रा यतोऽयं गुणसर्गसंग्रहः स एव मां हन्तुमुदायुधः स्वराट् उपस्थितोऽन्यं शरणं कमाश्रये ३०
स एतदादावसृजच्चराचरं स्वमाययात्माश्रययाऽवितर्क्यया तयैव सोऽयं किल गोप्तुमुद्यतः कथं नु मां धर्मपरो जिघांसति ३१
नूनं बतेशस्य समीहितं जनैस्तन्माययादुर्जययाकृतात्मभिः न लक्ष्यते यस्त्वकरोदकारयद्योऽनेक एकः परतश्च ई
श्वरः ३२ सर्गादि योऽस्यानुरुणद्धि शक्तिभिर्द्रव्यक्रियाकारकचेतनात्मभिः तस्मै समुन्नद्धनिरुद्धशक्तये नमः परस्मै पु
रुषाय वेधसे ३३ स वै भवानात्मविनिर्मितं जगद्भूतेन्द्रियान्तःकरणात्मकं विभो संस्थापयिष्यन्नज मां रसातलादभ्युज्जहारा
म्भसि आदिसूकरः ३४ अपामुपस्थे मयि नाव्यवस्थिताः प्रजा भवानद्य रिरक्षिषुः किल स वीरमूर्तिः समभूद्धराधरो यो मां पयस्यु
ग्रशरो जिघांससि ३५

जो तुम स्वतंत्र एक हो मायाकर अनेक हो ३३ महाभूत इंद्री देवता बुद्धि अहंकार इन्हें जो अपने शक्तिरूप इनकर या विश्वको
जन्म पालन नास करे हैं ऐसे भगवान् उत्कंठा निरुद्ध जाकी शक्ति ता परमपुरुषको दंडोत है ३२ हे अज जो तुम पाछें जे
तत्वोस्त भए सोई तुम अपनो रच्यौं जो भूत इंद्री अंतःकरणात्मक जो जगत ताके पालनके लीये आदिवाराह तुम
रसातलमें जाइ मोहि उद्धार करत भए ३४ जलके ऊपर मेंनाव सारीखी तामोमें स्थित प्रजा तिनें रक्षा करवे के लीये
वेई वाराह भगवान् तुम पृथुरूप होत भए सो तुम क्रोधकर अब मोहि मारवेकी इच्छा करो हो यह आश्चर्य है ३५ हरेनम ॥ ४१

जामे सव विश्व रहै है ऐसी मेदिनी कौ विदीर्ण कर अपने कौं और प्रजान कौं कैसें तल मैं राखौगे २१ राजकूं है ए पृथ्वी मेरी आ
ज्ञाते विमुख तूं तोहि मारूंगो जो यज्ञ मे भाग तौ लेले है और धान्यादिक नही देहै २२ जो गौ तृण भक्षण तौ नित्य भक्षण करे
और दूध न श्रवे ऐसी दुष्टता तो कूं या अपराध मे दंड देवो जोग्य है २३ सो पहले ब्रह्मा ने सृजे औषधी वीज ते तें अपने मे रो
के हैं तिनें तूं मेरी अवज्ञा कर मंदबुद्धिनी तूं नही छोडे है २४ क्षुधा कर व्याप्त दुखित जो प्रजा तिन को जो विलाप ताहि वाणन कर वि
दीर्ण जो तू ताके मांस कर पालन करूंगो २५ पुरुष स्त्री नपुंसक जो अधमी आपको वडो माने ऐसेन के वध मे राजन कौ दोष नही है २६

मा पिपराजन् राजयज्ञ विघ्नं प्रतिषतं आत्मने च प्रजा हेमां कथं मसि धात्स्यति २१ पृथुरुवाच: वसुधे त्वां वधिष्यामि मच्छा
सनपराङ्मुखीं भागं वर्हिषि या वृङ्क्ते न तनोति च नो वसु २२ यवसं जग्ध्यनुदिनं नैव दोग्ध्यौधसं पयः तस्यामेवं हि दुष्टायां
दंडो नात्र न शस्यते २३ त्वं खलौषधीवीजानि प्राक् सृष्टानि स्वयंभुवः न मुंचस्यात्मरुद्धानि मामवज्ञाय मंदधी २४ अमूषां क्षुत्परी
तानामार्तानां परिदेवितं शमयिष्यामि मद्बाणैर्भिन्नायास्तव मेदसा २५ पुमान्योषिदुत क्लीव आत्मसंभावनोऽधमः भूते
षु निरनुक्रोशो नृपाणां तद्वधोऽवधः २६ त्वां स्तब्धां दुर्मदां नीत्वा मायागां तिलशः शरैः आत्मयोगवलेनेमा धारयिष्याम्यहं प्रजा २७
एवं मन्युमयीं मूर्तिं कृतांतमिव विभ्रतं प्रणता प्रांजली प्राह मही संजातवेपथु २८ धरण्युवाच: नमः परस्मै पुरुषाय मायया
विन्यस्तनानातनवे गुणात्मने नमः स्वरूपानुभवेन निर्धुत द्रव्यक्रियाकारकविभ्रमोर्मये २९

नपुंसक है अरु दुर्मद है माया कर गौरूप धारण करे है ताहि अपने वाणन कर तिल २ काटि अपने योगवल कर इन प्रजान कौं
पालन करूंगो २७ ऐसे काल की नाई क्रोधरूप धारण करे राजा पृथु तो प्रति नम्र होइ कंपायमान होइ आई ऐसी पृथ्वी हाथ जो
रके वोली २८ हे राजन् माया कर रचे है नाना मूर्ति जाने ऐसे गुणात्मा परम पुरुष तुम ता तुम्हारे अर्थ दंडोत है और वास्त
व मे स्वरूप के अनुभव कर निरस्त है अहंकार जिन मे निमित्त ऐसो राग द्वेषादिक उर्मि जामें ता तुम्हें प्रणाम करे है २८ २९

सो राजा धनुष वाण ले मानो देव त्रिपुरारि की सी नाई पृथ्वी के मारवे कूं वाण संधान करत भयो १३ राजा कौं आयुध लिये देखि
भा० च०
४६
कंपायमान पृथ्वी गौ कौ रूप धरउर के मारे भाजी जैसें वधिक के डर के मारे मृगी भजे है १४ राजा पृथु क्रोध होइ अरुण जाके
नेत्र धनुष मे वाण लगाय जहां तहां पृथ्वी भाजी तहां तहां आप हू वाके पीछे भाजत भयो १५ सो पृथ्वी दिशा विदिशा स्वर्ग भूमि
इन को मध्य अंतरीक्ष इन मे धावत जहां तहां आयुध लीये पीछे राजा को देषत भई १६ ता राजा पृथु तें कहूं लोकन मे रक्षा

इति विवसितो वुध्या प्रग्रहीतसरासनः संदधे विषतं भूमे क्रुद्धस्त्रिपुरहा यथा १३ प्रवेपमाना धरणी निशाम्योद
युधं च तं गौः सत्यपाद्रवद्भीता मृगीव मृगयुद्रुता १४ तामन्वधावत्तद्वैन्यः कुपितोऽत्यरुणेक्षणः शरं धनुषि संधाय यत्र यत्र पलायते १५
सा दिशो विदिशो देवी रोदसी चांतरं तयो धावंती तत्र तत्रैनं ददर्शानूद्यतायुधं १६ लोके नाविंदत त्राणं वै
न्यान्मृत्योरिव प्रजाः त्रस्ता तदा निववृते हृदयेन विदूयता १७ उवाच च महाभाग धर्मज्ञापन्नवत्सल त्राहि मामपि
भूतानां पालनेऽवस्थितो भवान् १८ स त्वं जिघांससे कस्माद्दीनामकृतकिल्विषां अहनिष्यत्कथं योषां धर्मज्ञ
इति यो मत १९ प्रहरंति न वै स्त्रीषु कृतागःस्वपि जंतवः किमुत त्वद्विधा राजन् करुणा दीनवत्सला २०

त्राण प्राप्ति भई जैसे मृत्यु ते प्रजा रक्षा नही पावे है तव तो नम्र होय दुषित हृदय कर निवृत्त होत भई १७ और पृथु सो वोली
हे महाभाग हे धर्मज्ञ शरणागत वत्सल तुम मेरी हू रक्षा करौ आप प्रजान के पालन मे स्थित हो १८ सो तुम मैं दीन
निरअपराधनी ताहि कैसे मारोगे तुम धर्मज्ञ हो मेरी स्त्री जानि ताहि मेरो मारवो कैसे जोग्य है १९ कीये हैं अपराध जाने
ऐसी हू स्त्री कों प्राणी मात्र कोई संहार नही करे है सो तुम सरीखे करुणावान दीनवत्सल कैसें मोहि मारोगे २० हरेलक्ष ४६

औरतातैमैमक्तिअनुरागीतुम्हारो औरहरिकौ ताकेअर्थ कहिवेकौयोग्यहो औरहेमहाराजजोएथुरूपधरपाएथ्वीकौ दुहतभयोताको
यसकहो ७ सूतजीकहैहै हेसौनकादिकसैं ऐसेवासुदेवभगवानकीकथामैविदुरनैप्रेरमैत्रेयजी विदुरजीकीवडाईकरयहवोले ८
हेविदुरब्राह्मणाने एथुकोजवअभिषेककीयौ औरनृएथ्वीपालकहे ऐसेजवनिरूपनैकीये तवनिरंतरएथ्वीतलमैंक्षुधाकरसीण
जिनकेदेह ऐसीप्रजाआपकरअपनेपतिजोएथुतिनसौयेबोली ९ हेराजनहमजठराग्निकरतप्तहै जैसेरखोतरमेंस्थितजेअग्नि

मन्नपायमेऽन्तरग्नायत वचाधोभूजस्यच ववृतुर्मद्ददसियो दुह्या हैएथुरूपेणागामिमां ७ सूतउवाचः चोदितोविदुरेणैवंवा
सुदेवकथांप्रति प्रसस्तमंप्रीतमनामैत्रेयप्रतिभाषितः ८ मैत्रेयउवाचः यदाभिषिक्तः एथुरंगविप्रैरामंत्रितोजनतायाः
श्चपालः प्रजानिरन्नेक्षितिपृष्ठएत्य क्षुत्क्षामदेहाःपतिमभ्यवाच ९ वयंराजन्जाठरेणाभितप्तायथाग्निनाकोटरस्थे
नवृक्षाः त्वामाद्यपाताः शरणंशरण्यं यःसाधितोवृत्तिकरःपतिर्नः १० तन्नोभवानीहतुरातवेऽन्नंक्षुधार्दितानांनरदेव
देवा यावन्ननंक्ष्यामहउर्जितोर्जावार्तापतिस्त्वंकिललोकपाला ११ मैत्रेयउवाचः एथुःप्रजानांकरुणंनिशम्यपरिदेवि
तं दीर्घंदध्यौचकुरूद्वहनिमित्तंसोन्वपद्यत १२

ताकरदग्धभयेहोइहें सोतुमसरणागतिपालक तुम्हारीहमप्रजाहैं जोतुमब्राह्मणनैंमंत्रिकेहमरी आजीवकादेवेवा
रेपतिकहेहे १० तातेक्षुधाकरपीडितहमतिनकौतुमअन्नदेवेकोपालनकरो त्यागैहेसुखजिनैं ऐसेहमजुवताईनष्ट
नहीहोई तुमनीवकाकेपतिहो लोकपालकहे ११ ऐसैएथुराजाप्रजानकोदीनविलापसुनिके वहुतविचारिपातं
ईचितवनकरवामैहेतुजानतभयौ १२ एथ्वीनैंओषधीवीजग्रसेहेसोयापेतेलेनै ऐसेवुद्धिकरजैनै क्रोधकीयौ

भा॰च यदराजसौंअश्वमेधयज्ञकरेंगे जहांसरस्वतीप्रगटभईहै तहां तासौयज्ञमेंइंद्रघोडाहरलेजायगो यहअपनेघरकेवागमेंआयेजेसनतकुमार
४५ भगवान् तिनकीभक्तिकरआराधनाकरेंगे तिनतेंअच्छाज्ञानपावेंगो ज्ञानतेंपरब्रह्मकौप्राप्तिहोइगी २५ विख्यातहेपराक्रमजाको ऐसो
राजाएथु जहांतहांअपनीवडाईकीवासनासुनेगो २६ दिशानकौजीतकरहारोअप्रतिहतजाकीआज्ञा अपनेतेजकरजुधारेहेंलोकन
केकष्टकजानें सुरअसुरईश्वरादिकनकरगीयमानहै वडौप्रभावजाकौ राएथ्वीपतिहोइगो २७ इतिश्रीभागवतेचतुर्थे षोडशोध्याय १६
मैत्रेयजीकहैहै हेविदुर ऐसेंभगवानएथुकेगुणकरमेंवडाईकरैं तवउनसूतमागधनकीपूजाअभिवंधनकरसबकौमानकर

एषोश्वमेधान्शतमाजहार सरस्वतीप्रादुरभावयत्र अहार्षीद्यस्यहयंपुरंदरः शतक्रतुश्चरमेवर्त्तमाने २४ एषस्वसद्मोपवने
समेत्यशनत्कुमारंभगवंतमेकं आराध्यभक्त्यालभतामलंतज्ज्ञानंयतोब्रह्मपरंवदंति २५ तत्रतत्रगिरस्तास्ताइतिविश्रुतविक्र
मा श्रोष्यत्यात्माश्रिता गाथाः एथुःएथुपराक्रमाः २६ दिशोविजित्याप्रतिरुद्धचक्रः स्वतेजसोत्पाटितलोकशल्यः सुरासुरेंद्रैरुप
गीयमानामहानुभावोभवितापतिर्भुवः २७ इतिश्रीभाग॰ चतुर्थ॰ षोडशोध्याय १६ मैत्रेयउवाचः एवंसभगवान्वैण्यः
ख्यापितोगुणकर्मभिः छंदयामासतान्कामैः प्रतिपूज्याभिनंद्यच १ ब्राह्मणप्रमुखान्वर्णान्भृत्यामात्यपुरोधसः पौराञ्जानप
दान्श्रेणीः प्रकृतीःसमपूजयत २ विदुरउ॰ कस्माद्दधारगोरूपंधरित्रीवहुरूपिणी यांदुदोहएथुस्तत्र कोवत्सोदोहनंचकिं ३
प्रकृत्याविषमादेवीकृतातेनसमाकथं तस्यमेध्यंहयंदेवःकस्यहेतोरपाहरत ४ सनत्कुमाराद्भगवतोब्रह्मन्ब्रह्मविदुत्तमा
लब्ध्वाज्ञानंसविज्ञानंराजर्षिःकांगतिंगतः ५ यच्चान्यदपिकृष्णस्यभवान्भगवतःप्रभोः श्रवःसुश्रवसःपुण्यंपूर्वदेहकथाश्रयं ६

सेंतुषकरतभयौ १ ब्राह्मणजिनमैंमुख्य ऐसेंवर्णभृतमंत्रीपुरोहितपुरवासीदेशवासीतेलीतमोलीअष्टादशकारीसवनकौराजाएथुसन
मानकरतभयौ २ विदुरजीपूछैहै हेमैत्रेय वहुतजोहेरूपजाकौ ऐसीधरतीसोगोरूपधरतभईजायकाजाएथुदुहतभयौ ताकौवछराकौनऔर
दुहनवारोकौन ३ स्वभावकरविसमयएथ्वी तानेसमानकैसेंकरी औरयाजकौपवित्रघोडाजाकौ कौनहरतभयौ ४ हेब्रह्मन्सनत्कुमार
भगवानब्रह्मवेत्तानमैउत्तमतातेंज्ञानविज्ञानपाइकेराजऋषिएथुमहाराजकौनगतिकौप्राप्तिभएसोमेरेआगेंकहो ५ औरश्रीकृष्णभगवा

इठ जाको संकल्प सत्य जाकी प्रतिज्ञा ब्राह्मण दृढ़न को सेवक शरणागतिपालक सब प्राणीन कौ मान देवैवारो दीनन में जाको वत्सल्य ऐसो होयगो १६ और पराई स्त्रीन में माता की सी नाई जाकी बुद्धि और अपनी स्त्री में जाको रूपने प्रधर्षत की सी प्रीत प्रजान में पिता की सी नाई जा को स्नेह और दुष्टान को तो निग्रह करे होइगो १७ दृढ़ धारीन को आत्मा की सी नाई प्यारो सुहृदन को आनंद वढ़ावैवारो और मनसंगन में हैम संगजा को असाधुन को अपराधन देष सकैगो उनकूं यमराज की सी नाई दंड दाता होइगो १८ सरको सान्त भागवान् विष्णु ति लो की कौ ईस निर्विकार आत्मा कला कर अवतीर्ण भयाते जा विषे प्रतीत है होइ नाना तत्वादिक विवेकी अ

इढ़व्रत सत्य संधो ब्रह्मण्यो वृद्धसेवकः शरण्य सर्वभूतानां मानदो दीनवत्सलः १६ मातृवत्परस्त्रीषु पत्न्यामर्द्ध इवात्मनः प्रजासु पितृवत्स्निग्धः किंकरो ब्रह्मवादिनां १७ देहिनामात्मवत्प्रेष्ठः सुहृदानंदवर्द्धनः मुक्तसंग प्रसंगोयं दंडपाणिरसाधुषु १८ अयं तु साक्षाद्भगवांस्त्र्यधीशः कूटस्थ आत्मा कलयावतीर्णः यस्मिन्नविद्यारचितं निरर्थकं पश्यंति नानात्वमपि प्रतीतं १९ अयं भुवो मंडलमोदयाद्रेर्गोप्तैकवीरो नरदेवनाथः आस्थाय जैत्रं रथमात्तचापः पर्यस्यते दक्षिणतो यथार्कः २० अस्मै नृपालाः किल तत्र तत्र बलिं हरिष्यंति सलोकपालाः मंस्यंत एषां स्त्रिय आदिराजं चक्रायुधं तद्यश उद्धरंत्यः २१ अयं महीं गां दुदुहेऽधिराजः प्रजापतिर्वृत्तिकरः प्रजानां यो लीलयाद्रीन् स्वशरासकोट्या भिंदन् समां गामकरोद्यथेंद्रः २२ विस्फूर्जयन्नाजगवं धनुः स्वयं यदाचरत्क्ष्मामविषह्यमाजौ तदा निलिल्युर्दिशि दिश्यसंतो लांगूलमुद्यम्य यथा मृगेंद्रः २३

विद्यारचित अर्थ शून्य देखैंहैं १९ यह राजान में शिरोमणि उदयाचल पर्यंत पृथ्वी मंडली कर रक्षा करैगो और यजनशील रथ में बैठ धनुष लै सूर्य की सी नाई पृथ्वी की प्रदक्षिणा करैगो २० याकै राजा जहां तहां लोकपालन सहित भेट देहंगे उनकी स्त्रीया एथ कौ चक्रायुधमानिके यश की गान करैगी २१ यह प्रजान को पति वृत्त को देनवारो गो रूप पृथ्वी कूं दुहैगो जो लीला कर अपने धनुष की टंकोर कर इंद्र की सी नाई पर्वत विदीर्ण करत पृथ्वी को समाधान करैगो २२ जब अपने एक हाथ से धनुष टंकारत जैसे पूंछ उठाय पृथ्वी में सिंह डोलै है

४४

जैसे देश वशीन करैगो तब नरदेव रूप हरि कर्मो प्राप्ति कै प्राणजिन के ऐसी प्रजान को आपुती छिपकर दूर की सी नाईं रहावैगो १ अनुराग सहित जामें चितवनि सुंदर मंद हास्य सहित मनोहर ऐसो जो वदन सो ईश्वर में कोच क्षमा ताकूं रलोकन पूजि वावैगो २ नदीन को देवि जो प्रवेश निर्गम तो मार्ग जाको सिद्ध नरापह्लै अज्ञान देकार्य जाको जाको अनि प्राय काहू के जानिवे में नतो आवैरै स्वरदत्त दैवित जाको अनंत महात्म्य गुणन को एक स्थान विस जाके हृदय में ऐसो राजा पृथु वरुण की सी नाई सहतमानि है होइगो १० वैरीन को मन हरन पाप वेको अपार शत्रुन कर सादिवे कौ अथाक ऐसो पृथु वेन रूप अरु रुखीन में भयो अग्नि सरीकोरे निकट परेन दुरकी सी नाई पो

दुर्वर्षस्तेजसाग्नेरिवानंदहरोऽपि सन् हरिः प्राणप्रज्ञाप्रेषु रश्मिवदंतर्जनैरवत् ९ अंतर्बहिश्च भूतानां पश्यन् कर्माणि चारणैः उदासीन इवाध्यक्षो वायुरात्मेव देहिनां १२ नादंड्यं दंडयत्येष सुतमात्मद्विषामपि दंडयत्यात्मजमपि दंड्यं धर्मपथे स्थितः १३ अस्याप्रतिहतं चक्रं पृथोरामानसाचलात् वर्तते भगवानर्को यावत्तपति गोगणैः १४ रंजयिष्यति यल्लोकमयमात्मविचेष्टितैः अथामुमाहू राजानं मनोरंजनकैः प्रजाः १५

रुष कर पराभव करवे को असकहैं ११ गुप्त मत सन कर भीतर बाहिर सब प्राणीन के कर्म देष अपनी स्तुति निंदा में उदासीन की सी नाई वर्तैगो जैसे सब देहधारीन को अध्यक्ष आत्मभूत अविकारी आत्मा वायु ताकी सी नाई होवैगो १२ अरु धर्म मार्ग में स्थित राजा पृथु सो अपने वैरी हू को वे दारे और जो दंड के देवेलायक नहीं ताय दंड न देगो और जो अपनो पुत्र हू दंड देवेलायक ते तो वाहू है दंड देगो १३ और या पृथु की मानसोत्तर पर्वत लों आज्ञा अप्रतिहत होइगी भगवान् सूर्य जहां ताईं किरनन कर तपै है ऐसे तपैगो १४ यह अपने चरित्रन कर लोकन कूं प्रसन्न करैगो याहीते मनोरंजनते नाम कर यासी प्रजा राजा करैगे १५

४४

मैत्रेयजी कहते हैं ऐसें कहत जो राजा ताकी वाणी रूप अमृतके सेवन करकें प्रसन्न भये जिनके मन ऐसे गायक जे मुनिनके प्रेरे राजाकी स्तुति करत भये १ ओर
वतानमें श्रेष्ठ तुम माया करकें प्रगट भये हो तातें तुम्हारी महिमा वर्णन करवेमें हम समर्थ नहीं होइंगे उदारयाके पुस ऐसे हरिकी कलावतार हो
वेणुके अंगतें भये जे तुम तातें तुम्हारे पौरुषके कहिवेमें ब्रह्मादिकनकी हु बुद्धि भ्रमे हैं। जो समर्थ होतो वर्णन करवेमें समर्थ होइ २ हैतो वर्णन कू
असमर्थ तथापि उदारयाके प्रथा: ऐसो हरिको कलावतार राजा पृथु ताके कथामृत ते आधार पुत्र मुनीनने योगवल करकें हमारे हृदयमें
जैसे प्रेरो तैसें वडाई करवे लायक पृथुके चारित्र तिनें विस्तारें हैं ३ यह धर्मधारीनमें श्रेष्ठ धर्ममें लोकनको चलावत धर्ममर्यादानको

मैत्रेय उवाच: इति ब्रुवाणं नृपतिं गायका मुनिनोदिताः तुष्टुवुः तुष्टमनसास्तद्वागमृतसेवया १ नालं वयं ते महिमानुवर्णने
यो देववर्यो ऽवततार मायया वेनांगजातस्य च पौरुषाणि ते वाचस्पतीनामपि बभ्रमुर्धियः २ अथाप्युदारश्रवसः पृथोर्हरेः
कलावतारस्य कथामृतादृताः यथोपदेशं मुनिभिः प्रचोदिताः श्लाघ्यानि कर्माणि वयं वितन्महि ३ एष धर्मभृतां श्रेष्ठो लो
कं धर्मे ऽनुवर्तयन् गोप्ता च धर्मसेतूनां शास्ता तत्परिपंथिनां ४ एष वै लोकपालानां बिभर्त्येकस्तनौ तनूः कालेकाले यथा
भागं लोकयोरुभयोर्हितं ५ वसु काल उपादत्ते काले चायं विमुंचति समः सर्वेषु भूतेषु प्रतपन् सूर्यवद्विभुः ६ तितिक्षत्य
क्रमं वैन्य उपर्याक्रमतामपि भूतानां करुणः शश्वदार्तानां क्षितिवृत्तिमान् ७

रक्षक होइगो ओर कुमारगीनको सीखा देनवारो होइगो ४ यह अपनी देहमें लोकपालनकी मूर्तिनसमयमें धारन करैगो ओ
र पालन पोषणादि द्वारा दोउ लोकनको हित करैगो यज्ञादिकनकर स्वर्गको हित करैगो वृष्ट्यादिकन कर मनुष्यलोकको सुख करै
गो ५ सव प्राणीनमें समान सूर्यकी सीनाईं तपकरत लेवेके समय तो प्रजानतें धनलेइगो ओर दुर्भिक्षादिकनमें देइगो जैसे
सूर्य ग्रीष्ममें जलपीवे है ओर चार मासमें छोडे है ६ ओर जे जोउ मस्तकमें पाउ धरत हैं गो तिन हूको प्राणीनके अपराध
सहैगो आर्तनपे करुणा करेगो ओर यह पृथ्वीकी सीनाईं सवसहन सील होइगो। ७

म भा.व. ४३

समुद्रपर्वतनदीये रथकी वीथी हैं तें भए सूत मागधवंदीजन अस्तुति करवेकूं उद्यत भये तव सूतादिकनतें वडे प्रतापी राजा पृथु मेघवत्
वाणीतें हसिकें यह वोल्यो २१ हे सूत मागध वंदीजन हो मेरे गुणलोकनमें प्रसिद्ध होय तव मेरी स्तुति करियो अवही तो मेरे गुण लोकनमें
प्रसिद्ध नहीं हैं सो कहा आश्रय लेमेरी अस्तुति करोगे सो मोमें तिहारी वाणी झूठी मति होउ २२ तातें कालांतरमें हमारे पाराक्रमते गुण
को गाईयो ओर वुद्धधाती हरिके गुणनवादनके होतें जे सभ्य ते आधीन स्तुतिन तौ करामें हैं २३ जो जो वडे गुणनकों अपनेमें करवे
कूं समर्थ है हे तो उपहले ही असतनेतिगुणतिनेस भावना मात्र करिकें स्तुति कराउगो वडाई करवे वारे कहे हैं अब परसात्मा

सिंह्यवः पर्वतानघोरथवीथीर्महात्मनः सूतोथ मागधो वंदी तं तोतुं उपतस्थिरे २० तावत् तान्स्तानभिप्रेत्य पृथुर्वैन्य
प्रतापवान् मेघनिर्ह्रादया वाचा प्रहसन्निदमब्रवीत २१ पृथुरुवाच: भोः सूत हे मागध सौम्य वंदिन् लोकेधुनाऽस्य
पगुणास्य मेस्युात् किमाश्रयो मे स्तव एष योज्यता मा मय्यभूवन्वितथा गिरो वा २२ तस्मात्परोक्षेस्मदुपश्रुतान्य
लं करिष्यथ स्तोत्रमपीच्यवाचः सत्युत्तमश्लोकगुणानुवादे जुगुप्सितं न स्तवयंति सभ्याः २३ महद्गुणानात्मनि कर्तु
मीशः कः स्तावकैः स्तावयतेऽसतोपि तेऽस्याभविष्यन्निति विप्रलब्धो जनावहासं कुमतिर्न वेद २४ प्रभावो ह्यात्म
नः स्तत्रं जुगुप्सं त्यानि विश्रुताः ह्रीमंतः परमोदाराः पौरुषं वा विगर्हितं २५ वयं त्वविदिता लोके सूताद्यापि वरीमभि
कर्मभी कथमात्मानं गापयिष्याम बालवत् २६ इतिश्री भा० चतुर्थस्कंधे पृथुचरित्रे पंचदशोध्यायः १५

सकरैगो तव यामें विद्यादि गुणहोइंगे एसे वचना जाकी करी सो यह कुबुद्धिजन नहीं जानेहैं २४ ओर जेस भये हैं विख्या
त हे अपनी स्तुति को निंदा कर मानें हैं लज्जावान् उदार जैसे अपनी अस्तुति करवेमें विगर्हित जो आत्मणवतो
पौरुष ताहि निंदा करें हैं जैसे नहीं जो उचित अस्तुति ताय नहीं सुनें हैं २५ हे सूतादिकहो हमतो अवहीं श्रेष्ठ कर्मन करि
लोकनमें विदित नहीं यातें अपने कों वालककी सीनाईं कैसें वडाई कराये २६ इतिश्री भाग० चतुर्थ० पृथुचरित्रे पंचदशो० १५

68

69

43

आगे रेखांतर करके अविच्छिन्न चक्र सो पृथ्वी ऐसे नाम वेदवादी ब्राह्मण न करि सहित अभिषेक को आरंभ करत भए सब ओर तें जन अभिषेक की सामिग्री ला वत भए ११ नदी समुद्र पर्वत गौ खग मृग स्वर्ग पृथ्वी सब प्राणी या राजा को भेट ला वत भए १२ ऐसे अभिषेक राजा को पी सुंदर पाये वस्त्र सुंदर गहने पहरें रानी अर्ची कर सहित महाराज पृथु ऐसे सोभायमान होत भये मानो दूसरो अग्नि है १३ ता पृथु को धन कुबेर तो सो ने को सिंहासन देत भयो और वरुण चंद्रमा की सी जा की कांति जल जा में ते निर्झे ऐसो छत्र देत भयो १४ पवन दो चमर देत भयो धर्म

तस्याभिषिक्तं च क्रमेस सा परमेष्ठिनाः तस्याभिषेकमारब्धं ब्राह्मणैर्ब्रह्मवादिभिः १० अभिषेक वनि कामस्येऽभ्याजह्रुः सर्वतो जनाः सरित्समुद्रा गिरयो नागा गावः खगा मृगाः द्यौः क्षितिः सर्वभूतानि समाजह्रुरुपायनं १२ सोऽभिषिक्तो महाराजः सुवाससा स्वलंकृतः पत्न्यार्चिषालंकृतया विरेजेऽग्निरिवापरः १३ तस्मै जहार धनदो हैमं वीरवरासनं वरुणः सलिलस्रावमातपत्रं शशिप्रभं १४ वायुश्च वालव्यजने धर्मः कीर्तिमयीं स्रजं इंद्रः किरीटमुत्कृष्टं दंडं संयमनं यमः १५ ब्रह्मा ब्रह्ममयं वर्म भारती हारमुत्तमं हरिः सुदर्शनं चक्रं तत्पत्न्यव्याहतां श्रियं १६ दशचंद्रमसिं रुद्रः शतचंद्रं तथांबिका सोमोऽमृतमयानश्वांस्त्वष्टा रूपाश्रयं रथं १७ अग्निराजगवं चापं सूर्यो रश्मिमयानिषून् भूः पादुके योगमय्यौ द्यौः पुष्पावलिमन्वहं १८ नाट्यं सुगीतं वादित्रमंतर्धानं च खेचराः ऋषयः आशिषः सत्याः समुद्रः शंखमात्मजं १९

की निर्मल माला देत भयो इंद्र उत्कृष्ट मुकुट देत भयो यमराज सब को वस में करबे वारो दंड ताय देत भयो १५ ब्रह्मा सत्य उत्तम हार देत भई हरि सुदर्शन चक्र देत भए लक्ष्मी अक्षय संपत देत भई १६ जाके मस्तक में दश चंद्र ऐसे आकार की ऐसो खड्ग रुद्र देत भयो और शत चंद्र ढाल पार्वती देत भई चंद्रमा अमृतमय घोड़ा देत भयो त्वष्टा अति सुंदर रथ देत भयो १७ अग्नि धनुष और बेल न के सींग न कर रच्यो ऐसो धनुष देत भयो सूर्य किरणमय वाण देत भयो पृथ्वी योगमय खड़ाऊं देत भई आकाश प्रति करते जहां देत ताव लौं जाई ऐसे सो दिन दिन प्रति पुष्पन की आवली जहां रंजा हरे नत्तां वर्षावत भयो १८ आकास चारी गान गीत वादित्र अंतर्धान

ताके वंश में से तीनि पाद भए पर्वत वनन के रहवे वारे जाकारण कर यह उत्तम वेणु को पाप रहत भयो ताते वह निषाद होत भयो ४५ इति श्रीभागवते चतुर्थस्कंधे चतुर्दशोऽध्यायः १४ मैत्रेय जी हे विदुर या के अनंतर ये पुत्रजो भये तब अपुत्र जो राजा वेणु ता की देह जो ब्राह्मण न ने मथी ता में तें एक स्त्री और एक पुरुष होत भयो तिन दोनों न कूं भयो देख भगवत् कला जान परम संतुष्ट होय यह बोले वेद वादी ऋषी कहें हैं यह भुजा भुवनन के पालन ता रीभगवान की कला है और यह रानी लक्ष्मी की अनपायनी कला है यह पृथु नाम उरु यश राजा होयगो और राजा न में पहलो राजा यह है और खडोय सखी होयगो ४२ और यह जो देवी सुंदर दांता के हाले गुण को भूषण

तं तु तेव नत दीनं किंकरो मीति वादिनं निषीदेत्यब्रुवंस्तात स निषादस्ततोऽभवत् ४५ तस्य वंश्यास्तु नैषादा गिरिकाननगोचराः येनाहरज्जायमानो वेणकल्मषमुल्बणं ४६ इति श्रीभागवते चतुर्थस्कंधे पृथुचरित्रे चतुर्दशोऽध्यायः १४ मैत्रेय उवाचः अथ तस्य पुनर्विप्रैरपुत्रस्य महीपतेः बाहुभ्यां मथ्यमानाभ्यां मिथुनं समपद्यत १ तद्दृष्ट्वा मिथुनं जातमृषयो ब्रह्मवादिनः ऊचुः परमसंतुष्टा विदित्वा भगवत्कलां २ ऋषय ऊचुः एष विष्णोर्भगवतः कला भुवनपालिनी इयं च लक्ष्म्याः संभूतिः पुरुषस्यानपायिनी ३ अयं तु प्रथमो राज्ञां पुमान्प्रथयिता यशः पृथुर्नाम महाराजो भविष्यति पृथुश्रवाः ४ इयं च देवी सुदती गुणभूषणभूषणा अर्चिर्नाम वरारोहा पृथुमेवावरुंधती ५ एष साक्षाद्धरेरंशो जातो लोकरिरक्षया इयं च तत्परा हि श्रीरनुजज्ञेऽनपायिनी ६ प्रशंसंति स्म तं विप्रा गंधर्वप्रवरा जगुः मुमुचुः सुमनोधाराः सिद्धा नृत्यंति स्वःस्त्रियः ७ शंखतूर्यमृदंगाद्या नेदुर्दुंदुभयो दिवि तत्र सर्व उपाजग्मुर्देवर्षिपितृणां गणाः ८ ब्रह्मा जगद्गुरुर्देवैः सहासृत्य सुरेश्वरैः वैन्यस्य

रूप अर्चि नाम सुंदर पराजा की भार्जे सी ५ यह पृथु साक्षात् हरि को अंस लोकन की रक्षा कर वे कूं भयो है और जे हर परायण लक्ष्मी रानी अर्ची भई है ६ ता दिन ब्राह्मण स्तुति करत भए गंधर्व श्रेष्ठ गावत भए देवता फूलन की वर्षा करत भये देवतान की स्त्री अप्सरा नृत्य करत भई ७ शंख तूर्य मृदंग आदि स्वर्ग में बजेत भए तहां सब देवता ऋषि पितर न के गण आवत भए ८ ब्रह्मा जगत गुरु देवतान स हित आय के पृथु के हाथ में गदा को चिन्ह देख तारि

वाणीमनशरीरबुद्धिकरइनकर आचेर्णकरकीयोजोधर्मसोलोकनकूंसुखदेइहै और निष्कामनकोंमोक्षदेहै २५ यहजोतेराप्रजानकोपा
लनरूपधर्मसोमतिनष्टहोउ जाकेनष्टभयेतेराजऐश्वर्य्यतेभ्रष्टहोहै २६ हेराजन्दुष्टमंत्रीओरचोरादिकनतेयथासत्कर्मनेदले और
प्रजानकीरक्षाकरहै सोराजायालोकपरलोकमेंसुखपावैहै २७ याराजाकेदेशमेंपुरमेंभगवान्यज्ञपुरुष वर्णाश्रमीजननकरऔरस्व
धर्मकरपूज्जीयेहै ताराजापैभागवान्भूतभावनविश्वात्माप्रसन्नहोहै जोहरिजीआज्ञामेंचलैतिनये २८ जगतकेईश्वरनकेईश्वर
भगवान्प्रसन्नभएसंतेंदुर्लभकहाहै जाकोलोकऔरलोकपालसवभेदहैं २० सवलोकदेवतायज्ञकेपालक वेदत्रईमयद्रव्य

धर्मआचारताप्रसांवाहलनक्षापइन्द्रिभिः लोकाश्वविशोकान्वितरंतथानंतमसंभिनं २५ सतेमाविनसेधीराप्रजानोक्षेमल
क्षणं यस्मिन्विन्नेनृपतिरैश्वर्याद्यवरोहति २६ राजन्नसाध्वमात्येभ्यश्चोरादिभ्यःप्रजानृपः रक्षन्यथावलिंगृह्णन्इह
प्रेत्यचमोदते २७ यस्यराष्ट्रेपुरेचैवभगवान्यज्ञपूरुषः इज्यतेस्वेनधर्मेणजनैर्वर्णाश्रमान्वितैः २८ तस्यराज्ञोमहाराजभ
गवान्भूतभावना परितुष्यतिविश्वात्मातिष्ठतोनिजशासने २९ तस्मिंस्तुष्टेकिमप्राप्यंजगतामीश्वरेश्वरे लोकाःसपा
लाह्येतस्मैहरंतिवलिमादृताः २० तंसर्वलोकामरयज्ञसंग्रहंत्रयीमयंद्रव्यमयंतपोमयं यज्ञैर्विचित्रैर्यजतोभवायतेराजन्
स्वदेशानुरोद्धुमर्हसि २१ यज्ञेनयुष्मद्विषयेद्विजातिभिर्वितायमानेनसुराःकलाहरेः स्विष्टाःसुतुष्टाःप्रदिशंतिवांछि
तंतद्धेलनंनार्हसिवीरचेष्टितुं २२ वेनउवाचः वालिशावतयूयंवाअधर्मेधर्ममानिनः येवृत्तिदंपतिंहित्वाजारंपतिमुपासते २३

मय तपोमय भगवान्कौयज्ञनकरपूजततोदेवता देशवासीजनतिनैंअभ्युदयकेंदैवेगेजोयहो २१ तेरेदेसमेंब्राह्मणनकरकीयोजो
यज्ञतिनकरप्रसन्नभएजेदेवतातेसवहीहरिकीकलापूजनकरतुवारेनकेमनोरथसिद्धिकरैहै तातेहेवीरतउनदेवता
नकोअपमानकरवेकूंजोग्यनहीहै २२ इननैसुनिराजावेणवोल्यो हेब्राह्मणहोतुमअप्रज्ञानीहो अधर्मकैंमानोहोजोअपने
रक्षकोदेवेवारोमेंपतिताहिछोडकेंओरपतिकोसेवनकरौहो २३

भा॰च॰
४०

ऐसेमघमदकेंआधरौमहाउद्धुरखलनिरंकुस ताकीकीसीनाईरथमेंवैठद्वस्वर्गएपृथ्वीकोकपावत सवपृथ्वीमेंडोलतभयो ५ औरयमतिकरोहनम
तमरोहेब्राह्मणको ऐसेडोंडीपिटवाइदई धर्मकोमनेकरावतभयो ६ ऐसेमुनीश्वरदुराचारीवेणकूं कुचेष्टितदेख औरवाकरलोकनकूंदुःखी
देखसवमिलकृपाकरयहवोले ७ अहोहेदेखोलोकनकूंदोनोंओरतेदुखप्राप्तिभयो जैसेंऊपरनीचेतेप्रज्वलतनोकाष्ठताकेभीतरजोवैहै
तिनकूंजैसेदोनोंओरतेतापहोहै पहलेंतोचोरनतेंभयहो अवयातैंदुःखप्राप्तिभयो ८ यहतोराज्यलायकनहीहै अराजकेभयतेयेराज
कीयोहैसोयाहूतेअप्रथनहीं औरभयभयो कहोहेदूधपीनकेंकत्याणकैसेहोइ ९ जैसेसर्पकोंदूधप्यायवोवाहविषकोंहीववनकरैहै और

एवंमधांधउत्सिक्तोनिरंकुशइवद्विपः पर्यटनरथमास्थायकंपयन्निवरोदसी ५ नयष्टव्यंनदातव्यंनहोतव्यंद्विजाःक्वचित् इतिनि
वारयद्धर्मभेरीघोषेणसर्वतः ६ वेनस्यावेक्ष्यमुनयोदुर्वृत्तस्यविचेष्टितं विमृश्यलोकव्यसनंकृपयोचुःस्मसत्रिणः ७ अहोउ
भयताप्राप्तंलोकस्यव्यसनंमहत् दारुण्युभयतोदीप्तेइवतस्करपालयोः ८ अराजकभयादेषकृतोराजातदर्हणः ततोप्यासी
द्भयंत्वद्यकथंस्यात्स्वस्तिदेहिनां ९ अहेरिवपयःपोषःपोषकस्याप्यनर्थभृत् वेनःप्रकृत्यैवखलःसुनीथागर्भसंभवः १० निरूपि
तःप्रजापालःसजिघांसतिवैप्रजाः तथापिसांत्वयेमामुंनास्मांस्तत्पातकंस्पृशेत् ११ तद्विद्वद्भिरसद्वृत्तोवेनोऽस्माभिःकृतोनृपः
यततोपिदिनोवाचंनग्लीष्यस्यधर्मकृत १२ लोकधिकारसंदग्धंदहिष्यामःस्वतेजसा एवमध्यवसायैनंमुनयोगूढमन्यवः १३
उपव्रज्याब्रुवन्वेनं सांत्वयित्वाथसामभिः मुनयऊचुः नृपवर्यनिबोधैतत्पतेविज्ञाययोसमो आयुःश्रीवलकीर्तीनांतविता

अनर्थहीकरैहै ऐसेहीवेणस्वभावहीकरदुष्टसुनीथाकेगर्भमेंभयो हमनेहीयहराजाकीयो अवहमहींसोंदुष्टतावरवेलग्यो १० हम
नेप्रजापालककीयो अवयहप्रजाहीनकोंमारेहै तोहयाहिसमझामेगेंजासोंयहपातकहमकोंनलगें ११ सोदुराचारीवेणहमनैरा
जाकीयोहै सोहमसमझामेंगे औरजोअधर्मीसमुझायेपैनमानैगो तोलोकधिक्कारकरजरहीरह्योहै तायहमअपनेतेजतेजरायदेंगें
१२ ऐसेनिश्चयकरक्रोधीभयोजिनकेंक्रोध ऐसेमुनिवेणकेपासजाय प्रियवचनयहवोले १३ हेराजानमेंश्रेष्ठजोहमतोतेविनतीकरैहै

ऐसे राजा अंगपुत्र के दुःख तें घर सों निरवेद ह्वै बडी सी मूर्छा न कौं जामें उदय ऐसे घर तें आधी रात उठि निकसि राजा कौं आईं नरी और कोसैं जातें लख्यो न रही स्त्री सुनी थाको सोवती छोडि कें घर तें निकस जात भयो ४७ निरवेद लैंकें राजा गयो ऐसे जान सब प्रजा पुरोहित मंत्री सुहृद्गण अतिशोक कर के व्याकुल राजा कों पृथ्वी में ढूंढत भए कैसें जैसें निगूढ जो पुरुष नायक योगी ढूंढें हैं ऐसे राजा कों सब ढूंढत भए ४८ राजा की पदवी न पाई उद्यम जिनको नष्ट भयो फेर के पुरी में आय के इकठे भये जे ऋषी तिन कें दरसन करत राजा नष्ट भयो घर तें सो पीअ्वरन के आगें सब प्रजा के सुनत निवेदन करत भए ४९ इति श्रीभागवते चतुर्थस्कंधे त्रयोदशोऽध्यायः १३ मैत्रेय जी कहै हैं

एवं स निर्विण्णमना नृपो गृहान्निशीथ उत्थाय महोदयोदयात् अलब्धनिद्रोऽनुपलक्षितो नृभिर्हित्वा गतो वेनसुवं प्रसुप्तां ४७ विज्ञाय निर्विद्य गतं पतीं प्रजाः पुरोहितामात्यसुहृद्गणादयः विचिक्युरुर्व्यामतिशोककातरा यथा निगूढं पुरुषं कुयोगि ना: ४८ अलक्षयंतः पदवीं प्रजापतेर्हतोद्यमाः प्रत्युपसृत्य ते पुरीं ऋषीन्समेतानभिवंद्य साश्रवो न्यवेदयन्पौरव भर्तृविप्लवं ४९ इति श्रीभागवते चतुर्थस्कंधे त्रयोदशोऽध्यायः १३ मैत्रेय उवाचः भृग्वादयस्ते मुनयो लोकानां क्षेमदर्शिनः गोप्तर्यसति ४९ [illegible] वीरमातरमाहूय सुनीथां ब्रह्मवादिनः प्रकृत्यसंमतं वेनमभ्यषिंचन्पतिं भुवः २ श्रु त्वा नृपासनगतं वेनमत्युग्रशासनं निलिल्युर्दस्यवः सद्यः सर्पत्रस्ता इवाखवः ३ स आरूढनृपस्थान उन्नद्धोऽष्टविभूतिभिः अवमेने महाभागान्स्तब्धः संभावितः स्वतः ४

तौ विदुर तें भृग्वादिक मुनी लोकन के क्षेम दर्शी मनुष्यन को पालन हारे राजा के न होन तें नष्ट भयो तब लोकन कों पशुन को सो चलन देख के वेण की माता सुनीथा ताय बुलाय के वेन भए और जो स्वभाव कर दुष्ट वेन हैं तिनको राजासन पै बैठाय ता ही को पृथ्वीपालन कों अभिषेक करत भयो कों और कोई तिन नहीं याते २ अति उग्र जा की आज्ञा ऐसे वेण कूं राज्यासन पै बैठो सुनि सब चोर जल तें ता छिप गये जैसें सर्प के डर तें मूषक छिप जोरें ३ पायो है राज्यासन ज्याने आठो लोकपाल न को ऐश्वर्य न रउन्मत्त [illegible] सो साधु और ब्राह्मण और महतजन तिन सब न की अवज्ञा करत भयो ४ श्रीकृष्णायनमो नमः

(प्रग) (सुनीथा)

भा० च० ३९

सो राजा ब्राह्मणन के अनुमत अंजली में वह पायस लें सूंघि प्रसन्न कर रानी कूं देत भयो ३७ सो रानी पुत्र कों उपजाय वे वारो वह चरु ताय भक्षण कर पति तें गर्भ धारण करत भई समै आये पै पुत्र उपजावत भई ३८ सो वह बालक अधर्म अंस में भयो जो को मृत्यु ने मृत्यु ने भए वाती जीवन हार भयो याते अधर्मी होत भयो ३९ समस्त आगा धनुष बाण ली ये वन में सिकार को जाइ दीन मृगन को मारे है ताय देखे के यह वेण आयो ऐसे लोग पुकारें हैं ४० क्रीडा स्थान में वरोबर के खेलत जो बालक तिन ने छिप कें वलातकार कर मारत भयो जैसे पशुन कूं मारे हैं ४१ ता पुत्र को दुष्ट देखे कें नाने वहे न प्रकार कर शिक्षा दंड कर समझायो परन्तु नीमानन तब पीत वराजा उदास होत भयो ४२

स विप्रानुमतो राजा गृहीत्वांजलिनौदनं अवघ्राय मुदा युक्तः प्रादात्पत्न्या उदारधी ३७ सा तत्पुंसवनं राज्ञी प्राश्य वै पत्युराददे गर्भं काल उपावृत्ते कुमारं सुषुवेऽप्रजा ३८ स बालएव पुरुषो मातामहमनुव्रतः अधर्मांशोद्भवं मृत्युं तेनाभवदधार्मिकः ३९ स शरासनमुद्यम्य मृगयुर्वनगोचरः हंत्यसाधुर्मृगान्दीनान्वेनोसावित्यरौज्जनः ४० आक्रीडे क्रीडतो बालान्वयस्यानतिदारुणः प्रसह्य निरनुक्रोशः पशुमारममारयत् ४१ तं विचक्ष्य खलं पुत्रं शासनैर्विविधैर्नृपः यदा न शासितुं कल्पो भृशमासीत्सुदुर्मनाः ४२ प्रायेणाभ्यर्चितो देवो येऽप्रजा गृहमेधिनः कदपत्यभृतं दुःखं येन विंदति दुर्भरं ४३ यतः पापीयसी कीर्तिरधर्मश्च महान्नृणां यतो विरोधः सर्वेषां यत आधिरनंतकः ४४ कस्तं प्रजापदेशं वै मोहबंधनमात्मनः पंडितो बहु मन्येत यदर्थाः क्लेशदा गृहाः ४५ कदपत्यं वरं मन्ये सदपत्याच्छुचां पदात् निर्विद्येत गृहान्मर्त्यो यत्क्लेशनिवहा गृहाः ४६

सो वेण सुत लखि कुपुत्र के निंदा वाक्य कहै हैं जिन गृहस्थन के लउकल रखे वारे नहीं तिनें हरि की वडी पूजा करी है जे कुत्सित पुत्र न कर भयो जो दुःख ताहि निवारता तिन नहीं जाने है ४३ जा जा कुपुत्र में मनुष्यन की पापीष्ठी कीर्ति होत है वडो अधर्म और सब न में विरोध होत है जातें अनंत मानसी व्यथा होय है ४४ सो नाम मात्र पुत्र है और अपनो तो मोह वंधन ताय पंडित वहुत कैसे माने जा निमित्त लें सब घर वे वारे घर होते हैं ४५ फेर राजा विचार के कहत है ऐसो जो सपुत्र शोक मको स्थान है ताते में कुपुत्र ही कों श्रेष्ठ माने हैं जा कुपुत्र तें मनुष्य निर्वेद पावै है जा कुपुत्र ते क्लेश पावता घर होते हैं ४६

३९

हे राजन शुद्ध हविर्विति हारे अग्रभागकरि देवतानकूं दीयो सो जिनकी सामर्थ्य ऐसे वेदहूं ब्राह्मणनें पढे २७ और देवतानकौ हमनें तनक हूं अप
राधनहीं करो जो कारमनतें सो सीदेवता मुनारे भागको नहीं गहन करें हैं २८ यह सम्निराजाअंग ब्राह्मणनके वचनसुनिकें उदास होई और यज्ञमें
मौनलीनो है परंतु सदस्यतिनकी आज्ञा लेवोल्यो २९ हे ब्राह्मण सो यज्ञमें बुलाये ब्राह्मण नहीं आमें हैं और सोमयाचनकौं नहीं ग्रहण करे हैं
सो कहो मैंने कहा अपराधकीयो है ३० तब ऋषि बोले हे नरदेव या जन्ममें तो तेरो कोई पाप नहीं है परंतु प्राकृत अपराध है जाते गृहस्थ हू है तउ
अरहित है याते देवता भाग नहीं लेहे ३१ याते जैसें देवता भाग लेसो तू पुत्र उपजाय और पुत्रकाम होइजो तू हरिको पूजनकरे गो तो यज्ञ

राजन् हविर्यूयं दुष्टा निग्रह्य या सादिता निचः छंदांस्ययातयामानि योजितानि धृतव्रतैः २७ नविहामेतदेवानां हेलनं वयमण्व
पि यज्ञकर्मसु हेलिना भागास्वन्तु देवाः कर्मसाक्षिणः २८ मैत्रेय उवाच अंगो द्विजवचः श्रुत्वा यजमानः सुदुर्मना तत्प्रष्टुं व्यसृजद्वाच
सदस्यान्सदस्यास्तदनुज्ञया २९ राजोवाच नागच्छंत्याहुता देवा न गृह्णंति ग्रहानिह सदसस्पतयो ब्रूत किमवद्यं मया कृतं ३० सदस्या ऊचुः
नरदेवेहभवतो नाघं तावन्मना कृतम् अस्त्येकं प्राक्तनमघं यदिहेदृक्त्वमप्रजः ३१ तथा साधय भद्रं ते आत्मानं सुप्रजं नृप
इष्टस्ते पुत्रकामस्य पुत्रं दास्यति यज्ञभुक् ३२ तथा स्वभागधेयानि ग्रहीष्यंति दिवौकसः यद्यज्ञपुरुषः साक्षादपत्याय हरिर्वृतः ३३ [ख॰ १६]
इति व्यवसिता विप्रास्तस्य राज्ञः प्र
जायते पुरोडाशं निरवपन् शिपिविष्टाय विष्णवे ३५ तस्मात्पुरुष उत्तस्थौ हेममाल्यमलाम्बरः हिरण्मयेन पात्रेण सिद्धमादाय

तोंस्तान् कामान् हरिर्दद्याद्यान्यान्कामयते जनः आराधितो यथैवैष तथा पुंसां फलोदयः ३४

प्रनायते पुरोडासनि रवयव शिपिविष्टाय विष्णवे ३५ तस्मात्पुरुष उत्तस्थौ हेममाल्यमलोवरः हिरण्मयेन पात्रेण सिद्धिमादाय

तब सब देवता अपनो भाग लेहिंगे तरिकेसें
भोगका भगवानतातें पुत्र देइंगे ३२ अब तब यज्ञपुरुष भगवानकों पुत्रके लीये भजे गोतब सब देवता अपनो भाग लेइंगे तें सोई फल
ग सबकामैंगे ३४ और जिन कामनान को पुरुष करे हैं तिनही कों हरि देहे हैं जैसी कोई हरिकी आराधना करें तैसोई फल
कों उदय होहे ३४ वालकजाके पुत्रउत्पत्तके लीये ऐसे ब्राह्मणन निश्चय करकें पश्नमें यज्ञरूप कुरप्रविष्ट जो हरि तिनके
अर्थ पुरोडास देत भए ३५ ता अग्नि मेतें सुवर्णकी माला परें निर्मलजा पे वस्त्र सो पुरुष सुवर्णके पात्र में सिद्ध पायस
लीये प्रगट होत भयो ३६

भा॰च॰ ३८

परकुत्स त्रित पुत्र सत्यव्रत सत व्रत अग्निष्टोम अतिरात्र प्रद्युम्न शिवि उल्मुक एबारह भरे १६ उल्मुककी स्त्रीमें छ उत्तमतिनें उपजावत भयो अंग
सुमन ख्याति क्रतु अंगिरस गय राष्ट्रे भए १७ अंगकी स्त्री सुनीथा तासी सो उत्पन्न वेन को उपजावत भए जाके दोषसों तेराजा अंग निर्वेदलें पुरतें निकर
जात भए १८ जा वेनकी कोप्रभव रसें वोणी होजिन केवज्र ऐसे मुनि श्राप देत भये तब वाकें प्राण निकरि गये तब फेर वाकी देह एहत ताहि मथत भए १९
वेनके मरे पीछें अरराजा को जब प्रलोक जन भयो और चोरन ने पीड़ा जब दई तब वेनकी भुजा मथी ऋषीने ता मैतें पृथु नारायण के अंशी पतिनारायण को अंश
संदेह भए २० मैत्रेय जो कृतसें तेइ उरप्रछेरे मैत्रेय यो राजा शील निधि ब्रह्मण्य महात्मा अंगताको दुष्टपुत्रके सें होत भयो जाकें दुःखतें राजा अपने

परकुत्सं त्रितं द्युम्नं सत्यवंतमृतं व्रतं अग्निष्टोममतीरात्रं प्रद्युम्नं शिबिमुल्मुकं १६ उल्मुकोजनयत्पुत्रान् पुष्करिण्यां षडुत्तमान् अंगंसुम
नसं ख्यातिं क्रतुमंगिरसं गयं १७ सुनीथांगस्य या पत्नी सुषुवे वेनमुल्वणं यद्दौःशील्यात्स राजर्षिर्निर्विण्णो निरगात्पुरात् १८ यमंग शेपुः कुपिता
वाग्वज्रा मुनयः किल गतासोस्तस्य भूयस्ते ममंथुर्दक्षिणं करं १९ अराजके तदा लोके दस्युभिः पीडिताः प्रजाः जातो नारायणांशेन पृथु
राद्यः क्षितीश्वरः २० विदुर उवाच तस्य शीलनिधेः साधोर्ब्रह्मण्यस्य महात्मनः राज्ञः कथमभूद्दुष्टा प्रजा यद्विमना ययौ २१ किंवांहो
वेन उद्दिश्य ब्रह्मदंडमयूयुजन् दंडव्रतधरे राज्ञि मुनयो धर्मकोविदाः २२ नावध्येयः प्रजापालः प्रजाभिरघवानपि यदसौ लोक
पालानां बिभर्त्योजः स्वतेजसा २३ एतदाख्याहि मे ब्रह्मन्सुनीथात्मजचेष्टितं श्रद्दधानाय भक्ताय त्वं परावरवित्तमः २४ मैत्रेय उ॰
अंगोश्वमेधं राजर्षिराजहार महाक्रतुं नाजग्मुर्देवतास्तस्मिन्नाहूता ब्रह्मवादिभिः २५ तमूचुर्विस्मितास्तत्र यजमानमथर्त्विजः
हवींषि हूयमानानि न ते गृह्णंति देवताः २६

घरको छोडिकें सें उठगयो २१ अब हे मैत्रेय कहा वेनको अपराध देखि मुनिश्वर धर्ममें निपुन वेनकों ब्रह्मदंड देत भए राजानकों मारवों
जोग्य नहीं २२ जो राजा अपराधी है तोउ प्रजानकों अवज्ञा न करनी जोग्य नहीं जो राजा अपने तेज कर सब लोकपालन को ऐसे धारन
करे हैं २३ ब्रह्मण्य यह वेनको चरित्र मेरे प्रागे कहो मेरी बड़ी सरधा है और तुम्हारो भक्त हूं तुम परअवर ज्ञानमें श्रेष्ठ हो २४ ऐसे सुनि मैत्रे
त्रेय बोले हे विदुर अंग जो राजर्षि सो एक करत भयो तामें ब्राह्मणन ने बुलायो पर देवतान नहीं आवत भए २५ तब तो ऋषि ऋत्विज विस्मि

78

79

मैत्रेयजी बोले हे विदुर ध्रुवजी के वंस मे प्रचेता भए हैं यत कहके ध्रुव ध्रुवजी को वंस वर्णन करै हैं ध्रुवजी के उत्कल पुत्र भयो सो ध्रुवजी
के वन गये पीछे ताकी चक्रवर्ती सुपने की सी संपत औरराज्यानताय इछा न करत भयो ६ सो उत्कल जन्म करके शांतजा को चित निसंग
समदर्शी लोकन मे व्यापक जो आत्मा ताय देखत भयो ७ और हे विदुरे आत्मा मे व्याप्त जो लोक ताय देखत भयो ऐसे ही सतजी सोन
काहि कनते करत भयो ८ अव्यवछिन्न जो योग सोई भयो अग्नि ताकरके जरयो है कर्म मल वासना जाकी ऐसो जो ध्रुव पुत्र स्वरूप
भूतजो ब्रह्म प्राप्त ज्ञान रस करके जाकी ताहि जानि आत्मा विना और न देखत भयो ९ जड अन्ध बधिर मूंगो इनकी सी ले प्राकृत जा

मैत्रेय उवाच: ध्रुवस्य चोत्कलः पुत्रः पितरि प्रस्थिते वनं सार्वभौमश्रियं नैछत मधिराजासनं पितुः ६ स जन्मनोपशांतात्मा
निःसंगः समदर्शनः ददर्श लोके विततमात्मानं लोकमात्मनि ७ आत्मानं ब्रह्म निर्वाणं प्रत्यस्तमितविग्रहं अवबोधरसैक
त्म्यमानंदमनसंततं अव्यवछिन्न योगाग्नि दग्ध कर्म मलाशयः स्वरूपमवरुंधानो नात्मनोन्यं तदैक्षत ९ जडान्धबधि
रोन्मत्त मूकाकृतिरतन्मतिः लक्षितः पथि बालानां प्रशांतार्चिरिवानलः १० मत्वा तं जडमुन्मत्तं कुलवृद्धाः समंत्रिणः वत्सरं
भूपतिं चक्रुर्यवीयांसं भ्रमेः सुतं ११ स्ववीथी वत्सरस्येष्टा भार्यासूत षडात्मजान् पुष्पार्णं तिग्मकेतुं च इषमूर्जं वसुं जयं १२
पुष्पार्णस्य प्रभा भार्या दोषा च द्वे बभूवतुः प्रातर्मध्यंदिनं सायमिति ह्यासन्प्रभासुताः १३ प्रदोषो निशिथो व्युष्ट इति दोषा
सुताः त्रयः व्युष्टः सुतं पुष्करिण्यां सर्वतेजसमादधे १४ स चक्षुः सुतमाकूत्यां पत्न्यां मनुमवाप ह मनोरसूत महिषी विरजान्

की ऐसो मार्ग मे अज्ञानी न कहत ऐसो धरे है वास्तव मे वैसो नहीं है सर्वत्र है जाते प्रसांत ज्वाला ऐसो अग्नि की सी नाई स्थित है १०
जाउत्कल को जड उन्मत्त मान के वृद्ध मंत्री सब भ्रमी के पुत्र कनिष्ठ वत्सर नाम जाको ताय पृथ्वीपति करत भये ११ वत्सर की प्यारी
स्त्री स्ववीथी सो छे पुत्रन को उपजावत भई पुष्पार्ण तिग्मकेतु इष ऊर्ज वसु जय ये छे पुत्र भये १२ पुष्पार्ण के दो स्त्री भई प्रभा दोषा
तामे प्रात मध्यंदिन सायं ये तीन प्रभा के पुत्र भये १३ प्रदोष निशीथ व्युष्ट ए दोषा के पुत्र भए व्युष्ट पुष्करणी मे सर्वतेजा पुत्र ताहि उ

५ पदको

भा॰ च॰ ३७

पूर्णमासी अमावस्या द्वादशी के दिन श्रवण नक्षत्र मे और जा दिन व्यतीपात संक्रांत रविवार इन मे हरि को आश्रय लेय निष्कामतोई यह ध्रुवजी
की कथा श्रद्धावानन को सुनावे तो वाश्रवण मे आत्मा ती आत्मा वरसंतुष्ट होइ याहेतु ते सिद्ध को पावे ४९ जाने तत्व नहीं जीयों जाके अर्थ भ
गवान् मार्ग मे अमल रूप जो ज्ञान ताहि देहे ताये देवता अनुग्रह करै हैं ५० हे विदुर यह मैं ते रे आगे कहो विख्यात शुद्ध जाके कर्म ताध्रुव
जी को कर्म और चरित्र कहो जो बालक ती खिलौना न को छोडि और माता को छोडि और घर छोडि विष्णु की शरण जात भयो ५१ इतिश्री
भागवते चतुर्थ स्कंधे ध्रुव चरित्रे द्वादशोध्यायः १२ सूतजी कहते हैं सोनकादिकन को मैत्रेयजी ने कह्यो जो ध्रुवजी को वैकुंठ जायवो ताय सुनिके

पौर्णमास्यां सिनीवाल्यां द्वादश्यां श्रवणेथवा दिनक्षये व्यतीपाते संक्रमे र्कदिनेथवा ४८ श्रावयेच्छ्रद्दधानानां तीर्थपादपदा
श्रयः नेछंस्तत्रात्मनात्मानं संतुष्ट इति सिध्यति ४९ ज्ञानमज्ञाततत्वाय यो दद्यात्सत्पथेमृतं कृपालोर्दीननाथस्य देवास्तस्या
नुगृह्णते ५० इदं मयाते विदितं कुरुद्वह ध्रुवस्य विख्यात विशुद्ध कर्मणः हित्वार्भकः क्रीडनकानि मातुर्गृहं च विष्णुं शरणं जग
म ५१ इतिश्री भागवते चतुर्थस्कंधे ध्रुवचरित्रे द्वादशोध्यायः १२ सूत उवाच: निसम्य कौशारविणोपवर्णितं ध्रुवस्य वैकुंठ
पदाधिरोहणं प्ररूढभावो भगवत्यधोक्षजे प्रष्टुं पुनस्तं विदुरः प्रचक्रमे १ विदुर उवाच: के ते प्रचेतसो नाम कस्यापत्यानि सु
व्रत कस्यान्ववाये प्रख्याताः कुत्र वा सत्रमासत २ मन्ये महाभागवतं नारदं देवदर्शनं येन प्रोक्तः क्रियायोगः परिचर्याविधिर्हरेः
स्वधर्मशीलैः पुरुषैर्भगवान् यज्ञपूरुषः इज्यमानो भक्तिमता नारदेनेरितः किल ४ यास्ता देवर्षिणा तत्र वर्णिता भगवत्कथाः मे
ह्यं शुश्रूषते ब्रह्मन् कार्त्स्न्येनाचष्टुमर्हसि ५
हरि मे भाव जाको बढो ऐसो जो विदुर सो फेर यह प्रश्न को प्रारंभ करत भयो १ हे मैत्रेयजी वे
प्रचेता कौन ते और कौन के बेटा हे और कौन के वंस मे विख्यात हे और कहा उनने ब्रह्म सत्र कीयो जहा नारदजीने उन के यज्ञ वंस मता समे
ध्रुवचरित्र गायो सो कहो २ देवता न को सो जाको दर्शन ता नारद कू मे परम भागवत मानूं हूं या नें हरि की परचर्या को प्रकार कर्म योग कह्यो है
नारद पंचरात्रि मे सो कहो ३ स्वधर्म पालन जो प्रचेता तिन करके पूज्यमान भगवान् यज्ञ पुरुष सोई भक्तिमान नारद ने गायो है ४ उ
नके ब्रह्म सत्र मे जा नारद ने भगवत कथा वर्णन करी ताय मे सुनो चाहूं हूं सो सब मेरे आगे वर्णन करो सो वर्णन करवे कूं तुम योग्य हो

पती व्रता जो सुनती ताके पुत्र ध्रुवजी ताके तप को प्रभाव : और वा की गति ताहि प्राप्ति होइवे कौं वडे वल ऋषि हू भगवत् धर्म को देषवे वो नहीं समर्थ होहे तो और राजा कहा ते समर्थ होइगो ४० जो ध्रुव पांच वर्ष को दूसरी माता के वचन वाणन कर दूषित भिन्न ह्या को हृदय ताकरि वनमें जाय मेरे उपदे स कौ मानवे वारौ जो अजित भगवान तिनें जीतत भयौ : जो भगवान ऐसे हैं तो अजित परंतु भक्तन के गुणन कर वस रहे जाइ हे ४१ ध्रुवजीने पायो जो पद ताय और कोई क्षत्री वरुहु होइवे की इछा करें तो वहू संकल्प सें प्रकार तहा आरोहण तो वहूत ही कठिन है जो ध्रुव छत्र थो पांच वर्ष को वालक पायो जो पद ताय और कोई छत्रीव अह होइवे की इछा करें तो वहू संकल्प सें प्राप्त होत नयो ऐसे नारदजी प्रचेतान के आगे कहत भए ४२ मैत्रेयजी कहे हे विदुर यह जो ध्रेरे ही दिन में हरि कौ प्रसन्न कर वाई हरि के परम पदकूं प्राप्त होत भयो

नारदउवाच : नूनं सुनीतेः पतिदेवतायास्तपःप्रभावस्य सुतस्य तां गतिं दृष्ट्वाभ्युपायानपि वेदवादिनो नैवाधिगन्तुं प्रभवन्ति किं नृपाः ४० ॥ यः पंचवर्षो गुरुदारवाक्शरैर्भिन्नेन यातो हृदयेन दूयता वनं मदादेशकरोऽजितं प्रभुं जिगाय तद्भक्तगुणैः पराजितम् ४१ यः क्षत्रबन्धुर्भुवि तस्याधिरूढमन्वारुरुक्षेदपि वर्षपूगैः षट्पंचवर्षो यदहोभिरल्पैः प्रसाद्य वैकुण्ठमवाप तत्पदम् ४२ मैत्रेय उवाच : एतत्ते ऽभिहितं सर्वं यत्पृष्टोऽहमिह त्वया ध्रुवस्योद्दामयशसश्चरितं संमतं सताम् ४३ धन्यं यशस्यमायुष्यं पुण्यं स्वस्त्ययनं महत् स्वर्ग्यं ध्रौव्यं सौमनस्यं प्रशस्यमघमर्षणम् ४४ श्रुत्वैतच्छ्रद्धयाभीक्ष्णमच्युतप्रियचेष्टितम् भवेद्भक्तिर्भगवति यया स्यात्क्लेशसंक्षयः ४५ महत्त्वमिच्छतां तीर्थं श्रोतुः शीलादयो गुणाः यत्र तेजस्तदिच्छूनां मानो यत्र मनस्विनाम् ४६ प्रयतः कीर्तयेत्प्रातः समवाये द्विजन्मनाम् सायं च पुण्यश्लोकस्य ध्रुवस्य चरितं महत् ४७

तुमने पूछौ वडे यसीले ध्रुव को चारित्र साधुन को वडाई कर वे लायक सो मैंने तुम्हारे आगे कह्यौ ४३ यह चरित्र धन यश और वल कौं वढायवे वारौ महा पवित्र मंगलीक स्वर्ग को देवे वारौ और ध्रुव पद कौं देवे वारौ या संसार को योग पापन कौं नास करवे वारो है ४४ यह हरि को प्रीय करवे वारौ ध्रुवजी कौ चेष्टित ताय श्रद्धा कर सुनन से हरि में भक्ति होई जा भक्ति से सब पापन कौ नास होय ४५ महत्त्व कौं जो चाहे तिनकौं महत्त्व प्राप्ति करवे वारौ और सुनिवे वारेन कौ शीलादिक गुण प्राप्ति होते हैं और जाके सुनवे ते जो चाहे हैं तिनकौ तेज वढे हैं और मान चाहे उनकौ मान प्राप्ति होहे ४६ ब्राह्मणन की सभा में सायंकाल प्रातः काल मध्यान्ह ता ध्रुव को चरित्र सावधान होइ के सुनै कीर्तन करे और भक्त करे जाके सव मनोरथ पूरण होइ है ४७ श्रीकृष्णाय नमः

फेर वा विमान की परिक्रमा दे पूजन कर पार्षदन को प्रणाम कर हिरण्मय दिव्य रूप धारण कर विमान में चढवे की इछा करत भयो २९ तव ध्रुवजी विमान में वैठवे लगे तव स्वर्ग में नगाडे मृदंग ढोल एक संग वजवे लगे और गंधर्व गायवे लगे पुष्पन की वर्षा होइवे लगी ३० सो ध्रुवजी जव स्वर्ग में जायवे लगे तव सुनती मैया कौं स्मरन करत भयौ जो दिन हिन प्राप्ति सुनीति ता में या को छोडि में कैसे स्वर्ग कौं जाउं ऐसे भगवत पार्षद उनकौं मन जान विमान में आगें जात जो सुनती मैया ताहि देषत भयौ ३२ जहां तहां मार्ग में वडाई करत जो देवता मनुष्यन ने वे छिना पे कारी ऐसे ध्रुव आनंद से सव ग्रहन कौ देखत भयौ ३३ ध्रुवजी देव पाल मार्ग करि त्रिलोकी कौ उलंघन और सप्त ऋषिन को उलंघन कर

परीत्याभ्यर्च्य धिष्ण्याग्र्यं पार्षदावभिवन्द्य च इयेष तदधिष्ठातुं बिभ्रद्रूपं हिरण्मयम् २९ तदोत्तानपदः पुत्रो ददर्शान्तकमागतम् ... तत्र तत्र दुन्दुभयो नेदुर्मृदङ्गपणवादयः गन्धर्वमुख्याः प्रजगुः पेतुः कुसुमवृष्टयः ३० स च स्वर्लोकमारोक्ष्यन्सुनीतिं जननीं ध्रुवः अन्वस्मरदगं हित्वा दीनां यास्ये त्रिविष्टपम् ३१ इति व्यवसितं तस्य व्यवसाय सुरोत्तमौ दर्शयामासतुर्देवीं पुरो यानेन गच्छतीम् ३२ तत्र तत्र प्रशंसद्भिः पथि वैमानिकैः सुरैः अवकीर्यमाणो ददृशे कुसुमैः क्रमशो ग्रहान् ३३ त्रिलोकीं देवयानेन सोऽतिव्रज्य मुनीनपि परस्ताद्यद्ध्रुवगतिर्विष्णोः पदमथाभ्यगात् ३४ यद्भ्राजमानं स्वरुचैव सर्वतो लोकास्त्रयो ह्यनु विभ्राजन्त एते यन्नाव्रजञ्जन्तुषु येऽननुग्रहा व्रजन्ति भद्राणि चरन्ति येऽनिशम् ३५ शान्ताः समदृशः शुद्धाः सर्वभूतानुरञ्जनाः यान्त्यञ्जसाच्युतपदमच्युतप्रियबान्धवाः ३६ इत्युत्तानपदः पुत्रो ध्रुवः कृष्णपरायणः अभूत्त्रयाणां लोकानां चूडामणिरिवामलः ३७ गम्भीरवेगोऽनिमिषं ज्योतिषां चक्रमाहितम् यस्मिन्भ्रमति कौरव्य मेढ्यामिव गवां गणः ३८ महिमानं विलोक्यास्य नारदो भगवानृषिः आतोद्यं वितुदञ्श्लोकान्सत्रेऽगायत्प्रचेतसाम् ३९

उनके परे में विष्णु पद ता सि प्राप्ति होत भयौ ३४ जो लोक सव और तें प्रपनी ही कांति कर देदीप्यमान हैं जा की कांति कर सव लोक प्रकासमान हैं जो प्राणिन में कृपा नहीं करें ते वा लोक में नहीं जा हे ते रात दिन मंगल प्रपने कर्म करे हैं ते वा लोक में निश्चे कर जांते ३५ जे सात समदर्शी सव प्राणी न में जिनकै प्रेम है और शुद्ध हैं भक्ति जिनके वेष्णव ते प्रानायास वा लोक कूं जाइ हे ३६ ऐसे उत्तानपाद को पुत्र ध्रुवजी कृष्ण परायण तीनो लोकन को चूडामणि होत भयो ३७ गंभीर जाको वेग ऐसो जो तिसचक्र जामे प्रर्पित ऐसे भ्रमे हे जैसे मेढके और पासवेल न को गण भ्रमे हे ३८ श्री नारदजी ध्रुवजी की वडी महिमा देषवी णा वजावत प्रचेतान के व्रत प्राचम में भगवत महात्म प्रसंग करि ध्रुवजी की महिमा के प्रतिपादन

[illegible]

ताविमानमें देवतानमें श्रेष्ठ भगवत्पार्षद देखे चारजिनकी जो स्याम स्वरूप किसोरजिन की अवस्था अरुण कमलसे जिनके नेत्र गदाको आ
श्रोलेरहे सुंदर जिनके वस्त्र किरीट हार बाजूबंद इन करके सहित मनोहर जिनके कुंडल ऐसे ध्रुवजी देषतभए २० ध्रुवजीने हरिके पार्षद जा
निके उठि के संभ्रम जिनके तासमयमें रहजाये ते क्रम जाने पीछे हाथजोरि हरि केनाम लेके दंडवत करत भये २१ कृष्ण चरणारविंदमें लगायो है म
नजिनमें ऐसे ध्रुवजी हाथ जोरें प्रेमकरके नम्र जिनकी ग्रीवा ताप्रति नंद सुनंद पार्षद हरि के प्रियबोले २२ जोराजन ध्रुवतेरो कल्याण होई
तूसावधान होइ हमारो वचन सुनि जो पांच वर्ष को तू जा देव को तप करके प्रसन्न करत भयो २३ ता भगवान के हम पार्षद हैं तो ल्येवे आये हैं २४

तत्रानु देवप्रवरौ चतुर्भुजौ स्यामौ किसोरावरुणांबुजेक्षणौ। स्थितावत्रष्टभ्य गदां सुवाससौ किरीटहारांगदचारुकुंडलौ २० विज्ञायतावु
त्तमगायकिंकरावभ्युत्थितः साध्वसविस्मितस्मृतिः ननाम नामानि गृणन्मधुद्विषः पार्षत्प्रधानाविति संहताञ्जलिः २१ तंकृष्णपादाभि
निविष्टचेतसं बद्धांजलिं प्रश्रयनम्रकंधरं सुनंदनंदावुपसृत्य सस्मितं प्रत्यूचतुः पुष्करनाभसंमतौ २२ भोभो राजन्सुभद्रं ते वा
चं नोवहितः शृणु यः पंचवर्षस्तपसा भगवान् देवमतीतृपत् २३ तस्याखिलजगद्धातुरावां देवस्य शार्ङ्गिणः पार्षदाविह संप्रा
प्तौ नेतुं त्वां भगवत्पदं २४ सुदुर्जयं विष्णुपदं जितं त्वया यत्सूरयोऽप्राप्य विचक्षते परं आतिष्ठ तच्चन्द्रदिवाकरादयो ग्रहर्क्षतारा
परियंति दक्षिणं २५ अनास्थितं ते पितृभिरन्यैरप्यंग कर्हिचित् आतिष्ठ जगतां वंद्यं तद्विष्णोः परमं पदं २६ निशम्य वैकुंठनि
योज्यमुख्ययोर्मधुच्युतं वाचमुरुक्रमप्रियः कृताभिषेकः कृतनित्यमंगलो मुनीन्प्रणम्याशिषमभ्यवादयत् २७

अति दुर्जय जो विष्णुपद सो तैनें जीत्यो है जाको सम्यक्ज्ञानी ने न पायो केवलनी चै देषि स्थित भए और कोई वहां नहीं स्थिति भये ऐसो
जो जगत को आधार चंद्र सूर्य ग्रह नक्षत्र तारागण जो ये सब वाकी दाहिनी देत फिरे हैं २५ तहां ते रे पुरुषा हू न स्थित भए और कोई न स्थि
त भयो ऐसो जगत को आधार विष्णु को परपद ता में तू स्थित हो २६ हे आयुष्मान् यह विमान श्रेष्ठ हरि ने तेरे लीये भेजो है तू यारि दू
सहत या में आरूढ होइवे को जोग्य है जो विष्णु मूर्ति दिव्य पारषद तिन के ऐसे हैं या ते तू चल २७ मैत्रेयजी कहे हे विदुर भगवान के पार्ष
दन में मुख्य जो सुनंदादिक तिनकी मधुरवाणी सुनकरके कीनो है स्नान जाने और कीनो है नित्यकर्म जाने और अलंकाराद्रि
भए ऐसे संग होत भयो २८

ता ध्रुवको प्रसन्न करि कुवेर हरि में भक्ति वर दे तब ध्रुवजी को अपने घर कों जात भयो ९ ताके अनंतर बड़ी जिनमें दक्षिणा ऐसे यज्ञन करि यज्ञपति भगवान
को पूजन करत भयो जो द्रव्य क्रिया देवतान को कर्मनाथ प्रभु है और कर्म ही फल देवेवारो है सर्वात्मा अच्युत भगवान में तीव्र भक्ति करत आत्मा
में और सब प्राणिन में वाही भगवानकों स्थित देषत भयो ११ सो ध्रुव शील संपन्न ब्रह्मण्य दीननको जो वत्सल धर्म मर्यादा को रक्षा
करवेवारो ताहि प्रजा पति मानत भयो १२ छत्तीस हजार वर्ष तांई ध्रुवजी राज करत भये भोगन करके पुण्य क्षीण करत और यज्ञादिक न करि
अशुभ क्षीण करत ऐसे बहुत काल तांई मतात्मा अचल जो ध्रुव सो अर्थ धर्म काम इनें छोड़कर पुत्रके अर्थ राज्यासन देत भयो १३ यह वि

तस्य प्रीतेन मनसा तां दत्त्वैडविडस्ततः पश्यतोऽन्तर्दधे सोऽपि स्वपुरं प्रत्यपद्यत ९ अथायजत यज्ञेशं क्रतुभिर्भूरिदक्षिणैः द्रव्यक्रि
यादेवतानां कर्म कर्मफलप्रदं १० सर्वात्मन्यच्युतेऽसर्वे तीव्रौघां भक्तिमुद्वहन् ददर्शात्मनि भूतेषु तमेवावस्थितं विभुं ११ तमेवं शीलसं
पन्नं ब्रह्मण्यं दीनवत्सलं गोप्तारं धर्मसेतूनां मेनिरे पितरं प्रजाः १२ षट्त्रिंशद्वर्षसाहस्रं शशास क्षितिमंडलं भोगैः पुण्यक्षयं कुर्वन्नभोगैरशुभक्षयं १३ एवं बहु सवं कालं महात्माविकलेंद्रियः त्रिवर्गौपयि
कं नीत्वा पुत्रायादान्नृपासनं १४ मन्यमान इदं विश्वं मायारचितमात्मनि अविद्यारचितस्वप्नगंधर्वनगरोपमं १५ आत्मस्त्र्य
पत्यसुहृदो बलमृद्धकोशमंतःपुरं परिविहारभुवश्च रम्याः भूमंडलं जलधिमेखलमाकलय्य कालोपसृष्टमिति स प्रययौ विशा
लां १६ तस्यां विशुद्धकरणः शिववार्विगाह्य बद्ध्वासनं जितमरुन्मनसाहृताक्षः स्थूले दधार भगवत्प्रतिरूप एतद्ध्यायंस्तदव्यवहि
तो व्यसृजत्समाधौ १७ भक्तिं हरौ भगवति प्रवहन्नजस्रमानंदबाष्पकलया मुहुरर्द्यमानः विक्लिद्यमानहृदयः पुलकाचितांगो नात्मानमस्मरदसाविति मुक्तलिंगः १८ स ददर्श विमानाग्र्यं नभसोऽवतरद्ध्रुवः विभ्राजयद्दश दिशो राकापतिमिवोदितं १९

आत्मा में माया रचत है यह मान जैसे अविद्या रचत स्वप्न गंधर्वनगर की सी जाकी उपमा ऐसे मान वैराग्य लेत भयो १५ देह स्त्री पुत्र सु
हृद सेना समृद्ध कोश अंतःपुर रमणीय विहार भूमि समुद्र पर्यंत भूमंडल सब काल करि ग्रास्य यह जानके बदरिकाश्रम को जात भयो १६
ता बदरिकाश्रम में स्नान करि आसन बांध मनकरि सहित जीते हैं प्राण इंद्री जाने ऐसे ध्रुवजी भगवान के स्थूल विराट रूप में मन को धारण
करत भयो फिर ध्यान करत ही करत ध्याता ध्यान ध्येय त्रिपुटी छोड़ समाधि में स्थित वह स्थूल रूप को त्यागत भयो १७ ऐसे हरि को हृदय पुलक
करि व्याप्त जाको अंग और त्याग्यो है शरीराभिमान जाने ऐसे ध्रुव अपने कों नहीं स्मरण करत भये १८ सो ध्रुवजी आकाश ते पीछे आवता

ग्रौरमहादेवकौमित्रकुवेर ताकौदंनैग्रपराधकीयौहै जोमेरेभैयाकौमारनहारौहैं ग्रैसेंजानिकौध्रुवरप्रसनकौमारतभयौ ३३ हेवत्सनमता करमोहे वचनकर तावेरकौतप्रसन्नकरि जवताईवडेनकौतेजहमारेकुलकौनग्रपुराधकरे ३४ ग्रैसेस्वायंभुमनुग्रपनेपोतेध्रुवकौसमुझायकें ध्रुवजी मेदंडोतव्याकुकरी ग्रैसें। ऋषिनकेसहितग्रपनेपुरकौजोलमयौ ३५ इतिश्रीभागवतेचतुर्थस्कंधेएकादशोध्यायः ११ मैत्रेयउवाचः याकेपीछेध्रुव सनकेवधतेनिवृतिभयौं ध्रुवकौजानकौध्रुजाकोदूरभयौ ग्रौसोकुवेरचारणयक्षकिंनरजालीवडाईकरेहें सोउहांग्रावतभयौ तवध्रुवजीनेदे डोतकरीवहकुवेरग्रासीरवाददेतभयौं ग्रौरयहवोल्यौ भोभोक्षत्रीपुत्रहेग्रनघमैंतोपैंप्रसन्नभयौ जोतूदादेकीग्राज्ञातेंदुस्त्यजवेरकूंत्यागतभयो ।

तहैनंगिरसम्राजुधनस्त्यत्वयाकृतं यज्जह्निवानुरणजनानुमात्रघानत्पमर्षितः ३३ नप्रसादएवत्साग्रसंनत्पामेष्वयोगिभिः नयाव लहेनंगिरसम्राजुधनस्यत्वयाकृतं ... ३४ मैत्रेयउवाचः एवंस्वायंभुवःपौत्रमनुस्वात्पमनु ध्रुवं तेनाभिवंदितःसाकमृषिभिस्वपुरंययौ ३५ म्रुरतांतेज :कुलंनोभिमर्भिप्यति ३४

इतिश्रीभागवतेचतुर्थस्कंधेएकादशोध्यायः ११ मैत्रेयउवाचः ध्रुवंनिवृत्तंप्रतिवुध्यवैशसा दपेतमन्युंभगवान्धनेश्वरः तत्रागतश्चार णयक्षकिंनरैःसंस्तूयमानोऽभ्यवदत्कृतांजलिः १ धनदउवाचः भोभोक्षत्रियदायादपरितुष्टोऽस्मितेऽनघ यत्त्वंपितामहादेशाद्वैरंदुस्त्य जमत्यजः २ नभवानवधीद्यक्षान्नयक्षाभ्रातरंतव कालएवहिभूतानांप्रभुरप्ययभावयोः ३ ग्रहंत्वमित्यपार्थाधीरज्ञानात्पुरुषस्यहि स्वाप्नीवाभात्यतद्ध्यानाद्यथावंधविपर्ययौ ४ तद्गच्छध्रुवभद्रंतेभगवंतमधोक्षजं सर्वभूतात्मभावेनसर्वभूतात्मविग्रहं ५ भव स्वभजाजानीयांघ्रीमभावावतौ ... ६ इष्टितकामनपथस्मनोगतंमत्तस्त्वमौत्तानपदेवि प्रोकितः वराहोस्यवुजनाभपदयोरनंतरंत्वांवयमंगशुश्रुम ७ मैत्रेयउवाच स राजराजेनवरायचोदितोध्रुवोमहाभागवतोमहामतिः ८ ...वव्रेऽचलितांस्मृतिंयया तरत्ययत्नेनदुरत्ययंजनः ९

तेंतौतूयक्षनकौमारतभयौं नयक्षतेरेभैयाकौमारतभये प्राणीनकेजन्ममृत्युमेकालहीकारणहे ३ मैंतंयहबुद्धिपुरुषकौग्रज्ञानतेहैस्वप्नवीनाई भासेहैं जाकरवंधनग्रौरदुःखादिकहोहैं ४ तातेहेध्रुवतुंजा तेरोकल्याणहोइ सर्वभूतात्माकहेंविग्रहजाकौ ताभगवान्कौसर्वभूतनमेग्रात्मभ वकरभजनकर ५ गुणमयमायाकरिकैग्रौररहितभजनकरवेलायकजाकेचरणसंसारकेनाटवेवारेभगवानकौभजनकरें ६ हेउत्तानपा दकेपुत्रमोतेंतूजोतेरेमनमेंहोइ सोग्रसेंमोचकरवरमांगि हमरकोजोगहें नोयहरिकेचरणारविंदकौग्रंतिनिकटसुन्योहे ७ ग्रैसेंकुवेरको

ग्रव्यक्तस्याप्रमेयस्य नानामतसहित शक्तीनकोहेउ हयजातें वाईश्वरकौकरतवकरकेवीईछारें याहीवातकौकोईनहींजाने तौवाकोसाक्षातकैसेजाने गो २३ हेपुत्रयेयहतेरेभैयाकेमारवेवारेनहीहें हेतातपुरुषनकेजन्ममरणमेंईश्वरहीकारणहे २४ सोईभगवान्विश्वकौसृजे वहीपालन करे वहीसंघारकरेहें तथापिवाकैग्रहंकारनहीं यातेंगुणकर्मनमहलिप्तनहीं होहे २५ वेहीभूतात्माभूतनकेपालनकरनहारे ग्रपनीशक्ति मायाकरयुक्तसवप्राणीनकौसृजेंपालेंग्रौरनासकरेहें २६ हेतातताहीभगवान्कौतूसरणले जोग्रमृतकमृत्युरूपहे ग्रौरभक्तनकूंग्रमृत मायाकरयुक्तसवप्राणीनकौसृजंपालेंग्रौरनासकरेहे ... ग्रौरवाहीकौकरापौकर्मकरेहें ग्रैसेंनानाकर्मनायजिनकेडोरीग्रैसेवेल रूपहें जगतकौग्राश्रय जाकेग्रर्थविश्वकेसृजवेवारेसव भेटहें

ग्रव्यक्तस्याप्रमेयस्य नानाशक्त्युदयस्यच नवेदचिकीर्षितंतातवक्तोवेदार्थमस्तसंभवं २३ नवैस्वेपुत्रकभ्रातुर्हंतारोधनदानुगाः विसर्गादा नयोस्तातपुंसोदैवंहिकारणं २४ सएवविश्वंसृजतिसएवावतिहंतिच ग्रथापिह्यनहंकारान्नाज्यतेगुणकर्मभिः २५ एषभूतानिभूता त्मभूतेशोभूतभावनः स्वशक्त्यामाययायुक्तःसृजत्यत्तिचपातिच २६ तमेवमृत्युममृतंतातदैवंसर्वात्मनोपेहिजगत्परायणं यस्मैवलिं विश्वसृजोहरंतिगावोयथावैनसिदामयंत्रिता २७ यःपंचवर्षोजननीत्वंविहायमातुःसपत्न्यावचसाभिन्नमर्मा वनंगतस्तपसाप्रत्य गक्षमाराध्यलेभेमूर्ध्निपदंत्रिलोक्याः २८ तमेवमंगात्मनिमुक्तविग्रहेव्यपाश्रितंनिर्गुणमेकमक्षरं ग्रात्मानमन्विच्छविमुक्तमा त्मदृग्यस्मिन्निदंभेदमसत्प्रतीयते २९ त्वंप्रत्यगात्मनितदाभगवत्यनंतग्रानंदमात्रउपपन्नसमस्तशक्तौ भक्तिंविधायपरमांशनकै रविद्याग्रंथिंविभेत्स्यसिममाहमितिप्ररूढं ३० संयच्छरोषंभद्रंतेप्रतीपंश्रेयसांपरं श्रुतेनभूयसाराजनगदेनयथामयं ३१ येनोप सृष्टात्पुरुषाल्लोकउद्विजतेभृशं नवुधस्तद्वशंगच्छेदिच्छन्नभयमात्मनः ३२

जोकिसानकूरावेसोईकरेहें २७ जोपांचवर्षकोतूसपत्नी मातांकेवचनकरविदीर्णहेमनजाकौं ग्रपनीमाताकौछोडिवनमेंजायतपकर वाहीहरिकेंग्राराधनकरत्रिलोकीकेउपरग्रस्थानताय प्राप्तिहोतभयौ वाहीकौग्राश्रयले २८ हेध्रुवभक्ति विरोधमनमेंस्थितनिर्गुणएक ग्रक्षरग्रात्मातासि वाहीमें दृष्टिकरदेखि जामेंभेदयुक्त यहविश्वसवमिथ्याप्रतीतहोहे २९ सोभगवान्ग्रादि ग्रानंदमात्रसवशक्तिसंपन्न तामेंपरमभक्तिकरतौलहोसे ग्रैसेमेरीयहजोग्रविद्या कीगांठिताहिकाटेगौ ३० ग्रौरहेध्रुवसवश्रेयनकौप्रतिकारकरनवारौजोक्रोधताहि वडेशास्त्रश्रवणकरतोवैजैसेंग्रौषधीकररोगदूरकरीयेहे ३१

भगवान् प्रसन्न भए संतें यह पुरुष प्रकृती के गुणन ते छूटे लिंग शरीर रहित होइ स्वरूपानंद जो ब्रह्म ताहि प्राप्ति होत हैं १४ देह कारजे पंचमहाभूत ति
नकी ईस्त्री पुरुष होते फेर इस्त्री पुरुष के मैथुन ते और इस्त्री पुरुष उत्पत्य होतो १५ ऐसें ही सृष्टि पालन होत हैं और हे राजन् और प्रकाश परिण
तमता भूत तिन करि संसार होत परमात्मा की माया के गुणन करि क्षोभ ते १६ तामें पुरुषन में श्रेष्ठ भगवान् ईश्वर निमित्तमात्र हैं जाके निमि
त्तमात्र भए संतें कार्यकारणात्मक यह विश्व भ्रमत है जैसें चुंबक सें निमित्त पाय लोह भ्रमे है १७ काल शक्ति कर गुणन को जो क्षोभ ता करि वि
भाग को प्राप्ति होत हैं सृष्ट्यादिक विषय शक्ति जाकी ऐसे भगवान् करता हैं और कर्म न करे हैं अहंता है और मारे हैं याते भगवान की चेष्टा अचिंत्य है

संप्रसन्ने भगवति पुरुषः प्राकृतैर्गुणैः विमुक्तो जीवनिर्मुक्तो ब्रह्मनिर्वाणमृच्छति १४ भूतैः पंचभिरारब्धैर्योषित्पुरुष एव हि तयो
र्व्यवायात्संभवति योषित्पुरुषयोरिह १५ एवं प्रवर्तते सर्गः स्थितिः संयम एव च गुणव्यतिकराद्राजन्मायया परमात्मनः १६ निमित्त
मात्रं तत्रापि निर्गुणः पुरुषर्षभः व्यक्ताव्यक्तमिदं विश्वं यत्र भ्रमति लोहवत् १७ स खल्विदं भगवान्कालशक्त्या गुणप्रवाहेण विभक्तवीर्यः
करोत्यकर्तैव निहंत्यहंता चेष्टा विभूम्नः खलु दुर्विभाव्या १८ सोऽनंतोंतकरः कालोऽनादिरादिकृदव्ययः जनं
जनेन जनयन्मारयन्मृत्युनांतकं १९ न वै स्वपक्षोऽस्य विपक्ष एव वा परस्य मृत्योर्विशतः समं प्रजाः तं धावमानमनुधावंत्यनी
शा यथा रजांस्यनिलं भूतसंघाः २० आयुषोऽपचयं जंतोस्तथैवोपचयं विभुः उभाभ्यां रहितः स्वस्थो दुःस्थस्य विदधात्यसौ २१ केचि
त्कर्म वदंत्येनं स्वभावमपरे नृप एके कालं परे दैवं पुंसः काममुतापरे २२

१८ सो भगवान् कालरूप आप तौ अनंत हैं और नको अंत
करे हैं आप अनादि हैं और नकी आदि करे हैं वयुवार पुत्र को उपजाय आदि करत हैं चोरादिक को और कोई द्वारा दिखाय अंत करत हैं औ
र अनादि प्रतन है याते सब को नियंता कारण ईश्वर रहें १९ मृत्युरूप सब प्रजान में जैसें होइ तैसें सर्वत्र करत जो भगवान् ताके न कोई स्वपक्ष
न कोई विपक्ष जो धावत होइ ताके पीछे कर्माधीन सब प्राणी धावे हैं जैसें पवन के पीछे रेणु धावत हैं ऐसें सब वाई के आधीन हैं २०
जाने तु को अकाल मृत्यु और काल मृत्यु हर स्वार्थ रहित करें हैं आप दोउ वातन करि रहित है और कर्मादिक जीवन को करे हैं २१ कोई वाको
नाम कर्म कहे हैं कोई वायस्वभाव कहे हैं कोई काल कोई दैव कोई काम कहे हैं सब रे वाहीन सो समस्त वही ईश्वर है और विवाद तौ नाम मा

सर्प

पैनी जिनकी धार ऐसे जे बाण तिन करि पीडित जे यक्ष ते क्रोध कर दौरे उतके आयुध लेले के ध्रुवजी के ऊपर दौरे जैसे फण उठाय के गरुड के ऊपर
दौरे हैं ४ जे ध्रुवजी के सामुहे आए तिन की केवाणन करि काटे है भुजा जंघा शिर ग्रीवा जिन के तिने ध्रुवजी परलोक प्राप्ति करते भए ५ जहां
संन्यासी सूर्यमंडल को भेद के जाइ हैं ध्रुवजी ने मारे जो निरअपराधी यक्ष तिन्हें देख कृपा कर स्वायंभुव मनु आयके ध्रुवजी
सों बोले ६ हे वत्स नरक को द्वार मानो पापिष्ठ जो क्रोध ताकौ करत भए है जाकरके निरअपराधी जे यक्ष तिन्हें तुम मारत भए ७ जैसे साधुन की
निंदा करवे को योग्य कर्म हमारे कुल को उचित नहीं जो तैने निरअपराध यक्षन को यह वध कीयो ८ जो कहो इनने मेरो भैया मारो है

तैस्तिग्मधारैः प्रधने शिलीमुखैरितस्ततः पुण्यजना उपद्रुताः तमभ्यधावन्कुपिता उदायुधाः सुपर्णमुन्नद्धफणा इवाहयः ४ स
तान्पृषत्कैरभिधावतो मृधे निकृत्तबाहूरुशिरोधरोदरान् निनाय लोकं परमर्कमंडलं व्रजंति निर्भिद्य यमूर्ध्वरेतसः ५ ता
न्हन्यमानानभिवीक्ष्य गुह्यकाननागसश्चित्ररथेन भूरिशः औत्तानपादिं कृपया पितामहो मनुर्जगादोपगतः सहर्षिभिः ६
मनुरुवाच अलं वत्सातिरोषेण तमोद्वारेण पाप्मना येन पुण्यजनानेतानवधीस्त्वमनागसः ७ नास्मत्कुलोचितं तात कर्मैत
त्सद्विगर्हितं वधो यदुपदेवानामारब्धस्तेऽकृतैनसां ८ नन्वेकस्यापराधेन प्रसंगाद्बहवो हताः भ्रातुर्वधाभितप्तेन त्वयांग भ्रातृवत्स
लः ९ नायं मार्गो हि साधूनां हृषीकेशानुवर्तिनां यदात्मानं पराग्गृह्य पशुवद्भूतवैशसं १० सर्वभूतात्मभावेन भूतावासं हरिं भवान्
आराध्याप दुराराध्यं विष्णोस्तत्परमं पदं ११ स त्वं हरेरनुध्यातस्तत्पुंसामपि संमतः कथं त्ववद्यं कृतवाननुशिक्षन्सतां व्रतं १२ तितिक्षया
करुणया मैत्र्या चाखिलजंतुषु समत्वेन च सर्वात्मा भगवान्संप्रसीदति १३

भ्रातृवत्सल भैया के वध कर तैने कितने ही मारे हैं ९
निरअपराध कैसें करो तहां कहे हैं हे ध्रुव एक के अपराध करवा के प्रसंग में तैने बहोत मारे हैं
अपराध इनने कीयो है परि लोकन तो यह उचित नहीं हरि के अनुवर्ती साधुन को यह मार्ग नहीं जो देह को अपनो मान पसुन की सी नाई हिंसा करे
नी १० तू तो वालपन ही में है सब प्राणीन में आत्मभाव ता कर हरि कौ आराधन करत वाके परमपद को प्राप्ति होत भयो ११ सो तू हरि के हृदय
में स्थित है हरिदासन में वडाई करवे आप ते सो साधुन को व्रत सीखवे के ऐसें यतन दर कर्म करत भयो १२ सहनशीलता दीनन पे करुणा
सब प्राणीन ते मैत्री ता सवन में समता इन वातन कर सर्वात्मा भगवान् प्रसन्न होइ है १३

फेरत्तो हूंनकी धारा वर्षत भई औरकारो लोहू राधविष्टामूत्रमेदा ओसतें उपरगिरत भयो हे पूनसे आगै विनाशिरके देह गिरत भए २४ तापीछे आका शमे परवत दिखाई दीयें और पथरनकीवर्षा सहत गदा खड्ग मूसल येचा-यो दिसानमेंगिरत भये २५ ऐसेसरननें स्वास जिनकी ऐसे सर्पकी धूकर नेत्रनकर अग्नि ववनकरतसव औरतें आवत भये और मत्तगज सिंहव्याघ्र ए घनके यूथ आवत भए २६ वडो जा मेंसद ऐसो समुद्रतरंगनकर सव ओरतें पृथ्वीको डुवावत भयंकर आवत भयो जैसे प्रलयमें आवेहे २७ ऐसे अनेकविधिकर मन कों त्रासदेवेवारे भयंकरस्वांग आसुरी माया करसृजत भए ऐसे यक्ष क्रूरजिनकी गति २८ असुरनें ध्रुवमेंप्रयोगकरी अतिदुस्तर जो मायाताहि देषकरे

वहुपृष्ठधिरोधास्रकपरपेभूत्रमेदसाः निपेतुर्गगनादस्यकवंधान्यग्रतोऽनघ २४ ततःखेऽदृश्यत गिरिर्निपेतुः सर्वतोदिशं गदापरघनिस्त्रिंशमुसलाः साश्मवर्षिणः २५ अहयोऽशनिनिःश्वासवमंतोऽग्निं रुषाक्षिभिः अभ्यधावन्गजा मत्ताः सिंहव्याघ्राश्च यूथशः २६ समुद्र ऊर्मिभिर्भीमः प्लावयन्सर्वतो भुवं आससाद महाह्रादः कल्पांत इव भीषणः २७ एवंविधान्यनेकानि त्रासनान्यमनस्विनां ससृजुस्तिग्मगतय आसुर्यो माययासुराः २८ ध्रुवे प्रयुक्तामसुरैस्तां मायामतिदुस्तरां निशम्य तस्य मुनयः शमाशंसन्समागताः २९ मुनय ऊचुः औत्तानपाद भगवांस्तव शार्ङ्गधन्वा देवः क्षिणोत्ववनतार्तिहरो विपक्षान् यन्नामधेयमभिधाय निशम्य चाद्धा लोकोऽञ्जसा तरति दुस्तरमंग मृत्युं ३० इति श्रीभागवते चतुर्थस्कंधे दशमोऽध्यायः १० मैत्रेय उवाच निशम्य गदतामेवमृषीणां धनुषि ध्रुवः संदधेऽस्त्रमुपस्पृश्य यन्नारायणनिर्मितं १ संधीयमान एतस्मिन्माया गुह्यकनिर्मिताः क्षिप्रं विनेशुर्विदुर क्लेशा ज्ञानोदये यथा २

वलरहेसवासस विनिःसत्ता आविर्दितद्विष दलयद्यावनंमीमरवाप्रिवेऽिना २ उत्तमप्रायेजो मुनितेध्रुवजीको कल्याणहे ऐसे प्रार्थनाकरत भये २९ हे उत्तानपादके पुत्र भगवान्को शार्ङ्ग धनुष हरि शरणागतनके दुःखनके हरिवेवारे तेरे वैरीनको नाश करीयो जाके नामकीर्तनकरवासुनिके लोक अनायास करस्मृत्युकुं तरे है ३० इतिश्रीभागवते चतुर्थस्कंधे दसमोध्यायः १० मैत्रेयजी कहे है हे विदुर ऐसे नामकीर्तन करवासुनिके लोक अना यास कर मृत्युकुं तरे हे ३० ध्रुवजी नारायणअस्त्रको धनुषमें संधान करत भये १ वानारायणअस्त्रके संधानकर करत जे ऋषिनिनको वचनउपदेश ताको सुनिके ध्रुवजी नारायणअस्त्रको धनुषमें संधान करत भये १ वाध्रुवने जव नारायणअस्त्रको प्रयोग कीयो तब गुह्यकनकी रची माया शीघ्र नास कों प्राप्त भई जैसे ज्ञानके उदयमें रागादिक क्लेशनाश हेजायते २

जीते हैं जीनतें ऐसे यक्ष राक्षसगर्जे इतनेहीमें ध्रुवजीके रथ अस्त्रनमेंतें ऐसे निकसे जैसे कुहलमेंतें सर्प निकसे हैं १५ उग्रधनुषरं कारवेरीन औरखेदवठावत वाणनकर उनके अस्त्रनको नासकरत भये ऐसे पवनमेघनके समूहनको नासकरे है १६ ताध्रुवजीके धनुषमेंसे वाण निकस यक्षनकेकवचनकूं भेदशरीरमें प्रवेश करत भए जैसे वज्र पर्वतनमें प्रवेश करे है १७ भक्तनके रमनोहर जिनके कुंडल ऐसे कटे जो शिर और सुवर्णको जैसो ताल ऐसे उरु मनोहर जिनमें चूडा ऐसी भुजा १८ हार बाजूवंद मुकुट बहुतमोलकी पाग तिनकर व्याप्त वीरनके मनहरवेवारी वहभूमि वहोत सोभादेत भई १९ जेमरे ते तो मरे और जे बाकी रहे ते ध्रुवजीके वाणनके मारे ताडुस्यकर कटे लेपे

नदत्सु यातुधानेषु जयकाशिष्वथो मृधे उदतिष्ठद्रथस्तस्य नीहारादिव भास्करः १५ धनुर्विस्फूर्जयन्दिव्यं द्विषतां खेदमुद्वहन् अस्त्रौघं व्यधमद्बाणैर्घनानीकमिवानिलः १६ तस्य ते चापनिर्मुक्ता भित्त्वा वर्माणि रक्षसां कायानाविविशुस्तिग्मा गिरीनशनयो यथा १७ भल्लैः संछिद्यमानानां शिरोभिश्चारुकुंडलैः ऊरुभिर्हेमतालाभैर्दोर्भिर्वलयवल्गुभिः १८ हारकेयूरमुकुटैरुष्णीषैश्च महाधनैः आस्तृतास्ता रणभुवो रेजुर्वीरमनोहराः १९ हतावशिष्टा इतरे रणाजिराद्रक्षोगणाः क्षत्रियवर्यसायकैः प्रायो विवृक्णावयवा विदुद्रुवुर्मृगेंद्रविक्रीडितयूथपा इव २० अपश्यमानः स तदाततायिनं महामृधे कंचन मानवोत्तमः पुरीं दिदृक्षन्नपि नाविशद्द्विषां न मायिनां वेद चिकीर्षितं जनः २१ इति ब्रुवंश्चित्ररथः स्वसारथिं यत्तः परेषां प्रतियोगशंकितः शुश्राव शब्दं जलधेरिवेरितं नभस्वतो दिक्षु रजोऽन्वदृश्यत २२ क्षणेनाच्छादितं व्योम घनानीकेन सर्वतः विस्फुरत्तडिता दिक्षु त्रासयत्स्तनयित्नुना २३

गाजिनकेऐसे भाजनभरा जैसेसिंहकेपराक्रमकर यूथपाल भाजेहैं २० सोध्रुवजी वाबुद्धमें कोउ योद्धाकूं नदेखकहि उनकी पुरीको देखवेकी इच्छा करेहैं परन प्रवेश करे हैं और सारथीसों कहत भए इनमायावीरनकी चिकिर्षित काहूपे नहीं जान्यो जाइहै २१ ऐसे ध्रुवजी अपने सारथीसे कहे हैं उनके फिरउद्योगकी सेका करे हैं इतने में शब्द सुनते उठ्यो जो शब्द ताय सुनितभये और पवनते दिशानमें धूरउडती दिखाई देत भई २२ इतनेएकक्षणमें ही वादरनके समूहनकर आकाश ढकिगयो चमकत है वीजरी जामें औरडरपावे है असतन

ध्रुव ने यक्षों को बध सुनि के जो आमर्ष शोक करि जात जयन शील रथ में बैठि के यक्षन के रतिवे को जोगों अलकापुरी तहां पुहुंच कर वे हू जात भये ४
ध्रुवजी लक्ष्मण ऐसें कर सेवित जो उत्तर दिशा तामें जाय कर हिमाचल की कंदरा में गुह्यकन कर व्याप्त बहु पुरी ताहि देखत भयो ५ बडी जि
न की भुजा ऐसे ध्रुवजी आकाश दिशान कों नंदित करत शंख बजावत भए जा शंख सब्द कर हे विदुर यक्षन की स्त्री अतिशय दुखित भई ६
तब तो वा शब्द को न सहत बडे बलवान यक्ष आयुध ले ले कर वेगौ निकसत भये ७ उग्र जाको धनुष बडो महारथी ध्रुव वे सब आपे
जो यक्ष तिन कों एक वार ही तीन तीन बाणन कर मारत भयो ८ ते यक्ष ललाट में लगे जे बाण तिन कर आपे को निरस्त मान ता ध्रुव के कर्म को

ध्रुवो भ्रातवधं श्रुत्वा कोपामर्षसुचार्पिता: जेत्रं स्यंदनमास्थाय गतः पुन्यजनालयं ४ गतोदीचीं दिशं राजा रुद्रानुचरसेवितां
ददर्श हिमवद्द्रोण्यां पुरीं गुह्यकसंकुलां ५ दध्मौ शंखं बृहद्बाहुः खं दिशश्चानुनादयत येनोद्विग्नदृशः क्षत्तरुपदेव्योऽत्रसन्भृशं ६
ततो निःक्रम्य बलिन उपदेवमहाभटा असहंतस्तन्निनादमभिपेतुरुदायुधाः ७ स तानापततो वीर उग्रधन्वा महारथः एकैकं यु
गपत्सर्वानहन्बाणैस्त्रिभिस्त्रिभिः ८ ते वै ललाटलग्नैस्तैरिषुभिः सर्व एव हि मत्वा निरस्तमात्मानमाशंसन्कर्म तस्य तत् ९
तेपि चामुममृष्यंतः पादस्पर्शमिवोरगाः शरैरविध्यन्युगपद्द्विगुणं प्रतिचिकीर्षवः १० ततः परिघनिस्त्रिंशैः प्रासशूलपरश्वधैः
शक्त्यृष्टिभिर्भुशुंडीभिश्चित्रवाजैः शरैरपि ११ अभ्यवर्षन्प्रकुपिता सरथं सहसारथी इच्छंतस्तत्प्रतिकर्तुमयुतानां त्रयोद
श १२ औत्तानपादस्स तदा शस्त्रवर्षेण भूरिणा न उपादृश्यत छन्न आसारेण यथा गिरिः १३ हाहाकारस्तदैवासीत्सिद्धानां दिवि पश्यतां
हतोयं मानवः सूर्यो मग्नः पुण्यजनार्णवे १४

सो सब हाहाकार करते भये ध्रुवजी को
बडाई करत भये ९ ते यक्ष जैसे सर्प स्पर्श को ना सहे ऐसे ध्रुवजी को पराक्रम नहीं सह सके प्रतिकार करो चाहे हैं ते बडे खड्ग धोपंग ह
छप छप बाणन कर मारत भए १० तब तो कोप कर ध्रुवजी सो मत कार कर वे को जिन के इच्छा ते रत्न प्रयुत सब मिल करि के बडे खड्ग धोपंग ह
त्रिसूल फरसा शक्ति ऋष्टि भुसुंडी चित्र विचित्र बाणन कर रथ सारथी सहित ध्रुवजी के उपर बाणन की वर्षा करत भये १२ सो ध्रुवजी बहुत
सस्त्रन कर ढके न ही दिखाई दे जैसे धारा से पातक रके हो पर्वत नहीं दिखाई दे है १३ तब तो स्वर्ग में देखत जो सिद्ध तिन ने बडो हाहाकार सब्द कीयो ॥

वेघर

जा घर में दूध कों ऐसी फेन ऐसी सेय्या ते हाथी दांत की किरचा चौकी पद्दा सोने के हने जिन में ऐसे बहुत मोल के जडाऊ आसन हैं ६१ पन्ना और स्फटि
क मणि जिन में और रत्नन कर केवल और रत्नन के दीपक कन्यां प्रकाशमान ६२ ता घर में विचित्र कल्प वृक्षन के बाग हैं जिन हंसन पे पक्षीन के जोडा बो
लत हैं और मत्त भौंरा गावैं हैं ६३ जहां वैडूर्य मणि की सीढी ऐसी अनेकन बावडी तहां जिन में और पद्म उत्पल कुमोदनी जहां फूल रही हैं जलपा
पीया हंस कारंडव कुल चकई चकवा सारसन कर सेवित हैं ६४ उत्तानपाद राजा वा पुत्र को प्रभाव देखि और सुनि कर बडो आश्चर्य को प्राप्त भयो ६५ रा
जा उत्तानपाद ध्रुवजी की जोवन अवस्था देखि और वा में प्रजान को अनुराग देखि और सीमानन को मानतौ देखि ध्रुवजी को पृथ्वीपति करत भयो ६६

पयाफेननिभा सेय्या दांता रुक्मपरिच्छदाः आसनानि महार्हानि यत्र रौक्मा उपस्करा ६१ पत्र स्फटिककुड्येषु महामारकतेषु च: मणिप्रदीपा
आभांति ललनारत्नसंयुता ६२ उद्यानानि च रम्याणि विचित्रैरमरद्रुमैः कूजद्विहंगमिथुनैर्गायन्मत्तमधुव्रतैः ६३ वाप्यो वैडूर्यसोपाना
पद्मोत्पलकुमुद्वतीः हंसकारंडवकुलैर्जुष्टाश्चक्राह्वसारसैः ६४ उत्तानपादो राजर्षिः प्रभावं तनयस्य तं श्रुत्वा दृष्ट्वाद्भुततमं प्रपेदे विस्मयं
परं ६५ वीक्ष्योढवयसं पुत्रं प्रकृतीनां च संमतं अनुरक्तप्रजं राजा ध्रुवं चक्रे भुवः पतिं ६६ आत्मानं च प्रवयसमाकलय्य विशांपतिः
वने विरक्तः प्रातिष्ठद्विमृशन्नात्मनो गतिं ६७ इति श्री भागवते चतुर्थस्कंधे ध्रुवचरित्रे नवमोध्यायः ९ मैत्रेय उवाच: प्रजापतेर्दुहि
तरं शिशुमारस्य वै ध्रुवं उपयेमे भ्रमिं नाम तत्सुतौ कल्पवत्सरौ १ इलायामपि भार्यायां वायोः पुत्र्यां महाबलः उत्कलं नाम नं योषि
रत्नमजीजनत २ उत्तमस्त्वकृतोद्वाहो मृगयायां वलीयसा हतः पुन्यजनेनाद्रौ तन्माताऽस्य गतिं गतिः ३

और अपने पोतों बुद्ध देखि वैराग्य ले तब भए और आत्म स्वरूप को विचार न वन को जात भयो ६७ इति श्री भागवते चतुर्थस्कंधे ध्रुवचरित्रे न
वमोध्यायः ९ मैत्रेयजी कहे हैं हे विदुर ध्रुवजी शिशुमार प्रजापत की बेटी भ्रमी जाको नाम ता हि विवाहत भए ता में कल्प और वत्सर दो पुत्र हो
त भए १ और वायु की पुत्री इला जाको नाम सो ध्रुव की दूसरी स्त्री ता में उत्कल नाम पुत्र ताय उपजावत भए २ उत्तम को विवाह भयो न ही
हो सो वन शिकार को गयो हो सो वन हिमाचल में यक्ष ने मारो वा की माता हू वन गई सो उहां दावाग्नि में जर के मर गई ३ श्री कृष्णायनमो नमः

जो तेरो पुत्र आर्त केतुरिवे वारो वहुत दिनन कौं न छमयौं पायौं सो पृथ्वीमंडल की रक्षा करतं भयौ ५१ शरणागति के दुःख दूर करवे वारो भगवा
न निश्चय पतन ते रक्षा करें जाके ध्यान करवे वारे धीर दुर्जय जो मृत्यु ताहि जीतत भए ५२ ऐसे मनुष्यन ने लडाये जो ध्रुव ताप उत्तम ने पास हित हथ
नी पे चढाय सम्पत्ति कर के जाकी यो राजा प्रसन्न होय पुर में प्रवेश करतौ भयो ५३ कैसो पुर है जहां तहां चंवर जे मरकत मणि के तोरण तिन करके युक्तः
और फलन कर युक्त जे सुपारीन के वृक्ष और केरान के खंभन कर युक्त हैं ५४ आम्रपल्लव वस्त्र माला मुक्ता दाम ऐसे है विलेप जिनमें और दीपकन

तासां संसज्ज नारत्नी हृदि पतन्ते पुत्र आर्शिता प्रतिलव्धाश्चिरेन घोर शिला मंडलं छव: ५१ अभ्यर्चितस्त्वया नूनं भगवान्प्रणतार्ति
हा यदनुध्यायिनो धीरा मृत्युं जिग्युः सुदुर्जयं ५२ लाल्यमानं जनैरेवं ध्रुवं सभ्रातरं नृपः आरोप्य करिणीं हृष्टः स्तूयमानो
विशत्पुरं ५३ तत्र तत्रोपसंक्लृप्तैर्लसन्मकरतोरणैः सवृंदैः कदलीस्तंभैः पूगपोतैश्च तद्विधैः ५४ चूतपल्लववासःस्रक्
मुक्तादामविलंबिभिः उपस्कृतं प्रतिद्वारमपां कुंभैः सदीपकैः ५५ प्राकारैर्गोपुरागारैः शातकौंभपरिच्छदैः सर्वतोलंकृतं
श्रीमद्विमानशिखरद्युभिः ५६ मृष्टचत्वररथ्याट्टमार्गं चंदनचर्चितं लाजाक्षतैः पुष्पफलैस्तंडुलैर्बलिभिर्युते ५७ ध्रु
वाय पथि दृष्टाय तत्र तत्र पुरस्त्रियः सिद्धार्थाक्षतदध्यंबुदूर्वापुष्पफलानि च ५८ उपजह्रुः प्रयुंजाना वात्सल्यादाशिषः सतीः शृण्व
स्तद्वल्गुगीतानि प्राविशद्भवनं पितुः ५९ महामणिव्रातमये सतस्मिन्भवनोत्तमे लालितो नितरां पित्रा न्यवसद्दिवि देववत् ६०

केसमूहन सहित है और जल के भरे भरे कुंभ द्वार द्वार पै धरे है तिन करके युक्त है ५५ सुवर्ण ही जिनमें काम ऐसे कोट और खाई विमानन के शि
खरन कर के शोभित जिनकी तिन कर सब और ते अलंकृत है ५६ उन्नत हैं चौंक गली अटा मार्ग बजार जामें और चंदन कर चर्चित खील अक्षत
पुष्प फल तंदुल बलि इन कर युक्त पुर है ५७ मार्ग में देखे जो ध्रुव जी ताको जहां तहां वात्सल्य ते आसीरवाद देत भए और सब पुर स्त्री सरस्यों पु
क्षत दही जल दूब पुष्प फल ये भेंट देत भये ५८ और मनोहर गीत गावत भईं तिनको गीत सुनत ध्रुव जी पिता के घर में प्रवेश करत भये ५९
बड़े मणिनकर के घर ता में बाप ने लडाये ध्रुव जी सो आनंद ते रहत भये जैसे स्वर्ग में देवता रहे हैं ६०

भा॰ च॰ ३०

तव रुंद रजामें घोड़ा सुनहरी जामें साज ऐसे रथ पे चढ़िकें ब्राह्मण कुल के वृद्ध आप्त बंधुन कर वेष्टित ३९ शंख दुंदुभीन के सब्द वेद ध्वनि करत वण
सद्दन कर पुरते जलदी निकसत भयो पुत्र के देखवे कों जाके उत्साह है ४० सुनती और सुरुची दोउ सुवर्ण कर भूषित उत्तम को वीच में धरे सेना जि
न के संग ऐसे एक डोला में दोउ बैठके जात भई ४१ महुले उपवन मैं जाके ऐसो राजा तासे लें भगवान के चरणारविंदु को धूपरे दूर दूर भयो कूप
घवे धन जाको ऐसे पुत्र कों उज्जान कर आलिंगन करत भयो और वार वार पुत्र के माथे को सूंघत भयो और सीतल नेत्रन के जल कर पुत्र को न्हवावत भयो
भयो है वड़ो मनोरथ जाको ध्रुव जी पिता के चरणन कों प्रणाम करी उनने आसीसन कर सत्कार कीयो पर सज्जनन में मुख्य ध्रुव जी दोउ मातान को प्र

सुनीतिं सुरुचीं चास्य महिष्यौ रुक्मभूषिते आरुह्य शिबिकां सार्द्धं उत्तमेनाभिजग्मतुः ४१ तं दृष्ट्वोपवनाभ्यास आयांतं तरसा रथात्
अवरुह्य नृपस्तूर्णमासाद्य प्रेमविह्वलः ४२ परिरेभेंगजं दोर्भ्यां दीर्घोत्कंठमनाः श्वसन् विष्वक्सेनांघ्रिसंस्पर्शहताशेषाघबंधनं ४३
अथाजिघ्रन्मुहुर्मूर्ध्नि शीतैर्नयनवारिभिः स्नापयामास तनयं जातोद्दाममनोरथः ४४ अभिवंद्य पितुः पादावाशीर्भिश्चाभिमंत्रितः
ननाम मातरौ शीर्ष्णा सत्कृतः सज्जनाग्रणीः ४५ सुरुचिस्तं समुत्थाप्य पादावनतमर्भकं परिष्वज्याह जीवेति बाष्पगद्गदया गिरा ४६
यस्य प्रसन्नो भगवान् गुणैर्मैत्र्यादिभिर्हरिः तस्मै नमंति भूतानि निम्नमाप इव स्वयं ४७ उत्तमश्च ध्रुवश्चोभावन्योन्यं प्रेमविह्वलौ
अंगसंगादुत्पुलकावस्रौघं मुहुरूहतुः ४८ सुनीतिरस्य जननी प्राणेभ्योपि प्रियं सुतं उपगुह्य जहावाधिं तदंगस्पर्शनिर्वृता ४९ पयः स्त
नाभ्यां सुस्राव नेत्रजैः सलिलैः शिवैः तदाभिषिच्यमानाभ्यां वीर वीरसुवो मुहुः ५०

प्रणाम करत भए पीछे उत्तम ने ब्यो जो वालक ध्रुव ताय
सुरुची उठावत भई उठायकर आलिंगन कर आसुंन सहित गद्गद वाणी कर चिरंजीव ऐसे कहत भई ४५ जापे मैत्रे यते आदि गुणन कर भग
वान प्रसन्न भए ताको सब प्राणी आपसे होत नमें हैं जैसे जल निचान में आपते आप उतरे है तातें सुरुची ने जो प्रीत करी सो प्रसन्न भए हरि ४६ उत्तम औ
र ध्रुव दोउ भैया परस्पर प्रेम में विह्वल अंग संगते पुलकावली जिनकें भई वार वार आसून को धारन करत भए ४७ सुनती ध्रुव जी की माता प्रा
णन हू ते प्यारो पुत्र ताहि आलिंगन कर वाके अंगस्पर्श कर आनंद होत भई और मानो सुनती व्याधि को त्यागत भई ४८ ध्रुव जी की माता के नेत्र
न के जल कर सेव्यमान जे स्तन तिनमें ते दूध स्रवत भयो ता रानी सुनती कों ऐसें सब देखते वड़ाई करत भए रानी वाई देत भई ४० ३०

सुनंदादिक उद्धरेता ग्रने कजन्मनमें अभ्यास कर समादि करि जाके पद कों न जात भए ग्रोरमैं वाके चरणारविंदकी छायामें जाय भक्ति पिलेई फिर आयो देषो कर ३० देखो मो मंदभागी की मूर्षता जो संसार के काटवे वारे भगवान के चरणारविंदके निकट जाय जाई जो अंत वान राज्यादि की तो हिसी मागत भयो ३१ मेरी अपेक्षा करि नी चेष्टित जो देवता घातीते प्रसन्न शील देवता न मे मेरी बुद्धि विगार दई जो नारदजी को साचो वचन रैवा लकते रे अव ही मानते न अपमान है याहू मैन गृहण करत भयो ३२ देवकी माया के वसतेय स्वप्नकू जैसे साचो देखेहे ग्रैसें भेददृष्टी में चेतनही है परंतु तोहं यह भ्राताही शत्रु है वाहदिषकर जो हृदयपीड़ा करता भयो प्रभु मेवन रूहै ३३ मैंने हरिकों प्रसन्न कर जो प्रार्थना करी सो व्यर्थ जैसे

ध्रुव उवाच समाधिना नैकभवेन यत्पदं विदुः सनंदनाद्या ऊर्ध्वरेतसः मासैरहं षड्भिरमुष्य पादयोः छायामुपेत्यापगतः पृथङ्मतिः ३० अहोवत ममानात्मज्ञ मंदभाग्यस्य पश्यत भवच्छिदः पादमूलं गत्वा याचे यदंतवत् ३१ मतिर्विदूषिता देवैः पतद्भिरसहिष्णुभिः यो नारदवचस्तथ्यं नाग्राहिषमसत्तमः ३२ दैवीं मायामुपाश्रित्य प्रसुप्त इव भिन्नदृक् तप्ये द्वितीयेऽप्यसति भ्रातृभ्रातृव्यहृद्रुजा ३३ मयैतत्प्रार्थितं व्यर्थं चिकित्सेव गतायुषि प्रसाद्य जगदात्मानं तपसा दुष्प्रसादनं भवच्छिदमयाचेऽहं भवं भाग्यविवर्जितः ३४ स्वाराज्यं यच्छतो मौढ्यान्मानो मे भिक्षितो वत ईश्वरात्क्षीणपुण्येन फलीकारानिवाधनः ३५ मैत्रेय उवाच न वै मुकुंदस्य पदारविंदयो रजोजुषस्तात भवादृशा जनाः वांछंति तद्दास्यमृतेऽर्थमात्मनो यदृच्छया लब्धमनःसमृद्धयः ३६ आकर्ण्यात्मजमायांतं संपरेत्य यथागतं राजा न श्रद्दधे भद्रमभद्रस्य कुतो मम ३७ श्रद्धाय वाक्यं देवर्षेर्हर्षवेगेन धर्षितः वार्ताहर्तुरतिप्रीतो हारं प्रादान्महाधनं ३८ सदश्वं रथमारुह्य कार्तस्वरपरिष्कृतं ब्राह्मणैः कुलवृद्धैश्च पर्यस्तोऽमात्यबंधुभिः ३९ शंखदुंदुभिनादेन ब्रह्मघोषेण वेणुभिः निश्चक्राम पुरात्तूर्णमात्मजाभीक्षणोत्सुकः ४०

ग्राधुलजा की गई ता की वि न्यायं यर्थ जगत के आत्मा दुप्रसाद भगवान तिनकों तप कर प्रसन्न कर संसार काटवेवारे हरि तिन तें भाग्यरहित में संसारही माग्यो ३४ निजआनंद के देवेवारे हरि तिनतें क्षीणपुन्य जो मैं ता मैंने अभिमान ही माग्यो ग्रैसे कोउ निर्द्धन पुरुष चक्रवर्ती राजा जाते तुष कणही मागे हे विदुर मुकुंद भगवान के चरणारविंदकी रज के सेवन करनवारे तुमसारके जेजन ते तो हरि के दास्य विना और कछु प्रार्थना नहीं वांछित हैं जो यदृच्छा करि लब्धना करके ही है मन की समृद्धि जिनके ३५ जैसे कोई परलोक ते कै आवे ग्रैसे पुत्र को आयो मोहई सो सुनि के राजा विश्वास न करत भयो मो अभागे को ग्रैसो भाग्य कहां सो ध्रुव आवे ६ फेर तो नारदजी को सत्य करि पुत्र थोरे ही दिन में आवेगो तो नारदके वचन कूं साचो मान हर्ष के वेग करि धर्षित हूवा बाल्ताय वेवारे को

भा० च० ग्रोर तुम्हारो पिता पृथ्वी कूं तुमे देवन कूं जायगो तब तुम धर्म को आश्रय लें छत्तीस हजार वर्षताई पृथ्वी को रक्षा करोगे २२ ग्रोर तेरो यत्सनाम्नी
२४
परंतु मेरो भ्राता जो उत्तम सो तेरो भ्राता तेरे ते संतान बिना ही मृगया जाय उत्तम नष्ट हो जायगो यक्ष वाकी मारेगो तब वाके दुःख तें तेरी सुरुची माता वन में जायगी तब दावाग्नि में प्रवेश करेगी २३ फेर तू रणभूमि में दूसरे अश्वमेध यज्ञ न कर के यजन कर नाना दक्षिणा करि अनेक सुख भोग कर अंत में मेरो स्मरण करेगो २४ तपीन के सब लोकन करि नमस्कृत जो मेरो स्थान जाको जायगो जो लोक ऋषीन हू ते उपर है जहां को गयो फेर पीछो नहीं २५ मैत्रेयजी कहते हैं हे विदुर ग्रैसे ध्रुव ने पूजन जाको कीयो सो भगवान ध्रुव को अपनो स्थान दे कर वा बालक को देखते गरुडध्वज भगवान अपने धाम को जात भए २६ सो ध्रुव

प्रस्थिते तु वनं पित्रा दत्त्वा गां धर्मसंश्रयः षट्त्रिंशद्वर्षसाहस्रं रक्षिताव्याहतेंद्रियः २२ त्वद्भ्रातर्युत्तमे नष्टे मृगयायां तु तन्मनाः अन्वेषंती वनं माता दावाग्निं सा प्रवेक्ष्यति २३ इष्ट्वा मां यज्ञहृदयं यज्ञैः पुष्कलदक्षिणैः भुक्त्वा चेहाशिषः सत्या अंते मां संस्मरिष्यसि २४ ततो गंतासि मत्स्थानं सर्वलोकनमस्कृतं उपरिष्टादृषिभ्यस्त्वं यतो नावर्तते यतिः २५ मैत्रेय उवाच इत्यर्चितः स भगवानतिदिश्यात्मनः पदं बालस्य पश्यतो धाम स्वमगाद्गरुडध्वजः २६ सोऽपि संकल्पजं विष्णोः पादसेवोपसादितं प्राप्य संकल्पनिर्वाणं नातिप्रीतोऽभ्यगात्पुरम् २७ विदुर उवाच सुदुर्लभं यत्परमं पदं हरेर्मायाविनस्तच्चरणार्चनार्जितं लब्ध्वाप्यसिद्धार्थमिवैकजन्मना कथं स्वमात्मानममन्यतार्थवित् २७ मैत्रेय उवाच मातुः सपत्न्या वाग्बाणैर्हृदि विद्धस्तु तान्स्मरन् नैच्छन्मुक्तिपतेर्मुक्तिं तस्मात्तापमुपेयिवान् २८

जो हृसं कल्प की तें प्राप्ति जामें ग्रैसो मनोरथ हरि के चरणारविंद की सेवा कर प्राप्त होई प्राप्ति प्रसन्न होकर अपने पुर कूं आवत भए २७ विदुरजी पूछे हे हे मैत्रेयजी सकामीन कों दुर्लभ जो भगवान को परंपद वा की सेवा चरणकी कर प्राप्ति भयो ता हि एक जन्म ही में पा कर वा पुरुषार्थ को जान वे वारो के से आइ के अप्राप्ति मनोरथ न कों मानत भयो सो कहो २७ मैत्रेयजी बोले हे विदुर सपत्नी माता के वचन रूप वाणन कर हृदय में विंध्यो तिनें स्मरण करत पछतात करत भयो जा जो मैंने मुक्ति पति भगवान ते मुक्ति की इच्छा न करी ग्रैसे पछितात भयो २८

जो कहेंगे मोकों ले स्वस्व प्रमायादिक अवस्था मोमे जीव सोंवृत्ता विशेष रहें नहीं कहे हे तुम नित्य मुक्ति हैं जीव तुम्हारी रूपा ते छूटे हैं तुम शुद्ध हो वह मली हैं तुम
बुद्धि ते तत्स्वरूप हे तुम आत्मा हो वह जीव जड तुम निरविकार हो वह विकारी तुम आदिपुरुष वह आदिमान तुम भगवान वह अधम हीन तुमतो ऐश्वर्य
न कोई ईश्वर वत पावैं ते ताते जीव न ते तुम विलक्षण रूप हो ताते बुद्धि की जो अवस्था ता हि अखंडित चिद्धि कि कवि तुम देखो हो छठा ऐसे ही हैं एक पालन
समय में यज्ञाधिप सो विष्णु तुम ही हो १५ जा तुम में विरुधनि न की गति ऐसी विद्यादिक विविध सकी क्रमते अवस्थाते हो हो सो तुम अपरिग्रह
विश्व की जाते उत्पत्ति एक आनंद आद्य आनंद मात्र अविकारी ता हि में शरण प्राप्ति भयो हूं १६ हे भगवान् परमानंद मूर्ति जो तुम ता तुम्हारे चरणारविंद

तुमनित्यमुक्तपरिशुद्धविबुध आत्माकूटस्थ आदिपुरुषो भगवांस्त्र्यधीशः यद्बुद्ध्यवस्थितिमखंडितया स्वदृष्टा स्थितावधी मखो व्यतिरि
क्त आस्ते १५ यस्मिन्विरुद्धगतयो ह्यनिशं पतंति विद्यादयो विविधशक्तय आनुपूर्व्यात् तद्ब्रह्म विश्वभवमेकमनंतमाद्यमानंदमात्रमवि
कारमहं प्रपद्ये १६ सत्याशिषो हि भगवंस्तव पादपद्ममाशीस्तथानुभजतः पुरुषार्थमूर्तेः अप्येवमार्य भगवान्परिपाति दीनान्वाश्रेव वत्स
कमनुग्रहकातरोस्मान् १७ मैत्रेय उवाच अथाभिष्टुत एवं वै सत्संकल्पेन धीमता भृत्यानुरक्तो भगवान्प्रतिनंद्येदमब्रवीत १८ श्रीभ
गवानुवाच वेदाहं ते व्यवसितं हृदि राजन्यबालक तत्प्रयच्छामि भद्रं ते दुरापमपि सुव्रत १९ नान्यैरधिष्ठितं भद्र यद्भ्राजिष्णु ध्रुवक्षितिः
च यत्र ग्रहर्क्षताराणां ज्योतिषां चक्रमाहितं मेढ्यां गोचक्रवत्स्थास्नु परस्तात्कल्पवासिनां २० धर्मोग्निः कश्यपः शक्रो मुनयो ये वनौकसः
चरंति दक्षिणीकृत्य भ्रमंतो यत्सतारकाः २१

कों राज्यादिक ते परमार्थ फल निश्चै होहैं तुम ही पुरुषार्थ हो परंतु जो निष्कामिता कर भजे हैं ताकों यद्यपि है तो ऐसें तथापि हे स्वामि सकामी जो हम तिनें
तुम संसार भय ते रक्षा करो हो ताते भक्तन के हित चरण में परवस हो जैसे नवीन ब्याही गाय बछरा कों दूधि प्यावे है और वृषादिकन ते रक्षा करे है
तैसे तुम भक्तन की रक्षा करो हो १७ मैत्रेय कहै हैं हे विदुर सत्यसंकल्प बुद्धिमान ध्रुव ने जब अस्तुति करी तब भक्तन में जिन को अनुराग ऐसे भग
वान ध्रुव कों बड़ाई देकै यह बोले १८ हे क्षत्रीबालक मैं तेरो निश्चय जानूं हूं ताते जो और न कूं दुर्लभ है ऐसो स्थान मैं तोहि देउंगो १९ और नें
काहू नें नहीं पायो जो तेजोमय ध्रुव है निवास जामें जा स्थान में ग्रह नक्षत्र तारा ज्योतिषचक्र स्थित है २० जैसें मेढ के और धार गोचक्र विचरे है
ऐसें कल्पवासी धर्म अग्नि कश्यप इंद्र सब वनवासी सप्तऋषि जा ध्रुवस्थान की प्रदक्षिणा करत भ्रमते विचरे हैं २१

भा॰ च॰ हे नाथ यत्न जो ब्रह्मा है सो तुम्हारी दई ही यो ज्ञान कर या विश्व को देखत भयो तुम्हारी शरण ले जैसे सोयो पुरुष जाग के देखे है ता तुम्हारे चरणारविंद शि
२७ न को शरणागत हित सब ईश्वर दीयन के जीवन के हेतु कारी तुम्हारे कदेउपकार को जो जानें सो हे दीनबंधु कैसें भूलें ८ जो की ई जन्ममरण के छुडायवे के लीयें कल्प
वृक्षरूपरी के तुम ता हि भजें हैं और इनि पर लोक लये यह देह ताकर विषयन की चाह करें तिनकी बुद्धि तुम्हारी माया ने हरी हैं जो विषय सुख तो मनुष्यन को नरक
अक्षर हे ताउ देह में होय ९ हे प्रभो यह देहधारीन में तुम्हारे चरणारविंद के ध्यान ते वा तुम्हारी भक्तन के कथा सुनने तें जो आनंद हो है सो आनंद निजानंद
रूप ब्रह्म में न ही है सो काल कर खंडित विमानन ते गिरत जो देवता तिनको तो कहां ते होयगो १० हे अनंत जे को उ महान भाव निर्मल तिनके हृदय

त्वद्दत्तया वयुनयेदमचष्ट विश्वं सुप्तप्रबुद्ध इव नाथ भवत्प्रपन्नः तस्यापवर्ग्यशरणं तव पादमूलं विस्मर्यते कृतविदा कथमार्तबंधो ८ नूनं विमुष्ट
मतयस्तव मायया ते ये त्वां भवाप्ययविमोक्षणमन्यहेतोः अर्चंति कल्पकतरुं कुणपोपभोग्य मिच्छंति यत्स्पर्शजं निरयेपि नृणां ९ या निर्वृतिस्त
नुभृतां तव पादपद्मध्यानाद्भवज्जनकथाश्रवणेन वा स्यात् सा ब्रह्मणि स्वमहिमन्यपि नाथ मा भूत् किंत्वंतकासिलुलितात्पततां विमाना
त् १० भक्तिं मुहुः प्रवहतां त्वयि मे प्रसंगो भूयादनंत महताममलाशयानां येनांजसोल्बणमुरुव्यसनं भवाब्धिं नेष्ये भवद्गुणकथामृतपानमत्तः
११ ते न स्मरंत्यतितरां प्रियमीश मर्त्यं ये चान्वदः सुतसुहृद्गृहवित्तदाराः ये त्वब्जनाभ भवदीयपदारविंद सौगंध्यलुब्धहृदयेषु कृतप्रस
गाः १२ तिर्यङ्नगद्विजसरीसृपदेवदैत्यमर्त्यादिभिः परिचितं सदसद्विशेषं रूपं स्थविष्ठमज ते महदाद्यनेकं नातः परं परम वेद्मि न यत्र वा
दः १३ कल्पांत एतदखिलं जठरेण गृह्णन् शेते पुमान्स्वदृगनंतसखस्तदंके १४

सो तुम में भक्ति करे हैं तिनकों वार वार मोकों प्रसंग होय जिनके प्रसंग कर तुम्हारे गुणकथारूप अमृत को पान कर मत्त होई विना ही यत्न करें बहुत
जामें दुःख ता संसार समुद्र के पार में हो जाउंगो ११ जो कोई तुम्हारे चरणारविंद सौगंध में लुब्ध जिनको हृदय ऐसे साधु तिनमें की यो है प्रसंग जिननें ते
प्यारो मनुष्य सरीर ताहि दुःख नहीं करे हैं और या देह पीछे जे पुत्र सुहृद गृह द्रव्य ईस्त्री तिनें हू स्मरण नहीं करे हैं कथामृत में मत्त होय जाहे १२
तीर्यक वृक्ष तिनमें व्याप्त द्विज पक्षी जंगम देत्य मनुष्यादिकन कर व्याप्ति सत्य असत्य जाके विशेष महदादिक अनेक जाके कारण ऐसो तुम्हारो स्थू
ल विराट रूप ताहि में केवल जानूं हूं और तुम्हारो ब्रह्मरूप ताहि नहीं जानूं हूं १३ प्रलय में या विश्व के पेट में धरं जो तुम दृष्टा शेष की गोदी में सोय
हो ता तुम्हारी नाभि सी समुद्र ता में भयो स्वर्ण मय लोकात्मक मल ताकी कर्णिका में ते तेजस्वी ब्रह्मा होत भयो ता दरको में प्रणाम करूं हूं १४

सोध्रुवजीयोगकेफलकरनिश्चलजोबुद्धि ताकरहृदयकमलमैंफुरत वीजुरीसीजाकीकांति ताभगवान्कोंग्रंतरदृष्टिकरदेखैहैं ग्रोरगरू डपैचढेवाहिरठाढेहैं तिनैंनहीदेखैहैं तवतोंहरिनैंभीतरकोरूपछिपायलीयो तवतोहरिकोंग्रंतरहितभयोदेखिउठिकैंजैसोभीतरध्यानक रैहोतेसोईवाहिरदेखतभयों २ ताभगवानकेदर्शनकरतभयोहैसंभ्रमजाकूं ऐसोध्रुवदंडकीसीनांईग्रंगनसहितदंडवतकरतभयोः नै त्रनकरपीवतसोदेखत मुखसोंचुंवनसोंकरत भुजानसोंग्रालिंगनसोकरत प्रणामकरतभयो ३ सोवालककप्रस्तुतिकरवेकोंचाहैहैप रकरजानेनहीं तवसवकेहृदयमैंभगवान्जानकेहाथजोरैंठाडेजोवालक ध्रुव ताहिकृपादृष्टिकरिकपोलमैं देवमयशंखकरिस्पर्शक

१००

सवैधियायोगविपाकतीव्रयाहृत्पद्मकोशेस्फुरितंतडित्प्रभं तिरोहितंसहसैवोपलक्ष्यवहिःस्थितंतदवस्थंददर्श २ तद्दर्शनागतसाध्वसः क्षितावववंदितांगंविनमय्यदंडवत् दृग्भ्यांप्रपश्यन्प्रपिबन्निवार्भकश्चुंबन्निवास्येनभुजैरिवाश्लिषन् ३ सतंविवक्षंतमतद्विदंहरिर्ज्ञात्वास्यसर्वस्यचहृद्यवस्थितः कृतांजलिंब्रह्ममयेनकंबुनापस्पर्शबालंकृपयाकपोले ४ सवैतदैवप्रतिपादितांगिरंदैवींपरिज्ञातपरात्मनिर्णयः तंभक्तिभावोभ्यगृणादसत्वरंपरिश्रुतोरुश्रवसंध्रुवक्षितिः ५ ध्रुवउवाचः योंतःप्रविश्यममवाचमिमांप्रसुप्तांसंजीवयत्यखिलशक्तिधरःस्वधाम्ना ग्रन्यांश्चहस्तचरणश्रवणत्वगादी न्प्राणान्नमोभगवतेपुरुषायतुभ्यं एकस्त्वमेवभगवन्निदमात्मशक्त्यायंनाभिसिंधुरुहकांचनलोकपद्म गर्भेद्युमान्भगवते

रतभए ५ सोध्रुवजीशंखकोंकपोलमैलगावतेंही देववाणीकोपाय ग्रान्योहैईश्वरजीवकोंनिर्णयजानैं याहीतेभक्तिकरकहैप्रेमजाको सोध्रुव विख्यातजाकीवडीकीर्त्तिताहरिकीग्रस्तुतिकरतभयों ५ ध्रुवश्रीजीनकेधरवेवारेजोतुम सोमेरेभीतरप्रवेशकरयतलीनजोवाणी ताहि ग्रोरहस्तचरणश्रवणत्वचाप्राणतिनैंजिवाग्रोहों ताग्रंतरयामीकोंमेरीदंडोतहै ६ एकहीतुम मायानाकोनाम वहोतजामैंगुण ग्रैसी पाचिनकरमहत्तादिक सवविश्वकोंसृजकरयामैप्रवेशकरोहों ग्रोरइंद्रीयादिकनमैंप्रवेशहोई ताइनमैंस्थितग्रग्निकीसीनांई नानाप्रकार

भ्रूतइंद्रीजामैलीनहोय तायमनकूंसवग्रोरतेरोकेकरभगवानकेस्वरूपकोंध्यानकरतभयों १७ ग्रोरकछूकोंध्यानवरतभये महत्तादिकनमैंग्राधा रप्रधानपुरुषकेईश्वरब्रह्मताकोधारणकरैसंतें ध्रुवजीकोंतेजनसहतनहीग्रोरतीनोंलोककंपितभये १८ नवराजकुमारध्रुवजोएकपाउकरिस्थ तहोतभए तववाकेग्रंगुष्ठकरपीडतपृथ्वीग्राधीग्रोरकोनवतभई जैसेहाथीकेचढेतैपेडपेडमैंनोकानवतहै १९ ताध्रुवजीनैविश्वात्माभगवान्कों ग्रात्मतैग्रभेदकरिकरनध्यानकरोप्राणनकोरोकिकैंतवविश्वकोंग्रात्मामैंरोकिकैंरप्राणरोकेसंतें सवविश्वकोंप्राणनिरोधभयो तवतोलोकपा लनसहतलोककैश्वाससवरुकगए तवपीडतहोईसवहरकीसरणलेतभए २० हेभगवान्सवस्थावरजंगमप्राणीनकेशरीरकोजोयहप्राणनिरोधता

(१०१)

सर्वतोमनग्राकृष्यहृदिभूतेंद्रियाशयं ध्यायेन्भगवतोरूपंनाद्राक्षीत्किंचनापरं १७ ग्राधारंमहदादीनांप्रधानपुरुषेश्वरंब्रह्मधारयमाणस्त्रयोलोकाश्चकंपिरे १८ यदैकपादेनसपार्थिवर्भकस्तस्थौतदंगुष्ठनिपीडितामही ननामतत्रार्द्धमिभेंद्रधिष्ठितातरीवसव्येतरतःपदेपदे १९ तस्मिन्नभिध्यायतिविश्वमात्मनोद्वारंनिरुध्यासुमनन्ययाधिया लोकानिरुच्छासनिपीडिताभृशंसलोकपालाःशरणंययुर्हरिं २० देवाउचुः नैवंविदामोभगवन्प्राणरोधंचराचरस्याखिलसत्वधाम्ना विधेहितन्नोवृजिनाद्विमोक्षंप्राप्तावयंत्वांशरणंशरण्यं २१ श्रीभगवानउवाचः मभैषवालंतपसोदुरत्ययान्निवर्तयिष्ये प्रतियातस्वधाम यतोहिवःप्राणनिरोधग्रासीदौत्तानपादिर्मयिसंगतात्मा २२ इतिश्रीभागवतेचतुर्थे ध्रुवचरित्रेग्रष्टमोध्यायः ८ श्रीमैत्रेयउवाचः नयेवमुत्सन्नभयाउरुक्रमेकृतावनामाप्रययुस्त्रिविष्टपं सहस्रशीर्षापिततोगरुत्मतामधोर्वनंभृत्यदिदृक्षयागतः १

हितमनहीजानेहैंकोंभयो सोयाकेंशांतेतमारीमोक्षकरो शरणागतपालकजोतुमताकुंम्हारीहमशरणप्राप्तभयेहैं २१ भगवानवोलेहेदेवदे वताहोतुमचिंताभयमतिकरो एकमेरोवालकभक्तहै सोवाकोंवालहठहैमेरेमिलवेकों सोमेवाकेपासजायकें वातेदुरत्ययतपतेनिवृतकरुंगो जातेयहतुम्हारोंसवप्राणनिरोधभयोहै सोवहउत्तानपादकोवेटाध्रुव मोमैंविश्वरूपमैंएकपकोंप्राप्तहैसोजानो २२ इतिभागवतेचतुर्थे ध्रुवचरित्रेग्रष्टमोध्यायः ८ मैत्रेयजीकहैहैहेविदुर भगवाननैंउनलोकपालनसोंयहकह्यो तवगएहैंभयजिनकेतेसवभगवान्कोंप्रणामकरस्वर्ग स्वर्गकोंजातभए ग्रोरसहस्त्रजाकेशिरऐसेभगवान्गरुडपैचढकरग्रपनेभक्तध्रुवजीकोंदेखवेकीइच्छाकरमधुवनकोंजातभये १ हरेनमः ॥

ऐसेहि वंशमें खेद है स्त्री के आधीन मैं ता मेरी दुष्टता देखो जो प्रेम करि गोदीमें चढ़ो चाहत जो ध्रुव ताहि अभिनंदन करत भयो ६७ पलसुनि नारदजी बोले हे राजन् के पति देवतान करि रक्षित वह पुत्र ताहि तू सोच मति करे वाको प्रभाव न जानके जाके यश करि जगत छाइ जायगो ६८ लोकपाल न हू कूं दुष्कर कर्म करिके तेरो यश विस्तार थोरे दिनन हीमें घर आवेगो ६९ मैत्रेयजी कहे हे विदुर ऐसे जो नारदजी ने कह्यो तासु सुनि के पृथ्वीपति राज्यलक्ष्मी के अनादर करि पुत्रही को चिंतमन करत भयो ७० अब जो है सो मधुवनमें जाय स्नान करि वा दिन तीथो उपवास करि सावधान होइ जैसे ऋषीने आज्ञा दई है तैसेई हरिको पूजन करत भयो ७१ तीन रात्रि के अंत मैं कैथ और बेर

अहो मे वत दौरात्म्यं स्त्रीजितस्योपधारय योंऽकं प्रेम्णारुरुक्षंतं नाभ्यनंदमसत्तमः ६७ नारद उवाचः मामा शुचः स्वतनयं देवगुप्तं विशांपते तत्प्रभावमविज्ञाय प्रावृंक्ते यद्यशो जगत् ६८ सुदुष्करं कर्म कृत्वा लोकपालैरपि प्रभुः एष्यत्यचिरतो राजन् यशो विपुलयंस्तव ६९ मैत्रेय उवाचः इति देवर्षिणा प्रोक्तं विश्रुत्य जगतीपतिः राजलक्ष्मीमनादृत्य पुत्रमेवान्वचिंतयत् ७० तत्राभिषिक्तः प्रयतस्तामुपोष्य विभावरीं समाहितः पर्यचरदृष्यादेशेन पूरुषम् ७१ त्रिरात्रांते त्रिरात्रांते कपित्थबदराशनः आत्मवृत्यनुसारेण मासं निन्येऽर्चयन्हरिं ७२ द्वितीयं च तथा मासं षष्ठे षष्ठेऽर्भको दिने तृणपर्णादिभिः शीर्णैः कृतान्नोऽभ्यर्चयन् विभुं ७३ तृतीयं चानयन्मासं नवमे नवमेऽहनि अब्भक्ष उत्तमश्लोकमुपाधावत्समाधिना ७४ चतुर्थमपि वै मासं द्वादशे द्वादशेऽहनि वायुभक्षो जितश्वासो ध्यायंदेवमधारयत् ७५ पंचमे मास उप्राप्ते जितश्वासो नृपात्मजः ध्यायन्ब्रह्म पदैकेन तस्थौ

खायके रहे ऐसे देह अरु बल के अनुसार हरिको पूजन करि एक महीना वितीत करत भयो ७२ दूसरे महीना मैं छटे छटे दिन सूखे गिरे तृण खायके रहे ऐसे देह अरु बल के अनुसार हरिको पूजन करि एक महीना वितीत करत भयो ७२ दूसरे महीना मैं छटे छटे दिन सूखे गिरे तृण पर्णतिन करि विर्वाह करे देहको हरिको पूजन करत भयो ७३ तीसरे महीना मैं नौये नौये दिन जल खाय करि निर्वाह करि केव्यतीत करत भयो और हरिको पूजन करत भयो ७४ ऐसे प्रतिमास अहार को संकोच करत और तपकी वढवार करत भयो ७५ चौथे महीना मैं १२ दिवस पवन भक्षन करत भयो और स्वास जीत हरिको ध्यान करत भयो ७५ पांचये महीना जव प्राप्ति भयो जव जीरो कुमार स्वास जीत ब्रह्मको ध्यान करते एक पाउ करि ठाढो होत भयो ७६

भा० च०
२६

ऐसे ध्रुव भयो पूजा हरिकी निश्चय जाको चित्त मनन शील संतः परमित जाकी वाणी और थोरे ही वनन फल को भोजन करनो ताप जो रमुनि पृथ्वी जलादिकन तु मैं हरको पूजन करे ५९ अपने नकी इच्छा करि जे अवतार तिन के चरित्र वन करि माया करि जो जो करे है ताको ध्यान ह्रदय मैं ध्यान करे ५७ भगवान की परचर्या जितनी वडे न करि मैंने सुनी तितनी ह्रदय तर मंत्र करि हरको अर्पन करे ५८ या ही रीति ह्रदय मैं मन वाणी शरीर करि पूज्यमान निष्कपट भजन करि है पुरुषन को धर्मादिकन मैं जो वांछित अपूताय दे पदे ५९ ऐसे ई जे पनके विषयन मैं विरक्त होय बहुल भक्ति योग करि निरंतर भाव करि मुक्ति के अर्थ साक्षात् हरिको भजन करे ६० ऐसे जव नारदने कह्यो तब

लब्धाद्रव्यमयीमर्चां क्षित्यंबादिषु वार्चयेत् आभृतात्मा मुनिः शांतो यतवाङ्मितवन्यभुक् ५६ स्वेच्छावतारचरितैरचिंत्यनिजमायया करिष्यत्युत्तमश्लोकस्तद्ध्यायेद्धृदयंगमं ५७ परिचर्या भगवतो यावत्यः पूर्वसेविताः ता मंत्रहृदयेनैव प्रयुंज्यान्मंत्रमूर्तये ५८ एवं कायेन मनसा वचसा च मनोगतं परिचर्यमाणो भगवान् भक्तिमत्परिचर्यया ५९ पुंसाममायिनां सम्यग्भजतां भाववर्द्धनः श्रेयो दिशत्यभिमतं यद्धर्मादिषु देहिनां ६० विरक्तश्चेंद्रियरतौ भक्तियोगेन भूयसा तं निरंतरभावेन भजेताद्धा विमुक्तये ६१ इत्युक्तस्तं परिक्रम्य प्रणम्य च नृपार्भकः ययौ मधुवनं पुण्यं हरेश्चरणचर्चितं ६२ तपोवनं गते तस्मिन्प्रविष्टोऽतःपुरं मुनिः अर्हितार्हणको राज्ञा सुखासीन उवाचतं ६३ नारद उ० राजन्किं ध्यायसे दीर्घं मुखेन परिशुष्यता किं वा न रिष्यते कामो धर्मो वार्थेन संयुतः ६४ राजोवाच सुतो मे बालको ब्रह्मन् स्त्रैणेनाकरुणात्मना निर्वासितः पंचवर्षः सह मात्रा महाकविः ६५ अप्यनाथं वने ब्रह्मन्मास्मादंत्यर्भकं वृकाः श्रांतं शयानं क्षुधितं परिम्लानमुखांबुजं ६६

ध्रुवजी परिक्रमा दे नारदजी को दंडवत करि हरिके चरणन करि मंडित महापवित्र जो मधुवन तहां जात भये ६२ जव ध्रुवजी तपोवनकौ गये तवही नारदजी राजा उत्तानपाद के अंतःपुरमें जात भये उहां राजा ने वडी पूजा करी सुखपूर्वक आसन पै वैठारे तब नारदजी राजा सो यह वोले हे राजन तेरो मुख कैसे सूख रह्यो है तू कहा चिंता करै है कहूं अर्थ करि युक्त धर्म वा काम तौ तेरो नष्ट नहीं भयो ६४ राजा वोलो हे ब्रह्मन् मेरो वालक पांच वर्षको सो स्त्री के आधीन महा निर्दई मैंने महतारी सहत वाहिर निकार दीयो अरो वडो बुद्धिवान है ६५ वा अनाथ को वन मैं मति स्यारी मिडीया खाइजार अनीत होइ कहूं सोई जायगो छुधावान भोलो आवेगो मुखकमल वाकौ मलीन होई

जुरुण रमणीक जाकौं अंग अरुण होठ और नेत्रन कौं धारण करें हैं प्रणतनकौं आश्रय सब पुरुषार्थन की निधि शरणागत पालक करुणा केसागर ४६ श्रीवत्स को जाके चिन्ह मेघवत स्याम उत्तम पुरुष लक्षणयुक्त वनमाला पहरे शंखचक्रगदापद्म इनकर युक्त अभिव्यक्त चार जाके भुजा ४७ किरीट सिर कुंडलपहरें बाजूबंद चूरा मणि कर युक्त कौस्तुभमणि ते ग्रीवा में जाके पीताम्बर पहरें ४८ छुद्र घंटकान के समूह करशोभित मन नेत्रनि कौं आनंद के देवे वारें दीप्यमान सुवर्ण के जाके नूपुर शांतिप्रति शय दर्शनीय हैं मूर्ति जाकी ४९ नख मणिन के समूह कर दीप्यमान जे चरण तिन कर भक्तन के हृदय कमल कर्णिका में जो मध्य स्थान तामे स्थित मन में स्थित करें हैं ५०

तरुणं रमणीयांगमरुणोष्ठेक्षणाधरं प्रणताश्रयणं नृम्णं शरण्यं करुणार्णवं ४६ श्रीवत्सांकं घनश्यामं पुरुषं वनमालिनं शंखचक्रगदापद्मैरभिव्यक्तचतुर्भुजं ४७ किरीटिनं कुंडलिनं केयूरवलयान्वितं कौस्तुभाभरणग्रीवं पीतकौशेयवाससं काचीकलापपर्यस्तं लसत्कांचननूपुरं ४८ दर्शनीयतमं शांतं मनोनयनवर्धनं ४९ पद्भ्यां नखमणिश्रेण्या विलसद्भ्यां समर्चतां हृत्पद्मकर्णिकाधिष्ण्यमाक्रम्यात्मन्यवस्थितं ५० स्मयमानमभिध्यायेत्सानुरागावलोकनं नियतेनैकभूतेन मनसा वरदर्षभं ५१ एवं भगवतो रूपं सुभद्रं ध्यायतो मनः निर्वृत्या परया तूर्णं संपन्नं न निवर्तते ५२ जपश्च परमो गुह्यः श्रूयतां मे नृपात्मजा यं सप्तरात्रं प्रपठन् पुमान्पश्यति खेचरान् ५३ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय मंत्रेणानेन देवस्य कुर्याद्द्रव्यमयीं बुधः सपर्यां विविधैर्द्रव्यैर्देशकालविभागवित् ५४ सलिलैः शुचिभिर्माल्यैर्वन्यैर्मूलफला

मुसक्यान युक्त अनुराग सहित जामे चितवन वरदेन वारेन मैं श्रेष्ठ ता भगवान कौं एकाग्रमन कर ध्यान करें ५१ ऐसे भगवान सम रूप ताय ध्यान करत जो पुरुष ताकौं मन परम निर्वृति कहे शीघ्र ही प्रसन्न होई ५२ और हे राजकुमार परमगुह्य जो जप जो मैं कहतो हों सुनि ताको सात रात्रि जो चित दे पढे जो पुरुष देवतान कूं साक्षात देखे है ५३ यह द्वादशाक्षर मंत्र नाना द्रव्य ले पूजा के द्रव्यमयी पूजा करें देसकाल विभाग जानकर ५४ अब पूजा की द्रव्य कहे हैं पवित्र जल पुष्प वन के और मूल फलादिक और प्रसस्त अंकुर भोजनपत्र

भा॰ च॰ जो जाकौं देवन ने रच्यौं सुख दुख ता मैं सुख भए संतें पुण्य क्षीण होहें और दुख भए संतें पाप क्षीण होहें अपने कौं प्रसन्न करत यों मोक्ष की प्राप्ति होहें ३३ गुणन में अधिक

२५ जा पुरुष कों देखके प्रीत करे प्रसन्न ध्यान करें जो आप तें गुणन मैं निरूपता हि देख कर कृपा करें तिरस्कार न करें और समान ते मैत्री करें तो तापन कर पराभव न पावे ऐसें नारदजी को वचन सुनि ध्रुवजी यह बोले ३४ अहो मुनी सुख दुःख कर पीडित जिन को चित ऐसे पुरुषन को यह शम कृपा कर दिखायो परंतु हमसा रखेन को दुरदर्श है तुमने जो उपदान को मार्ग कह्यो तथापि मैं क्षत्री स्वभाव कौं प्राप्त हो यातें अविनीत मेरो हृदय सुरुची के दुर्वचन रूप बानन कर विदीर्ण तातें ३६ तुमने जो उपदेश दियो सो मेरे हृदय मैं नहीं ठहरे है त्रिलोकी तें उत्कृष्ट पद ताहि मैं जीतो चाहत हों ताकों भलो मार्ग मोहि बतावो जो मेरे पितामहन ने हू न पायो और कोई ने हू न पायो ३७ तुमें मैं तुम्हारो वचन नहीं ठहरे है

यस्य यद्दैवविहितं स तेन सुखदुःखयोः आत्मानं तोषयन्देही तमसः पारमृच्छति ३३ गुणाधिकान्मुदं लिप्सेदनुक्रोशं गुणाधमात् मैत्रीं समानादन्विच्छेन्न तापैरभिभूयते ३४ ध्रुव उवाच सोयं शमो भगवता सुखदुःखहतात्मनां दर्शितः कृपया पुंसां दुर्दर्शोस्मद्विधैस्तु यः ३५ अथापि मेविनीतस्य क्षात्रं घोरमुपेयुषः सुरुच्या दुर्वचोबाणैर्न भिन्ने श्रयते हृदि ३६ पदं त्रिभुवनोत्कृष्टं जिगीषोः साधु वर्त्म मे ब्रूह्यस्मत्पितृभिर्ब्रह्मन्नन्यैरप्यनधिष्ठितं ३७ नूनं भवान्भगवतो योंगजः परमेष्ठिनः वितुदन्नटते वीणां हिताय जगतोर्कवत् ३८ इत्युदाहृतमाकर्ण्य भगवान्नारदस्तदा प्रीतः प्रत्याह तं बालं सद्वाक्यमनुकंपया ३९ नारद उवाच जनन्याभिहितः पंथाः स वै निःश्रेयसस्य ते भगवान्वासुदेवस्तं भज तं प्रवणात्मना ४० धर्मार्थकाममोक्षार्थं य इच्छेच्छ्रेय आत्मनः एकं ह्येव हरेस्तत्र कारणं पादसेवनं तत्तात गच्छ भद्रं ते यमुनायास्तटं शुचि पुण्यं मधुवनं यत्र सान्निध्यं नित्यदा हरेः स्नात्वानुसवनं तस्मिन्कालिंद्याः सलिले शिवे कृत्वोचितानि निवसन्नात्मनः कल्पितासनः ४३ प्राणायामे त्रिवृता प्राणेंद्रियमनोमलं शनैर्व्युदस्याभिध्यायेन्मनसा गुरुणा गुरुं प्रसादाभिमुखं शश्वत्प्रसन्नवदनेक्षणं सुनासं सुभ्रुवं चारुकपो

मैं ने जाने हो ब्रह्माजी के बेटा भगवान नारदजी तुम हो निश्चै जो तुम जगत के कल्याण करवे के लीयें सूर्य की सी नाई वीणा बजावत डोलो हो ३८ मैत्रेयजी कहे है विदुर भगवान नारदजी ध्रुव को यह वचन सुनि के कृपा कर प्रसन्न होई ता बालक सो यह वचन बोले ३९ हे ध्रुव जो जननीने कह्यो सोई ते रे कल्याण को मार्ग है भगवान वासुदेव है सो तू उनही मैं चित लगाय भजन करि ४० तातें हे तात तेरो कल्याण होउ पवित्र यमुना के तट जाय जहां पवित्र यमुना के तट

(मुप्र) हरि को नित्य सान्निध्य है ४१ धर्म अर्थ काम मोक्ष ये नाम और सो श्रेय जो को उचाहे है ताकूं एक हरि को चरण सेवन ही कारण है ४२ उहां कालिंदी कें निर्मल जल मैं त्रिकाल स्नान करि संध्या वंदनादिक करि उहां ही दृढ आसन रचि के वैठि ४३ तीन प्रकार को प्राणायाम ताकरि प्राण इंद्रिय मन को मैल दूर कर धीर जो मन ताकर गुरु जो श्री हरि ताही को ध्यान करि ४४ अब हरि को ध्यान वर्णन करे हैं प्रसाद के सन्मुख निरंतर प्रसन्न है वदन और नेत्र जा

हे पुत्र तेरो कमलदललोचन भगवान् विना दुःखको दूरि करिवे वारो और मैं कोई नहीं देखूं हूं जो लक्ष्मी ब्रह्मादिकन करि ढूंढीये है सो ऊ लक्ष्मी लीला
मे कमल ले भगवान् कूं ढूंढे है २३ ऐसे अर्थ प्राप्त करवे वारो माता को विलाप रूप वचन सुनि के मन सावधान करि ध्रुव जी माता के
पुर ते निकसत भये २४ नारद जी यह वात सुनि के यह ध्रुव जी को चित्त की बुद्धि जान कर आप के पाप के दूर करवे वारो हाथ ध्रुव के माथे पे धर
विस्मित होय यह वोले देखो मान भंग कोन सहित जो क्षत्री तिन को आश्चर्य प्रभाव है जो यह वालक हो है परंतु दूसरी माता के वचन खो
टे ता यह हृदय मे धारण करे है २६ हे पुत्र अब ही तो तू वालक है क्रीडा मे आसक्त तातें तो कों मान अपमान नहीं देखिये है २७ और मान अपमा

तमेव वत्साश्रय भृत्यवत्सलं मुमुक्षुभिर्मृग्यपदाब्जपद्धतिं अनन्यभावे निजधर्मभाविते मनस्यवस्थाप्य भजस्व पूरुषं २३ मैत्रे०
एवं संजल्पितं मातुराकर्ण्यार्थागमं वचः संनियम्यात्मनात्मानं निश्चक्राम पितुः पुरात् २४ नारदस्तदुपाकर्ण्य ज्ञात्वा
चास्य चिकीर्षितं स्पृष्ट्वा मूर्द्धन्यघघ्नेन पाणिना प्राह विस्मितः २५ अहो तेजः क्षत्रियाणां मानभंगममृष्यतां वालोप्य
यं हृदा धत्ते यत्समातुरसद्वचः २६ नारद उवाचः नाधुनाप्यवमानं ते सम्मानं वापि पुत्रक लक्षयामः कुमारस्य सक्तस्य
क्रीडनादिषु २७ विकल्पे विद्यमानेपि न ह्यसंतोषहेतवः पुंसो मोहमृते भिन्ना यल्लोके निजकर्मभिः २८ परितुष्येत्तत
स्तात तावन्मात्रेण पूरुषः दैवोपसादितं यावद्वीक्ष्येश्वरगतिं बुधः २९ अथ मात्रोपदिष्टेन योगेनावरुरुत्ससि य
त्प्रसादं स वै पुंसां दुराराध्यो मतो मम ३० मुनयः पदवीं यस्य निःसंगेनोरुजन्मभिः न विदुर्मृगयंतोपि तीव्रयोगसमाधिना ३१
अतो निवर्ततामेष निर्वंधस्तव निष्फलः यतिष्यति भवान्काले श्रेयसां समुपस्थिते ३२ [illegible]

मानादि केवल मोह कल्पित होहै मोह विना नहीं है जाते या लोक में सुख दुःखादिक अपने कर्म न ही तो होई है २८ हे पुत्र दैव ने जो प्राप्ति कीयो
तितने ही मात्र करि पुरुष प्रसन्न होई ईश्वर के अनुकूल विना उद्यम सफल होइ नहीं २९ और अब माता ने कही यो जो योगगति ता करि
जो भगवान को प्रसाद प्राप्त भयो चाहे है सो तो दुराराध्य है ३० जो भगवान् की पदवी कूं मुनीश्वर संग छोड के बहुत जन्मन में तीव्र योग
समाधि करि ढूंढे है और नहीं पावे है ३१ याते घर कूं वगद जा यह तेरो हठ निष्फल है जव तेरे श्रेय को काल आवेगो तव यत्न करलीयो ३२

भा.४.
२४

सो सुनती सोक रूप दावाग्नि करि पीडित विह्वल लता की सी नाई स्थित पर्यंत लज्जा छोडि विलाप करत भई और सौत के वाक्य कों स्मरण करि
कमल की सी जाकी दृष्टि सो हीं नैनन करि आंसून कूं डारत भई १६ बडे बडे स्वास लेत दुःख को पार न पावत पुत्र सो यह वोली हे पुत्र
जो कोई अपराध करे ताके अपराध मति माने जो मनुष्य और न को दुःख देहे सो आपने ही ये दुःख को भोगे है १७ सुरुचीने साची कही
जो मैं भाग्य हीन ने तू उदर मे ग्रहण कीयो और मेरो ही दूध पी बडो भयो ताहि राजा स्त्री दासी ऐसे कहवे में लज्या पावे है १८ हे तात सो तू
जो दूसरी माता ताने कही तो को उत्तम की सी नाई जो राजासन बैठो चाहे है तो हरि के चरणारविंद को आराधन करि १९ विश्व के पाले

सोत्सृज्य धैर्यं विललाप शोकदावाग्निना दावलतेव वाला वाक्यं सपत्न्याः स्मरती सरोजश्रिया दृशा वाष्पकलामुवाह १६
दीर्घं श्वसंती वृजिनस्य पारमपश्यती वालकमाह वाला मामंगलं तात परेषु मंस्था भुंक्ते जनो यत्परदुःखदस्तत् १७ स
त्यं सुरुच्याभिहितं भवान्मे यद्दुर्भगाया उदरे गृहीतः स्तन्येन वृद्धश्च विलज्जते यां भार्येति वा वोढुमिडस्पतिर्मां १८ आ
तिष्ठ तत्तात विमत्सरस्त्वमुक्तं समात्रापि यदव्यलीकं आराधयाधोक्षजपादपद्मं यदीच्छसेध्यासनमुत्तमो यथा १९
यस्यांघ्रिपद्मं परिचर्य विश्वविभावनायात्तगुणाभिपत्तेः अजो ध्यतिष्ठत्खलु पारमेष्ठ्यं पदं जितात्मश्वसनाभिवंद्यं २० त
था मनुर्वो भगवान्पितामहो यमेकमत्या पुरुदक्षिणैर्मखैः इष्ट्वाभिपेदे दुरवापमन्यतो भौमं सुखं दिव्यमथापवर्ग्यं २१ नान्यं
ततः पद्मपलाशलोचनाद्दुःखच्छिदं ते मृगयामि कंचन यो मृग्यते हस्तगृहीतपद्मया श्रियेतरैरंग विमृग्यमाणया २२ तमेव वत्सा
श्रय

न करे वे कों लीये धारण करी है सत्व मूर्त्ति जाने ता भगवान के चरण कमल रूप जे तें ब्रह्मा हूं जीत्यो है प्राण मन जिन करि अभिवंद्य जो
परम लोक ता प्राप्ति होत भयो २० हे ध्रुव ऐसे ही तेरो दादा है स्वायंभुव मनु सर्वांतर्यामी दक्षिणा करि वोहोत जिन में ऐसे यज्ञ
न करि जा भगवान् को पूजन पृथ्वी को और देवतान को सुख और न कूं दुर्लभ ता प्राप्ति होत भयो २१ हे वत्स याही भक्तवत्सल भगवा
न को आश्रय लें सोई मनुष्य करि ढूंढे है ता चरन कमल को मार्ग और अपने धर्म करि शुद्ध कीयो अनन्य भाव जो मन ता विषे वारी

106

107

अब मैं धुव की कीर्त्ति हरकों अंस ब्रह्मा ताही की देह जे जाकों जन्म ता स्वायंभुव मनु कौ वंश वर्णन करै हैं ६ प्रियव्रत और उत्तानपाद ए पुत्र स्वायंभूव मनु के भये वासुदेव की कला करि के जगत की रक्षा मैं स्थित भये ७ उत्तानपाद के दो स्त्री सुनीति और सुरुचि तिन मैं सुरुचि तो पति कौं प्यारी और सुनीति प्यारी नहीं जाके बेटा ध्रुवजी भये ८ एक दिन सुरुचि के पुत्र उत्तम ताहि गोदी मैं लेके लड़ावत ध्रुवजी गोदी मैं चढबो चाहैं ताहि अभिनंदन न करत भई ९ असैं सौत कौ बेटा ध्रुव गोद मैं बैठ्यो चाहै है ताप्रति अति गरवी सुरुचि ईर्षा करि राजा के

अथात कीर्त्तयेवंशं पुण्यकीर्तेः कुरूद्वह। स्वायंभुवस्यापि मनोर्हरेरंशांशजन्मनः ६ प्रियव्रतोत्तानपादौ शतरूपापतेः सुतौ वासुदेवस्य कलया रक्षायां जगतः स्थितौ ७ जाये उत्तानपादस्य सुनीतिः सुरुचिस्तयोः सुरुचिः प्रेयसी पत्युर्नेतरा यत्सुतो ध्रुवः ८ एकदा सुरुचेः पुत्रमङ्कमारोप्य लालयन् उत्तमं नारुरुक्षन्तं ध्रुवं राजाभ्यनन्दत ९ तथा चिकीर्षमाणं तं सपत्न्यास्तनयं ध्रुवं सुरुचिः शृण्वतो राज्ञः सेर्ष्यमाहातिगर्विता १० न वत्स नृपतेर्धिष्ण्यं भवानारोढुमर्हति न गृहीतो मया यत्त्वं कुक्षावपि नृपात्मजः ११ बालोऽसि बत नात्मानमन्यस्त्रीगर्भसम्भृतम् नूनं वेद भवान्यस्य दुर्लभेऽर्थे मनोरथः १२ तपसाराध्य पुरुषं तस्यैवानुग्रहेण मे गर्भे त्वं साधयात्मानं यदीच्छसि नृपासनम् १३ मैत्रेय उवाच मातुः सपत्न्याः स दुरुक्तिविद्धः श्वसन्रुषा दण्डहतो यथाहिः हित्वा मिषन्तं पितरं सन्नवाचं जगाम मातुः प्ररुदन्सकाशम् १४ तं निःश्वसन्तं स्फुरिताधरोष्ठं सुनीतिरुत्सङ्ग उदूह्य बालम् निशम्य तत्पौरमुखान्नितान्तं सा विव्यथे यद्गदितं सपत्न्याः १५ सुनत यह वचन बोली रे नाध रोष सुनि तरुत्सं गजदूह्य वालं नि प्राम तत्पौर मुखा लितांगं सा वि व्यथे गद्दितं सपत्न्याः

हे सो वत्स तू राजा के आसन पै चढिवे जोग नहीं है हे तो राजा कुमार परंतु मैं ने कुक्ष मैं नहीं धर्यौ याते ११ तू बालक है तो और रस्त्री के गर्भ ते भयौ आपको नहीं जानै है नो रथ है तपकर पुरुष भगवान की आराधना करि वाही के अनुग्रह करि मेरे गर्भ मैं तू आपके प्रगट कर जो राजासन चाहै है तो १३ मैत्रेयजी कहै है हो विदुर असे पटी मता के दुर्वचन करि बिध्यौ क्रोध करि स्वास लेत रोष ते से दंड को मार्यो सर्प स्वास लेत है आप वाप देखत जो पिता ताहि छोड़ रोवत माता के पास जात भयो १४ सुनित माता स्वास लेत होठ

यह दक्ष के यज्ञ विध्वंस करवे वारे महादेवजी को कर्म है सो परम भागवत बृहस्पति के शिष्य उद्धवजी सों मैं नें सुन्यो है ६० यह पर म पवित्र महादेवजी कौ चेष्टित है यश आर्बल के बढायवे वारों पापन के दूर करिवे वारौ ताय मनुष्य सुनि के जो भक्ति करि कीर्त्तन करै तो सब पापन कौं दूरि करै है ६१ इति श्री भागवते महापुराणे चतुर्थ स्कंधे सप्तमोध्यायः ७ मैत्रेय उवाच हे विदुर सनकादिक नारद ऋभु हंस अरुणि पति ब्रह्माजी के बेटा घर न मैं बसत न भए उर्ध्वरेता भए १ धर्म है ब्रह्मा कौ पुत्र है ताको बेटा कहै है अध

एतद्भगवतः शंभोः कर्म दक्षाध्वरद्रुहः श्रुतं भागवताच्छिष्यादुद्धवाद्बृहस्पतेः ६० इदं पवित्रं परमीशचेष्टितं यशस्यमायुष्यमघौघमर्षणम् यो नित्यदाकर्ण्य नरोऽनुकीर्तयेद्धुनोत्यघं कौरव भक्तिभावतः ६१ इति भागवते चतुर्थस्कंधे सप्तमोध्यायः ७

मैत्रेय उवाच सनकाद्या नारदश्च ऋभुर्हंसोऽरुणिर्यतिः नैते गृहान्ब्रह्मसुता ह्यावसन्नूर्ध्वरेतसः १ मृषाधर्मस्य भार्यासीद्दम्भं मायां च शत्रुहन् असूत मिथुनं तत्तु निर्ऋतिर्जगृहेऽप्रजः २ तयोः समभवल्लोभो निकृतिश्च महामते ताभ्यां क्रोधश्च हिंसा च यद्दुरुक्तिः स्वसा कलिः ३ दुरुक्तौ कलिराधत्त भयं मृत्युं च सत्तम तयोश्च मिथुनं जज्ञे यातना निरयस्तथा ४ संग्रहेण मयाख्यातः प्रतिसर्गस्तवानघ त्रिःश्रुत्वैतत्पुमान्पुण्यं विधुनोत्यात्मनो मलम् ५

मृषा स्त्री भई ताकै दंभ और माया ए जोरा होत भयो हे तो सो इनको अधर्म लै गयो है याते स्त्री पुरुष भाव भयो तिन तें उनकौं प्रपौत्र जो निर्ऋति सो ग्रहन करत भयो उनके दंभ माया के लोभ और निकृति भये उनके क्रोध और हिंसा तिनके दुरुक्ति वहिनि और कलि भये ३ कलि जो है सो दुरुक्ति के भय और मृत्यु ताहि उपजावत भये तिनकै और जो डाभयो निरूपा तन रक की वेदना भये ४ प्रलय को हेतु यह अधर्म को सर्ग मैं तेरे आगे कह्यो परम पवित्र या कौ तीन वार पुरुष सुनै तो अपने मैं

जे पुरुष अपने अंग शिर पाणि इन मैं पारक्य बुद्धि नहीं करै हैं ऐसैं ही जे परायण ते सब प्राणीन मैं भेद बुद्धि नहीं करै हैं ५३
सब प्राणीन के आत्मा जो तीन्यौ देवता ब्रह्मादिक तिन मैं भेद नहीं देषै हैं सोई शांति कौं प्राप्ति होहीं ५४ ऐसे भगवान ने आज्ञा
याकौं दई ऐसैं प्रजापतिन कौं पति यज्ञ विशाल दक्ष करि हरि कौं पूजन कर अंस प्रधान भाव करि देवतान हू कौं पूजन कर
त भयो ५५ और सावधान होइ यज्ञ विशिष्ट भाग करि महादेव हू कौं पूजन करत भयौं और कर्म समाप्ति कर और देवता

यथा पुमान्न स्वांगेषु शिरः पाण्यादिषु क्वचित् पारक्य बुद्धिं कुरुते एवं भूतेषु मत्परः ५३ त्रयाणामेक भावानां यो न पश्यति
वै भिदां सर्वभूतात्मनां ब्रह्मन् स शांतिमधिगच्छति ५४ श्रीमैत्रेय उवाच एवं भगवतादिष्टः प्रजापतिपतिर्हरिं अर्चित्वा
क्रतुना स्वेन देवानुभयतोयजत् ५५ रुद्रं च स्वेन भागेन उपाधावत्समाहितः कर्मणोदवसानेन सोमपानितरानपि ५६
उदवस्य सहर्त्विग्भिः सस्नावभृथं ततः तस्मा अप्यनुभावेन स्वेनैवावाप्तराधसे धर्म एव मतिं दत्वा त्रिदशास्ते दिवं ययुः ५७
एवं दाक्षायणी हित्वा सती पूर्वकलेवरं जज्ञे हिमवतः क्षेत्रे मेनायामिति शुश्रुम ५८ तमेव दयितं भूय आवृंक्ते पतिमंबि
का अनन्यभावैकगतिं शक्तिः सुप्तेव पूरुषं ५९

नहू कौं पूजन करत भयौं ५७ ऐसे दक्ष की बेटी शती पहिलौं शरीर छोड़ि करि हिमाचल की स्त्री मैना यों है ता के जन्म लेत भई
यह हमनें सुन्यौं है हे विदुर ५८ अनन्य भावन की एक गति महादेव जी कौं फिर व्याहे ऐसै जन्म मैं पारवती भजत भई सक्ति
जैसैं सोती ईश्वरती कौ भजन करत भई हे विदुर यह मैंनें तेरे आगे दक्ष के यज्ञ कौ विध्वंस कह्यौ ५९ श्री कृष्णायनमः॥

कर्म

तुम ही सूकर रूप होय के रसातल मैं ते डाढ पै धरणी कौं लै आए हो जैसैं वारणेंद्र कमलनी कौं लै आवैं हे देवयोमीन गरजा कीन्ह त करिये
और यज्ञ क्रतु रूप हो ४६ सो तुम्हारे दर्शन चाहत जो हम भ्रष्ट नित न के सत्कर्म तिन पै तुम प्रसन्न होउ और याय हम कौं उद्धार करौ हे यज्ञे
स तातुम्हारे नाम कीर्तन करै ते यज्ञ नाश विघ्न कौं प्राप्ति होते हैं तातुम्हारे अर्थ नमस्कार है ४७ हे विदुर ऐसैं सब नन्हसी के सकौं कीर्तन
कर यज्ञमान रुद्र नैं भाग जा मैं करी ता यज्ञ कौ प्रवृत्त करत भये ४८ ऐसे भगवान् सर्वात्मा सब भागन के भोक्ता अपने भाग कर

त्वं पुरा गां रसाया महासूकरो दंष्ट्रया पद्मिनीं वारणेंद्रो यथा स्तूयमानो नदल्लीलया योगिभिर्व्युज्जहर्थ त्रयीगात्र य
ज्ञक्रतु ४६ प्रवसीद त्वमस्माकमाकांक्षतां दर्शनं ते परिभ्रष्टसत्कर्मणां कीर्त्यमाने नृभिर्नाम्नि यज्ञेश ते यज्ञविघ्नाः क्षयं या
ति तस्मै नमः ४७ मैत्रेय उवाच इति दक्षः कविर्यज्ञं भद्र रुद्राभिमर्शितं कीर्त्यमाने हृषीकेशे संनिन्ये यज्ञभावने ४८ भग
वान्स्वेन भागेन सर्वात्मा सर्वभागभुक् दक्षं बभाष आभाष्य प्रीयमाण इवानघ ४९ श्रीभगवानुवाच अहं ब्रह्मा
च सर्वश्च जगतः कारणं परं आत्मेश्वर उपद्रष्टा स्वयंदृगविशेषणः ५० आत्ममायां समाविश्य सोऽहं गुणमयीं द्विज सृज
न्रक्षन्हरन् विश्वं दध्रे संज्ञां क्रियोचितां ५१ तस्मिन्ब्रह्मण्यद्वितीये केवले परमात्मनि ब्रह्मरुद्रौ च भूतानि भेदेनाज्ञोऽनुपश्य ति

प्रसन्न से होत दक्ष सौ यह बोलें ४९ जो मैं जगत कौ कारण आत्मा ईश्वर साक्षी स्वजैं ऐसा निरूपाधि सोई ब्रह्मा महादेव रूप
हूं ५० सोई मैं गुणमयी माया कौं अंगीकार कर पा विश्व की सृष्टि रक्षा संहार करत तेया के उचित जे नाम तिनैं धारण करूं
हूं ५१ सो मैं केवल अद्वितिय ब्रह्म परमात्मा तामा मैं अज्ञानी यह ब्रह्मा यह रुद्र ये प्राणी ऐसे भेद कर देषै है ५२

तेजः अग्निस्तुति करै है जाते जवर प्रज्वलनजाकों तेज ऐसो मैं सुंदर यज्ञमें घृतकरि स्थित जो हवि ताहि प्राप्त होउ ऐसे यज्ञके पालकरूप सम्पूर्ण अग्निहोत्र दर्शपौर्णमास चतुर्मास्य पशु सोम ऐसे पांच प्रकारके पंच जो यज्ञ के मंत्र तिनकरि स्तुति ता भगवान कौं मैं प्रणाम करतहूं ४१ देवतास्तुति करै है पहिले प्रलय समैमें आपने कीये जो विश्व ताय संघार करि पेट में राखि आदिपुरुष तुम जलमें सर्वशेषशय्या पे सोये हौ जनलोक निवासी चारो और रहे ज्ञानमार्ग जाकौ सो तुम ही जो प्रवल्भ मारे नेत्रनके मार्ग में विचरो हो और ह

अग्निरुवाच: यत्तेजसाहं सुसमिद्धतेजा हव्यं वहे स्वध्वर आज्यसिक्तं । तं यज्ञियं पंचविधं च पंचभिः स्विष्टं यजुर्भिः प्रणतोस्मि यज्ञम् ॥ ४१ ॥ देवा ऊचुः पुरा कल्पापाये स्वकृतमुदरीकृत्य विकृतं त्वमेवाद्यस्तस्मिन्सलिल उरगेन्द्राधिशयने पुमान्शेषे सिद्धैर्हृदि विमृशिताध्यात्मपदवीः स एवाद्याक्ष्णोर्यः पथि चरसि भृत्यानवसि नः ॥ ४२ ॥ गंधर्वाप्सरसोवाच: अंशांशास्ते देव मरीच्याद्य एते ब्रह्मेन्द्राद्या देवगणा रुद्रपुरोगाः । क्रीडाभाण्डं विश्वमिदं यस्य विभूमंस्तस्मै नित्यं नाथ नमस्ते करवाम ॥ ४३ ॥ विद्याधरा ऊचुः त्वन्माययार्थमभिपद्य कलेवरेस्मिन्कृत्वा ममाहमिति दुर्मतिरुत्पथैः स्वैः । क्षिप्तोप्यसद्विषयलालस आत्ममोहं युष्मत्कथामृतनिषेवक उद्व्युदस्येत् ॥ ४४ ॥ ब्राह्मणा ऊचुः त्वं क्रतुस्त्वं हविस्त्वं हुताशः स्वयं त्वं हि मंत्रः समिद्दर्भपात्राणि च त्वं सदस्यर्त्विजो दंपती देवता अग्निहोत्रं स्वधा सोम आज्यं पशुः ॥ ४५ ॥

मारी मृत्युन की रक्षा करो हो ४२ गंधर्व अप्सरा स्तुति करै है देवता मरीच्यादिक ब्रह्मा इंद्रादिक देवगण रुद्र जिनमें मुख्य या रास वतुम्हारे अंसके अंस हैं और हे महत्तम यह विश्व सब तुम्हारो क्रीडास्थान है तातुम्हारे अर्थ हे नाथ हम नित्य दंडोत करै हैं ४३ विद्याधर हे प्रभो सब पुरुषार्थन को साधन सरीर ताहि पाइ कैं हैं तातुम्हारि अरु यह मेरो है ऐसें दुर्मति करि अपने मार्गनि करि विपरीत करि जहांतहां गयो ऐसो जो विषयलोलुप ताहि तुम्हारी कथा अमृत सेवन करवेवारो है तो त्याग करै है ... परंतु या मोह ते ना छोडे है तिनु तुम्हारी माया करि यामें मेरी करी तुच्छ विषयनकी करी जाके लालसा पुत्रादिकनि तिरस्कार रहत करै है परंतु यामोह तौ नहीं छोडे है और तुम्हारे कथामृत कौं सेवन करिवेवारो तौ त्याग करदे है ४४ ब्राह्मण. तुमही क्रतु तुमही हवि तुमही होम अग्नि तिस में धारे औरपात्र तुम

हस्तकी स्त्री स्तुति करै है हे प्रभो भलो आप आगे न भयो हमपे प्रसन्न होउ तुमें दंडोत है श्रीनिवास लक्ष्मी जो स्त्री ता करि सहित हम रे स्वाकरौ हे ईस तुम्हारे विना या जादि आगन कर यज्ञ नहीं सोभा देइ है ३६ लोकपाल स्तुति करै है अस सत्प्रकास रूप जो ईश्वर तिन कर कता तुम ने देखे हैं जो तुम सर्वन के आत्मा द्रष्टा हो जाकरि यह दृस्य है और हे प्रभो यह तुम्हारी माया है सो तुम होतो छूटें और पंचभूतो पल तिन जीव से भासो हो ३७ योगेश्वर स्तुति करै है हे प्रभो विश्वात्मा जो परब्रह्म तुम तातुम में जो आ

यजमान उवाच: स्वागतं ते प्रसीदेश तुभ्यं नमः श्रीनिवास श्रिया कांतया त्राहि नः । त्वामृतेधीश नांगैर्मखः शोभते शीर्षहीनः कबंधो यथा पुरुषः ॥ ३६ ॥ लोकपाला ऊचुः दृष्टः किं नो दृग्भिरसद्ग्रहैस्त्वं प्रत्यग्द्रष्टा दृश्यते येन विश्वम् । माया ह्येषा भवदीया हि भूमन्यस्त्वं षष्ठः पंचभिर्भासि भूतैः ॥ ३७ ॥ योगेश्वरा ऊचुः प्रेयान्न तेन्योस्त्यमुतस्त्वयि प्रभो विश्वात्मनीक्षेन्न पृथग्य आत्मनः । अथापि भक्त्येश तयोपधावतामनन्यवृत्त्यानुगृहाण वत्सल ॥ ३८ ॥ जगदुद्भवस्थितिलयेषु दैवतो बहुभिद्यमानगुणयात्ममायया । रचितात्मभेदमतये स्वसंस्थया विनिवर्तितभ्रमगुणात्मने नमः ॥ ३९ ॥ श्रीशब्दब्रह्मोवाच: नमस्ते श्रितसत्त्वाय धर्मादीनां च सूतये । निर्गुणाय च यत्काष्ठां नाहं वेदापरेपि च ॥ ४० ॥

त्माकों भेद नहीं देखें वा वरो वर तुम को कोई प्यारो नहीं तथापि हे प्रभो भक्तप्रिय अनन्यभ चारणी भक्ति करि भजत जो हम तिनपे अनुग्रह तुम करो ३८ जगतकी उत्पत्ति पालन नास मैं जीवन के अदृष्टि ते गुण धाभेद कों प्राप्ति है गुण जाके ता माया कर अपने स्वरूप मैं जाने तातुम्हारे अर्थ दंडोत है ३९ शब्दब्रह्म स्तुति करै है स्वीकार करि है सत्व मूर्ति जाने याही ते धर्मादिक फलके उपजायवेवारे निर्गुण जाके तत्व कौं मैं जानूं तातुम्हारे अर्थ दंडोत है ४० श्री लक्ष्मायन मो नमः

[illegible]

वक्षस्थलमेंस्थितलक्ष्मीजाकें वनमालापहिरें उदारहसनअवलोकन तिनकेलेसकरिविश्वकोंआनंददेत औरदोउओरचम
मरतेईहंसव्यंजनराजहंसजामें ऐसोउज्ज्वलजोछत्रसोछत्रसोईभयोचंद्रमाताकरिउपरअतिसयसोभाकोंप्राप्तभये २१ ताकूर
केआयेदेखिब्रह्माइंद्रमहादेवाजनमेंमुख्य ऐसेदेवगणसवउठकेप्रणामकरतभये २२ तबभगवानकेतेजकरकेनष्टहैकांति
जिनकी महामाकरिस्वामितजिनकेचित ऐसेदेवताभगवानकोमाथजोरअस्तुतिकरतभए २३ प्रगटकियोहैअत्यंतस्वलीलाकेस्व
रूपजाने ताभगवानकीमहिमाकहवेकोंउदेहीहैमतिजिनकी ऐसेहहैं परंतुयथाबुद्धिस्तुतिकरतभए २४ हतापेप्रसन्नहोइए

वक्षस्यधिश्रितवधूर्वनमाल्युदारहासावलोककलयारमयंश्चविश्वं पार्श्वभ्रमद्व्यजनचामरराजहंसः श्वेतातपत्रशशि
नोपरिरज्यमानः २१ तमुपागतमालक्ष्यसर्वेसुरगणादयः प्रणेमुःसहसोत्थायब्रह्मेन्द्रत्र्यक्षनायकाः २२ तत्तेजसाहत
रुचःसन्नजिह्वाःससाध्वसाः मूर्ध्नाधृतांजलिपुटाउपतस्थुरधोक्षजं २३ अप्यर्वाग्वृत्तयोयस्यमहित्वात्मभुवादयः यथा
मतिगृणन्तिस्मकृतानुग्रहविग्रहं २४ दक्षोगृहीतार्हणसादनोत्तमंयज्ञेश्वरंविश्वसृजांपरंगुरुं सुनंदनंदाद्यनुगैर्वृतंम
दागृणन्प्रपेदेप्रयतःकृतांजलिः २५ दक्षउवाच शुद्धंस्वधाम्न्युपरताखिलबुद्ध्यवस्थं चिन्मात्रमेकमभयंप्रतिषिध्यमा
यां तिष्ठंस्तयैवपुरुषत्वमुपेत्यतस्यामास्तेभवानपरिशुद्धइवात्मतंत्रः २६

जाकोभिग्यौसहितपात्रजानेग्रहणकरो यज्ञेश्वरविश्वस्रिष्टानकेपरमगुरु सुनंदादिपार्षदनकरवेष्टित ऐसेभगवानकोहा
थजोरसावधानहोइदक्षस्तुतिकरतसरणप्राप्तहोतभयो २५ हेप्रभोअपनेस्वरूपमेंस्थितहोतशुद्धहौ चैतन्यघनहौ
निवृत्तिभईहैसववुद्धिकीअवस्थाजाते याहीतेएकहौ अद्वितीयऔरमायाकोंपराभवकरिस्वतंत्रहौ तामायाकरिमनुष्यनासप्राप्ति
होइ तामायामेंस्थितहोइरामकृष्णादिकअवतारनमें रागादिमानसेतुमप्रतीतहोहौ औरअविद्योपाधिजीवतेंमायाकरियुक्तसं

नहीपावैहैमहत्त्वस्थानजाकोतामेंऐसेसभामेंदुर्वचनरूपवाणनकरतिरस्कारकीयोहूपरयेमहादेवअपराधकोंनहींगिनो सोनिताक
रिनकेमोगिरोंहों परकृपादृष्टीकरमेरीभिदोवरनवभूए सोमहादेवजीआपुहीकीयोंजोपरमअनुग्रहताकरप्रसन्नहोइमैंप्रत्यु
पकारकरवेकोंसमर्थनहीं २५ ऐसेदक्षमहादेवजीकोसमाकराय ब्रह्मनेआज्ञाताकोंदई उपाध्यायसहितऋत्विक्प्रभृति इन
करयज्ञविस्तारतभयो १६ द्विजोंनेमनमेंजोहैसोभूतप्रेतजोयज्ञमेंआयेतिनतेदोषनिर्हतकेलीयेंविष्णुकोंपुरोडाषदेतभये १७

योसौमयाविदिततत्त्वदृशासभायांक्षिप्तोदुरुक्तिविशिखैर्विगणय्यतन्मां अर्वाक्पतंतमर्हत्तमनिंदयापात्स दृष्ट्याई
यासभगवान्स्वकृतेनतुष्येत् १५ मैत्रेयउवाच क्षमाप्यैवंसमीढ्वांसंब्रह्मणाचानुमंत्रितः कर्मसंतानयामास
सोपाध्यायर्त्विगादिभिः १६ वैष्णवंयज्ञसंतत्यैत्रिकपालंद्विजोत्तमाः पुरोडाशंनिरवपन्वीरसंसर्गशुद्धये १७
अध्वर्युणात्तहविषायजमानोविशांपते धियाविशुद्धयाद्ध्यौतथाप्रादुरभूद्धरिः १८ तदास्वप्रभयातेषांद्योतयं
त्यादिशोदशः मुष्णंस्तेजउपानीतस्तार्क्ष्येणस्तोत्रवाजिना १९ श्यामोहिरण्यरसनोर्ककिरीटजुष्टोनीलालकभ्रमर
मंडितकुंडलास्यः शंखाब्जचक्रशरचापगदासिचर्मव्यग्रैर्हिरण्मयभुजैरिवकर्णिकारः २०

हविजानेंग्रहणकीयोंऐसेअध्वर्युकरिसहितयजमानदक्षनिनेंजवहीध्यानकरोंविशुद्धकरतवहीतरप्रगटहोतभये १८
दशोंदिशानमेंप्रकाशकरतजोअपनीकांतिउनसवनकेंतेजचुरावतगरुडनेंवहेमासिकीयें १९ श्यामस्वरूपसुवर्ण
वतपीतांवरजाकों सूर्यतुल्यमुकुटकरसेवत नीलजेअलकतेईभएभ्रमरतिनकरिसेवतकुंडलमुखहैंमुखजाको शंखकमले
चक्रवाणधनुषगदाखड्गढाल एनआयुधनकरव्यग्रहस्तसाकेलीयें व्याप्तभयेएनकरिभूसितजेभुजा तिनकरसेवतकर्णिकारकी

तवतौ सब देवता ऋषिन सहत तुमबलिकैसर्व कार्य करौ ऐसैं शिवजी सौं सव प्रार्थना कर जैसा महादेव सहित यज्ञ भूमिमें जात भये ७ जैसें भगवान् महादेवजी नें कही तैसें सवकें हाथ पाउ लगी दक्षकें धरपै वकरा सिर धरत भए ८ दक्षके सिर धरे सें तैसें जैसें सोवतें उठैहैं ऐसें दक्ष उठठाढो भयौ और आगें महादेवजी कौ देषत भयौ ९ तब महादेवजी के देषकरकें मनप्रजा सौं प्रीति सौप्रजापति शिवजी के दर्शन तें ऐसौ होत भयौ जैसें सरद ऋतु तें चंद्रमा निर्मल १० तब महादेवजी कौ प्रसन्न करवे कौ इच्छा ते ऐसें

ततो मीढ्वांसमामंत्र्य शुन्नासीराः सहर्षिभिः भूयस्तद्देवयजनं समीढ्वद्वेधसो ययुः ७ विधाय कार्त्स्न्येन च तद्यदाह भगवान्भवः संदधुः कस्य कायेन सवनीयपशोः शिरः ८ संधीयमाने शिरसि दक्षो रुद्राभिवीक्षितः सद्यः सुप्त इवोत्तस्थौ ददृशे चाग्रतो मृडं ९ तदा वृषध्वजद्वेषकलिलात्मा प्रजापतिः शिवावलोकाद्भवच्छरद्ध्रद इवामलः १० भवस्तवाय कृतधीर्नाशक्नोदनुरागतः औत्कंठ्याद्बाष्पकलया संपरेतां सुतां स्मरन् ११ कृच्छ्रात्संस्तभ्य च मनः प्रेमविह्वलितः सुधीः शशंस निर्व्यलीकेन भावेनेशं प्रजापतिः १२ दक्ष उवाच भूयाननुग्रह अहो भवता कृतो मे दंडस्त्वया मयि भृतो यदपि प्रलब्धः न ब्रह्मबंधुषु च वां भगवन्नवज्ञा तुभ्यं हरेश्च कुत एव धृतव्रतेषु १३ विद्यातपोव्रतधरान्मुखतः स्म विप्रान्ब्रह्मात्मतत्त्वमवितुं प्रथमं त्वमस्राक् तद्ब्राह्मणान्परम सर्व विपत्सु पासि पालः पशूनिव विभो प्रगृहीतदंडः १४

दक्ष सती वैरी कौ स्मर्ण करत प्रेम अनुराग और उत्कंठा करि आंसू न तें बोलि न सकौ ११ प्रेमकरि विह्वल दक्ष ने दुर्षतें मन थांभि कर भाव करि महादेवजी की प्रशंसा करत भयौ १२ हे शिवजी यद्यपि मैंने तुम्हारौ अपराध करौ तथापि तुमने दंड दीनौ सोयौ भिक्षा करी और उपेक्षा न करी सो यो अनुग्रह है ब्राह्मण मात्र हीन न में तुम्हारी और हरि की अवज्ञा होतो धृतव्रत न में तो कहा ते होइगी १३ विद्या तप ब्रत धर वे वारे ब्राह्मण प्रथम तुम मुखतें सृजत भए आत्मतत्त्वके रक्षा करवेकेलीयें याहीतें ब्राह्मणन कौं सब विपत्तन में तुम रक्षा करौ हौ जैसे पालक दंड लै पशुन की रक्षा करै है १४

भा० च० १८

जुमकर मेरे हित याही तें प्रसन्न सौ जो दक्ष प्रजापति कौ उद्धार करौ जो मी कुंज ... के करवे वारे तुम भागवत भये जा भागवत ...
पूर्ण होई ४८ यत्र जिन मानजे और भाग देवता अपने नेत्र की प्राप्त होइ भग की डाढ़ी मुछ उपज आवे पूषा ... पहले सें होम कौ मैं ५० अग्रुष्ठ धरष्यारत न करि अंजिनकौ इहे ... ते देवता और ऋत्वज जिनकौ तुम्हारे प्रसन्न करि प्राप्ति होइ ५१ हे रुद्र अब यज्ञ की यों जो अवशिष्ट द्रव्य सो ते रो भाग हूँ तेरे तौ भाग करि अब यज्ञ पुष्ट पाइन करो ये हे ५२ इति श्री भागवते चतुर्थ स्कंधे सती चरित्रे षष्ठोऽध्यायः ६ मैत्रेयजी कहैं हे विदुर ऐसें ब्रह्मा नें जीव न कौं प्रार्थना करी तव रुद्र सकर हें बोलत भयें १ हे प्रजेश मैं तौ ऐसें प्रजा नी

कुर्वध्वरस्योद्धरणं हतस्य भोस्त्वयासमाप्तस्य मनो प्रजापते न यत्र भागं तव भागिनो ददुः कुयाजिनो येन मखो निनीयते ४९ जीवताद्यजमानोऽयं प्रपद्येताक्षिणी भगः भृगोः श्मश्रूणि रोहंतु पूष्णो दंताश्च पूर्ववत् ५० देवानां भग्नगात्राणामृत्विजां चायुधाश्मभिः भवतानुगृहीतानामाशु मन्योऽस्त्वनातुरं ५१ एष ते रुद्र भागोऽस्तु यदुच्छिष्टोऽध्वरस्य वै यज्ञस्ते रुद्र भागेन कल्पतामद्य यज्ञहन् ५२ इति श्री षष्ठोऽध्यायः ६ मैत्रेय उवाच इत्यजेनानुनीतेन भवेन परितुष्यता अभ्यधायि महाबाहो प्रहस्य श्रूयतामिति १ रुद्र उवाच नाघं प्रजेश बालानां वर्णये नानुचिंतये देवमायाभिभूतानां दंडस्तत्र धृतो मया २ प्रजापतेर्दग्धशीर्ष्णो भवत्वजमुखं शिरः मित्रस्य चक्षुषेक्षेत भागं स्वं बर्हिषो भगः ३ पूषा तु यजमानस्य दद्भिर्जक्षतु पिष्टभुक् देवाः प्रकृतसर्वांगा ये म उच्छेषणं ददुः ४ बाहुभ्यामश्विनोः पूष्णो हस्ताभ्यां कृतबाहवः भवंत्वध्वर्यवश्चान्ये बस्तश्मश्रुर्भृगुर्भवेत् ५ मैत्रेय उवाच तदा सर्वाणि भूतानि श्रुत्वा मीढुष्टमोदितं परितुष्टात्मभिस्तात साधु साध्वित्यथाब्रुवन् ६

तेकौं अपराध वर्णन करूं हूं न चिंतवन करूं देवमाया करि अभिभूत विन कौ दंड मैं ने दीयो है २ जरयौ है सिर जाकौ वा प्रजापति के बकरा कौ है मुख जामें ऐसौ शिर होइ और भग जो देवता सो यज्ञ संबंधि भाग कौं मित्र देवता के नेत्रन कर देषौ ३ पूषा के दांत टूटे सो पक्ष के भोग करिवे वारो यजमान के दांतन कर भक्षन करौ और जो देवता मोकौं यज्ञ में भाग देत भयें तिनके अंग जे भग्न ते लागि जाउ ४ और जिन के अंग न ष्ट होंग ऐ अश्वर्यु ऋत्वज सव अश्विनी कुमारन की भुजान कर कीनी है भुजाजिन नें और पूषा के हाथन कर कीने हैं हाथ जिनने ऐसे होइ

और वकरा के हैं समश्रु जाके ऐसौ भृगु होइ तब प्राणी महादेव की
वचन सुनि कर तुष्टचित्त न करि भले भलें ऐसैं करत भए ६

हे मंगलरूप तुम्हारी श्रवन कर्मन करवे वारे नैं स्वर्ग और मोक्ष विस्तारो हो और अशुभ कर्म करवे वारेन कौं नरक विस्तारो हो तामें कोई कहे तुम करि कें एक ही एक कौं पांच विपर्यय होत है जैसे दक्ष कौं भयो ४४ तुम्हारे चरन में जिनने मन लगायो और सब प्राणी न में तुम देखें और सब प्राणीन कौं आत्मा ते भिन्न नहीं देखें हैं जैसे साधुन कौं पशु की नाई रोष नहीं होत हैं तातु मकौं क्रोध तें होइगो ४५ जे कोई भेद दरसी हैं याही तें कर्मन में जिन की दृष्टि इनि जिन कौं आसय परायो उन्ह व देखजीवन के हृदय में पीडा होइ है ऐसे देवन के

त्वं कर्मणां मंगल मंगलानां कर्तुः स्म लोकं तनुषे स्वःपरं वा। अमंगलानां च तमिस्रमुल्बणं विपर्ययः केन तदेव कस्यचित् ४४ न वै सतां त्वच्चरणार्पितात्मनां भूतेषु सर्वेष्वभिपश्यतां तव। भूतानि चात्मन्यपृथग्दिदृक्षतां प्रायेण रोषोऽभिभवेद्यथा पशुम् ४५ पृथग्धियः कर्मदृशो दुराशयाः परोदयेनार्पितहृद्रुजोऽनिशम्। परान्दुरुक्तैर्वितुदन्त्यरुन्तुदास्तान्मावधीद्दैववधान्भवद्विधः ४६ यस्मिन्यदा पुष्करनाभमायया दुरन्तया स्पृष्टधियः पृथग्दृशः। कुर्वन्ति तत्र ह्यनुकम्पया कृपां न साधवो दैवबलात्कृते क्रमम् ४७ भवांस्तु पुंसः परमस्य मायया दुरन्तयाऽस्पृष्टमतिः समस्तदृक्। तया हतात्मस्वनुकर्मचेतःस्वनुग्रहं कर्तुमिहार्हसि प्रभो ४८ मारे भये तें तुम सरीके साधु तो मति मारो ४६ हे शिव

जा देश में जा काल में भगवान की माया कर मोहित चित्त भेददर्शी मनुष्य तो इ जांइ हैं तब उनके अपराध करे हैं पै साधु लोक पराधीन देखन ही देख सके हैं याते उनपै कृपा ही करे हैं पराक्रम नहीं करे हैं हमारो ही प्रारब्ध है सो है यह मान कें और कहूं अपराध मान कें काहू कौं मारें नहीं ४७ तुम तौ परमेश्वर की माया कर अस्पृष्टबुद्धि सब के दृष्टा हो ता माया कर मोहित है आत्मा जिन के याही तें कर्मन में आसक्त जिन कौ चित्त तिन पै तुम अनुग्रह करिवे कूं जोग्य हो ४८ श्रीकृष्णायनमो नमः

देवता असुरन के ईशान करि अभिवंदित है चरण जिन के ऐसे महादेव जी अपने पिता ब्रह्मा जी कौं आयो देखि उठ कर शिर सूं दंडवत करत भये कैसे जैसे वामन भगवान कश्यप जी कौं दंडवत करत भये ३८ तैसे साधिन करसहित जे महादेव जी कौं अनुचरे हैं तिन नैं नमस्कार ब्रह्मा कौं कीयो ऐसे ब्रह्मा हसन से प्रणाम जानें कीयो ता महादेव जी सौं यो बोलत भये ४० हे शिव तुम विश्व कौ ईश्वर जानो हो और जगत की योनि बीज जो शक्ति और शिव तिन के कारण तथापि निर्भेद ब्रह्म निर्विकार हो ऐसे जानूं ४१

समुपलभ्यागतमात्मयोनिं सुरासुरेशैरभिवंदितांघ्रिः। उत्थाय चक्रे शिरसाभिवंदनमर्हत्तमः कस्य यथैव विष्णुः ३९ तथापरे सिद्धगणा महर्षिभिर्ये वै समन्तादनु नीललोहितम्। नमस्कृतः प्राह शशांकशेखरं कृतप्रणामं प्रहसन्निवात्मभूः ४० श्रीब्रह्मोवाच। जाने त्वामीशं विश्वस्य जगतो योनिबीजयोः। शक्तेः शिवस्य च परं यत्तद्ब्रह्म निरन्तरम् ४१ त्वमेव भगवन्नेतच्छिवशक्त्योः स्वरूपयोः। विश्वं सृजसि पास्यत्सि क्रीडन्नूर्णपटो यथा ४२ त्वमेव धर्मार्थदुघाभिपत्तये दक्षेण सूत्रेण ससर्जिथाध्वरम्। त्वयैव लोकेऽवसिताश्च सेतवो यान्ब्राह्मणाः श्रद्दधते धृतव्रताः ४३

हे भगवान् शिव शक्ति जो स्वरूप तिन में तुम ही क्रीडा करत या विश्व कूं सृजो हो पालन करो हो और नाश करो हौ कैसे जैसे मकरी जाले कौं सृजै है और विहार करे है फेर भक्षन कर लेय है आप ही ऐसें ही तुम हो ४२ धर्म अर्थ कौं प्ररण करें जो वेदत्रयी ता के रक्षा के लीयें तुम ही यज्ञ कौं सृजत भये दक्ष रूप सूत्र कर और तुम नें ही लोक में वर्णाश्रम मर्यादा बांधी हैं जिन मर्यादान में सरधा कर घृतव्रत ब्राह्मण स्थित होइ हैं ४३ श्रीराधाकृष्णायनमो नमः हरे कृष्णायनमः

122

सोमहायोंमें यमुमुक्षुन कौ आश्रयवटतामें बैठे शिवजी मानों क्रोधछोड कालहीवैठें है तादि देखतभयें ३२ सुनंदादिक जे शांत महासिद्ध और गुह्यकराक्षसनके पतिकुवेर अपनेमित्र तिन करिके सेव्यमान शांत जाकोंस्वरूप ३३ विद्यातपसमाधि इनके प्रवर्तक सबके सुहृद वात्सल्य तीनोंलोकनकों हित तपतहि स्नेहतेकरेहैं ३४ रक्तवर्णजाकौ ऐसोजोअंगताकरिभस्मदंड जटा मृगचर्म वादिचीवर इनकोंहैंचिन्ह चंद्रमाहैललाटमैं जाकें ऐसेचंद्रकेघाहेतादिधारणकरेहैं ३५ दर्भनकी चटाई तापर

तस्मिन्महायोगमयेमुमुक्षुशरणे सुराः ददृशुः शिवमासीनं त्यक्तामर्षमिवांतकम् ३२ सनंदनाद्यैर्महासिद्धैः शांतैः संशांतविग्रहं उपास्यमानं सख्याच भर्त्रा गुह्यकरक्षसां ३३ विद्यातपोयोगपथमास्थितं तमधीश्वरं चरंतं विश्वसुहृदं वात्सल्याल्लोकमंगलं ३४ लिंगंचलपसाभिष्टमस्मदंडजटाजिनं अंगेन संध्याभ्ररुचाचंद्रलेखांचविभ्रमं ३५ उपविष्टंदर्भमय्यांबृस्यांब्रह्मसनातनं नारदायप्रवोचंतंपृच्छतेशृण्वतांसतां ३६ कृत्वोरौदक्षिणेसव्यंपादपद्मंच जानुनी बाहुंप्रकोष्ठेक्षमालामासीनंतर्कमुद्रया ३७ तंब्रह्मनिर्वाणसमाधिमाश्रितं व्युपाश्रितंगिरिशंयो गकक्षांसलोकपालामुनयोमनूनामाद्यंमनिंप्रांजलयःप्रणेमुः ३८

बैठेहे पृछत जो नारद ताके अर्थ साधुनके सुनत ब्रह्मकोंनिरूपन करेहैं ३६ दक्षिणजंघापै वायेंचरनकमलधरवामें त्राघापैदक्षिणभुजाधरियें हुचेमें अक्षमालादक्षिणहस्तमेंकरि जोलकीमुद्राताकरिबैठेहैं ३७ ब्रह्मानंदमेंजोसमाधि ताघामेंस्थितवाप्रजानदृढिकरिवेकौ योगपदकोंविशेषकरिसेवनकरेहैं ऐसेमननशीलनमेंमुख्यमहादेवजी तादिलोकपालनसहितमुनिहाथजोरप्रणामकरतभये ३८

भा॰च॰
१६

रूपोंसुवर्णइनकरदावितऐसैंवरनविमान तिनकरसंकीर्ण पक्षीनकीस्त्रीनकरिसेवित बहुफलकापुरीहै तिनकरकेसी सोभादेइहै जैसैंवादरविजुरीनसहित आकाशकेसीविजुरीसीस्त्रीहै वादरसेविमान औरआकाशकेसहशवहपुरीहै २६ ऐसें वोअलकापुरीकोंछोडिऔरवासोंगंधकवनकोंछोडि महादेवजीकेवटकोंदेखतभये वहवनकेसोहैविचित्रहैपुष्पफलपत्रजिन मैं ऐसेवृक्षनकरमुख्यतिनकरसुखकारीहै २७ मनोहरजिनकेकंठऐसेपक्षीनकेसमूहतेसमूहतिनकेस्वरनकरमंडितऐसो रमेंराजिनकेस्वरकरव्याप्त औरकलहंसनकेकोकिलनके औरतिनकोप्रिय ऐसोंऔरकमलनकरयुक्तहैजलासयजामें २८ वन

तारहेममतारत्नविमानशतसंकुलं जुष्टंपुण्यजनस्त्रीभिःपंथांरवंबुसतडितघनं २६ हित्वायक्षेश्वरपुरींवनंसौगंधिकेचतत् द्रुमैःकामदुवेहृद्यंचित्रमाल्यफलच्छदैः २७ रक्तकंठस्वगानीकस्वरमंडितषट्पदं कलहंसकुलप्रेष्ठंस्वरमंडजलासयात् २८ वनकुंजरसंघृष्टहरचंदनवायुना अधिपुण्यजनस्त्रीणांमुहुरुन्मथयन्मनः २९ वैडूर्यकृतसोपानावाप्युत्पलमालिनी व्याप्तांकिंपुरुषैर्दृष्ट्वातआराद्ददृशुर्वटम् ३० संयोजनशतोत्सेधपादोदपिटपापत पर्यक्कृताचलच्छायोनिर्नीडस्तापवर्जितः ३१

केलाधीनकरिसंघृष्टजेचंदनकेवनरक्षतनसंबंधजोपव नताकरपक्षीनकेस्त्रीनकेमनकोंमथेहै २६ जामेवैडूर्यमणिकोजिनमेंसिढ़िऐसीबावरीहैजिनमैंकमलनकेसमूहलगेहैं औरजोवहुवनकिंपुरुषनकरिव्यापितहे ताहिदेखकरदेवताब्रह्मासहिततत्कालवटकौदेखतभये ३० सोवृक्षशिवजीकोंवरसोंजोजनऊंचौहै औरपिचतरजोजनपर्यंतमाणशाखानकरविस्तारहे औरचारोंओरअचलजाकीछायताामेंपक्षीनकेघोसुआजामेंनहीतापकरवर्जितहे ३१

१६

मृगसाखामृगवाराहमृगेंद्रऋक्षैरी शल्लकगवय शरभव्याघ्र भैंसाते आदि दे मार्गीनकरवह पर्वत शोभित है २० कैलाननके स
मूहकर व्याप्त सरोवर कैलानकरिहैं शोभाजामें और अप्सरानीके स्नानकरि अतिसुगंधजाकोजल ताकरव्याप्त है वह कैला
स २१ महादेवजी कौ पर्वत देष देवता आश्चर्य्य कों प्राप्त होत भये और वी परवत मे रमणीक अलकापुरी नाहि देषत भये २२
और वा पर्वत है सौगंधक वन देखत भये जो मैं सौगंधिक नामक कमल है और नंदा अलकनंदा दोन दी पुरते वाहिर देषत

नलनीषुकलंकूजत्षगवृन्दोपशोभितं २६ मृगैःसाखामृगैःक्रोडैर्मृगेन्द्रैर्ऋक्षशल्यकैः गवयैस्सरभिःव्याघ्रैर्निजुषंम
हिषादिभिः २० कदलीखंडसंरुद्धनलिनीपुलिनश्रियं दर्प्यस्तंनंदयासत्यास्नानपुण्यतरोदया: २१ विलोक्यभूतेशगि
रिंविबुधाविस्मयंययुः ददृशुस्तत्रतेरम्यामलकांनामवैपुरी २२ वनंसौगंधिकंवापीयत्रतन्नामपंकजं नंदाचालक
नंदाचसरितौवाह्यतःपुरः २३ तीर्थपादपदांभोजरजसातिवपावने ययोःसुरस्त्रियाह्नानस्वस्वधिष्ण्यतः २४ क्रीडंति
पुंसःसिंचंत्योविगाह्यरतिकर्शिता ययोस्तत्स्नानविभ्रष्टनवकुंकुमपिंजरं वितर्षोपिपिबंत्यंभःपाययंतोगजीर्गजा २५

भये २३ जेनदीहरिकेचारणारविंदरतिकरि अतिपवित्रजलजिनमें तिनमेंदेवतानकीइस्त्री अपनेविमाननतेउतर
उतननदीमेंस्नानकरैहैं वानदीमेंप्रवेशकरि पुरुषनकोंसिंचतक्रीडाकरैहैं २४ जिननदीनमेंपुरुषस्त्रीनकेस्नानकरिग
लितजोनवीनकुंकुम ताकरपीतवर्णजोजल तातृष्यासहीनजीनहाथीउहैं ऐसेहाथीहाथीनकौंप्यावत औरआपहूपीवैहैं २५

भा॰ च॰
९५

ऊंचीहैसाखाजिनकी ऐसेजोवृक्षसंपूर्णकामनानकेदैनवारे तिनकरमानोपुष्पनाउठाईपक्षीनकौंमानोंबुलावेहीहैं च
लतजोहाथीतिनकरमानोंचलैहीहै फिरनानकीधुनकरमानोवोलैहीहै ऐसोकैलासहै १३ फेरकैलासकैसोहै मंदर
पारजातसारीनकरशोभितहै तमालतालकचनारसुपेदअसन इनवृक्षनकरशोभितहै १४ आम्रकदंबकोननागपुं
पुंनागचंपापांडूरअसोकमोरशरीकुंदकुरुवक इनवृक्षनकरिशोभितहै १५ सुवर्णकौंसोहैरंगजिनकौं ऐसेकमल

अदृश्यंतमवोद्वृन्दैर्द्विजान्कामदुघैर्द्रुमैः कूजंतमिवमातंगैर्गृणंतमिवनिर्झरैः १३ संसरैःपारजातैश्च प्रारलैश्चो
पशोभिते तमालैःशालतालैश्च कोविदारासनार्जुनैः १४ चूतैःकदंबैर्नीपैश्च नागपुंनागचंपकैः पाटलाशो
कबकुलैःकुंदैःकुरुवकैरपि १५ स्वर्णार्णशतपत्रैश्च वेत्रवेणुकजालिभिः कुब्जकैर्मल्लिकाभिश्च माधवीभि
श्चमंडिते १६ पनसोदुंबराश्वत्थप्लक्षन्यग्रोधहिंगुभिः भूर्जैरौषधिभिःपूगैराजपूगैश्चजंबुभिः १७ खर्जूराम्रा
तकाम्राद्यैःप्रियालमधुकेंगुदैः द्रुमजातिभिरन्यैश्चराजितेवेणुकीचकैः १८ कुमुदोत्पलकल्हारशतपत्रवनर्द्धिभिः

अरु वेणुमालिनीकुब्जकमल्लिकामाधवीइनकरकैशोभितहैकैलाश १६ पनसउंबरपीपरपीलखनिवटहिं
गुभोजपत्रऔषधिपूगराजपूगजामनइनकरशोभितहै १७ खजूरऐसोंडाआम्रप्रियालमहुआईंगुद औरअ
नेकवृक्षनकीजातवेणुकिचकादिकनिंवनिकरशोभित १८ कुमदउत्पलकल्हारसपत्रनकोजोवनतिनकरसमृद्ध
लनिकरिसारोनामेंवोलतमनोहरजेपक्षीनकेसमूहतिनकरशोभितहै १९ श्रीकृष्णायनमोनमः॥

सोब्रह्माऐसेदेवतानकोंआज्ञादे प्रजापतिपितरसवकोंसंगले अपनेस्थानतेंमहादेवजीकोंप्रियपरवतनमेंश्रेष्ठःकै कैलासपर्वततहांजातभए ८ जाकैलासमेंजन्मऔषधितपमंत्रयोग इनकरसिद्धजोदेवता तिनकरसेवितहे औरकिं न्नरगंधर्वअप्सरानकरिवेष्ठितहैं ९ नानामणिमयनानाधातुनकरिविचित्र नानाप्रकारकेहैंद्रुमलतागुल्मजिनमेंनाना

सहस्यमाद्रिप्रप्रस्तुरानजस्तैसेसमन्वितपितृभिस्वप्रजेशैः ययौस्वधिष्ण्यविलयंपुरद्विषःकैलाशमद्रिप्रवरंप्रियं प्रभो ८ जन्मौषधितपोमंत्रयोगासिद्धैर्नरेतरैः जुष्टंकिंनरगंधर्वैरप्सरोभिर्वृतंसदा ९ नानामणिमयैशृंगैर्नाना धातुविचित्रतैः नानाद्रुमलतागुल्मैर्नानामृगगणावृतैः नानामलप्रस्रवणैर्नानाकंदरसानुभिः रमणंविहरं तीनारमणैःसिद्धयोषितैः ११ मयूरकेकाभिरुतंमंदाधालिविमूर्छितं साविलैरक्तकंठानांकूंजितैश्चपतत्रिणामाः

मृगगणनकरआवृत ऐसेशिखरनकरिशोभितपर्वतहैं १० नानाप्रकारकेझिरनातिनकरि औरनानाकं दरातिनकर औरशिखरतिनकरशोभित पतिनीसहितरमणकरतजोदेवतानकीस्त्रीतिनकरशोभित ११ फेरि कैलासकेसोहेमयूरणकीवाणीकरनादितहैं माधवजोभ्रमरतिनकरविमूर्छित कोकिलानकेस्वरसहतलतासो हेहे औरपक्षीनकीबोलनतिनकरिकैयुक्तहैं १२

भा० च०
१४

याकेअनंतरसवदेवगण रुद्रकसभासदरुद्रकेपार्षदनजीतेशूलयाहाखड्गगदावडेमुद्गरनकरिटूटेअंगजिनके आगेंजाय नमस्कारकरयहसववातनिवेदनकरतभये २ भगवानब्रह्मा औरनारायणयहविघ्नपतिलेहीजानिदक्षिकेयज्ञमेंनजातभये ३ यहसवसुनिकेब्रह्मादेवतानसोंकहतभये हेदेवताहो अतितेजस्वीपुरुषजोअपराधहुवासोंनेकअपराधकरिवेकीइच्छाकरेहे तिनकोवदलकल्याननहीहोइहै ४ होतोतुमवडेअपराधीजोमुख्ययज्ञकेभागलेवेवारेमहादेवजीकोदूरिकरिदेतभए यज्ञभागते

मैत्रेयउवाचः अथदेवगणाःसर्वेरुद्रानीकैःपराजिताः शूलपट्टिशनिस्त्रिंशगदापरिघमुद्गरैः १ संछिन्नभिन्नस र्वांगासर्त्विक्सभ्याभयाकुला स्वयंभुवेनमस्कृत्यकार्त्स्न्येनैतन्न्यवेदयन् २ उपलभ्यपुरैवैतद्भगवानाब्जसंभवः ना रायणश्चविश्वात्मान्नकस्याध्वरमीयतु ३ तदाकर्ण्यविभुःप्राहतेजीयसीकृतागसि क्षेमायतत्रसाभूयान्नप्रायेणच भूषतां ४ अथापियूयंकृतकिल्विषाभवंयेवर्हिषोभागभजंपराद्दुः प्रसादयध्वंपरिशुद्धचेतसाक्षिप्रप्रसादंप्रगृही तांघ्रिपद्मं ५ आसाशानाजीवितमध्वरस्यलोकःसपालःकुपितेनयस्मिन् तमाशुदेवंप्रियया विहीनंक्षमापयध्वंहृदि विघ्नदुरुक्तैः ६ नाहंनयज्ञोनचयूयमन्येयेदेहभाजोमुनयश्चतत्वंविदुःप्रमाणंवलवीर्ययोर्वायस्यात्मतंत्रस्यकउपायंवि धित्सेत् ७

तेसथापि वेदपालहैउनकेचरणगहणकरिजलदीप्रसन्नकरोप्रसन्नहोइजाइगे ५ जोतुमयज्ञमेंजीवनचाहोतोतोउनकी प्रार्थनाकरोजाकेकोपकरेसंतेंपालनसहितलोकनष्टहोईजोहैं सोभगवानमहादेवप्रियकरितीनदक्षकेदुर्वचनकरिहृदय मेंविद्धताहिक्षमाकरोगो ६ तासिवजीकेवलवीर्यकेप्रमाणकौनेमेंजानूंनयज्ञभगवानइन्द्रजानेनऔरदेहधारीमुनिकोईनही जानेसोस्वाधीनमहादेवजीसोंकोउउपायकरवेकीइच्छाकरै ७

भगदेवताकी निचे गिराय क्रोधकरि इनेमारो २० और पूषाके दांत उपारत भये ऐसे कलिंगदेसके राजाके दांत अर्जुन बलेव्या हमे हा उजीनेउपारे हे जो एषा महादेवजीके शाप देतविरीयाहांतादिषायतसतभयोयाते २१ फिर दक्षकी छाती पेचढ पैनीजाकी धार ऐसे हू है शस्त्र परंतु काटनसक्यो २२ मंत्र सारितजेसस्त्र तिनकरनाहे कटिहे त्वचाजाकी ऐसे दक्षकों देखवीरभद्र बडे आश्चर्यको प्राप्तिभयो और मारवेकी चिंताकरतभये २३ सो पशुनकोपतिवीरभद्रयज्ञमे कठनथ्यो इनादिकस्यमरणो उपायदेखिकरि पशून

भगस्य नेत्रे भगवान्पातितस्य रुषा भुवि उज्जहार सदस्थोऽक्ष्णा यः शपन्तमसूसुचत् २० पूष्णो ह्यपातयद्दन्तान् कालिंगस्य यथा बलः शप्यमाने गरिमणि योऽहसद्दर्शयन्दतः २१ आक्रम्योरसि दक्षस्य शितधारेण हेतिना छिन्दन्नपि तदुद्धर्तुं नाशक्नोत् त्र्यम्बकस्तदा २२ शस्त्रैरस्त्रान्वितैरेवमनिर्भिन्नत्वचं हरः विस्मयं परमापन्नो दध्यौ पशुपतिश्चिरं २३ दृष्ट्वा संज्ञपनं योगं पशूनां स पतिर्मखे यजमानपशोः कस्य कायात्तेनाहरच्छिरः २४ साधुवादस्तदा तेषां कर्म तत्तस्य पश्यतां भूतप्रेतपिशाचानां अन्येषां तद्विपर्ययः २५ जुहावैतच्छिरस्तस्मिन् दक्षिणाग्नावमर्षितः तद्देवयजनं दग्ध्वा प्रातिष्ठद्गुह्यकालयं २६ इति श्रीमद्भागवते महापुराणे चतुर्थस्कंधे नाम पंचमोऽध्यायः ५॥

देखिकरि वीरभद्र कौ क्रमतादि देखिताय भूत प्रेत पिशाच सब बडाई कीनी नाई प्रमेष्ठके दक्षरूप पशुको सिरन्यारों तोरलेतभए २४ वहजो वीरभद्र को कर्म ताहि देखिता य भूत प्रेत पिसाच सब बडाई करत भये और दक्षकी और के दुषी होतभये २५ वा दक्षके सिरकौ क्रोधकर अग्निमें तों भक्रद देतभयो ऐसे यज्ञकों जराय वीरभद्र कैलासकौ जातभयो २६ इति श्री मद्भागवते महापुराणे चतुर्थस्कंधे परमहंस संहितायां वैयासिक्यां नाम पंचमोऽध्यायः ५

इनने मेरूदके अनुचर नाना आयुधन को धारण करे पीरे कोई भूरे मकरके से हें उसुरवजिनके तिनने आयके दक्षको यज्ञ चारों ओरते घेर लीयो २३ कोई तो यज्ञमें वह प्राग्वंशशाला हे ताहि तोरत भयो कोई पत्नीसालाको बिगारत भए कोई सभा कोंमे डफतो रतभयो कोई अग्निशाला कोई भवशाला कोई दक्षकोंघर कोई पाक कोई भोजनसाला इने विगारतभये २४ कोई यज्ञ तनएयज्ञपात्रनकों फोडतभए कोई अग्निनकौनाश करतभयो कोई एक कुंडन मे मूत्र करतभये कोई वेदीमेखला तोरत

तावत्स रुद्रानुचरैर्महामखो नानायुधैर्वामनकैरुदायुधैः पिंगैः पिशंगैर्मकरोदराननैः पर्याद्रवद्भिर्विदुरान्वरुध्यत २३ केचिद्बभञ्जुः प्राग्वंशं पत्नीशालां तथापरे सद आग्नीध्रशालां च तद्विहारं महानसं २४ रुरुजुर्यज्ञपात्राणि तथैकेऽग्नीननाशयन् कुण्डेष्वमूत्रयन्केचिद्बिभिदुर्वेदिमेखलाः २५ अबाधन्त मुनीनन्ये एके पत्नीरतर्जयन् अपरे जगृहुर्देवान्प्रत्यासन्नान्पलायितान् २६ भृगुं बबन्ध मणिमान्वीरभद्रः प्रजापतिं चण्डेशः पूषणं देवं भगं नन्दीश्वरोऽग्रहीत् २७ सर्व एवर्त्विजो दृष्ट्वा सदस्याः सदिवौकसः तैरर्द्यमानाः सुभृशं ग्रावभिर्नैकधाद्रवन् २८ जुह्वतः स्रुवहस्तस्य श्मश्रूणि भगवान्भवः भृगोर्लुलुंचे सदसि योऽहसच्छ्मश्रु दर्शयन् २९

भये २५ कोई एक मुनिनकौं वाधितभए कोई स्त्रीनकी तर्जना करतभए कोई भयके मारे भाजे तिनेपकरतभये मणिमान शिवभी भृगु को पारी दुर्बाधितभए कोई स्त्रीन की तर्जना करत भए कोई भयके मारे भाजे तिने पकरत भयें मणिमान शिवभी भृगु को बांधतभये चंडेश पूषादेवताकौ बांधतभयो नंदीश्वर भगदेवताकोपकरतभयो ११ गुकौ बांधतभयो वीरभद्र दक्षकों बांधतभयो चंडेश पूषादेवताकौ बांधतभयो नंदीश्वर भगदेवता कौ पकरत भयो २७ सवही ऋत्विज सदस्यादि देवता उन शिवके पार्षदनने पथरन सों मारे अनेक मार्गन कौ भाजतभये २८ श्रुवा हाथमें ली ये होम करत जो भृगु ताकी डाढी मूछ भगवान् वीरभद्र उषारलेतभये जो दक्षके सापदेती वेर डाढी दिखाई महादेवजी कौ

वरोंत गर्जना करत रुद्र पार्षद जाके संग ऐसौं वीरभद्र गर्जकर मनुहहुको मारवे वारो ऐसो त्रिसूलले दक्ष के यज्ञ को भौंत भयो
नृपुरा दिन्नुषण है पाउमें जाकें ६ याके अनंतर ऋषि यजमान सभासद उत्तर दिसा मांउ धूरि उठत देखि चिंता करभये पद
अंधकार है यह रजकहांतें उडी ऐसें ब्राह्मण उनकी स्त्री सब चिंता करत भई पवन है नहीं चले और चोर हैं नहीं जो उग्रजाकौ
दंड ऐसो प्राचीनवर्हि जीवे है गे यन है कौं कोई नहीं जल हीं लीये जाय है कहा होहै कहा अवहीं लोक प्रलय को प्रापति होइगो ८

अन्वयमानः सतरुद्रपार्षदैर्भृशं नतर्द्दिव्यधीनदस्सु भैरवं उद्यम्य शूलं जगदंतकांतकं स इव बेषणेन च रणांघ्रि ६ ७
अथर्त्विजो यजमानः सदस्या ककुभ्युदीच्यां प्रसमिक्षरेणुं तमकिमेतत्कुतरां इजोभूदिति द्विजा घल्पोऽश्व दस्युः ७
वालानवालि न हि संति दस्यव प्राचीनवर्हिजीवति ह्येग्रदंडः गावोनकाल्यंत इदं कुतोरजो लोकोऽधुना किं प्रलयाय क
ल्पते ८ प्रसूत मिश्राः स्त्रियउद्विग्नचित्ता उचुर्विपाको वृजिनस्यैव तस्य यत्पश्यतीनां दुहितॄणां प्रजेशः सुतां सतीमवद
ध्यावनागात् ९ यस्त्वंतकाले व्युप्तजटाकलापस्वशूलसूच्यर्पितदिग्गजेंद्रः वितत्य नृत्यत्युदितास्त्रदोर्ध्वजान्उच्चाट्टहास
स्तनयित्नुभिन्नदिक् १० अमर्षयित्वा तमसह्यतेजसं मन्युप्लुतं दुर्विषहं भ्रुकुट्या करालदंष्ट्राभिरुदस्तभागणं स्यात्स्व
स्तिकिंकोपयतो विधातुः ११ व्वेवं मुद्विग्नदृशोच्यमाने जनेन दक्षस्य मुहुर्महात्मना उत्पेतुरुत्पाततमाः सहस्रशो भयावह

सकी स्त्री प्रसूतीने आदि दै उद्विग्न चित होइ गयीं वोलीं यह वा पापकौं फल है जो सब वेटीन के देषते दक्ष प्रजापति निरअपराध
सती वेटी की अवज्ञा करत भयौ ९ जो महादेव प्रलय समै मे फैले हैं जटा समूह जाके अपने त्रिसूल के अग्र भाग करि कै घोर हैं दि
ग्गजाने धारण करे हैं अस्त्र जिनूने ऐसी जो भुजा है ध्वजा तिन मे फैलाय हर्ष के रनृत्य करै हैं और कठोर जो हास्य सो भई गर्जना
ताकरि विदिसि करी हैं दिसा जाने ता को अपराध करि के ब्रह्मा महादेवजी को फिर कोप करावत जो विधाता ताहू कौ कल्या

भा० च०
१२

श्रीमैत्रेय जु कहै हैं हे विदुर दक्ष ने असत्कार जाकौं कीयो ऐसी सती जाकौं नास महादेवजी सुनिकें और अपने पार्षदन
की सेना यज्ञ मे भृगु ने भजाई यह सुनि कै अपार क्रोध करत भये १ सो महादेवजी क्रोध के मारे होठ चवात विजुरी सी अग्नि की
ज्वाला वढत उग्र जाकी कांत ऐसे ये जे कोउ उठि कर कै गंभीर नाद कर ता जटा कौं पृथ्वी मे मारत भए २ ता जटा में ते वडो जा
कौ सरीर ऐसो वीरभद्र भयो जो देत कर स्वर्ग कौं स्पर्श करै है अति उचौ कृष्णवर्ण तिन सूर्य के से है नेत्र जाके कराल उंचि

श्रीमैत्रेय उवाचः भवो भवान्या निधनं प्रजापतेरसत्कृताया अवगम्य नारदात् स्वपार्षदसैन्यं च तदध्वरार्भि
र्विद्रावितं क्रोधमपारमादधे १ क्रुद्धः सुदष्टौष्ठपुटः सधूर्जटिर्जटां तडिद्वह्निसटोग्ररोचिषं उत्कृत्य रुद्रः सहसो
त्थितो हसन् गंभीरनादो विससर्ज तां भुवि २ ततोऽतिकायस्तनुवा स्पृशन्दिवं सहस्रबाहुर्घनरुक्त्रिसूर्यदृ
क् करालदंष्ट्रो ज्वलदग्निमूर्द्धजः कपालमाली विविधोद्यतायुधः ३ तं किं करोमीति गृणंतमाह बद्धांजलि
भगवान्भूतनाथः दक्षं सयज्ञं जहि मद्भटानां त्वमग्रणी रुद्र भटांशको मे ४ आज्ञप्त एवं कुपितेन मन्युना स दे
वदेवं परिचक्रमे विभुं मेनेतदात्मानमसंगरंहसा महीयसां तात सहासहिं स्म सुं॥ ५॥

जाकी दंष्ट्रा प्रज्वलित अग्नि से जाके वार कपालन की जाके माला करि युक्त विविध उद्यत है आयुध जाके ऐसो वीरभद्र
महादेवजी सौं हाथ जोड वोले महाराज मै कहा करूं तब भूतनाथ वोले हे युद्ध मे निर्णय करत मेरे भटन मे मुखिया होई यज्ञ
सहित दक्ष कौं नास कर जाते तू मेरो अंस है ४ ऐसें क्रोध कर महादेवजी ने आज्ञा जाकौं दई सो देवन के देव महादेवजी
तिन की परिक्रमा करत भयो और अति भयंकर जो वोगे ताकर आप को वलवान् नहै कौ वल सहिवे लायक मानत भयौ ५

सवकथास्थावरजंगमप्रजा ताकौसवपैस्नेहचलीये सोयानेअपनीवेटीजोमानचाहेही ताकीअवज्ञाकरी सोप्राणछोडतभई
२९ सोयहअतिअसतन जाकौ हृदय येलोकनमैवडीअपकीर्तिपावैगो नरकमैपरेगो जोब्रह्मद्रोही महादेवकौदेषकेअव
ज्ञाकरी मरवेकौउद्यमभईवेटीनाहिनवारननहीकरतभयो ३० ऐसेजनकहैहैं इतनेमैसतीकोंप्राणत्यागदेषकें
आयुधलैमहादेवजीकेपार्षददक्षकेमारवेकोंउठतभए ३१ तिनेंआवतेपार्षदनकोवेगदेषकरिभृगुऋषियज्ञविघ्न

अहोत्वमात्स्यंमहदस्यपश्यतप्रजापतेर्यस्यचराचरंप्रजा जहावसत्त्वयद्विमताऽत्मजासती मनस्विनीमानमभिक्ष्ण
मर्हती २९ सोयंदुर्मर्षहृदयोब्रह्मध्रुक्चलोकेपकीर्तिंमहतीमवाप्स्यति यदंगजांस्वांपुरुषद्विडुद्यतांनप्रत्यषेधन्मृत
येपराधितः ३० वदत्येवंजनेसत्यादृष्ट्वासुत्यागमद्भुतं दक्षंतत्पार्षदाहंतुमुदतिष्ठन्नुदायुधाः ३१ तेषामापततांवेगं
निसम्यभगवान्भृगुः यज्ञघ्नघ्नेनयजुषादक्षिणाग्नौजुहावह ३२ अध्वर्युणाहूयमाने देवाउत्पेतुरोजसा
ऋभवोनामतपसासोमंप्राप्ताःसहस्रशः ३३ तैरलातायुधैस्सर्वेप्रमथाःसगुह्यकाः हन्यमानादिशोभेजुरुशद्भिः
ब्रह्मतेजसः ३४ इतिश्री चतुर्थोध्याय ४

करनवारेनकोजोनाशकरजोयजुर्वेद ताकेमंत्रनकरहोमकरतभयौदक्षिणाग्निमे ३२ भृगुनेहोमकरेभृगुनेहोंम
करेसंतेजेतपकरिसोमकोंप्राप्त ऐसेहजारनदेवताऋभुनामदेवताअग्निकुंडमैतेउठठाढेहोतभयो ३३ ब्रह्म
तेजकरिदेदीप्यमानलकटीनकेजिनपैआयुध ऐसेसंग्रामभयत्रिषभृगुऋभुनामकरतभये तिननेमहादे
वजीकेपार्षदप्रथमगुह्यकजेमारेतेसर्वदिसानकोंभाजगये ३४ इतिश्रीभागवतेचतुर्थस्कंधेनामचतुर्थोध्यायः ४

अवमहादेवजीतेरौसंबंधवाचकनामहैदाक्षायनी ऐसैंसंवोधनदेकेंजववोलेगेंतवमेरेंहास्यमुसिकानहोवेगो अव
मैंउदासहोऊंगी तातैंतेरेअंगतेभयोयहसरीरछोडूंगी २३ हेक्रोधादिकवैरीनकेमारवेवारे हेविदुर ऐसेयज्ञमैदक्षकीनिं
दाकर मौनलैउत्तरकौंमुखकरजलकोआचमनकरिपीतांवरओढे आंखिमूंदयोगमार्गमैंस्थितहोतभई २४ आस
नजानेजीसोंऐसीनाभिचक्रमैप्राणअपानदोउवरोवरकरि फिरउदानकौउठायबुद्धिकरिसहितहृदयमैराषि कंठमार्गमैकुटि

गोत्रंत्वदीयोभगवन्वृषध्वजोदाक्षायणीसाहयदासुदुर्मना व्यपेतनर्मस्मितमाशुतद्ध्यहं व्युत्स्रक्ष्यएतत्कुणपंत्वदं
गजं २३ श्रीमैत्रेयउवाच इत्यध्वरेदक्षमनूद्यशत्रुहन्क्षितावुदीचीनिषसादशांतवाक् स्पृष्ट्वाजलंपीतदुकूलसंवृतानि
मील्ययोगंचपथंसमाविशत् २४ कृत्वासमानावनिलौजितासना सोदानमुत्थाप्यचनाभिचक्रतः शनैर्हृदिस्थाप्य
धियोरसिस्थितंकंठाद्भ्रुवोर्मध्यमनिंदितानयत् २५ एवंस्वदेहंमहतांमहीयसामुहुःसमारोपितमंकमादरात् जिहा
सतीदक्षरुषामनस्विनीदधारगात्रेष्वनिलाग्निधारणां २६ ततःस्वभर्तुश्चरणांबुजासवंजगद्गुरोश्चिंतयतीनचा
परंददर्शदेहोहतकल्मषःसतीसद्यःप्रजज्वालसमाधिजाग्निना २७ तत्पश्यतांखेभुविचाद्भुतंमहद्धाहेतिवाद
स्सुमहानजायत हंतप्रियादैवतमस्यदेवीजहावसून्केनसतीप्रकोपिता २८

नकेमध्यमैलाय २५ ऐसैंवडेनतेव
डुमहादेवनेवारंवारआदरतेगोदमेराखीजोदेहताहिसपेकोपकरकेंछोडोंचाहत अपनेअंगनमैपवनकीओरधारणाअग्नि
करतभई २६ वासमैजगतकेगुरुजोआविनिपति तिनकेचरणारविंदकोचिंतमनकरत औरकछुनदेषतभई औरतत्का
लसमाधितेभईजोअग्निताकरिदेहप्रज्वलितभई २७ ताआश्चर्यकोदेषपृथ्वीऔरआकासमैंवडोघोरशब्दहोतभयो हेवीरे
वडोखेदहैजोअतिसयपूज्यमहादेवजीकीप्यारीदक्षयेंकोपकरसोप्राणछोडतभई २८ हेवीरेयाप्रजापतिजोदुर्धिला जाकी

134

निं हाद रखे वारो तातो तेयह मेरो सरीर भयो ताहि मैंन धारण करूंगी जैसे कोई अन्य स्त्री अन्न मोहतें पाई वाको वमन करिवो ही बुद्धि करै है अैसे या सरीर को त्याग मैं मेरी श्रद्धा है १८ अपने स्वरूप मैं जो रमत जो मुनि ताकी बुद्धि विधि निषेद रूप जो वेद वाक्य मैं नहीं रमे है जा तें निवृत्तें को अधिकार है जैसें देवता मनुष्यन की गति न्यारी न्यारी होय है अैसें ही प्रवृत्ति निवृत्ति न्यारी न्यारी है परंतु विवेकी अप ने धर्म में स्थित लोय और की निंदा करो १९ प्रवृत्ति निवृत्ति दोऊ ई साचे है रागविराग कौं जामे चिन्हवेद में दोउ न्यारे करि कहे है परंतु एक ठौर कर्त्ता दोउ नकौ करै तौ वनें नहीं एक एक ही होत है और ब्रह्म जो सदाशिव तामैं दोउ हो नहीं बने है २० हे पिता मैं तुमके

कर्म

अतस्तवोत्पन्नमिदं कलेवरं न धारयिष्ये शितिकंठगर्हिणः जग्धस्य मोहाद्धि विशुद्धिमंधसो जुगुप्सितस्य उद्धरणं प्रचक्षते १८ न वेदवादाननुवर्तते मतिः स्व एव लोके रमतो महामुनेः यथा गतिर्देवमनुष्ययोः पृथक् स्व एव धर्मे न परं क्षिपेत् स्थितः १९ कर्म प्रवृत्तं च निवृत्तमप्यृतं वेदे विविच्योभयलिंगमाश्रितं विरोधि तद्यौगपदैककर्तरि द्वयं तथा ब्रह्मणि कर्म नर्च्छति २० मा वः पदव्यः पितरस्मदास्थिता या यज्ञशालासु न धूमवर्त्मभिः तदन्नतृप्तैरसुभृद्भिरीडिता अव्यक्तलिंगा अवधूतसेविताः २१ नैतेन देहेन हरे कृतागसो देहोद्भवेनालमलं कुजन्मना व्रीडा ममाभूत्कुजनप्रसंगतस्तज्जन्म धिग्यो महतामवद्यकृत्

किं प्राप्तिन तें पदवी अणिमादिक समृद्धि ते तुम को नहीं है तुम्हारी पदवी जज्ञ साला नहीं मे होत है ते यत्न के अन्न करि तृप्त जे धूम मार्ग तिन करि तिन करके केवल भोगन करियें है और जो हमारी पदवी जे तो अव्यक्त जिन कौ हेतु इच्छा करि होहि और ब्रह्मवेत्तन करि सेवि तहै २२ सो मे अब बहुत कहा कहूं या देह कौ त्यागूंगी महादेव को अपराधी तातें देह मेरे तातें मैं प्रायरूप हरी दीयतु गर्व मति करें २२ सो मे अव बहुत कहा कहूं या देह कौ त्याग्यूंगी महादेव को अपराधी तातें देह तें भयो यह मेरो देह तातें एणी भई कुसील जो व तातें है प्रसंगतें मो कौ लज्जा होइ है यातें जो बडेन कौं अप्रिय करनी तातें जो जो जन्मता को धिक्कार है यातें तेरे संबंधतें मेरो देह निंदित है यातें ताहि मैं त्यागूंगी २२ श्री कृष्णायनमो नमः हरे कृष्ण ॥

135

ना.च.
१०

यो रे ग्रएन को वकृत करें है तेसे मत्स्य ने अपराध की यो है २२ सो तो सरीर के दुर्जन जड शरीर को जे आत्मा करें है तिन मैं ईर्षा सहित मह पुरुषन की निंदा करिवो यह आश्चर्य नाहि महत्पुरुषन की चरणरेणु करि निरस्त है प्रभाव जिन को तिन दुष्टन को साधुन की निंदा करि वो उचित ही है जद्यपि महत्पुरुष अपनी निंदा सहि लें है परंतु उनकी चरनरेणु सहि के उन दुष्टन को तेज दूरि करे है यातें उनतें अरत्तो गण्षवनें नती केवल निंदा करें है १३ जा महादेव जी को शिव ये दोय अक्षर को नाम वाणी कर एक वार कहीये तो सव पाप को दूरि करें अैसे पवित्र की निंदा इच्छा जा की आज्ञा ताशिव जू सो मता अमंगल रूप तू द्वेष करै है १४ ब्रह्मानंद सो ई भयो के मन रहता कौ चाहन

नाश्चर्यमेतद्यदसत्सु सर्वदा महद्विनिंदा कुणपात्मवादिषु सेर्ष्यं महापूरुषपादपांसुभिर्निरस्ततेजःसु तदेव शोभनम् १३ यद्द्व्यक्षरं नाम गिरेरितं नृणां सकृत्प्रसंगादघमाशु हन्ति तत् पवित्रकीर्तिं तमलंघ्यशासनं भवानहो द्वेष्टि शिवं शिवेतरः १४ यत्पादपद्मं महतां मनोलिभिर्निषेवितं ब्रह्मरसासवार्थिभिः लोकस्य यद्वर्षति चाशिषोऽर्थिनस्तस्मै भवान्द्रुह्यति विश्वबन्धवे १५ किं वा शिवाख्यमशिवं न विदुस्त्वदन्ये ब्रह्मादयस्तमवकीर्य जटाः श्मशाने तन्माल्यभस्मनृकपाल्यवसत्पिशाचैर्ये मूर्धभिर्दधति तच्चरणावसृष्टम् १६ कर्णौ पिधाय निरयाद्यदकल्प ईशे धर्मावितर्यसृणिभिर्नृभिरस्यमाने छिंद्यात्प्रसह्य रुशतीमसतीं प्रभुश्चेज्जिह्वामसूनपि ततो विसृजेत्स धर्मः १७ जो महत्पुरुषन को मन रूपि भ्रमर तिन कर

जा महादेव जी को चरण सेवत है जो अर्थलोकन को सव कामना वर्षे है विश्व के बंधु ता महादेव जी सों तू द्रोह करे है १५ जो महा देव जटा पैलाई श्मशान मैं वास करें है ता स्मशान के फूल भस्मसां परी इतें अप्रभूत गण जाके ताशिव कों तो विना और ब्रह्मवादि क कहा नहीं जाने है तौ वी शिव जी सों हम भाव राषे है अैसे जो महादेव जी के चरणतें गिरे होय निर्माल्य ताहि मायें पै धारण करें है १६ क कहा नहीं जाने हैं तो वी शिव जी सों हम भाव राषे है अैसे जो महादेव जी के चरणतें गिरे होय निर्माल्य ताहि माथे पै धारण करें है १६ धर्म के रक्षा करवे वारे स्वामी की जो कोउ निंदा करे ताहि मारे और जो मारवे न वनें तो वा की जिह्वा करि प्राण वाहि नीताहि कोटै अौ र जो यह न वनें तो ने अपने दिकान मूदि कै चल्यो जाय और जो कछू न वनें तो आपुही प्राण छांडि देइ यह धर्म है १७ तातें तू महादेव कों

१०

136

वायज्ञमें आईजोसतीताहिदक्षकेडरके मारें कोईआदर नदेतभयें वादक्षहूनें अपमान कीयो एकवहनसबमहतारीमौसी ता तीवडेआनंदसेंआदरकरकेमिलतभई प्रेमकेआंसूलेगलेमेंजीनके ७ पितानेअनादरजाकोकीयो ऐसीसतीवहननेसरे दरता वारि कुशलप्रसपर्छहतीभई ८ नहींहेरुद्रकौंभागजामें ऐसेयज्ञकौंदेख औरपिताने महादेवजीकीअवज्ञाकरी जोशिव जीकोंआवाहननकरीयहदेखि औरयज्ञसभामेंपीताने आदरजाकोनहीयो ऐसीसती महादेवजीकीकांता मानोतीन्योंलोक नकोजरायदेगी ऐसेंक्रोधकरतभई ९ क्रोधकरजोअव्यक्तवाणी ताकर शिवजीकोद्वेषी धर्ममार्गमेंजोअभ्यास ताकरकेहेग

तामागतांतत्रनकश्चनाद्रियतविमानितां यत्तकृतोभयज्जन ऋतेस्वसर्वैजननीचसादरात्प्रेमाश्रुकंठ्यःपरिषस्वजुर्मुदा: सौदर्यसंप्रश्नसमर्थवार्तया मात्राचमातृस्वसृभिश्चसादरं दत्तांसपर्यांवरमासनंचसानाददत्पित्राप्रतिनंदितासती: ८ अरुद्रभागंतमवेक्ष्यचाध्वरंपित्राचदेवेकृतहेलनंविभौ अनादृतायज्ञसदस्यधीश्वरीचुकोपलोकानिवधक्ष्यतीरुषा ९ जगर्हसामर्षविपन्नयागिराशिवद्विषंधूमपथश्रमस्मयं स्वतेजसाभूतगणान्समुत्थितान्निगृह्यदेवीजगतोभिशृण्वतः १० श्रीदेव्युवाच: नयस्यलोकेस्त्यतिशायनःप्रियस्तथाप्रियोदेहभृतांप्रियात्मनः तस्मिन्समस्तात्मनिमुक्तवैरकेऋतेभ वंतंकतमःप्रतिपयेत् ११ दोषान्परेषांहिगुणेषुसाधवोगृह्णंतिकेचिन्नभवादृशाद्विजः गुणांश्चफल्गून्बहुलीकरिष्णवोमह

त्तमास्तेष्वविदद्भवानघम् १२

वेंजाकोनादसकौंनिरादरनिवारणकरियें वोलोंसवजगतकेसुनत १० सबदेहधारीनकेप्यारेआत्मामहादेवजीजातेकोईलोक नमेंअतिशयप्रियजाकेनहीं ऐसेसबकेआत्मामहादेवजीसोंतोविना औरकौनवैरकरें ११ अतिभयऔरदक्षतेंमारिवेकुंउठे भूतगणतिनेंअपनीआज्ञाकरी हेद्विजतोसरिखेंअसूयकपरायेगुननमेंदोषनहींकोगहनकरेहैं गुननकौनहींगहनकरेहें औरजोकोईमध्यस्थहैतेगुणनमेंदोषनहींगहणकरेहें यथास्थितगुणदोषनकोविवेककरगहणकरेहैंतेमहांतनहींयें औ [illegible]

करूहूंतोंइहांहीदेहछोडेंगी जोआज्ञादेहुतोउहांहीदेहछोडेंगी यातेचुपहोतभये तबसती सुहृदनकेदेखवेकीजाकीइछा और जायवेमेंमहादेवजीकीसंकाकरेंहें यातेंकबहूतोजायहें फिरसंकाकरआयजायहें यातेंदोप्रकारकीगतिहोतभई १ सुहृदन केदेखवेमेंजोशिवजीनेंमनेकरी तामेंमनजाकोउदास स्नेहतेंदर्शनकूरस आंसूनकेलेसकरव्याकुलकंपाजाकेंहोइआई आयोऐसीसतीसमानऔरपुरुषकोईनहीं ऐसेमहादेवजीकोमानोभस्मकरेंगी ऐसेक्रोधकरदेषतभई २ तबतोंस्त्री वडेंस्वासलेस्त्रीपनेकेस्वभावकर मूढजाकीवुद्धि शोकऔरक्रोधकर महादेवजीकोछोडमातापिताकेघरजातभई ३

श्रीमैत्रेयउवाच: एतावदुक्त्वाविरराम शंकरःपत्न्यंगनाशंह्युभयत्रचिंतयन् सुहृद्दिदृक्षुःपरिशंकितर्भवान्निष्क्रामतीनिर्विशतीद्विधासमा १ सुहृद्दिदृक्षाप्रतिघातदुर्मनाःस्नेहाद्रुदत्यश्रुकलातिविह्वला भवंभवान्यप्रतिपूरुषंरुषाप्रधक्ष्यतीवैक्षतजातवेपथु २ ततोविनिःश्वस्यसतीविहायतंशोकेनरोषेणचदूयताहृदा पित्रोरगात्स्त्रैणविमूढधीर्गृहान्प्रेम्णात्मनोयोर्द्धमदात्सतांप्रिय ३ तामन्वगच्छन्द्रुतविक्रमांसतीमेकांत्रिनेत्रानुचराःसहस्रसः सपार्षदयक्षामणिमन्मदादय:पुरोवृषेंद्रास्तरसागतव्यथा ४ तांसारिकाकंदुकदर्पणांबुजश्वेतातपत्रव्यजनस्रगादिभिः गीतायनैर्दुंदुभिशंखवेणुभिर्वृषेंद्रमारोप्यविटंकितायमुः ५ आब्रह्मघोषोर्जितयज्ञवैससंविप्रजुष्टंविबुधैश्चसर्वशः मृद्दार्वयःकांचनदर्भचर्मभिर्निसृष्टभांडंयजनंसमाविशत् ६

उजोमहादेवजीहें अकेलेंप्रभाकयजोसतीताकेपीछेंहजारनमहादेवजीकेअनुचरजातभये पार्षदनसहितयक्षमणि मान्मदतेआदिदे नांदीयाआगेकरनिर्भयहोइजातभए ४ सोरोगेंददर्पनकमलश्वेतछत्रविजनमाला औरगीतकों आयुदुंदुभिशंखवेणुइनकरसहितशोभितसतीकोनांदीयापेचढायेंजातभए ५ उहांदेवगणध्वनिकरयुक्तसोभायमान यज्ञसंबंधिहेपशुहिंसाजामें औरविप्रऋषिनिकरसेवतदेवतानिकरसेवित औरमृत्तिकाकाष्ठलोहसुवर्णदर्भमंडनकरिरचे

137

१३८

हे सुमध्यमे सुंदर है मध्यदेस जाको सती तुम्हारो जर्ड़ इके बोलबो दंडवत प्रणाम यह व्यवहार परस्पर जन करें हैं ताहि व्य
वहार कौं साधु लोक भलें करजाने हैं जो श्रीवासुदेव अंतरयामी कोंही वे आदर करे हैं देहाभिमानी को नहीं सो उचित ही कर जो पर
सर्ण हरमें शरीर को व्यापार नहीं याते अंतरयामी द्रुष्टि कर मनसों मैंने सबकी योंपरदर्सथा वात कों जानें नहीं २२ विशुद्ध जो अंतःक
रन ताकौ वासुदेव संज्ञा है तामें आचरण शून्य जो भगवान सो प्रतीत होते हैं सो वासुदेव प्रसिद्ध हैं ता अंतः करन में मैं अहर्निस वा
सुदेव कौं चिंतन करहुं हूं जो भगवान ईंद्रीयन के अगोचर हैं २३ ताते दक्ष हैं तो तेरो पिता देह को उपजायवे वारो परंतु मेरो दोषी

प्रत्युद्गमप्रश्रयणाभिवादनं विधीयते साधु मिथः सुमध्यमे प्राज्ञैः परस्मै पुरुषाय चेतसा गुहाशयायैव न देहमानि
ने २२ सत्वं विशुद्धं वसुदेवशब्दितं यदीयते तत्र पुमानपावृतः सत्वे च तस्मिन् भगवान् वासुदेवो ह्यधोक्षजो मे नम
नसा विधीयते २३ ततो निरीक्ष्यो न पिताऽपि देहकृद्दक्षो मम द्विट् तदनुव्रताश्च ये यो विश्वसृग्यज्ञगतं वरोरु मा
मनागसं दुर्वचसाऽकरोत्तिरः २४ यदि व्रजिष्यस्यतिहाय मद्वचो भद्रं भवत्या न ततो भविष्यति संभावितस्य स्वजना
त्पराभवो यदा स सद्यो मरणाय कल्पते २५ इति श्रीभागवते चतुर्थस्कंधे तृतीयो॰ ३

हे और तोकों चतुर्वली ते हूं द्वेष करे है याते तो को देखवे जोग्य नहीं है हे वरोरु जो मैं विश्वसृष्टान की जज्ञसभा मैं गयो नि
रअपराध ताहि दुर्वचन करि तिरस्कार करत भयो २४ और जो मेरो वचन उलंघन करके तू जाइगी तो तेरो कल्याण न होय
जो प्रतिष्ठित पुरुष कौ जो स्वजन ते पराभव होइ तब तब ही सरनों परे है मरण ही जो होइ है २५ इति श्रीभागवते महापु
राणे चतुर्थस्कंधे टीकायां नाम तृतीयो ध्यायः ३ ऐसे कही महादेव जी पत्नी के अंग कौ नाश होइ उत्तर विचार जो निर्वाण

भा. च.
८

विद्यातपपवित्र वपु वय अकुल साधन मैं तो वेग ण हों साधु लोइ ने पाइ नम्र होइ जाहि और असाधु इन गुणन पाइ अनम्र होइ जाहि
फिर विवेक ज्ञान नष्ट भये सन्ते बडेन कौ जन कौ देखें हैं साधून मेलो वे विवेक करें हैं असज्जन मे दोष न तहें यो ही ते पुरुष योजोगवे
ता कर दुष्ट हे द्रष्टि जिनकी ऐसे बडेन को अनादर करें हैं १७ ऐसे अनवधि जे तिनके चित्त से आगरान कौ मोह चलाय लाल
आंखें करि कुटिल बुद्धि कर देखे हैं उनके घर मैं स्वजन हृषीकारि मल के न देखिये वेरी कुंवाण न कर घायल जाके अंग कीये ऐ
सो दुःख वहुते व्यथा नहीं पावे है यह सोवे हूं हैं निवाहि निंद्रा आवे हैं ऐसें अपने नके दुर्वचनेरूप वाण न करि मर्म मैं ताडित विधाय

विद्यातपोवित्तवपुर्वयःकुलैः सतां गुणैः षड्भिरसत्तमेतरैः स्मृतौ हतायां भृतमानदुर्दृशः स्तब्धा न पश्यन्ति हि धाम भूयसां १७
नैतादृशानां स्वजनव्यपेक्षया गृहान् प्रतीयादनवस्थितात्मनां येऽभ्यागतान् वक्रधियाभिचक्षते आरोपितभ्रूभिरमर्षणाक्षिभिः १८
तथारिभिर्न व्यथते शिलीमुखैः शेतेऽर्दिताङ्गो हृदयेन दूयता स्वानां यथा वक्रधियां दुरुक्तिभिर्दिवानिशं तप्यति मर्मताडितः १९
व्यक्तं त्वमुत्कृष्टगतेः प्रजापतेः प्रियात्मजानामसि सुभ्रु संमता तथापि मानं न पितुः प्रपत्स्यसे मदाश्रयात्कः परितप्यसे यतः २०
पापच्यमानेन हृदातुरेन्द्रियः समृद्धिभिः पूरुषबुद्धिसाक्षिणाम् अकल्पा एषामधिरोढुमञ्जसा परं पदं द्वेष्टि यथासुरा हरिम् २१

कलाप करदिन रातपीडा पावे है रातिदिन वे वचन घट कौ रहे करें हैं १९
निश्चय उत्कृष्ट है गति जाकी ऐसे प्रजापति की प्यारी बहन मैं तू प्रति प्रिय है यह मैं जानूं हूं परि तो ह अब तू पिता ते मान न पावेगी
तातें करें हे हे सतिनि रहंकार पुरुषन की जो समृद्धि युए किस्पी देकि तिन कर राति जो हृदय ताकर दुखित जाकी ईंद्रीय ऐसे दुर
जन साधून के ऐश्वर्य पाय वे कौ न तां आसक्त हैं परंतु केवल उनसौ द्वेष ही करें हैं ऐसे असुर हरसौ अनादर जो न छू वसाइ
नहीं केवल द्वेष ही करें हैं ऐसें जानि हे सुमध्यमे यह मो सौ द्वेष करें हैं २१

८
३९

औरहे अजमतातौं यह तुह्मारी मायाकर रच्यौं विश्व आश्चर्य कीसी नाही भासै है यातैं तुम मैंतौं आश्चर्य बुद्धि नही यासमैं स्त्री
औरस्तुच्छ कौ जाकौं स्वभाव तुह्मारौं तत्व नही जान्यौं याहीतें दीन रूप मैं हे शिव अपनी जन्मभूमि देखवे की इच्छा करूंहूं हे अ
भव संसार रहित सुहृदन के वियोग कौ दुःख तुम नही जानौ हौ देखौ संबंधरहित और देवतान की स्त्री अलंकृत पतन सहित
झुंड के झुंड चली जाइ है नील कंठ राजहंस से धोरे जिनके विमानन करि आकास मंडित होइ रह्यौ है तौ जो वटामनी चली जाई है

त्वय्येतदाश्चर्यमजात्ममायया विनिर्मितं भाति गुणत्रयात्मकं अथाप्यहं योषिदतत्वविच्च ते दीना दिदृक्षे भव मे भवक्षितिं ११
पश्य प्रयांतीरभवान्ययोषितोप्यलंकृताः कांतसखा वरूथशः यासां व्रजद्भिः शितिकंठ मंडितं नभो विमानैः कलहंसपांडुभिः १२
कथं सुतायाः पितृगेहकौतुकं निशम्य देहः सुरवर्य नेंगते अनाहुता अप्यभियंति सौहृदं भर्तुर्गुरोर्देहकृतश्च केतनं १३
तन्मे प्रसीदेदममर्त्य वांछितं कर्तुं भवान् कारुणिको वतार्हति त्वयात्मनोर्द्धेहमदभ्रचक्षुषा निरूपिता मानुगृहाण याचि
त १४ ऋषिरुवाच एवं गिरित्रः प्रियया भिभाषितः प्रत्यभ्यधात प्रहसन् सुहृत्प्रियः संस्मारितो मर्मभिदः कुवागिषून
यानाह कौ विश्वसृजां समक्षतः १५ श्रीभगवानुवाच त्वयोदितं शोभनमेव शोभने अनाहुता अप्यभियंति बंधुषु
ते यद्यनुत्पादितदोषदृष्टयो बलीयसानात्म्यमदेन मन्युना १६

तौ हम कौं नही जाइ १२ हे सुरश्रेष्ठ पिता के घर उत्सव सुनि बेटी कौं पति के शरीरै और पिता के घर विना बुलाये हूं साधु लोग चा
हैं है १३ उ हे अमर्त्य तौतें प्रसन्न होहु यह मेरी वांछा पूर्ण करवे कूं जो आप हौ तातें कारुण्य करौं जा तुम ने कृपा दृष्टि करि मैं आधीन देह मैं
राषी हूं यातें मे याचना करूंहूं मोपें अनुग्रह करौ १५ ऐसें महादेवजी सौं सती नें कही तब बोले सुहृद प्रिय मेरी मर्म के काटवे वारे
वचन रूप बान जिनने विश्व सृष्टान के आगें दक्ष प्रजापति कहत भयौ तिन कौ स्मर्ण सतीजू नें कराया सो सुधि करि यह वोले १५ हे सो
मने तेने कही वंधुन के विना बुलाये हू जाई ए सो अछी कही परंतु देहादिक मैं अहंकार ता करि जो मद और क्रोध करि जो एं गये हैं

तायज्ञमे देव ऋषि ब्रह्म ऋषि पितृ देवता सब आवत भए और पत्नी सहित उनकी स्त्री उहां आवत भई ४ सो आकास मार्ग जात जो देव
ताजन्न की बाते करती तिनके मुख सौं दक्ष की बेटी सती पिता कौ यज्ञ महोत्सव सुनि कैं महादेव जी सौं बोलत भई ५ सव दसानते गंधर्वी
दिगन की स्त्री विमानन मैं बैठी पतन कर सहित उज्जल भुकी तिनके गले मैं सुंदर जिनके कुंडल ते यज्ञ कौ चली जात है तिनै देव आ
पहे जाय वे कौ उत्साह करि अपने पति भूतपति महादेवजी तिन सौं यह बोली ई हे देव प्रजापति तुह्मारौ ससुर है दक्ष ताके यज्ञ म

तस्मिन् ब्रह्मर्षयः सर्वे देवर्षिपितृदेवता आसन् कृतस्वस्त्ययनास्तत्पत्न्यश्च सभर्तृकाः ४ तदुपश्रुत्य नभसि खेचरा
णां प्रजल्पतां सती दाक्षायणी देवी पितुर्यज्ञमहोत्सवं ५ व्रजंतीः सर्वतो दिग्भ्य उपदेववरस्त्रियः विमानयानाः सप्रेष्ठा
निष्ककंठीः सुवाससः ६ दृष्ट्वा स्वनिलयाभ्याशे लोलाक्षीर्मृष्टकुंडलाः पतिं भूतपतिं देवमौत्सुक्यादभ्यभाषत ७ श्री
सत्युवाच प्रजापतेस्ते श्वसुरस्य सांप्रतं निर्यापितो यज्ञमहोत्सवः किल वयं च तत्राभिसराम वाम ते यद्यर्थितामी विबु
धा व्रजंति हि ८ तस्मिन् भगिन्यो मम भर्तृभिः स्वकैर्ध्रुवं गमिष्यंति सुहृद्दिदृक्षवः अहं च तस्मिन् भवताभिकामये सहो
पनीतं परिबर्हमर्हितुं ९ तत्र स्वसॄर्मे ननु भर्तृसंमिता मातृष्वसॄः क्लिन्नधियं च मातरं द्रक्ष्ये चिरोत्कंठमना महर्षिभिरुन्नी
यमानं च मृडाध्वरध्वजं १०

हे उत्सव प्रवृत्त भयो है जो तुह्मारी इच्छा होय तौ हम हूं चलै अब ही ब्रह्म यज्ञ न ही निर्हत्यन ही भयौ है जामैं ये देवता जाय है ८ ता यज्ञ
मै मेरी बहन पतिन सहित सुहृदन की देखवे की इच्छा करि निश्चय आवेंगी सो मैं हूं तुम सहित माता पिता ने दीयो जो अलंकार
दिक द्रव्य ता लिवे की इच्छा करूंहूं ९ तहां पतिन सहित मेरी बहनि मोसी स्नेह करि आई जाकौ चित्त ऐसी मेरी माता तिनिनैं वड़ु
तदिन मौ तें ध्वजा की सी नाई श्रेष्ठ यज्ञ ता दिदेखुंगी १०

उरसन के मर्य्यादारूप वेद और ब्राह्मणन की तुम निंदा करो हो याते पाखंड कों प्राप्ति होउ ३० यह वेद ही लोकन कों कल्यानकारी है या मार्ग में वडे ऋषि स्थित होत भए जाकों जनार्दन मानत हैं ३१ सो साधुन कों सुद्ध सनातन मार्ग वेद ताकि तुम निंदा करि तुम पाखंड कों प्राप्ति होहुगे जाया पाखंड में तामसी भूतन के पति महादेव जू हैं ३२ ऐसे भृगु ने स्राप दीयो तव महादेवजी परस्पर शाप करि दोउन कों नास होइ वातन सों विमन ने होइ परिवार सहित उहां ते निकसि आये ३३ ते विश्वसृष्टा रूपहर कों जामें एज ऐसो सहस्र २००० वर्ष को सत्र सो करता करि विदा होत भए ३४

ब्रह्मच ब्राह्मणांश्चैव यद्यूयं परिनिंदथ। सेतुं विधारणं पुंसामतः पाखंडमाश्रिताः ३० एष एव हि लोकानां शिवः पंथाः सनातनः। यं पूर्वे चानुसंतस्थुर्यत्प्रमाणं जनार्दनः ३१ तद्ब्रह्म परमं शुद्धं सतां वर्त्म सनातनम्। विगर्ह्य यात पाखंडं दैवं वो यत्र भूतराट् ३२ मैत्रेय उवाच। तस्यैवं वदतः शापं भृगोः स भगवान्भवः। निश्चक्राम ततः किंचिद्विमना इव सानुगः ३३ तेऽपि विश्वसृजः सत्रं सहस्रपरिवत्सरान्। संविधाय महेष्वास यत्रेज्य ऋषभो हरिः ३४ आप्लुत्यावभृथं यत्र गंगा यमुनयान्विता। विरजेनात्मना सर्वे स्वं स्वं धाम ययुस्ततः ३५ इति श्रीमद्भागवते महापुराणे चतुर्थस्कंधे द्वितीयोऽध्यायः २ मैत्रेय उवाच। सदा विद्विषतोरेवं कालो वै ध्रियमाणयोः। जामातुः श्वशुरस्यापि सुमहानतिचक्रमे १ यदाभिषिक्तो दक्षस्तु ब्रह्मणा परमेष्ठिना। प्रजापतीनां सर्वेषामाधिपत्ये स्मयोऽभवत् २ इष्ट्वा स वाजपेयेन ब्रह्मिष्ठानभिभूय च। बृहस्पतिसवं नाम समारेभे क्रतूत्तमम् ३ जहां प्रयाग में गंगा यमुना मिली हैं तहां यज्ञांत स्नान करि निर्मल स्वरूप करि अपने अपने धाम कों जात भए ३५ इति श्रीभागवते महापुराणे चतुर्थस्कंधे भावार्थदीपकायां द्वितीयोऽध्यायः २ मैत्रेयजी विदुरजी सों कहैं हैं हे विदुर ऐसें जमाई ईश्वर सौं वैर ही में वहुत काल व्यतीत होत भए १ ता पीछे जव ब्रह्माने सव प्रजापतिन के अधिपतिन में दक्ष कौं अभिषेक करो तव याकों वहुत गर्व होत भयो २ सो वह दक्ष गर्व के मारे महादेवादिक ईश्वरन कौ तिरस्कार करि वाजपेय यज्ञ करतापीछे वृहस्पतिसव नाम यज्ञ को प्रारंभ करत भयो ३ श्रीकृष्णाय नमो नमः

वेकाड

भा० च ६

जो यह देह मनुष्य शरीर कों श्रेष्ठ मान करि द्रोह रहित महादेवजी सों द्रोह करै है मेद दृष्टि है याते तत्व तें विमुख होहु २१ जो यह देह ही वि षय सुख की इच्छा वारो घरन में आसक्त वेद कर्म निष्ठ बुद्धि जाकी ऐसो कामनन सों विस्तार होहु २२ देहादिकन कों और महत्व करि या नजाकों ऐसो बुद्धि करि भूल्यो है आत्म स्वरूप जाने पशु तुल्य एह दक्ष स्त्रीकी जाको कामना होई ओर याकों मुख जल होवकरा कौ सो होहु २३ कर्म मई अविद्या में है तत्व बुद्धि जाकी ऐसो जड है महादेव कौ अपमान करवे वारो ताहारि कें अन्न हति जे ब्राह्मण

पपेतन्मर्त्यमुद्दिश्य भगवत्यप्रतिद्रुहि। द्रुह्यत्यज्ञः पृथग्दृष्टिस्तत्त्वतो विमुखो भवेत् २१ गृहेषु कूटधर्मेषु सक्तो ग्राम्यसुखेच्छया। कर्मतंत्रं वितनुते वेदवादविपन्नधीः २२ बुद्ध्या पराभिध्यायिन्या विस्मृतात्मगतिः पशुः। स्त्रीकामः सोऽस्त्वतितरां दक्षो बस्तमुखोऽचिरात् २३ विद्याबुद्धिरविद्यायां कर्ममय्यामसौ जडः। संसरंत्विह ये चामुमनु शर्वावमानिनम् २४ गिरः श्रुतायाः पुष्पिण्या मधुगंधेन भूरिणा। मथ्ना चोन्मथितात्मानः संमुह्यंतु हरद्विषः २५ सर्वभक्षा द्विजा वृत्त्यै धृतविद्यातपोव्रताः। वित्तदेहेंद्रियारामा याचका विचरंत्विह २६ तस्यैवं वदतः शापं श्रुत्वा द्विजकुलाय वै। भृगुः प्रत्यसृजच्छापं ब्रह्मदंडं दुरत्ययम् २७ भवव्रतधरा ये च ये च तान्समनुव्रताः। पाखंडिनस्ते भवंतु सच्छास्त्रपरिपंथिनः २८ नष्टशौचा मूढधियो जटाभस्मास्थिधारिणः। विशंतु शिवदीक्षायां यत्र दैवं सुरासवम् २९

तेह जन्म मरणादिक कों अनुभव करौं २४ पुष्प की सी नाही अर्थवाद जामें ऐसी जो वेद रूप वाणी ताको मधुगंध तुल्य जो प्ररोचन मन को छोभ करवे वारो ताकरि मथत है मन जिनको ऐसे जे ब्राह्मण महादेव के द्वेष कर्म मन में आसक्त होहु २५ भक्ष्याभक्ष्य विचार रहित धर्म और देह पोषण के अर्थ धारण करी विद्या तप व्रत जिनमें वित्त देह इंद्री धन मैं है रति जिनकी ऐसे याचक घर घर डोलो २६ वाने न्याय ओर ईश्वर ने जव ब्राह्मणन को स्राप दीयो तव सुनि के भृगु शिवजी के और कौन कौ सत पढत भये २७ जो महादेव को मत और जो उन के अनुवर्ती ते पाखंडी होहु २८ नष्ट शौच जिनमें मूढ जिनकी बुद्धि जटा भस्म अस्थि के धारण करन वारे ऐसे शिव जी दीक्षा में

श्रीमद्भागवतचतुर्थस्कंधे ४८

६

क्रियारहितअपवित्र अभमानी मर्जादाघाते नौरी ताशिवकौ विनाइच्छा मेनेपुत्रीदई जैसेसद्रकौ वेद लक्षणवाणीकौ अधिकार
नहीं औरदीजीयें ऐसें १३ घोरस्मानमेंरहै भूतप्रेतगणनिकौसगलें उन्मत्तकीसीनाईनेसबोल नागलोय वेवहूरसत नवहैरोव
नसोडोलेहै १४ चिताकीभस्मवरदवौ येहैस्नानजाने प्रेतनकीमालाजाके मनुष्यकेहाडहैभूषणजाके शिवहैनामजाको औरहै
अमंगलरूपजाको औरउन्मत्तजननजाकौप्यारौं १५ केवलतमोरूपहैस्वभावजाको ऐसेप्रथमभूतनकोपतहैजाको उन्मादजेभूत

लुप्तक्रियायाशुचये मानिनेभिन्नसेतवे अनिच्छन्नपदांबालांशूद्रायेवोशतीगिरं १३ प्रेतावासेषुघोरेषुप्रेतैर्भूतगणैर्वृ
त अप्रत्युन्मत्तवन्नग्नोव्युप्तकेशोहसन्रुदन् १४ चिताभस्मकृतस्नानः प्रेतस्त्रेनस्थिभूषणः शिवापदेशोह्यशिवोमत्तो
मत्तजनप्रिया १५ पतिःप्रथमभूतानांतमोमात्रात्मिकात्मनां तस्माउन्मादनाथायनष्टशौचायदुर्हृदे दत्तावतमया
साध्वीनोदितैपारमेष्ठिना १६ श्रीमैत्रेयउवाच: विनिंद्यैवंशगिरिशमप्रतीयवस्थितं दक्षोथाप उपस्पृश्यक्रुद्धः चक्रमे
आयंतुदेवजनईंद्रोपेंद्रादिभिर्जवः सहभागंनलभतांदेवैर्देवगणाधमः १८ निषिध्यमानस्सदस्यमुख्यैर्दक्षोगिरि
त्रायविसृज्यसापं तस्माद्विनीष्क्रम्यविवृद्धमन्युर्जगामकौरव्यनिजंनिकेतनं १९ विज्ञायशापंगिरिशानुगाग्रणीर्नंदी
श्वरोरोषकषायदूषितः दक्षायशापंविससर्जदारुणंयेचान्वमोदंस्तदवाच्यतांद्विजः २०

जिनकौनाथ नष्टहैसोच जाको दुष्टचित्त ऐसेमहादेवको मैंनेब्रह्माकेप्रेरेतेपुत्रीदई मेरेलोंमनमैंदेवेकीनहींही १६ ऐसैंअप्रतिकूलभयौकेसौस्थित
जाको दुष्टचित्त ऐसेमहादेवको मैंनेब्रह्माकेप्रेरेतेपुत्रीदई मेरेतोंमनमैंदेवेकीनहींही १६ ऐसैंअप्रतिकूलभयौकेसौस्थित
जाकौ दुष्टचित्त ऐसेमहादेवकौ मैंनेब्रह्माके प्रेरेतेंपुत्रीदई १७ यहजोमहादेवसोयज्ञमें ईंद्रउपेंद्रादिकदेवतानकेसंगम
नामहादेवजीकीनिंदाकरिदक्षकोधमेंभरयौ जलकौस्पर्शकियौ १७ यहजोमहादेवसोयज्ञमें ईंद्रउपेंद्रादिकदेवतानकेसंगभा
तिपावो जोयहदेवगणानमेंअधमहै हेविदुरसोदक्षप्रजापतिननेंमनेंहूकीयौ परंतुक्रोधकरिमहादेवजीकौशापदेवास्थान
तेंनिकसिअपनेघरकौंजातभयौ १९ महादेवकेपार्षदनमेंमुख्यनंदीश्वरमहाक्रोधलेमारेंप्रारक्तजाकेनेत्रसोदक्षकौशापदे

भा०प०
५

नाईप्रकाशत वासभाकौअंधकारदूरिकरतनाहिदेखकरिसबउठाढेभये ५ तेसबसभावारे अपने२आसननतें अग्निसहित
दक्षकोदेखिउठठाढेभए एकब्रह्मा औरमहादेवविना वाकेतेजकरसबकेचित्तविह्वलहोइगये ६ सभावारेनेंभलेसत्कारजाकौ
कयौ ऐसोदक्ष लोकनकेगुरुब्रह्माकौदंडवतकरतउनकीआज्ञाकरवैठतभयौ ७ महादेवनउठे उनेदेखिदक्षनसहतभयौ
औरनेत्रनकरमानोजरायदेगो ऐसेक्रोधकरिमहादेवजीसोंवोल्यौ ८ देवताअग्निसहितहेरिषीहोमेरीवातसुन्यौमैसाधु

प्र

तत्रविष्टमृषयोईष्टार्कमिवरोचिषा भ्राजमानंवितिमीरंकुर्वंतंतन्महत्सदः ५ उदतिष्ठन्सदस्यास्तेस्वधिष्ण्येभ्यःस
हाग्नयः ऋतेविरंचंसर्वंचतद्भासाक्षिप्तचेतसः ६ सदसस्पतिभिर्दक्षोभगवान्साधुसत्कृतः अजंलोकगुरुंनत्वा
निषसादतदाज्ञया ७ प्राङ्निषण्णंमृडंदृष्ट्वानामृष्यत्तदनादृतः उवाचवामंचक्षुर्भ्यामभिवीक्ष्यदहन्निव ८ श्रूयतां
ब्रह्मर्षयोमेसहदेवाःसहाग्नयः साधूनांब्रुवतोवृत्तंनाज्ञानान्नचमत्सरात् ९ अयंतुलोकपालानांयशोघ्नोनिर
पत्रपः सद्भिराचरितःपंथायेनस्तब्धेनदूषितः १० एषमेशिष्यतांप्राप्तोयन्मेदुहितुरग्रहीत् पाणिंविप्राग्निमुखतः
सावित्र्याइवसाधुवत् ११ गृहीत्वामृगशावाक्ष्याःपाणिंमर्कटलोचनः प्रत्युत्थानाभिवादार्हेवाचाप्यकृतनोचितं १२

ह अज्ञानतें नहींकहूंहूं कछुमत्सरतातैंनहींकहूंहूं ९ यहजोमहादेवसोलोकपालनकेयसकौविगारवेवारो महानिर्लज्ज
नकौवृत्तांतकहूंहूं कछुअज्ञानमत्सरतातैंनहींकहूंहूं ९ यहजोमहादेवसोलोकपालनकेयसकौविगारवेवारो महानिर्लज्ज
साधूननेंआचरणकियौमार्गसोयाअभिमानीनैंविगारदीयौ १० यहमेरीशिष्यताकौप्राप्तिभयौजोब्राह्मणअग्निकौसाक्षी
करिकेसावित्रीकेतुल्यमेरीवेटीताकोपाणिग्रहणकरतभयौ ११ वंदरकेसेजाकेनेत्र मृगछौनाकेसेजाकेनेत्रऐसीमे
रीवेटी ताकोपाणिग्रहणकर प्रत्युत्थानहंडौतकौंजोग्यमैं तामैंरोवाणीनहंकरिसन्मानननकरतभयौ १२ श्रीकृष्णायनमः

यतकर्मजिनकेनामनकरिदेहछिवरेहै वेदवादीतेवे अग्निष्वत्तनदीसवनकोयज्ञमेंरजनहोयहैं ६२ अग्निष्वात्ता वर्हिषद सौम्य आज्यप
एपितरहैं सोईस्वाधिरहैं सोईकोईअग्निहैतिनकोतिनकीदक्षकीवेटीस्वधाएकहीसवकीस्त्रीभई ६३ स्वधास्त्रीउनपितरनकीसोतेवयु
नाओरधरणीदोकंन्याउपजावतभई तेहेउवेदवादिनीज्ञानविज्ञानमेपारंगतिभई यातेउनकेसंतानभई महादेवकीस्त्रीसतीभई
सोशिवजीकेअनुकूलसोंगुणशीलतेंअपनेसदृसपुत्रकोनप्राप्तभई ६५ निरापराधमहादेवजीपे पितादक्षजबप्रतिकूलभयो मवदी

वैतानकेकर्मणीयज्ञामग्निरसवादिनं आग्नेयइष्टयोयज्ञनिरूपंतेऽग्नयस्त्वते ६२ अग्निष्वात्ता वर्हिषदः सौम्याःपितरआज्य
पासाग्नयोऽनग्नयस्तेषांपत्नीदाक्षायणीस्वधा ६३ तेभ्योदधारकन्येद्वेवयुनांधरणींस्वधा उभेतेब्रह्मवादिन्यौज्ञानविज्ञान
पारगे ६४ भवस्यपत्नीतुसतीभवंदेवमनुव्रता आत्मनःसदृशंपुत्रंनलेभेगुणशीलता ६५ पितर्यप्रतिरूपेस्वेभवाया
नागसेरुषा अप्रौढैवात्मनात्मानमजहाद्योगसंयुता ६६ इतिश्रीमद्भागवतेमहापुराणेचतुर्थस्कंधेप्रथमोध्यायः १ कस्त्वचराचरसंनिवे
विदुरउवाचः भवेशीलवतांश्रेष्ठेदक्षोदुहितृवत्सलः विद्वेषमकरोत्तस्मादनादृत्यात्मजांसती १ कस्त्वंचराचरगुरुंनिर्वै
रंशांतविग्रहं आत्मारामंकथंद्वेष्टिजगतोदैवतंमहत् २ एतदाख्यायमेब्रह्मन्जामातुःश्वशुरस्यच विद्वेषस्तुयतःप्राणांस्
त्यजेदुस्त्यजानूसती ३ उमेयवाद्गुराविश्वसृजांसत्रेसमेताःपरमर्षयः तथामरगणाःसर्वेसानुगामुनयोग्नयः ४
इतिश्रीभागवतेचतुर्थस्कंधेप्रथमोध्यायः १ हेमैत्रे
वालअवस्थामेदेहत्यागतभईपरंतुयोगकोआश्रयलेअपनदेहकुत्यागतभई
यशीलवाननमेश्रेष्ठमहादेवजी सोवेटीनमेंवडोजाकोस्नेह ऐसोदक्षसतीकोअनादरकरिकेसैंद्वेषाकरतभयोसोतुमेरेआगेकहो १
स्थावरजंगमनकेगुरुनिरवैरशांतस्वरूप आत्माराम जगतकेइष्टदेवतामहादेवसोंवयोद्वेषाकरो औरकोनप्रानकारद्वेषाकरे २
हेब्रह्मनयहअमाईसुसरकोवैरकैसेपरयो जावैरमेसतीदुस्तरप्राणनकोछोडतभई ३ हेविदुरपहलेविश्वसृष्टानकेसमाजमेंऋषि
एकठेभयेओरदेवतासवअनुगतिसहितमुनिअग्निसवहीतहांस्थीतहे ४४ तासभामेप्रविष्ठजोदक्ष कांतिकरसूर्यकोसी

भा॰च॰
४
क्रियायोजकोंउपजावतभई उन्नतीकेदर्पभयो बुद्धिकेअर्थभयो मेधाकेस्मृति तितिक्षाकेक्षमाह्रीकेप्रश्रयपुत्रभयो सवगुणनकीजामेउत्पत्ति
तिऐसीजोमूर्तिसोनरनारायणऋषिनिनेउपजावतभई जिनकेजन्मभयेसंतिसवविश्वआनंदकूंप्राप्तभयोः ५२ सवकेमनमेप्रसन्न
तिओरदिशाआकाशवायुनदीपर्वतप्रसन्नभये स्वर्गमेनगाडेवाजनभए उनकेउपरस्वर्गलितेपुष्पनकीवर्षाहोतभई ५३ प्रसन्नहोयमुनिअस्तुतिकरतभये गंधर्व
किन्नरगावतभये देवतानकीस्त्रीनृत्यकरतभई ऐसेनरनारायणकेजन्ममेपरममंगलहोतभयो ५४ औरसवब्रह्मादिकदेवतप्रस्तुति
ओरकिंनरगावतभये देवतानकीस्त्रीनृत्यकरतभई

योगक्रियोन्नतिर्दर्पमर्थंबुद्धिरसूयत मेधास्मृतिंतितिक्षातुक्षेमंह्रीःप्रश्रयंसुत ५१ मूर्तिःसर्वगुणोत्पत्तिर्नरनारायणावृषी
यायोर्जन्मन्यदोविश्वमभ्यनंदत्सुनिर्वृतं ५२ मनांसिककुभोवाताःसेदुःसरितोद्रयः दिव्यवाद्यंततूर्याणिपेतुःकुसुमवृष्टयः
मुनयस्तुष्टुवुस्तुष्टाजगुर्गंधर्वकिंनराः नृत्यंतिस्मस्त्रियोदेव्यःआसीत्परममंगलं ५४ देवाब्रह्मादयःसर्वेउपतस्थुरभिष्टवैः देवा
ऊचुः योमाययाविरचितंनिजयात्मनीदंखेरूपभेदमिवतत्प्रतिचक्षणाय एतेनधर्मसदनेऋषिमूर्तिनाद्यप्रादुश्चकारपु
रुषायनमःपरस्मै ५६ सोयंस्थितिव्यतिकरोपशमायसृष्टान्सत्वेनन:सुरगणाननुमेयतत्वः दृश्याददभ्रकरुणेनविलोकनेन
यच्छ्रीनिकेतममलंक्षिपतारविंदं ५७ मैत्रेयउवाचः एवंसुरगणैस्तातभगवंतावभिष्टुतौ लब्धावलोकैर्ययतुरर्चितौगंधमादनं
यत्श्रीनकोनममलंक्षिपुमारविंदं
मं ५८ ताविमोवैभगवतोहरेरंशाविहागतौ भारव्ययायचकृष्णौयदुकुरूद्वहौ ५९ स्वाहाभिमानीनश्चाग्नेरात्मजांस्त्रीनजीज
नत् पावकंपवमानंचशुचिंचहुतभोजनं ६० तेभ्योग्नयःसमभवंश्चत्वारिंशच्चपंच च तएवैकोनपंचाशत्साकंपितामहैः ६१
तिकरतभये ५५ जोअपनीमा
सत १
याकरअपनेमेंगंधर्वनगरकीसीनाईहयोयहविश्वताकेप्रकाशकरवेकूं जोअपनेकूंप्रगटकरतभए ऋषिमूर्तिकोहमारीदंडोतहे ५६ सोभ
गवानजगतमर्यादापालनकेलीयेसत्वगुणकरिसृजेजोहमतिनेकरुणाहष्टिकरदेयो शोभाकोनिकेतनताहिनिर्मलतरलोनमस्कारहै ५७
यामांतिपायोहेअवलोकजिनने ऐसेदेवगणनेस्तुतिपूजाजिनकीकरी ऐसेनरनारायणभगवानगंधमादनकोजातभए ५८ तेईहरि
नरनारायणभगवानपृथ्वीकेभारउतारवेकूं श्रीकृष्णअर्जुननामकरियादवनमेंप्रगटहोतभये ५९ अग्निकीस्वाहासोअभिमानीतिन

चित्रकेतुः स्वरोचि विरज मित्र उल्बण वसुभृद्यान द्युमान ये सात प्रजा भए ओर दूसरी स्त्री में अग्न्यादिक भये ४१ अथर्वा की चित्ति स्त्री सो दधीच पुत्र को प्राप्त भई घोड़ा को सो जाको मुख अब भृगुवंश सुनो ४२ बड़भागी भृगु ख्याती स्त्री में तीन ३ पुत्र उपजावत भये धाता विधाता श्री भगवत्परायण लक्ष्मी को उपजावत भये ४३ आयती ओर नियत ये दोउ पुत्री सुमेरु धाता विधाता को देत भयो उनमें दोउन में ते मृकंड ओर प्राण दो पुत्र भये मृकंड के मार्कंडेय भयो प्राण ते वेदसरा मुनि भए ४४ एक कवि भृगु के पुत्र भयो ता कवि के भगवान् उसना पुत्र भये ये सब

चित्रकेतुः सुरोचिश्च विरजो मित्र एव च। उल्बणो वसुभृद्यानो द्युमानग्न्यादयोऽपरे ४१ चित्तिस्त्वथर्वणः पत्नी लेभे पुत्रं धृतव्रतं दध्यंचमश्वशिरसं भृगोर्वंशं निबोध मे ४२ भृगुःख्यात्यां महाभागः पत्न्यां पुत्रानजीजनत् धातारं च विधातारं श्रियं च भगवत्परां ४३ आयतिं नियतिं चैव सुते मेरुस्तयोरदात् ताभ्यां तयोरभवतां मृकंडः प्राण एव च मार्कंडेयो मृकंडस्य प्राणाद्वेदशिरा मुनि ४४ कविश्च भार्गवो यस्य भगवानुसना सुतः सर्वे ते मुनयः क्षत्तर्लोकान्सर्गैरभावयन् ४५ एष कर्दमदौहित्रसंतानः कथितस्तव शृण्वतः श्रद्दधानस्य सद्यः पापहरः परः ४६ प्रसूतिं मानवीं दक्ष उपयेमे ह्यजात्मजः तस्यां ससर्ज दुहितॄः षोडशामललोचनाः ४७ त्रयोदशादाद्धर्माय तथैकामग्नये विभुः पितृभ्य एकां युक्तेभ्यो भवायैकां भवच्छिदे ४८ श्रद्धा मैत्री दया शांतिस्तुष्टिः पुष्टिः क्रियोन्नतिः बुद्धिर्मेधा तितिक्षा ह्रीर्मूर्तिर्धर्मस्य पत्नयः ४९ श्रद्धासूत शुभं मैत्री प्रसादमभयं दया शांतिः

मुनि अपनी संतान करि लोकन को बढ़ावत भये ४५ यह कर्दम के दोहितन की संतान मैंने तेरे आगे कही जो सरधा करि सुने है ताको पाप दूरि करिवे वारी है ४६ ब्रह्मा के पुत्र दक्ष मनु की बेटी प्रसूती को व्याहत भयो तामें निरमल जिनके नेत्र ऐसी सोलै १६ पुत्री उपजावत भयो ४७ तामें ते तेरह १३ तो धर्म को देत भयो एक अग्नि को एक सब पितरन को देत भयो एक महादेव जी को देत भयो ४८ श्रद्धा मैत्री दया शांति तुष्टि पुष्टि क्रिया उन्नति बुद्धि मेधा तितिक्षा ह्री मूर्ति ये तो धर्म की स्त्री भई ४९ सरधा के शुभ पुत्र भयो मैत्री के प्रसाद दया के अभय भयो शांति के सुख भयो तुष्टि के हर्ष भयो पुष्टि के स्मय को उपजावत भई ५० श्रीकृष्णायनमो नमः

अब तुमारे तिन्योंन के अंस ते तीन पुत्र तेरे लोकन में विख्यात होयगे तेरो यस विस्तार करेंगे ३१ ऐसें यथेष्ट वर देकें दोउ जनें न तें सन्मानी जिनको कीयो ऐसे देउ देवता तिन के देखत अपने धाम कूं जात भए ३२ तामें ब्रह्मा के चंद्रमा तो ब्रह्मा के अंस करि होत भयो दत्तात्रेय योगी विष्णु के अंस भयो दुर्वासा शिव को अंस भयो अब अंगिरा प्रजा सुनो ३३ अंगिरा की श्रद्धा स्त्री में चार कन्या भई सीनीवाली कुहू राका चौथी अनुमति भई ३४ ता अंगिरा के दोय पुत्र और भये जो स्वारोचिष मन्वंतर में विख्यात भये भगवान् उतथ्य और ब्रह्मिष्ठ

अथास्मदंशभूतास्ते आत्मजा लोकविश्रुता भवितारोंग भद्रं ते विस्रप्स्यंति च ते यशः ३१ एवं कामवरं दत्वा प्रतिजग्मुः सुरेश्वराः सभाजितास्तयोः सम्यग्दंपत्योर्मिषतोस्ततः ३२ सोमो भूद्ब्रह्मणोंशेन दत्तो विष्णोस्तु योगवित् दुर्वासाः शंकरस्यांशो निबोधांगिरसः प्रजाः ३३ श्रद्धा त्वंगिरसः पत्नी चतस्रोसूत कन्यकाः सिनीवाली कुहू राका चतुर्थ्यनुमतिस्तथा ३४ तत्पुत्रावपरावास्तां ख्यातौ स्वारोचिषेंतरे उतथ्यो भगवान्साक्षाद्ब्रह्मिष्ठश्च बृहस्पतिः ३५ पुलस्त्योजनयत्पत्न्यामगस्त्यं च हविर्भुवि सोन्यजन्मनि दह्राग्निर्विश्रवाश्च महातपा ३६ तस्य यक्षपतिर्देवः कुबेरस्त्विडविडासुतः रावणः कुंभकर्णश्च तथान्यस्यां विभीषणः ३७ पुलहस्य गतिर्भार्या त्रीनसूत सती सुतान् कर्मश्रेष्ठं वरीयांसं सहिष्णुं च महामते क्रतोरपि क्रिया भार्या वालखिल्यानसूयत ऋषीन्षष्टिसहस्राणि ज्वलतो ब्रह्मतेजसा ३९ ऊर्जायां जज्ञिरे पुत्रा वशिष्ठस्य परंतप चित्रकेतु

बृहस्पति ३५ पुलस्त ऋषि हविर्भू स्त्री में अगस्त को उपजावत भये सो अन्य जन्म में जठराग्नि है और दूसरे पुत्र विश्रवा भए ३६ ता विश्रवा के इलविला स्त्री में यक्षपति कुबेर भयो और दूसरी केशिनी स्त्री में रावण कुंभकर्ण विभीषण भये पुलह के गति भार्या सो तीन पुत्र उपजावत भए कर्मश्रेष्ठ वरीयान और सहिष्णु इन तीनन कूं उपजावत भए ३८ क्रतु के क्रिया स्त्री भई सो ब्रह्मतेज करि जाज्वल्य ऐसे साठ हजार ६०००० बालखिल्य ऋषिन को उपजावत भई ३९ वशिष्ठ के प्रजा स्त्री में चित्रकेतु जिनमें मुख्य ऐसे

नवौ दैवत भयौ २३ बैल हंस गरुड पै चढे भ्रपने चिन्ह त्रिसूल कमंडल चक्र आदि कन करि चिन्हित तिने पृथ्वी मे दंडवत प्रणाम करि सुपारि कहाथ लैकै पूजन करत भयौ २४ कृपा करिकै देखवलोकन औरहसन जामें ऐसो जो वदन ता करि प्रसन्न नेत्र उनकी कांति करि ताडित जो आंखि तिने मूंदि करि स्तुति करत भयौ २५ सबलोकन मे श्रेष्ठ जो तिन्यो देवता तिन मे चित्त लगाय हाथ जोड सुंदर वाणी करि स्तुति करत भयौ २६ मैत्रेय जी कहै है हे विदुर विश्व की उत्पत्ति स्थिति लय मे विभज्यमान जे गुण

तत्प्रादुर्भावसंयोगविद्योतितमना मुनिः उत्तिष्ठन्नेकपादेन ददर्श विबुधर्षभान् २३ प्रणम्य दंडवद्भूमावुपतस्थेऽर्हणांजलिः वृषहंससुपर्णस्थान्स्वैः स्वैश्चिन्हैश्च चिन्हितान् २४ कृपावलोकेन हसद्वदनेनोपलंभितान् तद्रोचिषा प्रतिहते निमील्य मुनिरक्षिणी २५ चेतस्तत्प्रवणं युंजन्नस्तावीत्संहतांजली श्लक्ष्णया सूक्तया वाचा सर्वलोकगरीयसः २६ अत्रिरुवाचः विश्वोद्भवस्थितिलयेषु विभज्यमानैर्मायागुणैरनुयुगं विगृहीतदेहः ते ब्रह्मविष्णुगिरिशाः प्रणतोस्म्यहं वस्तेभ्यः क एव भवतां म इहोपहूतः २७ एको मये भगवान्विविधप्रधानैश्चित्तीकृतः प्रजननाय कथं नु यूयं अत्रागतास्तनुभृतां मनसोपि दूराद्ब्रूत प्रसीदत महानिह विस्मयो मे २८ मैत्रेय उवाचः इति तस्य वचः श्रुत्वा त्रयस्ते विबुधर्षभाः प्रत्याहुः श्लक्ष्णया वाचा प्रहस्य तमृषिं प्रभो २९ देवा ऊचुः यथा कृतस्ते संकल्पो भाव्यं तेनैव नान्यथा सत्संकल्पस्य ते ब्रह्मन्यद्वै ध्या

मायाके तिन करि कल्प २ मे विभाग करगए एक त्यो देह स्वरूप जिनने ऐसे तुम ब्रह्मा विष्णु शिव तिनै मे दंडवत करूं हूं तिन तुम मे ते मैं एक ही बुलायो है सो तुम मे कौन है सो तुम कहौ २७ एक ही भगवान विष्णु मै ने नाना प्रकार के पूजन करि पुत्रोत्पत्ति के लीये चित मे धार्यो सो तो तुम तिनो देहधारीन को मनहूं ते दूरि कैसे इहां आये सो कहो प्रसन्न होय मोकूं बडो आश्चर्य है बुलायो एक और ए आये तीन २८ ऐसे अत्रि मुनि को वचन सुनतो तीनो देवतान मे श्रेष्ठ हसि करि मनोहर वाणी करि वा ऋषि सो यह बोले २९ हे अत्रे जो तैने संकल्प कीयो

सुंदर जिनके यश ऐसे उपजावत भई दत्तात्रेय दुर्वासा चंद्रमा ए तीनो विष्णु शिव ब्रह्मा इनके अंस ते भए है १५ अत्रेय के घर मे विश्व उत्पत्ति पालन नास के करवे वारे तीन्यो देवता कहा करवे कूं भए है सो हे गुरु मेरे आगे सब तुम कहौ १६ ब्रह्माने सृष्टि के लिये प्रेरे अत्रि ब्रह्मवेतान मे श्रेष्ठ स्त्री करि सहित तप करवे कूं ऋक्ष पर्वत मे जात भये १७ सो वा पर्वत मे पुष्प गुच्छा है जिन मे ऐसे पलास असोक तिनके वन मे जाय कैसे है नदी विंध्या नाम नदी के वत जो जल तिन करि नादत वन है १८ प्राणायाम करि मन रो

अत्रेः पत्न्यनसूया त्रीन्जज्ञे सुयशसः सुतान् दत्तं दुर्वाससं सोममात्मेशब्रह्मसंभवान् १५ विदुरोवाच अत्रेर्गृहे सुरश्रेष्ठाः स्थित्युत्पत्त्यंतहेतवः किंचिच्चिकीर्षवो जाता एतदाख्याहि मे गुरो १६ अत्रेय उवाचः ब्रह्मणा नोदितः सृष्टावत्रिर्ब्रह्मविदां वरः सहपत्न्या ययावृक्षं कुलाद्रिं तपसि स्थितः १७ तस्मिन्प्रसूनस्तबकपलाशाशोककानने वार्भिः स्रवद्भिरुद्घुष्टे निर्विंध्यायाः समंततः १८ प्राणायामेन संयम्य मनो वर्षशतं मुनिः अतिष्ठदेकपादेन निर्द्वंद्वोनिलभोजनः १९ शरणं तं प्रपद्येहं य एव जगदीश्वरः प्रजामात्मसमां मह्यं प्रयच्छत्विति चिंतयन् २० तप्यमानं त्रिभुवनं प्राणायामैधसाग्निना निर्गतेन मुनेर्मूर्ध्नः समीक्ष्य प्रभवस्त्रयः २१ अप्सरोमुनिगंधर्वसिद्धविद्याधरोरगैः वितायमानयशसस्त

क करि निर्द्वंद्व होय पवन भक्षण कर एक पाउ कर अत्रि मुनि सो १०० वर्ष ताई स्थित होत भयो १९ जो जगत को ईश्वर है ता ही मे सरणागत हूं सो भगवान मो ते आपु सरीखो पुत्र देह ऐसे विचार तप करत भयो २० प्राणायाम करि प्रज्वलित भई अग्नि सो जो अग्नि ता करि के तपायमान त्रिभुवन आश्रम मे जात भये के से है तीन्यो २१ अप्सरा मुनि गंधर्व सिद्ध विद्याधर नाग तिन करि विस्तार मान है यस जिनको २२ तीन्यो देवतान के प्रागटन की जो संस्थिता करि विदित है मन जाको ऐसो मुनि एक पाउ करि ठाढो तीनो

152

तोषप्रतोषसंतरेसभद्र शांति इडउस्पति इध्म कवि विभु स्वह्न सुदेवो रोचन ए बारह पुत्र होत भये ७ तेस्वायंभूमन्वंतर मैं तु
सित नामा देवता होत भये मरीचि जिन मैं मुख्य ऐसे ऋषि होत भए और यज्ञ भगवान् आपही इंद्र होत भए ८ प्रीयव्रत उत्ता
नपाद दोउ मनु के पुत्र भये बडे पराक्रमी तापीछे उनके बेटा पोते नाती तिन को वंस चल्यो ९ और स्वायंभूमनु देवहूति बेटी को
कर्म के अर्थ देत भयो सो उनको चरित्र तुमने बहुधा मोपे तैसुन्यो है त्रिलोकी मे १० और ब्रह्मा को पुत्र जो दक्ष ताके अर्थ भगवा
न प्रसूती को देत भयो जिनको बडो संतान त्रिलोकी मे व्याप्त होत भयो ११ और जो कर्दम की बेटी ९ तो ब्रह्मर्षिन को व्याही गई जिन

तोषः प्रतोषः संतोषो भद्रः शांतिरिडस्पतिः इध्मः कविर्विभुः स्वह्नः सुदेवो रोचनो द्विषट् ७ तुषिता नाम ते देवा आसन्स्वायं
भुवांतरे मरीचिमिश्रा ऋषयो यज्ञः सुरगणेश्वर ८ प्रियव्रतोत्तानपादौ मनुपुत्रौ महौजसौ तत्पुत्रपौत्रनप्त्रीन् -- मनु
वृत्तं तदंतरं ९ देवहूतीमदात्तात कर्दमायात्मजां मनुः तत्संबंधि श्रुतप्रायं भवता गदितो मम १० दक्षाय ब्रह्मपुत्राय
प्रसूतिं भगवान्मनुः प्रायच्छद्यत्कृतः सर्गस्त्रिलोक्यां विततो महान् ११ याः कर्दमसुताः प्रोक्ता नव ब्रह्मर्षिपत्नयः
तासां प्रसूतिप्रसवं प्रोच्यमानं निबोध मे १२ पत्नी मरीचेस्तु कला सुषुवे कर्दमात्मजा कश्यपं पूर्णिमानं च ययोरापूरितं
जगत् १३ पूर्णिमासूत विरजं विश्वगं च परंतप देवकुल्यां हरेः पादशौचाद्याभूत्सरिद्दिवः १४

की संतान की बढवार मैं कहूं तुम सुनो १२ कर्दम की एक बेटी कला मरीचि की स्त्री सो कश्यप और पूर्णिमा न ई ने उपजावत भई
तिन ने जगत छाय गयो १३ ता मे पूर्णिमा तो विरज और विश्व भई उपजावत भयो और देवकुल्या कन्या भई जो हरि के च
रणारविंद को धोवन जो जल सो जन्मांतर मैं नदीन मे श्रेष्ठ गंगा होत भई १४ अत्रे की अनसूया स्त्री तीन पुत्र उपजावत भई

153

भा॰ च॰ १

॥श्रीगणेशाय नमः अब चतुर्थ स्कंध को प्रारंभ करै है तहां मैत्रेय जी कहै है हे विदुर स्वायंभू मनु के सतरूपा रानी
मे तीन कन्या होत भई देवहूती आकूती परसूती १ आकूती तो रुचि प्रजापति को देत भये जद्यपि वाके भैया है परंतु स
तान को पुत्र को धर्म करते न भयो या मे पुत्र होयगो ता हि मे लेहुंगो यह ठहराय के २ ता आकूती मे रुचि प्रजापति चि
त एकाग्र कर एक पुत्र उपजावत भयो तिन मे जो पुरुष सो तो साक्षात विष्णु यज्ञरूप धारी भयो और जो इस्त्री सो

॥श्रीमैत्रेय उवाच॥ मनोस्तु शतरूपायां तिस्रः कन्याश्च जज्ञिरे आकूतिर्देवहूतिश्च प्रसूतिरिति विश्रुता १
आकूतिं रुचये प्रादादपि भ्रातृमतीं नृपः पुत्रिकाधर्ममाश्रित्य शतरूपानुमोदितः २ प्रजापतिः स भगवान्
रुचिस्तस्यामजीजनत् मिथुनं ब्रह्मवर्चस्वी परमेण समाधिना ३ यस्तयोः पुरुषः साक्षाद्विष्णुर्यज्ञस्वरूपधृ
क् या स्त्री सा दक्षिणा भूतेरंशभूतानपायिनी ४ आनिन्ये स्वगृहं पुत्र्याः पुत्रं विततरोचिषं स्वायंभुवो मुदा यु
क्तो रुचिर्जग्राह दक्षिणां ५ तां कामयानां भगवानुवाह यजुषां पतिः तुष्टायां तोषमापन्नो यजत् द्वादशात्मजान् ६

दक्षिणा नाम लक्ष्मी को अंस भई अपनी पुत्री को पुत्र बडी जा की कांति ऐसे यज्ञ भगवान को स्वायंभू मनु प्रसन्न होइ अ
पने घर मै ले आवत भयो और रुचि दक्षिणा को राखत भयो ५ बडे भैया पे कामना करत जो दक्षिणा ताहि यज्ञ भगवान्
विवाह करत भयो सो संतोषतो दक्षिणा ता विषे संतोष होइ बारह पुत्र को उपजावत भयो ६ श्री कृष्णाय नमः

चक्षुसमन्वंतरमेंपहिलोसर्ग कालकरुनष्ठभएसंतें ओरतईश्वरमैंप्रेर्‍योवांछितप्रजासततभयों सोदक्षयानामकरप्रेसें प्रसिद्धहे ४९ जोहैतेईअपनीकांतिकरतेजस्वीओंतेजलेलेतभयों ओरकर्मनमेंनिपुनहें तातेदक्षऐसेंसबकोईकहतेभयों ५० ब्रह्माहुदक्षकोंअभिषेककरिप्रजानकीरक्षाकरहामेलगावतभयों बहुरक्षदक्षहे ओरमरीच्यादिप्रजापतिनकोंसबकेयापारमेंलगावतभयों ५१ इतिभागवतेचतुर्थ॰ त्रिशोध्यायाः ३० मैत्रेयजीकहेहैं हेविदुरवेप्रचेतातिनबुद्धमतवदि व्यसतसहस्रवर्षसहस्रकालगएपें विवेकज्ञानतिनकूंभयोऐसेंप्रचेताहरिनेजोकह्योंकरानिरवेहलैमेरेधामकूंजोप्रौंगे तावनकोस्म

चक्षुषेंत्वंतरेप्राप्तेप्राक्सर्गेकालविद्रुते यःससर्जप्रजाइष्टाःसदक्षोदैवचोदितः ४९ योजायमानसर्वेषांतेजस्तेजस्विनांरुचा स्वयोपाददक्षःस्पाद्वकर्मणांदक्षमब्रुवन् ५० तंप्रजासर्गरक्षायामनादिरभिषिच्यचयुयुजेयुक्तेस्वांश्चसवेसर्जप्रजापतिः ५१ इतिश्रीभागवतेचतुर्थे॰ त्रिशोध्याया ३० मंत्रेयउवाचः तात्उत्पन्नविज्ञानाआश्वधोक्षजभाषितः स्मरेतप्रात्मजेभार्याविसृज्यप्राव्रजन्गृहात् १ दिताब्रह्मसत्रेणसर्वभूतात्ममेधसाप्रतीच्यांदिसिवेलायांसिद्धोभूद्यत्रजाजलि २ तान्निर्जितप्राणमनोवचोदृष्टोजितासनान्सांतसमानविग्रहान् परेमलेब्रह्मणियोजितात्मनाःसुरासुरेड्योंददृशेस्मनारदः ३ तमागतंतमुत्थायप्रणिपत्याभिनंद्यचपूजयित्वायथादेसंसुखासीनंमथाब्रुवन् ४

रणकरदक्षजोपुत्रनारीकेघरसौंछूटिगोंघरतेवेराग्यलेकेजातभये १ उत्तपश्चिमदशामैंसमुद्रकेतीरजतांजाजल्यऋषिसिद्धिरहेंहें नतांनायसवप्राणीनमेंदेखआत्मबुद्धिजाविषें ऐसेंब्रह्मसत्रयज्ञकरहीज्ञालेतभये ओरआत्मविद्याकोसंकल्पलेतभए २ जीतेहेप्राणमनवचनदृष्टिजिननेंजीतोआसनप्रहारजिनेंसांतसधेसैविग्रहजिननैंपरब्रह्ममेंलगायोहैमनजिननैंऐसेंप्रचेतानकूं देवताऔरदैत्यकरवंद्यऐसेनारदजीदेखतभए ३ तानारदजीआयोदेखि(उठिकरप्रेणा)

तुम सबमें समान और शुद्ध स्वरूप परमात्मा तातें तुम्हारे अर्थ प्रणाम है सत्वगुण स्वरूप वासुदेव भगवान् तातें तुम्हारे अर्थ प्रणाम है ४२ मैत्रेय कहे हैं हे विदुर ऐसें प्रचेतान नें अस्तुति जा की करी ऐसे भगवान् शरणागत पालक अकुंठित जाको प्रभाव सो बोले जो तुम चाहो हो सोई होइगी ऐसें कहि बैलो जाय बैन ही चाहें हैं जा हरि को देखत उन की आखि अघाइ नहीं पर तुरु हरि अपने धाम कूं जात भए ४३ ता पीछें वे प्रचेता सिंधु के जल में तें निकसि मानो स्वर्ग के रोकवे को ठाडे हैं ऐसें जो वृक्ष तिन करके पृथ्वी कूं देख वृक्षन के ऊपर क्रोध करत भए ४४ प्राचीनबर्ही तौ वे तप्यलें वैगए तातें प्रा राजन् के देश में वर्षा तौ भई नहीं

नमः समाय शुद्धाय पुरुषाय पराय च वासुदेवाय सत्वाय तुभ्यं भगवते नमः ४२ मैत्रेय उवाचः इति प्रचेतोभिरभिष्टुतो हरिः प्रीतस्तथेत्याह शरण्यवत्सलः अनिच्छतां यानमतृप्तचक्षुषां ययौ स्वधामानपवर्गवीर्यो ४३ अथ निर्याय सलिलात् प्रचेतस उदन्वतः महीं निर्वीरुधं कर्तुं संवर्तक इवात्ययः ४५ भस्मसात्क्रियमाणांस्तान् द्रुमान् वीक्ष्य पितामहः आगतः शमयामास पुत्रान् बर्हिष्मतो नयैः ४६ तत्रावशिष्टा ये वृक्षा भीता दुहितरं तदा उज्जहुस्ते प्रचेतोभ्य उपदिष्टाः स्वयंभुवा ४७ ते च ब्रह्मण आदेशान्मारिषामुपयेमिरे यस्यां महदवज्ञाना

दजन्यजनयोनिजः ४८

तातें बढ़ गए तब प्रचेता निर्वृक्ष पृथ्वी करबे के लीयें क्रोध करकें मुख तें पवन और अग्नि छोड़त भए जैसे प्रलय में रुद्र छोड़े हैं ४५ तिन वृक्षन कूं जरते देख भगवान् ब्रह्माजी आय प्राचीनबर्ही के बेटान कूं मुक्तन करके नम्र भावत भए ४६ जब बरते तें जो वृक्ष बाकी रहे ते भयभीत होय ब्रह्मा के उपदेश तें अपनी बेटी प्रचेतान कूं देत भए ४७ ते प्रचेता हू ब्रह्मा की आज्ञा तें मारिषा वृक्षन की पुत्री तासों विवाह करत भये तामें पहले ब्रह्मा को पुत्र दक्ष सो जनमत भयो सो शिवजी की अवज्ञा करकें परंतु सती त्याग में अपेक्ष सोजा में जन्म लेत भयो ४८

भा॰ च॰
१००

जिन साधुन ने हरि कथा उज्ज्वल गाई हैं जिन साधुन के सुनें तें तृष्णा शांति हो है और प्राणीन में निर्वैरता हो है जिन साधुन के संग में उद्वेग कोई नहीं है ३५ जा साधु संग में भगवान् नारायण संन्यासीन के परम गति मुक्तिसंग करके बारंबार गाई ये हैं ३६ ते साधु तीर्थन कूं पवित्र करबे की इच्छा कर पावन करते डोले हैं तिन के समान संसार तें डरपे है तिन कूं कछु अच्छो नहीं लगे ३७ हम तो हे भगवान् तुम्हारे प्यारो महादेव सखा ताको एक क्षण भर संग पाकर अत्यंत अचिकित्सित जो जन्म मृत्यु जाके सघ जो जो तुम गति जाय प्राप्ति है ३८ तातें हम यह बर मांगे हैं जो हम ने दिन दिन अन्न छोड़ जल में बैठ तप कीयो और वेद अध्ययन कीयो

यत्रेड्यन्ते कथा मृष्टास्तृष्णायाः प्रशमो यतः निर्वैरं यत्र भूतेषु नोद्वेगो यत्र कश्चना ३५ यत्र नारायणः साक्षात् भगवान् न्यासिनां गतिः संस्तूयते सत्कथासु मुक्तसंगैः पुनः पुनः ३६ तेषां विचरतां पद्भ्यां तीर्थानां पावनेच्छया भीतस्य किं न रोचेत तावकानां समागमः ३७ वयं तु साक्षाद्भगवन् भवस्य प्रियस्य सख्युः क्षणसंगमेन सुदुश्चिकित्स्यस्य भवस्य मृत्योर्भिषक्तमं त्वाद्य गतिं गताः स्म ३८ यन्नः स्वधीतं गुरवो प्रसादिता विप्राश्च वृद्धाश्च सदानुवृत्त्या आर्या नताः सुहृदो भ्रातरश्च सर्वाणि भूतान्यनसूययैव ३९ यन्नः सुतप्तं तप एतदीश निरंधसां कालमदभ्रमप्सु सर्वं तदेतत्पुरुषस्य भूम्नो वृणीमहे ते परितोषणाय ४० मनुः स्वयंभूर्भगवान् भवश्च ये अन्ये तपोज्ञानविशुद्धसत्वा अदृष्ट

पारा अपि यन्महिम्नः स्तुवन्त्यथो त्वात्मसमं गृणीमः ४१

गुरू प्रसन्न कीये और वृद्ध आर्य सबन नमस्कार कर सुहृद भैय्यी सब प्राणी से द्वेष छोड़ि सब जो कछु कीयो सो तुम सो अनुसार प्रसन्न तुम ता तुम्हारे प्रसन्न के अर्थ होउ यह मांगे हैं ४० स्वायंभुव मनु और भगवान् ब्रह्मा शिव और जे तप ज्ञान करि शुद्ध जिन के अंतःकरण ते उ जा की महिमा को पार नहीं पामें हैं परंतु अपनी शक्ति के अनुरूप तुम्हारी अस्तुति करे हैं तैसें ही हम हूं अपनी शक्ति के अनुरूप तुम्हारी अस्तुति करे हैं सो तुम हम पें प्रसन्न होउ ४१

हीनन मैं जिन कौं वात्सल्य ऐसे प्रभु तिन कौं यही कार्य है जो उचित काल में बुद्धि कर अपने नकूं स्मरण करा मन्यो सो तौ तुम ने साक्षात् दर्शन दीयो है २८ जा तुम्हारे स्मरण कर उन दीनन कूं प्रोत्साहन होत है और तुम सूक्ष्म प्राणीन के हृदय में अन्तर्यामी रूप कर स्थिर हौ याते तुम्हारे उपासक जो कछु इच्छा जो करैं प्रसन्नता दिन तिन की अभिलाष कहा तुम न ही जान्यो हो जानो ही हो २९ हे जगत के पति हम कूं तौ वांछित यही वरदै जो तुम प्रसन्न होइ जो तुम मोक्षमार्ग के दिखावन वारे और सनत्कुमार रूप पार्षदन तही ३० हे प्रभो यद्यपि तुम सब देवन कूं समर्थ हौ और देवे कूं योग्य जो तुम्हारी विभूती तिन के हम अ

एतावत्त्वं हि विभुभिर्भाव्यं दीनेषु वत्सलैः। यदनुस्मर्यते काले स्वबुद्ध्याभद्ररन्धन २८ येनोपशान्तिर्भूतानां क्षुल्लकानामपीहतां। अन्तर्हितोऽन्तर्हृदये कस्मान्नो वेद नाशिषः २९ असावेव वरोऽस्माकमीप्सितो जगतः पते प्रसन्नो भगवान्येषामपवर्गगुरुर्गतिः ३० वरं वृणीमहेऽथापि नाथ त्वत्परतः परात् न ह्यन्तस्त्वद्विभूतीनां सोऽनन्त इति गीयसे ३१ पारिजातेऽञ्जसा लब्धे सारङ्गोऽन्यन्न सेवते त्वदङ्घ्रिमूलमासाद्य साक्षात्किं किं वृणीमहि ३२ यावत्ते मायया स्पृष्टा भ्रमाम इह कर्मभिः तावद्भवत्प्रसङ्गानां सङ्गः स्यान्नो भवे भवे ३३ तुलयाम लवेनापि न स्वर्गं नापुनर्भवं भगवत्सङ्गिसङ्गस्य मर्त्यानां किमुताशिषः ३४

न्त नहीं याते अनंत विभूती कहो हो परन्तु कारण हू ते परे जो तुम हौ तिन ते एक वर मांगे है ३१ ऐसे अनायास कर पारिजात के मिले जे धर्मी ते और वृक्ष को सेवन न ही करै है तैसे हम कूं तुम्हारे चरणारविंद को स्पर्श होई और तुच्छ कहा मांगे ३२ जा ते घर प्रार्थना करे है जब ताई तुम्हारी माया कर व्याप्त कर्म न कर या संसार में भ्रमे तब तांई तुम में प्रसंग जिन को ऐसे साधुन कौं जन्म जन्म में हमें संग होउ ३३ जिन साधुन कौं लव मात्र संग ताके समान न स्वर्ग है न मोक्ष है तहां और राज्यादिक

४८

है क्लेश के नाश करवे वारे वेदन में सब श्रेय के साधन सो तत्त्व कर निरूपण करे है उदार यश नाम जाके ता तुम्हें प्रणाम है और मन वाणी के अगोचर सब इन्द्रीन के मार्ग निकर नहीं पाईये है मार्ग जिन को तातुम्हारे अर्थ प्रणाम है २२ अपने स्वरूप स्थित कर शुद्ध याही ते शांत और मन निमित्त भए संसार व्यर्थ ही सूझ ही है अद्वैत रूप जा विषे ताके अर्थ प्रणाम है और जगत के पालन उत्पत्ति लय कूं न विषे ग्रहण करी है माया गुण न कर ब्रह्मादिक मूर्ति जाने ता तुम्हारे अर्थ प्रणाम है २३ विशुद्ध सत्त्व रूप संसार कूं हरै है ता वासुदेव हरि भक्तन के पालन वारे तातुम्हारे अर्थ प्रणाम

प्रचेतस ऊचुः नमो नमः क्लेशविनाशनाय निरूपितोदारगुणाह्वयाय मनोवचोवेगपुरोजवाय सर्वाक्षमार्गैरगताध्वने नमः २२ शुद्धाय शान्ताय नमः स्वनिष्ठया मनस्यपार्थं विलसद्द्वयाय नमो जगत्स्थानलयोदयेषु गृहीतमायागुणविग्रहाय २३ नमो विशुद्धसत्त्वाय हरये हरिमेधसे वासुदेवाय कृष्णाय प्रभवे सर्वसात्वतां २४ नमः कमलनाभाय नमः कमलमालिने नमः कमलपादाय नमस्ते कमलेक्षण २५ नमः कमलकिञ्जल्कपिशङ्गामलवाससे सर्वभूतनिवासाय नमोऽनुस्मृतिसाक्षिणे २६ रूपं भगवता त्वेतदशेषक्लेशसंक्षयं आविष्कृतं नः क्लिष्टानां किमन्यदनुकम्पितं २७

है २४ लोकात्मक कमल जाकी नाभ ते ताके अर्थ प्रणाम है कमलन की जाके माला कमल से कोमल जिन के चरणारविंद और कमल से जिन के नेत्र ऐसे तुम तिन तुम्हारे अर्थ प्रणाम है २५ कमल की केशर तुल्य पीरे हैं वस्त्र जाके सब प्राणीन के निवास साक्षी ता तुम्हारे अर्थ दंडोत है २६ और क्लेश समूह जे हम तिन को ध्यान के दूर करवे वारो यह रूप आपने प्रगट कीयो यह बडी कृपा करी हम कूं बडो मंगल भयो और या ते आगे हम कहा वर मांगे २७

मोह अब वर्त्तमान जो पिता तानें प्रजान के विसर्ग में आज्ञा जिनकूं दई ऐसे तुम दक्षन की कन्या सुंदर जाकें नितंब ताहि ब्याहि लेउ विलम्ब मति करो १५ एक शील है धर्म शील जिनकौ ऐसी तुम्हारी सब नकी स्त्री बरी होयगी कैसी है तुम्हारो सोइ है धर्म शील जाकौं ता मेरी आज्ञा तो दूर है ताकू तुम करोगे १६ दिव्य सहस्र वर्षन ताई ऐसी ए जिनको बल ऐसी होइ है मेरे अनुग्रह तें पृथ्वी के भोग और देवतान के भोग तिनें भोगेगें १७ ता पीछे मो में अनपायनी जो भक्ति ताकर के नष्ट भयो है आमादि कमल पुत्रा आशय जिन को ऐसे तुम निरय प्राप जो है उ लोकन को मार्ग तातें निवृत्ति कर मेरो जो स्थान ताय प्राप्ति होउगे जो गृहस्थ

प्रजाविसर्ग आदिष्टः पित्रा मामनुवर्त्तता तत्र कन्यां वरारोहां तामुद्वहत माचिरं १५ अपृथग्धर्मशीलानां सर्वेषां वः सुमध्यमा अपृथग्धर्मशीलेयं भूयात्पत्न्यर्पिताशया १६ दिव्यवर्षसहस्राणां सहस्रमहतौजसः भौमान्भो गान्प्रभोक्ष्यध्वं दिव्यांश्चानुग्रहान्मम १७ अथ मय्यनपायिन्या भक्त्या पक्वगुणाशयाः उपयास्यथ मद्धाम निर्विद्य निरयादतः १८ गृहेष्वाविशतां चापि पुंसां कुशलकर्मणां मद्वार्तायातयामानां न बन्धाय गृहा मताः १९ नव्यवद्धृदये यज्ज्ञो ब्रह्मैतद्ब्रह्मवादिभिः न मुह्यन्ति न शोचन्ति न हृष्यन्ति यतो गताः २० मैत्रेय उवाच एवं ब्रुवाणं पुरुषार्थभाजनं जनार्दनं प्राञ्जलयः प्रचेतसः तद्दर्शनध्वस्ततमोरजोमला गिरागृणन्गद्गदया सुहृत्तमं २१

घर न है मेरे रहै हैं परंतु मो में जिनने कर्म अर्पण कीये मेरी वार्ते करि दिवस विनीत कीये हैं तिनको काल घर बंधन के अर्थ नहीं होत है १९ जो मेरी कथा श्रवण तें सर्वज्ञ ईश्वर में ब्रह्मवादी वखान ता रा हृदय में नित्य नवीन कीसी नाई प्राप्त होउ हूं वेद ब्रह्म साक्षात्कार होत हैं और जो मो में ब्रह्म कौं प्राप्ति भये ते मोह कूं नहीं पावे और नष्ट कौं प्राप्त होत हैं २० मैत्रेय बोले सब पुरुषार्थन के करवे वारे जनार्दन भगवान ने ऐसे जब कहो तब प्रचेता ता दर्शन तें ध्वस्त है रज तम सब मेल जिनको तिनके जे गद्गद वाणी करि अंजलि सहित करी जो हरि तिन की अस्तुति करत भए २१

भा. ४. ३०

जो कोई मनुष्य दिन तुमें स्थान संध्या समें स्मरण करेगो ताके भेयान में आत्म सम मत होइगो अपने समान भेयान कूं जनेगो और वा कों सब प्राणीन में सोहृदय होइगो ६ जो कोई माय रुद्र गीत कर संध्या काल वा प्रात काल सावधान होइ अस्तुति करेगो तिनकों मामवर होयगो और सुंदर बुद्धि होयगी १० और जो तुम प्रसन्न होय पीता की आज्ञा ग्रहण करत भए याते लोक में मनोहर तुम्हारी कीर्ति होयगी ११ और गुण न में ब्रह्मा के तुल्य विख्यात ऐसो तुम्हारो पुत्र होत भयो जो तुमें अपनी संतान कर त्रिलोकी में तुमें पूर्ण करेगो १२ और पुत्र के लीयें पहलै भार्या करो ताय कहै है मकंड ऋषि के तप नाश कर वे के लीये

यो नुस्मरति संध्यायां युष्माननुदिनं नरः तस्य भ्रातृष्वात्मसाम्यं तथा भूतेषु सौहृदं ९ ये तु मां रुद्रगीतेन सायं प्रातः समाहिता स्तुवंत्यहं कामवरान्दास्ये प्रज्ञां च शोभनां १० यद्यूयं पितुरादेशमग्रहीष्ट मुदान्विता अथो व उशती कीर्तिर्लोकाननु भ विष्यति ११ भविता विश्रुतः पुत्रोऽनवमो ब्रह्मणो गुणैः य एतामात्मवीर्येण त्रिलोकीं पूरयिष्यति १२ कण्डोः प्रम्लोचलाल भ्याकन्या कमललोचना तां चापविद्धां जगृहुर्भूरुहा नृपनंदना १३ क्षुत्क्षामाया मुखे राजा सोमः पीयूषवर्षिणीं देशनीं रोदमानाया निदधे स दयान्वितः १४ प्रजाविसर्ग आदिष्टाः पित्रा मामनुवर्त्तता तत्र कन्यां वरारोहां तामुद्वहत माचिरं १५

ईद्र ने भेजी जो प्रम्लोचना अप्सरा ताके संग ऋषि वहोत दिनाताई रमण करत भए तब दाकें गर्भ रह्यौ तब वह अप्सरा ला लिकू जाय वेल गी तब मकंड लें भये जो गर्भ ताय वृक्षन में त्याग स्वर्ग कौं जात भई तब वा गर्भ में ते एक कन्या भई वाम से जा के नेत्र ताय वृक्ष ग्रहण करत भए १३ सो वह कन्या क्षुधा कर रोवत ताके मुख में चन्द्रमा तिन को राजा चंद्रमा दया करि अपनी अमृत स्रावनी जो तर्जनी अंगुरी या ताय देत भयो सो अप्सरा के गर्भ ते भई है और अमृत को आहार करे याते वा को बड़ो लावण्य है और लोक प्रश्वेन होउगे धला कर रहित है १४

दयाल आर वर्ष जब उन कूं तपकर तें वितीत भए तब भगवान सनातन पुरुष अन्के तप को कष्ट ताय अपनी कांति कर दूर करत
शुद्ध सत्व कर जो प्रारी दला सो प्रगट होत भए ४ गरुड पै आरूढ जैसे सुमेर को शिखर पै मेघ आरूढ होय तैसें पीतांबर ओढें को
स्तुभ मणि जिनने ग्रीवा में अपनी कांति कर दिशान के अंधकार कूं दूर करत प्रगट होत भए ५ दैदीप्यमान जे स्वर्ण के आभू
षण तिन कर शोभायमान हैं मुखकमल कपोल बदन जाको प्रकाशमान है मुकट जाको आठो आयुध अनुचरन सहित सेवत

दसवर्षसहस्रांते पुरुषस्तु सनातना तेषामाविरभूत कृछ्रं शांतेन समयन् रुचा ४ सुपर्णस्कंधमारूढो मेरुशृंगं
इवांबुदः पीतवासा मणिग्रीवः कुर्वन् वितिमिरो दिसा ५ काशिष्णुना कनकवर्णविभूषणेन भ्राजत्कपोलवदनो
विलसत्किरीटः अष्टायुधैरनुचरैर्मुनिभिः सुरेंद्रै रासेवितो गरुडकिंनरगीतकीर्ति ६ पीनायताष्टभुजमंडल
मध्यलक्ष्म्या स्पर्द्धच्छ्रिया परिवृतो वनमालयाद्यः बर्हिष्मतः पुरुषआह सुतान् प्रपन्नान्पर्जन्यनादरुतया
सघृणावलोकः ७ भगवानुवाच: वरं वृणीध्वं भद्रं वो यूयं मे नृपनंदनः सौहार्देनापृथग्धर्मास्तुष्टोऽहं सौ
हृदेन वः ८

और आयुध मुनिगण इंद्रादिक देवता गरुड किंनर तिनें गाई है कीर्ति जिनकी ६ फेर कैसे हैं हरि हैं पुष्ट और लंबी जो
भुजा दीर्घ तिनके मध्य में स्थित जो लक्ष्मी ता कर दीप्यमान है सोभा जिन की ऐसे हरि की वाणी कर वे प्राचीनबर्हि
के पुत्र शरणागत तिन सों हरि यह बोले कैसे हरि हैं दयायुक्त हैं अवलोकन जिनको ७ भगवान कहैं हे राजकुमारनु
म्हारो कल्याण होउ और स्नेह करि एक से है धर्म जिनको तुम्हारे सौहृदय कर मे प्रसन्न भयो हूं ताते जो चहो सो वर मांगो ८

162

भा॰ च॰ ५७

यह मुकुंद के यश कर भुवन को पवित्र करें और सो नारद के मुख ते निकस्यो तारे को चरित्र जो मन कूं सो धिवै सर्वलो
क फल को देन वारो सो धुन कर कीर्तमान ताहि जो कोई सुनै सो सब बंधन ते छूट या संसार में नहीं भरमै हैं ८४ हे विदुर यह
मैं ते ऐसो अध्यात्मज्ञान परोक्ष सो अद्भुत कह्यो या को श्रवण करे ते पुरुष को अहंकार कटै है और परलोक में मर्म न को फ
ल भोगे है और दुःख संसय हरै है ८५ इति श्रीभागवते चतुर्थस्कंधे एकोनत्रिंशोध्यायः २९ विदुरजी पूछें हैं हे मै
त्रेय हे ब्राह्मण तुमने प्राचीनबर्हि के जे पुत्र कहे ते रुद्रगीत कर हरि को प्रसन्न कर कैं नाना सिद्धिन को प्राप्ति भये १

एतन्मुकुंदयससा भुवनं पुनानं देवर्षिवर्यमुखनिःसृतमात्मशौचं यः कीर्त्यमानमधिगछति पारमेष्ठ्यं
नास्मिन्भवे भ्रमति मुक्तसमस्तबंधः ८४ अध्यात्मपारोक्ष्यमिदं मयाधिगतमद्भुतं एवं स्त्रियाश्रमः पुंसः
छिन्नोमुत्रच संशयः ८५ इति भागवते चतुर्थे एकोनत्रिंशोध्यायः २९ विदुरउवाच: ये त्वयाभिहिता ब्रह्मन्
सुताः प्राचीनबर्हिषः ते रुद्रगीतेन हरिं सिद्धिमापुः प्रतोष्य कां १ किं बार्हस्पत्येह परत्र वाथ कैवल्यनाथ
प्रियपार्श्ववर्तिनः आसाद्य देवं गिरिशं यदृछया प्रापुः परं नूनमथ प्रचेतसः २ मैत्रेय उवाच: प्रचेतसो
न्तरुदधौ पितुरादेशकारिणः जपयज्ञेन तपसा पुरंजनमतोषयन् ३

हे बृहस्पति के शिष्य मैत्रेय प्रचेता पद कहा कर शिव को प्राप्ति होइ तामे हरि देवजी के पार्श्ववर्ती मत है देवजीने अन्त
रहित जिन पै कीयो तेनिश्चै मोक्ष कों प्राप्ति होत भए वास्तव मोक्ष ते पहले या लोक में अथवा परलोक में कहा प्राप्ति
होत भए सो कहो २ जे प्रचेता समुद्र सरीखो सरोवर ता में बैठ पिता की आज्ञा कर रुद्रगीत कों जप ना कर के हरि
हरि जो भगवान तिनें प्रसन्न करत भए सो सुनि ३

163

देहारंभक कर्मनकी समाप्ति कर जबताई और देहकौं नहीं प्राप्ति होवे तबताई पूर्व देहके अभिमानकूं नहीं छोडै है यह मनुष्यादे
हमेही सब प्राणीनकों संसारको हेतु है सो कहै है ७७ जब इंद्रीनकरि उपभुक्त विषयनको ध्यान करत पहले कर्मतो है ही परंतु
और कर्मनकूं विस्तारे है निरंतर तहां असंगात्मे है असंगकों कर्म कैसे तहां कहे हैं अविद्याके भए संते देहादिकनकूं लेके विषे बंधन
होवे ७८ यातें संसारके अपवाद अर्थ आत्मस्वरूप विश्वकौं देखत सब प्रकार हरिकौं भजन कर तातें विश्वको उत्पत्ति पालन नाश
होवे है ७९ मैत्रेय कहे हे विदुर भागवतमे मुख्य भगवान् नारद प्राचीनवर्ही राजाकूं जीव ईश्वरको रूप दिखाय वासों आज्ञा लें

यावदन्यं न विंदेत व्यवधानेन कर्मणां मन एव मनुष्येंद्र भूतानां भवभावनं ७७ यदाक्षैश्चरितान्ध्यायन्कर्माण्याचि
नुतेसकृत सति कर्मण्यविद्यायां बंधः कर्मण्यनात्मनः ७८ अतस्तदपवादार्थं भज सर्वात्मना हरिं पश्यंस्तदात्म
कं विश्वं स्थित्युत्पत्त्यप्यया यतः ७९ मैत्रेय उवाचः भागवतमुख्यो भगवान्नारदो हंसयोर्गतिं प्रदर्श्य ह्यमुमामंत्र्य
सिद्धलोकं ततोगमात् ८० प्राचीनवर्हिराजर्षिः प्रजासर्गाभिरक्षणे आदिश्य पुत्रानगमत्तपसे कपिलाश्रमं ८१
तत्रैकाग्रमना धीरो गोविंदचरणांबुजं विमुक्तसंगोनुभजन्भक्त्या तत्साम्यतामगात् ८२ एतदध्यात्मपारोक्ष्यं
गीतं देवर्षिणानघ यः श्रावयेद्यः शृणुयात्स लिंगेन विमुच्यते ८३

सिद्धलोककूं जात भयो ८० प्राचीनवर्ही जो राजर्षि सो प्रजासर्गकी रक्षामें पुत्रनकूं आज्ञा देके तहां कहे है पुत्रतो तप करवे
कूं गये हैं परंतु पुत्रनकूं कही जो पुत्र आमें तब प्रजानकी रक्षा करे यह कहत भयो फेर उत्कट ज्ञान होत भयो तातें पुत्रनको पैं
डो न देख्यो वा ईसमे तप करवेके अर्थ वद्रिकाश्रमकों जात भयो ८१ तहां एकाग्र मन होई सब संसारसें छोडो ऐसी
भक्ति कर गोविंदचरणारविंदकौ भजन करत तत्स्वरूपतादि प्राप्ति होत भयो ८२ हे विदुर यह अध्यात्मज्ञान परोक्ष
नारदने गायो ताय जो कोई सुने सुनावे सो लिंगदेहते हरि तिनमें मुक्त होवे ८३

भा·च
९६

विषें अहंकार नहीं प्रकासै है इंद्रीयनकों विघात है तेरे इंद्रीयनकों रहो इंद्री अहंकार रहेनो वस्तुता केतरुणमें अहंकार फुरै है
अन्यथा नहीं फुरै ७१ गर्भबालत्वमें इंद्रीयनकौ अपूर्णत्व है यातें तरुणकूं ग्यारह इंद्रीयन कर स्फुरै सो गर्भ बालत्वमें नहीं है
तासूं दुःख ही दिखाई देवे हैं तातें अहंकार पर स्थूल देहकों अविद्य है यातें वस्तुतः अर्थनके अभाव भए संते संसृत नहीं नि
वृत्ति होवे है अब यह कहे है ७२ वास्तव तें अर्थ अविद्यमान है पर संसार नहीं निवृत्ति होवे है या पुरुषकों जो पहले विषयनको ध्यान करे
है ताय पुरुषकौं जैसे स्वप्नमें दुःखनकौं आगम होवे है परंतु जबताई वह स्वप्नमें है तबताई दुःख जाय नहीं ७३ तातें जबताई लिंगदेह है

स्वापे मूर्च्छोपतापेषु प्राणायनविघाततः नेहतेहमिति ज्ञानं मृत्युप्रज्वारयोरपि ७१ गर्भे बाल्येप्यपौष्कल्या देकादशवि
धं तदा लिंगं न दृश्यते यूनः कुह्वां चंद्रमसो यथा ७२ अर्थे ह्यविद्यमानेपि संसृतिर्न निवर्तते ध्यायतो विषयानस्य स्वप्ने
नर्थागमो यथा ७३ एवं पंचविधं लिंगं त्रिवृत्षोडशविस्तृतं एष चेतनया युक्तो जीव इत्यभिधीयते ७४ अनेन पु
रुषो देहानुपादत्ते विमुंचति हर्षं शोकं भयं दुःखं सुखं चानेन विंदति ७५ यथा तृणजलौकेयं नापयात्यपयाति
च न त्यजेन्म्रियमाणोपि प्राग्देहाभिमतिं जनः ७६

तबताई स्थूल देहके अविद्यते संसार नहीं निवृत्ति होवे यह कहे हैं ऐसे पंचतन्मात्रात्मक तीन जामें गुण षोडश विकारात्म
क स्वरूप करि विस्तृत यह चेतनाकर युक्त जीव ऐसे कही ये है ७४ या लिंग देहकर पुरुष स्थूल देहनकों धारण करे है याही
कर छोडे है और हर्ष शोक भय दुःख सुख याही कर प्राप्ति होवे है ७५ जो एक देहतें देहांतरमें प्रवेश करे सो प्रवेश तें पहिलें
तो अहंता होती तहां कहे है जैसे तृणजलौका पूर्व तृणकों नहीं त्यागे है यातीते नहीं जाय है और तृण तरकौं धारण करे
है तातें जाहै ऐसें मरणहारे लोकहू सो पहले देहके अभिमानकूं नहीं त्यागे है ७६

विषैं भोगत्व कर प्राप्ति होत है और भोगनके अनंतर जा पदैं सो तो कोई मन कर रहित होयतो ऐसे न होय सब ही मन सहित हैं यातैं मन मैं सब अनर्थन कौं क्रमतें प्रवेश है यातें कहूं कोई अर्थ पहलें अप्रतीत प्रदर्शन नहीं एवं दृष्टी ही है ६८ ऐसे क्रम कर सर्व अर्थ सब मन मैं दिखाई देहैं और कदाचित् हरि भजन कूं सर्वदर्शीन् वे काल हू मे होहैं जो सत्व मैं है एक न देखा जाकी ऐसो भगवत् वास्तव रजो न पना विषैं यह सब विश्व संयोग सु पायकैं भासैहै तो प्रतीत

सर्वं क्रमानुरोधेन मनसेंद्रियगोचराः आयांति वर्गशो यांति सर्वे समनसो जनाः ६८ सत्वैकनिष्ठे मनसि भगवत्पार्श्ववर्तिनि तमश्चंद्रमसीवेदमुपरज्यावभासते ६९ नाहं ममेति भावोऽयं पुरुषे व्यवधीयते यावद्बुद्धिमनोक्षार्थगुणव्यूहो ह्यनादिमान् ७०

कोऊ अयोग्य है परि कदाचित् प्रतीत होहै तैसे ही न चंद्रमा मे राहू भासै है जैसे ईश्वर मन विषैं इन कों प्रत्यक्ष है : तहां आसंका करै है जो लिंग देह कौं स्थूल देह द्वारा ही कर्तृत्व भोक्तृत्व हैं अकेले कूं नहीं : तो कबहूं स्थूल देह कौं अभाव मैं जीव कौं कर्तृत्व भोक्तृत्व के अभाव तैं मुक्ति होइगी नहीं नहै है ६९ जब ताईं बुद्धि मन इंद्री विषय गुण इनके परिणाम लिंग देह अनादि है तब ताईं पावतें स्थूल देह कौं वियोग नहीं है नहीं कहै हैं स्वभावादिकन कों अभाव है यातें स्थूल देह कौ वि छेद होइगो ७० नहीं कहै हैं सुसुप्ति मूर्छा इष्ट वियोगादिक दुःख और मसु अज्ञानन

भा॰ च॰
९५

नाम य जीव ताकौं अपमान कर दुःख एवं दिदेहतें भयो जो कर्म ताय निश्चैं कर मान विना अनुभव कीयो अर्थ मन मैं नहीं फिर वेकौं योग्य है ६५ मन की वृत्तन करि अनुभव भाजिन कौं निमित्त ऐसे सरीर जानी ये तें यह मन ही वट न सार मनुष्य के नीच त्व पायो चाहै तें ताके पूर्व रूप कूं कहि देहैं मन ही उत्तर्य कार्य ये आदि हतिन कर पेहलै हं यह ऐसो होन भयो पीछें हूं ऐसो होयगो यह जाता मे है ६६ कबहू एक दर्शन कूं अयोग्य और कबहूं जा कौं सुन्यों नहीं सोई मन मैं स्वप्नादिक मे प्रतीत

नानुभूतं क्व चानेन देहेनादृष्टमश्रुतं कदाचिदुपलभ्येत यद्रूपं यादृगात्मनि ६४ तेनास्य तादृशं राजन्लिंगिनो देहसंभवं श्रद्धत्स्वाननुभूतोऽर्थो न मनः स्प्रष्टुमर्हति ६५ मन एव मनुष्यस्य पूर्वरूपाणि शंसति भविष्यतश्च भद्रं ते तथैव न भविष्यतः ६६ अदृष्टमश्रुतं चात्र क्वचिन्मनसि दृश्यते यथा तथानुमंतव्यं देशकालक्रियाश्रयं ६७

व

होहैं जैसें पर्वत के अग्रभाग भाग मैं समुद्र इन मैं नहा त्र स्वप्नी रघे हादिकन हूं देश काल क्रिया आश्रय प्रतीत होइ हैं अन्यदेशाश्रय समुद्रादिक पर्वत के अग्रभाग मे ही प्रतै निसा आश्रय नक्षत्रादिकन मे प्रतीत हो हैं अयंगादिक क्रिया आश्रय स्वप्नी रघे हादि दोष कर प्रतीत होहैं ऐसे ही ओर जगे देष और जगो हं प्रतीत होहैं सो देस काल क्रिया आश्रय अनुमान कर वे कूं जोग्य है ६७ कबहू दरिद्री स्वप्न मनोरथादिकन मैं आपे कूं महा न राजा देखे हैं ॥ कबहू राजा आपे कूं दरिद्री देखे है यह जैसें बनें नहीं कहै हैं सब ही इंद्रीनके विषय क्रमतैं अवरोध करि मन

170

ऐसे हरि अतिसयप्रिय आत्मा हैं जाके आश्रय लेत नकहू भय नहीं हैं ऐसें जो कोई जानें सोई विद्वान् सोई गुरु सोई हर है ५१ ऐसे ना
रदजी नें आत्मा कों वेध मोक्ष कों प्रकार कथा रूप कर कह्यो तो उराजा के प्रति निवेदन आयो उत्रन के आगन कों पंउ देखतें ताहि वा
ही क्षण मता भय करिकें कंधित करिय हतें निजा सबे कों हरिण कों रूप कहत हैं हेतु रूषन में श्रेष्ठ याभां तिते रो प्रस्म ते भिनेक
सों ग्रब मैं और एक गुह्य वात कहहूं ताई निश्चें करस्तनि ५२ प्रसन्न पुष्पन की वाटिका में दमंद तामे विचरे हैं स्त्री के संग मिल क
सों ग्रब मैं और एक गुह्य वात कहहूं ताई निश्चें करस्तनि ५२ प्रत्यक्ष रूप पुष्पन की वाटिका मेंदमंद तामे विचरे हैं स्त्री के संगमिल
रि और वही आप ताके भौंरान के जेगण तिनकी जोगति तिन में लुब्ध कहें कर्ण जाके ऐसें आगें प्राणन तें रमकरवे वारे त्यारी तिन

सर्वे प्रियतमश्चात्मा यतो न भयमण्वपि इति वेद स वै विद्वान् यो विद्वान् स गुरुर्हरिः ५१ प्रश्न एवं परिसंछिन्नो भवतः पुरु
षर्षभ अत्र मे वदतो गुह्यं निशामय सुनिश्चितं ५२ क्षुद्रं चरं सुमनसां शरणे मिथित्वा रक्तं षडंघ्रिगणसामसु लुब्धकर्णं
अग्रे वृकानसुतृपो विगणय्य यान्तं पृष्ठे मृगं मृगय लुब्धकबाणभिन्नं ५३ सुमनसः सम धर्मीणां स्त्रीणां शरण आश्र
मे पुष्पवत् मधु गंध वत् क्षुद्रतमं काम्यकर्म विपाकजं कामसुखलवं जैह्व्यौ पस्थादि विचिन्वतं मिथुनीभूय तदभिनि
वेशित मनसं षडंघ्रिगणसाम गीतवदतिमनोहरवनितादिजनालापेष्वतितरामतिलोभितकर्णमग्रे वृकयूथवद
त्मन आयुर्हरतोऽहोरात्रान् तान् कालविशेषान् विगणय्य गृहेषु विहरंतं पृष्ठत एव परोक्षमनुप्रवृत्तो लुब्धकः कृतांतोऽन्तः
शरेण यमिह पराविध्यति तमिममात्मानमहो राजन्भिन्नहृदयं द्रष्टुमर्हसीति ५४ कोमल नकर जात ऐसो मृगः ताय पीछे ते वधिक

केवाणन कर विदीर्णदेषि ५३ याश्लोक को पहिले अन्न कर्ण लगाय कैं करेहैं पुष्पन को सोहै धर्म जिन को ऐसी जो स्त्री तिन की शरणाग्रत
स्थाश्रम सोई नयो बाग ताविर्षे तामें पुष्पनकी मधुरता ताकी सीनाई जो तुच्छ काम कर्मनके फल तें ईन्द्रि यों जिह्वा उपस्थादिकों सुख
ताय ढूंढे हैं स्त्रीन कर सहित मिलकर स्त्रीन में राखें हैं मन जाने और वाटका में भौंरान के से गान की सीनाई अति मनोहर स्त्री छोटे
वालकन के जो अलाप तिन में अतिसय लोभित जाके कर्ण आगे स्यारेन के झुंड की सीनाई आरवल हरन जो दिन रात काल विषै

भा॰च॰
९३

ताकों कमी हैं कनमें आगत छोड़वा परमेश्वर कों भजे नहीं करतें हैं आत्मा में भावना जाकी करी ऐसे भगवान् वासुदेव आप अनुग्रह
करते हैं तास में लोक व्यवहार और कर्म मार्ग तामें परनिष्ठत जो बुद्धि ताय त्यागें और हरि कूं भजें ४६ ताते हे प्राचीनवर्हि प्रस्तान ते
परमार्थ की सी नाई मत्रा समान ऐसे जे कर्म तिन कर तिन में उरुपार्थ बुद्धि मत करें अरोचन के अर्थ कर्मन के वलश्रवण ही कूं प्रिय है
बस्त कूं नहीं स्पर्श करे है ४७ और जो कोई जिनकी बुद्धि वेद के सम्मत कर्म में करै हैं ते वेद के तात्पर्य कों नहीं जाने हैं और आपनो रूप न
त्हरता हुन ही जाने हैं जो आत्मा तत्व ताहि वी नहीं जानें हैं जो ब्रह्म तत्व कहिवे हन के ऐसे पढन ते वेधते मतापन पर जाके अर्तु

यदा यस्यानुगृह्णाति भगवानात्मभावितः स जहाति मतिं लोके वेदे च परिनिष्ठितां ४६ तस्मात्कर्मसु बर्हिष्मन्न
ज्ञानादर्थकाशिषु मार्थदृष्टिं कृथाः श्रोत्रस्पर्शिष्वस्पृष्टवस्तुषु ४७ स्वं लोकं न विदुस्ते वै यत्र देवो जनार्दनः आहु
र्धूम्रधियो वेदं सकर्मकमतद्विदः ४८ आस्तीर्य दर्भैः प्रागग्रैः कार्त्स्न्येन क्षितिमंडलं स्तब्धो बृहद्वधान्मानी कर्म
नावैषि यत्परं ४९ तत्कर्म हरितोषं यत् सा विद्या तन्मतिर्यया हरिर्देहभृतामात्मा स्वयं प्रकृतिरीश्वरः तत्पादमूलं श
रणं यतः क्षेमो नृणामिह ५०

तात्पर्य से गोचर हरि हैं ४८ नू तो राजा महा मूढ है पूर्व कूं जिनकों अग्रभाग ऐसे कुशान कर सर्व पृथ्वी कूं व्याप्त करि और प
शून के वध तें मताय तपवु जाको अहंकार याही तें अनन्त होय विद्या सरूप जो कर्मता हि जाने है सो नारद की कृपा कर प्राप्त
होत है हरि कूं जो प्रसन्न करै सोई कर्म और विद्या वही जा कर हरि में बुद्धि होय ४९ हरि है देह धारीन को आत्मा ईश्वर स्वतं
त्र कारण याते उनकों चरणार विंद सब कों शरण है ता चरणारविंद विषै मनुष्यन कूं क्षेम होवे है ५०

171

172

साधुसंगविना आपही तृष्णा चिंतनादिक करैं ताकों ऐसी दम्भ कोऊ न होते हैं साधूनके अस्थानमैं तौ मनराउ रूप विवेकीकी तैनक रहें हरिके वस सोई भयौं अमृत स्रवैं ते सेसजिनमैं ऐसी आसासंसय रहित श्रद्धा अमृतकौ वहैं वा पीनहि चारौं ओर तें आवें तौ नवृत्ति ओर तृष्णा जिनकौ मिटीनहीं निरंतर सावधान कर्णनकरि जो पीवें कथान सौ तिनें क्षुधा पिपासा भय सोक मोह येन स्पर्श करैं हैं ४० और ये स्वभावजन्म क्षुधा पिपासादिक तिन करि उपद्रुत जीव सन्त हरि कथामृतकी अमृतकी नदी ताविषैं प्रीति न करै और ४१ जा परमेस्वरकी प्रजापतिनके पति भगवान् महादेवजी मनु दक्षादिक प्रजापति नैष्ठिक सनकादिक नहीं देखसकै हैं ४२

तस्मिन्महन्मुखरिता मधुभिच्चरित्रपीयूषशेषसरितः परितः स्रवन्ति। ता ये पिबन्त्यवितृषो नृप गाढकर्णैस्तान्न स्पृशन्त्यशनतृड्भयशोकमोहाः ४० एतैरुपद्रुतो नित्यं जीवलोकः स्वभावजैः न करोति हरेर्नूनं कथामृतनिधौ रतिं ४१ प्रजापतिपतिः साक्षाद्भगवान्गिरिशो मनुः दक्षादयः प्रजाध्यक्षा नैष्ठिकाः सनकादयः ४२ मरीचिरत्र्यङ्गिरसौ पुलस्त्यः पुलहः क्रतुः भृगुर्वसिष्ठ इत्येते मदन्ता ब्रह्मवादिनः ४३ अद्यापि वाचस्पतयस्तपोविद्यासमाधिभिः पश्यन्तोऽपि न पश्यन्ति पश्यन्तं परमेश्वरं ४४ शब्दब्रह्मणि दुष्पारे चरन्त उरुविस्तरे मन्त्रलिङ्गैर्व्यवच्छिन्नं भजन्तो न विदुः परं ४५ यदा यमनुगृह्णाति भगवानात्मभावितः स जहाति मतिं लोके वेदे च परिनिष्ठितां ४६

और मरीचि अत्रि अंगिरा पुलह पुलस्त्य क्रतु भृगु वसिष्ठ और रना (?)

रहजी कहते हैं सो मैं जिनके अंतः ऐसे वेदव्यास वाचस्पति सब देखत सर्व साक्षी जो परमेस्वर ताय तप विद्या समाधीन करि देखें हैं परंतु नहीं देखें हैं ४३ बडौ जाकौ विस्तार अर्थ ते परे है ऐसो जो शब्द ब्रह्म ताविषैं ब्रह्मलोकादिक गणतें विविध प्रकारके देवतानकी कहिबेमैं समर्थ नहीं ऐसो मंत्रलिंगन जिन करि वटौ जो इंद्र रूप तुम मानौ रूप तुमैं कर्म अमृत अरभजें हैं तो

173

प्रतिकार हू दुःखरूप है याते जैसें पुरुष बडे भारकूं सिरपे धारण करत जब वो भलगे है तब वाकूं कांधापै धरलेइ है सो बहु ज्या योतौ नहीं तैसेंही दुःख हरिबेकौ उपाय हू दुःखही है ३३ कर्मनकौं केवल कर्मनहीं फल है ताते रहित प्रतिकार नहीं कर्म और कर्मनकौ उपाय प्रतिकार दोउ अविद्याकरि व्याप्त हैं जैसें सोवत मैं स्वप्न मये जू देहैं ३४ तैसें संसार हू होहै तो याकी निवृत्ति केप्र यास रहित कैसें होय तहां कहै हैं अविद्यमान हू संसार निवृत्त होते उपाधि मन जो मनता करि जो स्वप्नमैं विचरवेवारी सो

यथा हि पुरुषो भारं शिरसा गुरुमुद्वहन् तं स्कन्धेन स आधत्ते तथा सर्वाः प्रतिक्रियाः ३३ नैकान्ततः प्रतीकारः कर्मणां कर्म केवलं द्वयं ह्यविद्योपसृतं स्वप्ने स्वप्न इवानघ ३४ अर्थे ह्यविद्यमानेऽपि संसृतिर्न निवर्तते मनसा लिङ्गरूपेण स्वप्ने विचरतो यथा ३५ अथात्मनोऽर्थभूतस्य यतोऽनर्थपरम्परा संसृतिस्तद्व्यवच्छेदो भक्त्या परमया गुरौ ३६ वासुदेवे भगवति भक्तियोगः समाहितः सध्रीचीनेन वैराग्यं ज्ञानं च जनयिष्यति ३७ सोऽचिरादेव राजर्षे स्यादच्युतकथाश्रयः शृण्वतः श्रद्दधानस्य नित्यदा स्यादधीयतः ३८ यत्र भागवता राजन्साधवो विशदाशयाः भगवद्गुणानुकथनश्रवणव्यग्रचेतसः ३९

स्वप्न होते है परंतु जबताई जागै नहीं तबताई स्वप्नकौ दुःख जाय नहीं तातें पुरुषार्थ भूत आत्मा ताकूं अज्ञानतें अनर्थ परंपरा रूप संसृति है तासंसार कौ वियोग पर तब वासुदेवमें परम भक्ति तो है ३६ वासुदेव भगवान्‌मैं प्रयोग कीजो भक्तियोग सो भली भांति करत ज्ञान और वैराग्य तिनें उपजावे है हे राजर्षि सो भक्तियोग जो कोई हरिकथा श्रवण करै है श्रद्धा करि नित्य कीर्तन करै है ताकूं अच्युत कथा आश्रय होहै ३८ जहां साधु भगवत निर्मल जिनके अंतःकरण हरिगुणानुवाद कहिबे सुनबे सु व्यग्र जिनके चित्त तिन साधुनके संगमैं भक्तियोग होहै ३९

जब आत्मा परमगुरु भगवान् ताहि भूलि कें यह गुणरूप माया के गुणनि नैं प्राप्त होत है तब गुणाभिमानी गुणन के वस होय सत्व करा जस तामस कर्म कें करै है जो कर्म जा देह तैसे ही जन्म लेहै २७ कहूं सतो गुण कर्म कास जिन में बहुत ऐसे उ त्तम लोकन कूं प्राप्त होहै कहूं दुःख जिन में उत्तम फल और क्रिया कर्म जिन में ऐसे लोकन कूं रजो गुण कर प्राप्त होहै और तम प्रोक जिन में उत्कर्ष ऐसे लोकन कूं तमो गुण कर व्याप्त होहै २८ कबहूं पुरुष होहैं कबहूं नपुंसक होहैं कबहूं स्त्री हो

यदात्मानं विज्ञाय भगवन्तं परं गुरुं पुरुषस्तु विषज्जेत गुणेषु प्रकृतेः स्वदृक् २७ गुणाभिमानी स तदा कर्माणि कु रुते वशः शुक्लं कृष्णं लोहितं वा यथाकर्माभिजायते २८ शुक्लात्प्रकाशभूयिष्ठाल्लोकानाप्नोति कर्हिचित् दुः खोदर्कान्क्रियायासांस्तमःशोकोत्कटान्क्वचित् २९ क्वचित्पुमान्क्वचिच्च स्त्री क्वचिन्नोभयमन्धधीः देवो म नुष्यस्तिर्यग्वा यथाकर्मगुणं भवः ३० क्षुत्परीतो यथा दीनः सारमेयो गृहं गृहं चरन्विन्दति यद्दिष्टं दण्डमोदन मेव वा ३१ तथा कामाशयो जीव उच्चावचपथा भ्रमन् उपर्यधो वा मध्ये वा याति दिष्टं प्रियाप्रियम् ३२ दुःखेष्वे कतरेणापि दैवभूतात्महेतुषु जीवस्य न व्यवच्छेदः स्याच्चेत्तत्तत्प्रतिक्रिया ३३

है अंधजा की बुद्धि जा देह मैं जाय ताई में प्राप्त होहै कबहू देवता मनुष्य पशु पक्षी यह होहै जैसे कर्म करै है गुणनते तैसेई जन्म होहै २५ जैसे क्षुधा कर व्याप्त दीन अकेलो घर घर में विचरत कुत्ता की नाई जो प्रारब्ध है ताय कहूं अन्न कहूं मार ही पधरतिनै प्राप्त होहै ऐसेई व्यास जा की आशक्ती ऐसो जो जीव सो ऊंच नीच मार्गन में भ्रमत जो प्रिय प्रारब्ध मैंलि खोई ताय भोगेहै ३१ और अध्यात्म अधिभूत अधिदैव तीन प्रकार के तापतिन में ते जो ताको प्रतिकार करैं तोऊ या पुरुषको दुःख कर वियोग नहीं होहै ३२

भा. त.
६१

याहू ईश्री जाकी सेंना तिन कर विषयसेवन करै है पंच सूत तिन कर रचि नोदेह कंडनी पलनी चलनी उडकुंनी भाजेनी एजो पांच सूत तिन नैं विनो देहै सोई सूत पति कहीये २० संवत्सर जाको चंडवेग है जाकर काल लषिये है ताके दिन तो ३६० गंधर्व हैं और रात्रि गंधर्वी है सोहउपरतीन से ते परि भ्रमण कर आयुकूं हरे है २१ काल कन्या जरा सा साक्षात् जरा वे है ताहि कोई लो कन ही अभिनंदन करै है ताहि पतन को ईश्वर मृत्यु लोकन को क्षय करि प्रवर्ति ताति न हीं नाती तो ता कर गुह रा

एकादशेन्द्रियचमूः पंचसूनाविनोदकृत् संवत्सरश्चण्डवेगः कालो येनोपलक्षितः २० तस्याह्ता नीह गंधर्वा गंधर्व्यो रात्रयः स्मृताः हरन्त्यायुः परिक्रान्त्या षष्ट्युत्तरशतत्रयम् २१ कालकन्या जरा साक्षाल्लोकस्तां नाभिनन्दति स्वसारं जगृहे मृत्युः क्षयाय यवनेश्वरः २२ आधयो व्याधयस्तस्य सैनिका यवनाश्चराः भूतोपसर्गाशुरयः प्र ज्वारो द्विविधो ज्वरः २३ एवं बहुविधैर्दुःखैर्दैवभूतात्मसम्भवैः क्लिश्यमानः शतं वर्षं देहे देही तमोवृतः २४ प्रा णेन्द्रियमनोधर्मानात्मन्यध्यस्य निर्गुणः शेते काम लवान्ध्यायन्ममाहमिति कर्मकृत् २५ यदात्मानमविज्ञाय भगवन्तं परं गुरुं पुरुषस्तु विषज्जेत गुणेषु प्रकृतेः स्वदृक् २६ गुणाभिमानी स तदा कर्माणि कुरुते वशः शुक्लं कृष्णं

पीड़ा

करैहै २२ आधि व्याधि संसय भ्रम चार पवन ये मृत्यु की सेना है और प्राणी की पीड़ा जामें शीघ्र है मृत्यु हेतु वेग ता कों ऐसो प्रज्वार है २ प्रकार को ज्वर है शीत उष्ण जाके भेद है २३ ऐसो परोक्ष कर जो अर्थ ताहि व्याख्या करके सब कथा को तात्पर्य कहै है ऐसे अध्यात्म अधिभूत अधि दैव बहुत प्रकार के जे दुःख तिन कर व्याप्त अहंता ममता ऐसे सो वर्ष ताई देह में क्लेश पावत यह जीव तमो गुण कर व्याप्त है वास्तव तें गुण परंतु माणई श्री मन के जो धर्म तिनें आत्मा में अध्यास करि के विषय

प्रवृत्तिनिवृत्ति प्राणसो पांचाल संज्ञक कहीयें तामें पितृयान देवयान हे कारण तामें श्रुतधर जो संग लैके जायहैं १३ आसुरी नीचे को द्वार तामें मेढ़कर ये व्यवाय स्त्री नाम मैथुन की रति हैं उपस्थ दुर्मद कहियें निर्ऋति गृह कहीयें १४ वेशस नरक पाव कहीयें लुब्धक पाव कहीयें गुदपाम होउद्वार हैं तामें तापन सो कर्म करें हैं पायन सो चलें हैं १५ अंतःपुर हृदय कहीयें विसूचीमन कहीयें तामें मोह प्रसाद हर्ष हूनें रजसत्त्व तम इन गुणन कर पावेहैं १६ गुणन कर व्याप्त बुद्धि जैसें स्वप्नमें विकार पावे हैं तैसें ई उपद्रष्टा आत्मा बुद्धि

प्रवृत्तं च निवृत्तं च सास्त्रं पांचाल संज्ञकं पितृयानं देवयानं श्रोता श्रुतधरा व्रजेत् १३ आसुरी मेढ़ मर्वीरद्वा व्यवायो ग्रा मिर्णां रतिः उपस्थो दुर्मदः प्रोक्तो निर्ऋति गृह उच्यते १४ वेशसं नरकं पायु लुब्धकोंसो नमे श्रणु हस्तपादौ पुमान् ताभ्यां यो याति करोति च १५ अंतःपुरं च हृदयं विसूचिर्मन उच्यते तत्र मोहं प्रसादं चात्र हर्षं प्राप्नोति तद्गुणैः १६ यथा विक्रियते बुद्धि गुणान्को विकरोति च तथात्मापि उपद्रष्टात्मा तद्वृत्ती रनुकार्यते १७ देहो रथस्त्वंद्रियाश्व संवत्सर रयोगतिः द्विचक्र कर्म त्रिगुण ध्वजापंचासुबंधुरः १८ मनोरश्मि बुद्धिसूतो हृन्नीडो द्वंद्व कूबरः पंचेंद्रियार्थ विप्रासे सप्तधातु वरूथकः १९

आकूतिर्विक्रमो बाह्यो मृगतृष्णां प्रधावति

वृत्तनवृत्ति अरु भूर्भुव कहियेहै देहीरथ है ईद्रीयन के घोड़ा हैं संवत्सर जो सोहै वेग जाको बरसतें अमितिहै स्वप्नादि को मोह बुद्धि सारथी हृद हीअमीहै दुःख सुख मोह बुद्धि साईनमहै और नलही हैं बंधन जाको १७ मनही जाकी बागडोर बुद्धि जाको सारथी १९ पांच जाके ज्ञान और कर्म इंद्रियन के विषय में है प्रलेप जाको सप्तधातु है चर्मादि कप्रा वर्ण जाके १८ पांच कर्म इंद्री जामें वारह गत प्रकासें हैं विषयरूपी मृगतृष्णा जामें दौरै है २०

बुद्धि जो है ताय स्त्री जान जाको कीयो अहंता मम ता या देहमें है जा बुद्धि को आधीन कर इंद्रीयन के विषयन कूं परजीव भोग करें है ५ ई ही ही याके सखा हैं जिनकों कीयो ज्ञान और कर्म है उन्हि इंद्रीन की वृत्ति हैं सो सखी हैं पांच है वृत्ति जाकी ऐसे सो प्राण सर्प की सी नाई चलें हैं ६ दो नेत्र छिद्र हैं नासिका के कर्ण एक मुख एक शिश्न एक गुदा इन द्वारन कर बाहिर जातें और जीवात्मा इंद्रीन संग लै जाहै ७ दो नेत्र दो नासिका मुख पांच द्वार पूर्व में कीये हैं दक्षिण कर्ण

बुद्धिं तु प्रमदां विद्यान्ममाहमिति यत्कृतं यामधिष्ठाय देहेस्मिन् पुमान् भुंक्तेक्षिभिर्गुणान् ५ सखाय इंद्रीयगणा ज्ञानं कर्म च यत्कृतं सख्यस्तद्वृत्तयः प्राणः पंचवृत्तिर्यथोरगः ६ बृहद्बलं मनो विद्यादुभयेंद्रियनायकं पांचा लाः पंचविषयास्तन्मध्ये नवखं पुरं ७ अक्षिणी नासिके कर्णौ मुखं शिश्नगुदाविति द्वे द्वे द्वारौ बहिर्याति यस्त दिंद्रिय संयुतः ८ अक्षिणी नासिके आस्यमिति पंच पुरः कृताः दक्षिणा दक्षिणः कर्ण उत्तरा चोत्तरः स्मृतः ९ प श्चिमे इत्यधो द्वारौ गुदं शिश्नमिहोच्यते खद्योताविर्मुखी चात्र नेत्रे एकत्र निर्मिते १० रूपं विभ्राजितं ताभ्यां विचष्टे चक्षुषेश्वरः नलिनी नालिनी नासे गंधः सौरभ उच्यते ११ घ्राणोवधूतो मुख्यास्ये विपणो वाग्विद्रसः आ पणो बहूदनो बहूदनो दक्षिणः कर्णः उत्तरो देवहूः स्मृतः १२

दक्षिण द्वार है उत्तर कर्ण उत्तर द्वार है ८ गुदा और शिश्न ये दोनों नीचे पश्चिम द्वार कहीयें और खद्योत की नाई यो दो जाके प्रकाश और अविर्मुखी बहुत जो में प्रकाश एक नेत्र दो उएक जगे रचे हैं विभ्राजित रूप तासि नेत्र कर रूप रंजन है वे है १० नलनी नालनी ये दो उ नासिका के रेघ्र गंध कहियें अवधूत कहीयें घ्राण और विपण वाणी कहीये रसचि तरस नैद्री कहीये ११ आपमान व्यवहार कहीयें विचित्र अन्न सो बहूदन कहीये पितृहूः दक्षिण कर्ण कहीयें देवहू उत्तर कर्ण कहीयें १२

तैसे मानसरोवरकौ रहिवेवारो हंसः वाहूसरे हंसनैं समझायौ सो स्वरूपमैं स्थित होइ वाईश्वरके वियोगकरि नष्ट जो स्मरण ताय फेर प्राप्त होत भयौ ६३ हे प्राचीनवर्हि यह अध्यात्मज्ञान राजाकी कथा कैमिष करिकैं दिखायौ जो ते जगत्के पालन तारे भगवान् तिनकौं परोक्षप्रिय है ६४ इति चतुर्थस्कंधे अष्टाविंशोध्यायः २८ प्राचीनवर्हि नारदतें पूछे है हे भगवान् तुम्हारे वचन हम पै मलीन है नहीं जानौं जाहे और जानौवी जाहे याकूं कवीस्वर मलीन रहे जाने हैं और कर्मसौ मोहमनहीं जाने हैं १

एवं स मानसो हंसो हंसेन प्रतिबोधितः स्वस्थस्तद्व्यभिचारेण नष्टमापपुनः स्मृतिः ६३ वर्हिष्मन्नेतदध्यात्मं पारोक्ष्येण प्रदर्शितं यत्परोक्षप्रियो देवो भगवान्विश्वभावनः ६४ इति श्रीभागवते चतुर्थस्कंधे अष्टाविंशोध्यायः २८
प्राचीनवर्हिरुवाचः भगवंस्ते वचोस्माभिः न सम्यगवगम्यते कवयस्तद्विजानंति न वयं कर्ममोहिता १ नारद उवाचः पुरुषं पुरंजनं विद्याद्यद्व्यनक्त्यात्मनः पुरं एकद्वित्रिचतुःपादं बहुपादमपादकं २ योविज्ञाताहृतस्तस्य पुरुषस्य सखेश्वरः यन्न विज्ञायते पुंभिर्नामभिर्वाक्रियागुणैः ३ यदा जिघृक्षन्पुरुषः कार्त्स्न्येन प्रकृतेर्गुणान् नवद्वारं द्विहस्तांघ्रि तत्रामनुत साध्विति ४

तब नारदजी बोले हे राजन् या जीवकूं पुरंजन तूं जान् जो अपनेकौं मन कर और कूं प्रगट करैं २ एक पाउ दो पाउ तीन पां० चार पांउको बहोत पाउ कौ बिना पाउकौ पुर विस्तारै है २ अन अविज्ञात नाम ईश्वर या जीवकौ सखा कह्यौ है जो पुरुषनमैं नाम क्रिया गुणन करि नहीं जानौ जाहे ३ जब यह पुरुष संपूर्णताकर प्रकृतिके गुणनकौं भोग चाहे है तब नौ द्वार दो हाथ पांउ ऐसौ जो मनुष्यदेह ताय भलौ मानत भयौ या मनुष्यदेहहीमैं सब विषयभोग करि पूर्ण होहे ४

भा॰ च॰
८९

पांच इंद्रियनके विषय सोई उपवन हैं नौ इंद्रीनके छिद्र हैं जल अन्न तेज कोठे हैं तानें इंद्रीओर मन ये ही विषयनके अर्पन करनवारे बौपारी हैं मेंहती रूप हैं पांच महाभूतही अव्यय प्रकृती है शक्तिही है अधीस जाकी ऐसौ पुरुष या पुरमे प्रविष्ट होई कछू नहीं जानें हैं अपने स्वरूपकूं भूल जाहे ५८ तापुरमें तूं रमणमाण रामनेने स्पर्श जाकौ कयौ याह नहीं जानें हैं अलन्त्वमैं स्मरण जाकौ ऐसौ वाकीके संगतै ऐसी पापिष्ठ दशाकौ प्राप्ति भयौ ५९ अब तत्व उपदेश करैं हैं

पंचेंद्रियार्था आरामा द्वारः प्राणा नव प्रभो तेजोबन्नानि कोष्टानी कुलमिंद्रियसंग्रहः ५७ विपणस्तु क्रियाशक्तिर्भूतप्रकृतिरव्ययाः शक्त्यधीशः पुमांस्त्वत्र प्रविष्टो नावबुध्यते ५८ तस्मिंस्त्वं रामयास्पृष्टो रममाणोऽश्रुतस्मृतिः तत्संगादीदृशीं प्राप्तो दशां पापीयसीं विभो ५९ न त्वं विदर्भदुहिता नायं वीरः सुहृत्तवः न पतिस्त्वं पुरंजन्या रुद्धो नवमुखे यया ६० माया ह्येषा मया सृष्टा यत्पुमांसं स्त्रियं सतीं मन्यसे नोभयं यद्वै हंसौ पश्यावयोर्गतिं ६१ अहं भवान्न चान्यस्त्वं त्वमेवाहं विचक्ष्व भो न नौ पश्यंति कवयश्छिद्रं जातु मनागपि ६२

न तो तू विदर्भकी पुत्री न तेरो यह पतिः न तू पुरंजनीकौ पति जो वैरी घरको पतिन ही पुरमैं तू रह्यौ ताहकौ न तू पतन नहीं ६० यह मैंने माया रची है जो पूर्वजन्ममें अपनेकूं पुरुष मानत भयौ या जन्ममे स्त्री अपनेकौं अश्व मानत भयौ यह माया है वास्तवतें न तू स्त्री न पुरुष हम तुम दोउ शुद्ध हैं हमारे स्वरूपकूं देखि ६१ या रूप आत्मानमैं अप्रसन्न वैत त्वादिभेद कै सो सोनहीं नरो ज है ते जैसें पुरुष एकही आत्माकौं दर्पणमें तो निर्मल और वहो स्थित है जैसें और परायेने नन मैं मलीन छायो च वलदेखे है ऐसें ही

तू कौन है और कौन की है और यह जो न सो बंदें ताय तू पोच करें है और मेने तेरी पहलें सखा है तू मोकू जाने है जाके संग कष तें पति लें विचरत भई और वह सारवा मुख कों अनुभव करत भयो ५२ और जो तू मोहि नहीं जाने है तो अविज्ञात तें सखा जाने ऐसे आत्मा हंसो स्मरण करे है जो कोई अविज्ञाता नामा मेरो सखा होत भयो ऐसे सम्हारे है हंस खेद तू मोहि छोडि के गयो स्थान चाहत पृथ्वी भोगन में रमत भयो ५३ हे आर्य्ये हम तुम दोउ अद्भस सखा हैं मानस जो हृदय सो स्थान जिनको का यासो

कात्वं कस्यासि को वा यं सयाने यस्य शोचसि जनासि किं सखायं मां येनाग्रे विचचर्थ हः ५२ अपि स्मरसि चात्मान मविज्ञात सखं सखे हित्वा मां पदमन्विच्छन् भौगान् भोगरतो गतः ५३ हंसा व हं च त्वं चार्य सखायौ मानसायनौ अभूतामंतरा वौ कः सहस्र परिवत्सरान् ५४ सत्वं विहाय मां वन्धो गतो ग्राम्यमतिर्मही विचरन् पदमद्राक्षीः कया चिन्निर्मितां स्त्रिया ५५ पंचारामं नव द्वारमेक पालं त्रि कोष्ठकं षट्कुलं पंच विपणं पंच प्रकृति स्त्री धवं ५६

हंस पक्षी मानसरोवर में स्थित होत भये हजारन वर्ष ताई जब ताई महा प्रलय तब तो विना ही घर स्थित होत भए ५४ हंस वंधू सो तू मोहि छोडि ग्राम्य सुख में जाकी बुद्धि ऐसो तू पृथ्वी में जीवत भयो उहां विरक्त कों एक स्त्री ताकी माया ते रच्यो जो स्थान ताहि देखत भयो कैसो स्थान है ताय देखत भयो ५५ पांच जा में बाग एक जा में पालक तीन जा में कोष्ठ विषयन में प्राप्त करिवे वारे छै जा में वणिक पांच जा में ई द्री ही विषय पांच महा भूत है उपादान कारण जाके स्त्री ही जा मेरा धारै ५६

एक दिन उपरा महा ग्राम भयो जो पति तहि न जानत ता उसमें सु स्थिर जाको आसन् या ही तें न जानत सखी जो उरजनी लोपत ले की सीना ई हिंग जाय सेवन करत भई ४५ पति के चरणन कों भजन न जब कीयो तब पति के चरणन में गरमी न देष तभई तब तौ व्याकुल जा को हृदय ऐसें होत भई जैसें यूथ तें मृगी भय होहै ४६ पति रहित हीन जो आत्मा ताहि सोच तभई तब तौ व्याकुल होत भई आंसुन कर स्तनन कूं सींचत और वन में स्वस्वर कर रोवत भई ४७ हे राजा न मैं स्त्री ए करत अति व्याकुल होत भई आंसु न कर स्तनन कूं सींचत और वन में स्वर कर रोवत भई ४७ हे राजा न मैं स्त्री ए

अजानती प्रियतमं यदोपरत मंगना सुस्थिरासन मासद्य यथा एवं छपाचरत ४५ यदा नोपलभेतांघ्रा वूष्माणं पत्यु रर्चती आसीत्संविग्न हृदया यूथ भ्रष्टा मृगी यथा ४६ आत्मानं शोचती दीना मवंधु विक्लवाश्रुभिः स्तनाव सिञ्चती पनी विपिने स्वस्वरं प्ररुरोद ह ४७ उत्तिष्ठोत्तिष्ठ राजर्षे इमामुदधि मेखलां दस्युभ्यः क्षत्र बंधुभ्यो बिभ्यतीं पातुमर्हसि ४८ एवं विलपती वाला विपिने नगता पति पतिता पादयोर्भर्तुरुदत्यश्रूण्य वर्तयत ४९ चितिं दारुमयीं चित्वा तस्यां पत्युः कलेवरं आदीप्य चानु मरणे विलपंती मनो दधे ५० तत्र पूर्वतरः कश्चित्सखा ब्राह्मण आत्मवान् सांत्वयन्वल्गुना साम्ना तामाह रुदतीं प्रभो ५१

तब वे राजा की स्त्री हे वीर समुद्र जाके चारो ओर ऐसी जो पृथ्वी सो अधर्मी जो क्षत्री ... गिरि गो आंसुन कूं डारत भई ४९ काष्ठ मई चिता वनाई तामें पति को शरीर धर के विलाप करकर के पति के संग जायवे कूं मन करत भई ५० तासमें अनापास अन्य कोई ईश्वर याको पहलो सखा ब्राह्मण आप कैवा सनकरसं बोधन देत या रोवती सू पर बोलत भयो ५१

 तिन ते डर पै है ताय रक्षा करवे कूं जोग्य है ४८ ऐसे वन मे पति के अस्तगत उरजनी विलाप करती पति के पावन में

ताविदर्भमें मलयध्वज एक वेटी उपजावत भयौ और छोटे सात पुत्र ते सातौं विडदेश के राजा भये पुनीतो श्रीकृष्ण
सेवारुचि भई भागवत संग कर भगवद्धर्म में रुचि होत भई कैसी रुचि है स्यामसुंदर श्रीकृष्ण कौ हृदय में धीच जाकर जात भई
पीछे सात पुत्र भए विष्णु को स्मरण कीर्तन श्रवण पादसेवन अर्चन वंदन दास्य ये भक्ति प्रकार भये सख्य और आत्मनिवे
दन एतत् स्वरूप ज्ञान याके पीछे होत हैं आगे इन तेउन कौं भगवान् ही उपदेश करेंगे आपही इन की उत्पत्ति नहीं ३० तिन श्र
वण कीर्तनादिकन के एक एक के अर्बुद अर्बुद होत भये अनेक प्रकार होत भए जिन के धर्मवारे न करय रथ्वी कल्याण कौं पावे हैं औ

तस्यां स जनयां चक्रे आत्मजामसितेक्षणां यवीयसः सप्त सुतान् सप्त द्रविडभूभृतः ३० एकैकस्याभवत्तेषां राजन्न
र्बुदमर्बुदं भोक्ष्यते यद्वंशधरैर्मही मन्वन्तरं परम् ३१ अगस्त्यः प्राग्दुहितरमुपयेमे धृतव्रतां यस्यां दृढ
च्युतो जातः इध्मवाहात्मजो मुनिः ३२

रमन्वन्तर लाहूं तें परे हैं और विधान करमन ते दृढ़ता करीये हैं वेशधरवेवारे संप्रदायने इनि नकर सव पृथ्वी कोक
ल्याण होहै ३१ अगस्त जो मुनि सो वाके पहले भई वेटी ताय विवाहत भयो अर्थात् कौं मन श्रीकृष्ण में दृढ प्रति
करवाधत भयो कैसी है रति ही धारे है शम दमादिव्रत जामें दृढच्युत में भयो है, अर्थात् श्रीकृष्ण रति भए सत्य
लोकादिकन में भोग्य होत भयो सोई वैराग्य उपसमात्मक कहे हैं याते मुनी है फेर कैसो है इध्मवाह है पुत्र जाकों
अर्थात् विना वैराग्य ज्ञान की धारणा जाने हैं जब वैराग्य भयो तब दृढ़ कौं दूसवेध भयो ३२

जो या निर्दई नें काम्य कर्मन में जे यज्ञपशु मारे हैं ते याके पाप कौ स्मरण करत क्रोध कर कर काटत भये २६ प्रमाद के संग कर
दूषित वहोत वर्षन तांई प्रार्ति कौं भजन व स्मरण ज्ञान कौं नष्ट भयो अनंत पार जो तुमता में मग्न होत भयो २७ अंतका
ल में वा स्त्री कौं स्मरण करत भयो ताते स्त्री देह प्राप्त भयो याके पीछे विदर्भ के घर में स्त्रीन में उत्तम होत भयो स्त्री कौ ध्यान करत
स्त्रीत्व प्राप्त भए संते पतिव्रता ध्यान कर और स्वर्ग दूषित कर धार्मिक जो विदर्भ ताते जन्म होत भयो फेर धार्मिक सत्संग
रु हृदय ताके भगवत् जो मलयध्वज ताकौ संग होत भयो याते विष्णु भक्ति भई ताते वैराग्य तव वही पति रूप जो गुरू ताय

ते यज्ञपशवोऽनेन संज्ञप्ता ये द्युनिर्घृणाः कुठारैश्छिच्छिदुः क्रुद्धाः स्मरन्तोऽमीवमस्य तत् २६ अनन्तपारे तमसि मग्नो
नष्टस्मृतिः समाः शाश्वतीरनुभूयार्तिं प्रमदासंगदूषितः २७ तामेव मनसा गृह्णन्बभूव प्रमदोत्तमः अनन्तर
विदर्भस्य राजसिंहस्य वेश्मनिः २८ उपयेमे वीर्यपणां वैदर्भीं मलयध्वजः युधि निर्जित्य राजन्यान् पाण्ड्यः
परपुरंजयः २९

पतिव्रत धर्म कर भजन करे हैं ताकौ वाके प्रसंग कर लब्ध जो ज्ञान ताकर महाशय कथा कौ तात्पर्य और स्वालंकार मा
मात्रारें विशिष्ट दर्शनेन कर उपलक्षित कर्म और प्रजा पालन कर यज्ञादि कर स्वर्ग शोभा रहे हैं तिन में श्रेष्ठ वाके घर में जन्म
होत भयो अर्थात् कर्म रु कौं संग होत भयो २८ मलय कर उपलक्षित जो दक्षिण देश ताके मध्य ध्वजा की सी नाई दर्शनीय
अंसोद्देश जामें विस्मृत भई जन की प्रधानता तामें श्रेष्ठ परम भागवत विष्णु आत्मक बुद्धि कौ जोग्य सो मलयध्वज बुद्धि
में सत्रीन कूं जीत वा वैदर्भी कौं विवाहत भयो अर्थात् पुरंजन भागवत संग कौं प्राप्त भयो २९

जोमेरे भोजन करे विना भोजन नहीं करे है मेरे विना स्नान करें नहीं मेरे क्रोध करें पे संत्रस्त होय और भर्त्सन कीये पें भय तें मोंन लेहें १९ अब वे की जो मैं ताय जो समझावती सो मेरे देषो न रह्यो पें गृहस्थ धर्म जाचलाय सकें जो नहीं अ पयाव त्रवती हैं यातें चलावें तो जोग्य है अथवा मेरे विरह मैं परजायगी २० पे हीन पुत्र पराश्रय कन्या मेरे गए पें कैसे जीवेंगे भिन्न है नौका जैसें वैसमुद्र मैं कैसें जीवैं २१ ऐसें सोच कर वेताय कतोंनहीं परि तेरी कृपण बुद्धि करें हैं ताय यह एक रवे

अनध्य नाथिते कुंजेन स्त्रातो स्नाति मत्यरा मपि रूषेषु संत्रस्ता नास्तितेपन कारुन यात् १९ प्रबोधयति माऽविज्ञं व्युषिते शोक कर्षिता वत्सेत न्रूह ते धीयं वीरसू रुदपिने घाति: २० कथंतु दारका दीना हरिका वपरायणा वर्तिष्यते मपि गते भिन्न नाव इवोदधौ २१ एवं कृपण या बुद्ध्या शोचंतमतदहर्ष गृहीतं कृत धीरेरानपनामाम्पय घात: २२ पश्चवयवनैरेष: नील मान: स्वके सुपं अनूवर्तत व: पेषा शोचती मश्रानातुरा २३ पुरिं विलापोपगम भयस्त्रो भुजंग मः य घानुमे वाम पुरीषिणी णीप्रकृतिगता २४ विक्रुष्यमाण: प्रसभं पवनेन वलीयसा नाविंदत मसा विष:

मत्वापो हुंपुरा: २५

कीजा की बुद्धि ऐसो भयना मामायके प्राप्त होत भयों २२ पक्षकी सीनाई पवन मैं वांधि जब अपने स्थान कों प्राप्त कीयो तब शोच कर के आतुर होई जात भयों ओर ईश्वर यह वाके पीछें जात भयों २३ एवेपां जो सर्व स्वता कों छोडिजब जात भयों तब वह पुरी विपरीत होइ अपने स्वभाव कों प्राप्त होत भई कृतामहा भूतात्मा कों प्राप्त भई २४ बलवान नकर रवेंची येहे ऐसो पुरंजन लमोचण कर व्याप्त अपनो पहलो सब परम हितकारी सुरितायन जानत भयो २५ इति नमः

भा.न. ८५

तापुरी कों जरे भत्यवर्ग पुरवासी पुत्रादिक इन कर सहित वर्तमान वसें जामें कुटुंब सो पुरंजन कुटुंब सहित ताप कूं प्राप्त होत भयो १२ पवन नें रोके हैं इंद्रिय स्थान या तें प्रजा नें स्वामी जा कों जरे ऐसे पुर पालन प्राण तापुरी कों काल नें आने पर लेहें ऐसें संतें वह वहां तें अन्त ताप कों प्राप्त होत भयों १३ वहुत कष्ट कर कें तें ता प जा कों सो पुर बाल वा पुरी को रस को रि के कों समर्थ न होत भयो उहाले निकस वे की इच्छा कर त भयो जैसें अग्नि जामें लगी ऐसो वृक्ष ता की खोतर में सें सर्प निकसें है १४ गंधर्वनें दोस्य

तस्यां संदह्यमानायां सपौरः सपरिच्छिदः कौटिविका: कुटुंविन्याय यउपातसान्वय: १२ पवनोप रुद्धय तनोयत्तो यकाल कन्यया पुर्यै प्रज्वारसंरक्षा पुरपालोन्य तप्यत: १३ नशेके सोविनुं तत्र पुरुह कुच्छोरुवेपथु: गंतुनेच्छत्ततो वृक्षा कोटरादिव सानलात् १४ शिथिलांऽपय वो यहिं गंधर्वै र्हृत पोरुषः यवनैररिभि राजन्नुपरुद्धो रुदोदह १५ दुहितृ पुत्र पौत्रांश्च जामित्रा मात्य पार्षदान् स्वत्वावशिष्टं यत्किंचिद्गृह कोशपरिच्छिदं १६ अहं ममेति स्वीकृत्यं गृहे पुन: ममतीषेही दृधोप्रम हयाद्दीनो विप्रयोग उपस्थिते १७ लोकांतरं गतवती मपनाथा कुटुंविना वर्ति ष्यते कथं त्वेका वालकाननु शोचती १८

जाकी हस्यो शिथल जो पवन तिन्न नैं कंठ मैं रोक्यों ऐसो रोवत भयों १५ वेटी पुत्र पौत्र वधू जमाई ओर पार्षद ओर प्रजे रव स्वमात्र अवशिष्ट भोगताय पहलें ही सोचे है और स्त्री एा भयो हे यह भेअर अपरिछेद्य ताही मैं ऐसें ऐसे घर नमें अंगीकार कर नर स्त्री नर सहित इन कों वियोगताय प्राप्त भये संतें हीन होय चिंता करत भयों अनाथ कुटुंबनी यह स्त्री गये

कालकन्यानैं आलिंगन जाकौ कीयौं नष्ट जाकी शोभा रूपरस विषयमैं जाकौ चित्त नष्ट जाकी बुद्धिः गंधर्वयवन
नैं बलात्कार करि ऐश्वर्य जाकौ हरत भयौं उत्पातादिकन मैं प्रेरे हुए इन बातन के प्रतीकार कौ प्रसित होत भयो ६ अपनी
पुरी कौं विशीर्ण देषि और स्त्री पुत्र पौत्र अमात्य मृत्य इन नैं प्रतिकूल देषि और अपेक्षित विषय व्यापक देखि और आद
र नहीं करै है स्वाधीन नहीं और इस्त्री कूं गति सौं हृदये देखि बाबुषि हैं मैं निस्सरयौं नहीं और आप कूं कालकन्यानैं ग्रसौ
और पंचाली विषादि कनारि दूषित तिनैं देखि दुरंत चिंता कौं प्राप्ति भई कौन बातन कौ प्रतिकार कौन प्राप्ति होत भयो ८

कन्यायगूढांन षश्री रूपरो विषयात्मकः नष्टो प्रज्ञो हृतैश्वर्यो गंधर्व यवनैर्बलात् ६ विशीर्णां स्वपुरीं वीक्ष्य
प्रतिकूलाननादृतान् पुत्रान्पौत्रानुगामात्यान् जायां च गतसौहृदां ७ आत्मानं कन्यया ग्रस्तं पांचालानरि
दूषितान् दुरंत चिंतामापन्नो न लेभे तत्प्रतिक्रियां ८ कामानभिलषन्दीनो यातयामांश्च कन्यकाः हं
नुभवन्नमेराजा तां पुरीमगणत्कामतः १० विगतात्मगतिः स्नेहात्पुत्रदारांश्च लालयन् ९ गंधर्वयवनाक्रांतो हि
तां पुरीं कालकन्योपमर्दितां १० तत्रयमा मोस तनो भ्राता प्रज्वारः प्रत्युपस्थितः ह्हर्तुर्तो पुरीं कृत्स्नां भ्रातुः प्रियचिकी
र्षया ११

कालकन्यानैं निःसार कीयौ ऐसे जो काम तिनैं अभिलाषा करत दूरि भई है परलोक की गति और पुत्रादि
कस्नेह जाकौं पुत्र स्त्रीन कौं लडावत भयौं ९ और गंधर्व यवननैं आक्रमण जो कीयौं और काल कन्यानैं
जायमीडी जा की पुरी ताय इच्छा जो छोडिवे की नहीं परंतु छोडवे कौं प्रारंभ करत भयौं १० इतनेमें भय औ वडौ
ने या प्रकार प्राप्त के प्राप्ति भयो सो भैया कें प्रिय करवे की इच्छा करि वा पुरी कौं जरावत भयौ ११

भा॰ च॰
८४

यत प्रज्वार वैभव ज्वर मेरौ भ्राता तू मेरी भगनी है और तुम्हारे कोई जाकौं जानैं नहीं कितनें आयौं भीम भय यह जानि ३०
इति श्री भागवते चतुर्थ सप्तविंशो २७ नारद कहैं हैं हे राजा अब पुरंजन के उत्सव देतौ लाग एवं लीन प्रकार कहें हैं भय कौं
जैसें वांके लोग सब कौं आज्ञाकारी ते प्रज्वार काल कन्या इनकौं संग लैं याय पृथ्वी मैं विचरत भये १ वे एक दिन पुरंजन की
पुरी पृथ्वी के भोग करि अपि जीर्ण प्राण करि पालना ता दिरोकत भयों २ कालकन्या हू बलात्कार करि पुरंजन के पुर कौ भोग

प्रज्वारो यं मम भ्राता त्वं च मे भगिनी भव चराम्य भाभ्यां लोकेस्मिन्नव्यक्तो भीमसैन्यकः ३० इति श्री भागवते चतु
र्थ स्कंधे पुरंजनोपाख्याने सप्तविंशोध्यायः २७ नारद उवाच सैनिका भय नाम्नो ये वर्हिष्मन्दिष्टकारिणः प्रज्वाल का
लकन्याभ्यां विचेरुरवनीमिमां १ तेएकदा तु रभसा पुरंजनपुरीं नृप रुरुधुर्भौम भोगाढ्यां जरत्पन्नगपालितां २
कालकन्यापि बुभुजे पुरंजनपुरं बलात् ययाऽभिभूतः पुरुषः सद्योनिःसरतां भयात् ३ तयोपभुज्यमानां वै यवनाः
सर्वतो दिशः द्वार्भिः प्रविश्य सुभृशं प्रार्दयन्सकलां पुरीं ४ तस्यां प्रपीड्यमानायामभिमानी पुरंजनः अ
वापोरुविधांस्तापान् कुटुंबी ममताकुलः ५

करत भई जा जरा नैं पराभव जा कौ कीयौं ऐसो पुरुष तात्काल ही निस्सारता कौं प्राप्ति होते है ३ तहां राजा नैं भोग जा कौ कौ
यौं ऐसी जो पुरी ताहि द्वारन राह प्रवेश करि पवन सब और तें पीडा देत भयौं पवन रोग रूप करि प्रवेश करि पीडा देत भयौ ४
ता पुरी कौ पीडा भया संतें कुटुंबी ममता व्याप्त अभिमानी पुरंजन या प्रकार कें अनेक तापन कौ प्राप्त होत भयौ ५ इदंन मः

तवनषहैं मेनेंकीयो है संकल्प जाकौं ऐसीकालकंन्यामेनेंवतायों पवनकों राजा भयनामाजोपति तायवरत नई २३ जराजाई सेवासों वोली हेवीर्यपवन मैं एष: वांछित जोरूपपति तायवरूं हूं तो मैंकीयो प्राणीनको संकल्पनिष्फलनषनहीं है २४ और जो लोकुतैं चपनेवेदतैं जो देवत्व गार्हस्थकर प्राप्ति भयों तामे मागवे वारेनको जोनहीं देते और जो कर दीयमानता यनहीं ग्रहण करैहैं वेकोउ इगाम्हती अज्ञानी तिने साधलोग सोचकरैहैं २५ यातें हे भद्र भजासि को मेंतायभजनकरि और मोपै दयाकर यही पुरुषनकों धर्म है जो आर्त्तनिपै कृपाकरीयें २६ कोमलकंन्याने कहो जोवचनताहि पावननकौर

ततोखिलसंकल्पां कंन्यया पवनेश्वरं मयोपहितमासाद्य: वक्त्रेनाभ्यभर्यपति २३ अथमं पवनानात्वां वृणेवीरेप्सितपतिं संकल्पत्वय मत्लानां छतकिलनरिष्यति: २४ छाविमावक्तसोचेती वालाचसादवक्त्रतों यस्तोकशास्त्रोपनतंनराति नसंछिति २५ अथोभजस्वसांभद्र भजंती मेदयांकुरु एतावान्पौरुषोधर्मो यदार्तानेनकंपते २६ कालकंन्यावदेतव चोनिसंम्य यवनेश्वरः चिकिषुर्देवगुह्येस स्मितंतमभाषत: २७ मयानिरूपितातुभ्यंपति रात्मसमाधिना नाभिनंदति लोकोयंत्वाम भद्रा मसंमतां २८ त्वमव्यक्तगतिर्भुंक्ष्व लोकंकर्मविनिर्मितं पातिमेषतनाष्टसा प्रजानाशंप्रणेष्यति: २८

जासनिकें प्राणीनकौंमरणचाहेहैं ताससुसिकायकैं वोलतभयो जरावोली २७ मैंनैंतो कूस्तानसुष्ठिकरपति निरूपनकीयोतें और लोग तो अमंद अमंगल नहैं तासितैं लोकनाहि अभिनंदन करैहैं २८ राजा वोल्यो हे तो कहोते प्राप्ति भई है ऐसे अलक्षित गति जाकी ऐसी कर्मचरित जे लोकताहि भोगकर ऐसें सवलोकननेंयत होइगो सवको प्रतिकूल है यातें लोकमोहि मारेगो यह संकामति करैं जो तुमेरी सेवा सें कें प्रजानको तुही नाश करैगो २८

अहो प्रजापति हेराजन् नूनिरदई इन तानें यज्ञमें मारेजे जीव समस्त यज्ञ पशु जातनतिनें देषि ७ सो तेरे दरहपीडको स्मरनकर नतेरां पूंछ दे देखि है जो कव मरेगो ओर जवतू मरैगो तववेई जिनके कोध अंसे लोह यमजे फरसातिनकरि तोहि मारैंगे ८ हे प्रजापते तेरां पुंसो देखिहें जो कव मरैगो ओर जवतूं मरैगो तबवे इनके कोध अंसे लोहयम जे फरसा तिनकरि तोहि मारैंगे ८ अहो प्रजापति तेरे आगारी कहूंगो पुरंजनको चरित्र प्राचीनवर्हि मो सुन तासवधने सो सुनि ९ ताजीवको विषयोचीनवही यवया संकटमें तेरे आगारी कहूंगो पुरंजनको चरित्र ते कोध जेसे लोहयम जे ताहि सो सुनि ९ ताजीवको विषयोदीन वही यवया संकट में तें रे अगारी कहूंगो यह सवके विपर्यय सारे जो राजा ताहि साक्षात वोधजमत्र हवेकों प्रतिकार संसार है सो ईश्वरके अनुग्रह करनिवृत्त होई है यह सवकों विपर्यय सारें जो राजा ताहि साक्षात वोध जमन्त्र हवे कों प्रति कार संसार है सो ईश्वर के अनुग्रह कर निवृत्त होई है यत सद वे को विपर्यय सारै ऐसेंजीवको मित्र होत भयो १० सो रे पुरंजन अपनो भोगायतन देह रहवेकों स्थान ताहि ढूंढत तव अपने अन्त रूप ते साप्त भयो। ऐसेंजीवको भित्र होत भयो १०

नारद उवाच: भोभो प्रजापते राजन् पशून्पश्य त्वयाध्वरे संज्ञापिताञ्जीवसंघान्निर्घृणेन सहस्रश: ७ एते त्वां संप्रतीक्षंते स्मरंतो वैशसं तव संपरेतमयःकूटैश्छिंदंत्युत्थितमन्यव: ८ अत्र ते कथयिष्यामि इमं इतिहासं पुरातनं पुरंजनस्य चरितं निबोध गदतो मम: ९ आसीत्पुरंजनो नाम: राजा राजन्बृहच्छ्रवः तस्याविज्ञातनामासीत्सखाविज्ञातचेष्टित: १० सोन्वेषमाण: शरणं बभ्राम पृथिवीं प्रभु: नाम रूपं यदाविंदत्तदभूत्स विमना इव ११ न साधु मेने ताः सर्वा भूतले यावती: पुर: कामान्कामयमानोसौ तस्य तस्योपपत्तये १२ स एकदा हिमवतो दक्षिणेष्वथ सानुषु: ददर्श नवभिर्द्वार्भि: पुरं लक्षितलक्षणाम् १३ प्राकारोपवनाट्टाल परिखैरक्षतोरणै: स्वर्णरौप्यायसै: शृंगैः संकुलां सर्व

नवविमन होत भयों ११ भूतलमैं जितने पुर तिनैं आछे न मानत भयों जो अपने काम कर्मनकों चाहेहैं सो तिनकामनानके प्राप्तिके अर्थ पुरुष देह विना अभावहै १२ यातें सो पुरंजन एकदिन हिमाचलके दक्षिण शिखर मैं प्रवीनकर्मी सो नव भरतिखंडमैं नव द्वारनकर उपलक्षित होयहै प्रारीदरूप पुरुष प्रधप पंचस्त्वादि दोषर हित देषत भयो १३ कैसी पुरी है ताहि वर्णन करैहै कोट वन अटा खाई गवाक्ष तोरण और सोनी रूपो लोह इनकों शिषर तिनकर पूरकौ है ऐसें गृह तिनकर संकीर्ण पुरहै प्रासाद इत्यादि चकरें है

इति श्री भागवते चतुर्थस्कंधे चतुर्विंशोध्याय २४ मैत्रेयजी कहे है विदुर ऐसे महादेवजी प्रचेतान को उपदेश करि उन
प्रचेतान ने बडो पूजन जिनको कीयो सो महादेवजी राजकुमारन के देखते उहां ही अंतरध्यान होत भये १ रुद्र ने कह्यो जो भ
गवान् को स्तोत्र ताहि सब प्रचेता समे में नारद जाप करत दस हजार वर्ष पर्यंत जल में बैठ के तप करत भए २ हे विदुर प्रचेता
तो तप करवे गए तासमे में नारदजी आत्मतत्त्व के जानन वारे बडे कृपालु सो कर्मन में आसक्त जाको मन ऐसे राजा प्राचीनब

इति श्रीभगवते चतुर्थस्कंधे नाम चतुर्विंशोध्यायः २४ मैत्रेयउवाचः इतिसंदिश्य भगवान्बर्हिषदैरभिपूजितः प
श्यतां राजपुत्राणां तत्रैवांतर्दधे हरिः १ रुद्रगीतं भगवतः स्तोत्रं सर्वे प्रचेतसः जपंतस्ते तपस्तेपुर्वर्षाणामयु
तं जले २ प्राचीनबर्हिषं क्षत्तः कर्मस्वासक्तमानसं दुःखहानी सुखप्राप्ती श्रेयस्तन्नेह चेष्यते ३ राजो
नारदोध्यात्मतत्त्वज्ञः कृपालुः प्रत्यबोधयत् श्रेयस्त्वं कतमद्राजन्कर्मणात्मन ईहसे ४ राजोवाचः नजा
नामि महाभाग परं कर्मापविद्धधीः ब्रूहि मे विमलं ज्ञानं येन मुच्येय कर्मभिः ५ गृहेषु कूटधर्मेषु पुत्रदारधना
र्थधीः न परं विंदते मूढो भ्राम्यन्संसारवर्त्मसु ६ ही को ज्ञान उपदेश करत भए ३ हे राजन् तुम कर्मन करि अपनो जो

न सो श्रेय चाहे है जो दुःख की हानि और सुख की प्राप्ति चाहे है सो यो विचार करनो कर्मन में होउवा नहीं कही है ४
अहो महाभाग नारद कर्मन करि विक्षिप्त है बुद्धि जाकी ऐसो मो सो अपनो नहीं जानूं हूं सो मो कूं निर्मल ज्ञान कहो जा करि
कर्मन ते छूट जाई ५ कपट के जिन में धर्म ऐसे घरन में स्थित पुत्र दारा स्त्री इन में पुरुषार्थ बुद्धि ऐसो मूढ पुरुष संसार मार्ग
न में भ्रमत अपनो मोक्ष नहीं जाने है ६ ऐसे नारदजी कर्मफलन में वैराग्य उपजावत ब्रह्मविद्या उपदेश करिवे को लीये

भा॰ च॰
७४

जो गादेश नाम जो यह स्तोत्र ताहि पाठ करे सो बुद्धिवान होइ मन कर धारण करके अभ्यास करनु मजपो ७१ सब वेदो चात
हत जो भगवान् कूं हम ऐसे सब बडायो वा हुत जो हम भृग्वादिक पुत्रन को यह स्तोत्र कहत भयो ७२ ते हम सब प्रजापति प्र
जान की सृष्टि में ब्रह्मा ने प्रेरे तब याही स्तोत्र कर दूर भयो है तम जिनको ऐसे नाना प्रकार की प्रजा सृजत भए ७३ याते पुरुष
नित्य सावधान होइ या स्तोत्र को जप करे तो वासुदेवपरायण होई जलदी ही श्रेय को पावै ऐसे नाना प्रकार प्रज्ञान में श्रेयके
साधन है तिन में ज्ञान ही श्रेष्ठ है ताते या ज्ञान की नौका जो ऐसो दुर्घ अपार संसार समुद्र को सुख पूर्वक तरे है ७५ यह मेने

योगादेशमुपासाद्य धारयंतो मुनिव्रता समाहितधियः सर्व एतदभ्यसतादृता ७१ इदमाह पुरास्माकं भगवान्विश्वसृ
क्पतिः भृग्वादीनामात्मजानां सिसृक्षुः संसिसृक्षतां ७२ ते वयं नोदिताः सर्वे प्रजासर्गे प्रजेश्वराः अनेन ध्वस्ततमसः सि
सृक्ष्मो विविधाः प्रजाः ७३ अथेदं नित्यदा युक्तो जपन्नवहितः पुमान् अचिराच्छ्रेय आप्नोति वासुदेवपरायणः ७४ श्रेयसा
मिह सर्वेषां ज्ञानं निःश्रेयसं परं सुखं तरति दुःपारं ज्ञाननौर्व्यसनार्णवं ७५ य इमं श्रद्धया युक्तो मद्गीतं भगवत्स्तवं अ
धीयानो दुराराध्यं हरिमाराधयत्यसौ ७६ विंदते पुरुषोऽमुष्माद्यद्यदिच्छत्यसत्वरं मद्गीतगीतात्सुप्रीताच्छ्रेयसामे
कवल्लभात् ७७ य इदं कल्य उत्थाय प्रांजलिः श्रद्धयान्वितः शृणुयाच्छ्रावयेन्मर्त्यो मुच्यते कर्मबंधनैः ७८ गीतं मयेदं
नरदेवनंदनाः परस्य पुंसः परमात्मनः स्तवं जपंत एकाग्रधियस्तपो महच्चरध्वमंते तत आप्स्यथेप्सितं ७९

गायो स्तोत्र ताहि श्रद्धायुक्त होइ प्रातःकाल पढे है वे हरि की भली आराधन वारे हैं ७६ सब श्रेयन को एक आश्रय ऐसे हरि ने रे गी
त को जानन वारे ते जो पदार्थ चाहे है ताहि जलदी प्राप्ति होय या स्तोत्र को पाठ करै जो कोई ७७ सवेरे ही उठि हाथ जोर श्रद्धायु
क्त होइ या स्तोत्र को सुने सुनावे सो कर्मबंधन ते छूटे ७८ हे राजकुमार हो यह परमात्मा पुरुषन को स्तोत्र मेने तुम्हारे आगे
कह्यो ताहि एकाग्र बुद्धि होइ जपत सांई बडो तप करे है ताते याके अंत में मन वांछित फल पाओगे ७९

194

अपनी प्राप्ति कर अज्ञो जो पहले स्वेदज अंडज उद्भिज जरायुज चार प्रकार कौ विश्व ताकों तुम अपने अंश कर प्रविष्ट हो अवि
द्यावृत होइकर स्थूल विषयकों भोगे हैं तातें जीव ऐसे जानें हैं ६५ सो तुम प्रचंड जो गप्राणीन को प्राणीन द्वारा चलावत अल
क्षस्वरूप सब प्राणीन को संहार कर हो जैसे पवन मेघ को चलावे है ६६ तुम्हारे अनादर कर नष्ट है चित्त जाको ऐसो पंडित
कौ न है जो तुम्हारे चरनन कूं न भजे नाप्रासेका कर तुम तुम्हारे गुरु हौ ब्रह्म हूं जाकौ भजन भयो और इंद्र विश्वास कर चोर

स्पर्द्धं स्व शास्त्र दमनं विष्णुर्विधिं परमात्मां शाश्वतेन अथोपि विदुस्तस्यं संत मंतर्ज्ञे हृषीक मंधु सारघेयः ६५ स
एष लोका न नाति चंड वेगो विकर्षसि त्वं खलु काल यानः भूतानि भूतैरनु मेय तत्वो घनावलिर्वायुरिवाविषह्यः ६६ प्रमत्तम
च्चैरिति कृत्य चिंतया प्रवृद्ध लोभं विषयेषु लालसम् त्वमप्रमत्तः सहसाभिपद्यसे क्षुल्लेलिहानोऽहिरिवाखुमंतकः ६७
कस्त्वत्पदाब्जं विजहाति पंडितो यस्तेवमानव्ययमानकेतनः विशंकयास्मद्गुरुरर्चति स्म यद्विनोपपत्तिं मनवश्चतुर्दश ६८ अथ त्वमसि नो ब्रह्मन् परमात्मन् विपश्चितां विश्वं रुद्रभयध्वस्तमकुतश्चिद्भया गतिः ६९ इदं प्रजापति
भद्रं वो विद्वांसो अपनेंद्रिया स्वधर्ममनुतिष्ठंतो भगवत्यर्पिताशयः ७ तमेवात्मानमात्मस्थं सर्वभूतेष्ववस्थितं प्रजा
यद्धं शरणं तस्माद्ध्यायेत सब्रह्म हर ७१

हम भजन करि प्रजत भए ६७ यातें ब्रह्मा आदि परमात्मा रूप ये अपंचकर ध्वस्त पद विश्वता
हि जानतें जो हम तिनकूं नतीहैं ब्रह्म भेद जामें ऐसी गति तुम होउ ६८ महादेवजी कहे हैं हे राजकुमार हो तुम्हारो कल्याण
होइ तुम स्वधर्म में स्थित होउ सो हरि में चित लगाय यास्तो त्रको जप करो ६९ सब भूतन में स्थित जो आत्मा ता ही हर कौ
कीर्तिन ध्यान करत पूजा करो ७०

195

हे वरो रूह सुंदर है जंघा जाकी इनमें तो जड़ एक नहीं जाते पृथ्वी कौं स्पर्श करै है देवता पृथ्वी कौं स्पर्श नहीं करै हैं सो तुम अव वीरन
में श्रेष्ठ जो मैं ता कर सहित या पुरी कौं अलंकृत करै है २९ मेरे कटाक्ष कर सहित है मन जाको ऐसो जो मैं ताहि कंदर्प बाधी देह
तातें मेरे उपर अनुग्रह करिये सो दर्प लज्जा सहित जो प्रेम कर मंद हासि कान सहित भ्रमत जो भ्रकुटी ता कर प्रेरित है ३०
हस्य चिस्मिते सुंदर है अंसि श्यान जाकी जो लज्जा कर सन्मुख नहीं होई है ऐसो जो मुख ताइ उठाइ कर मो को दिखाइ ऐसो अरवरे

नासां वरोरुन्नृपतमाज्ञं विस्मुखं पुरोभिमां वीरवरेण सार्धं अर्हस्यलं कर्तुमदभ्रकर्मणा लोकं परं श्रीरिव यज्ञपुंसा २९
यदेष तेपांग विमुक्त विद्धितं सव्रीड भावस्मित विभ्रमद्भुवा अथोपपद्येभगवान्मनोभवः प्रबाधते मां नुगृहाण शोभने ३०
त्वमाननं सु[illegible] लोचनं आलंविनी लालकवंद संवृतं उन्नीय मे दर्शयवल्गु वाचकं य द्वीयया नाभिमुखे सुचिस्म
ते ३१ इत्थं पुरंजन[illegible] मानमधीरवत् अभ्यनंदत तं वीरं हसंती वीर मोहितो ३२ नाविदामवयं सम्यक्कर्तीयं
पुरुषर्षभं अ[illegible] पत्य[illegible] गोत्रं नाम च यत्कृतं ३३ इहाद्य संतमात्मानं विदाम न ततः परं येनेयं निर्मिता वीर
पुरी सरणमात्म[illegible] ३४

सुंदर जामें भ्रकुटी सुंदर है ने[illegible] जामें [illegible] दीर्घ जे अलकतिन के समूह कर युक्त प्रेम मनोहर वाक जामें ३१
हे वीर विद्द्वर वहु पुरंजन ही है ता पतिकों देखि मोहित होकैं अधीर की सी नाई यह याचना करै है ताहि अभिनंदन करत भई
और हासिकैं यह बोली ३२ जो वाने सुधी [illegible] ताकौं उत्तर देहै हे पुरुषन में श्रेष्ठ अपनौं और तिहारो कर्ता जिन में भली तरह नहीं जानू है
और गोत्र नाम जानें की यो है तापरी मैं नहीं जानूंहू ३३ [illegible] निर्धमा[illegible] जो अपनपणे ताहि हों तुम जानें हैं और जानें हम को सुंदर यह पुरी

नग्नौ मा कौ ह्नसन्ति कौ ३४

भा॰ च॰
७१

हेमानदेवेगारे एस्त्रीपुरुषमेरेसरवीसरवाहैं ओरजोयहजोगहैसोमेरेसोयेहैं याष्पुरीकोंपालनकरतजागैहैं ३५ वडोंमंगलभयोंतूआयोंतेरींकल्याणहोहु तूग्रामीनकामनानकोंचाहेहैं सोमेंअपनेंवंधनसहितलोहिभोगनकोंसंपादनकरूगी ३६ हेविभोयहमोददरवाजेकीपुरीतामेतूस्थितहो सौंवर्षताईमेंनेंप्राप्तिकीयेजोभोगतिनेंभोगकरतमनुष्यकौंसौंवर्षकोंप्रमाणहे ३७ यातेवापुरंजनीकौंप्रकृतिमेंवतावेहैं यानिद्रलिकौंनिद्रापूर्वक वायुरंजनकीवडाईकरेहे ॥

एतेसरवायाःसरवोमेनरानार्य्यश्चमानवः सुप्तायांमयजागर्तिनागोयंपालयन्पुरीम् ३५ धिष्ट्यागतोऽसिभद्रंतेग्राम्यान्कामान्भीप्सते उद्वहिष्यामितांस्तेहंस्वबंधुभिररिंदम ३६ इमांत्वमधितिष्ठस्वपुरंनवमुखीविभो मयोपनीतान्गृह्णानःकामभोगाञ्छतंसमाः ३७ कोनत्वदन्यंरमयेह्यरतिज्ञमकोविदम् असंपरायाभिमुखमस्वस्तनविदंपशुम् ३८ धर्मोह्यत्रार्थकामोचप्रजानंदोऽमृतंयशः लोकाविशोकाविरजायान्नकेवलिनोविदुः ३९ पितृदेवर्षिमर्त्यानांभूतानामात्मनश्चहः क्षेमंवदंतिशरणंभवेस्मिन्यद्गृहाश्रमः ४०

तुलेहिंछोडिकेंओरजोंनेष्ठिक्अनिसिद्धकामसुरवकोंत्यागीपरलोकविना ओरयालोककीविचाररहितपशुतुल्यतासोकोनरमणकरे ३८ यामायाइश्वरमेंधर्मअर्थकामयेतीनोहें ओरपुत्रसुरवहें ओरधर्मद्वारामोक्षहेंयशहेसोकरहितलोकहें जिनमें जिनेंविचारेंमोक्षवारेकेवलयापतिनहीजानेहें ३९ यासंसारमेंजोयहगृहस्थाश्रमहेंसोपितरदेवताऋषिमनुष्यसर्वभूतआत्मा इनकोंक्षेमकौंक्षेम०लोप०आश्रयकहीयेहें ४०

विरव्यातउत्तउदारप्यारोजोकोंदर्शन् ऐसेतुमसरीकेपतिकोंमोसरीकीस्त्रीकोंनहेंजोवरेगी ४१ हेमहाभुजसर्वेंद्रकेसदृशजोतुम्हारीरीझजातिनमेंऐसीस्त्रीकोनहेंजाकोंमननहींआशककेहोईजोतुमदीनसमूहनकोमनकीव्यथानाहिकृपाकरउघतजामें मंदहासिकानरवेकचितवनितातकरहरिवेकेलीयेंविचरौहें ४२ ऐसेंवेदोउस्त्रीपुरुषरूपवतराइकौंसमयजायवापुरीमेंप्रवेशकर सौंवर्षताईआनंदकौंप्राप्तिहोतभयौं ४३ तहांजागृतअवस्थासेंसेपकरकेहैंहें तहांगाय

कानामवीरविरव्यातंवदान्यंप्रियदर्शनम् नवृणीतपतिंप्राप्तंमादृशीत्वादृशंस्वयम् ४१ कस्यामनस्तेभुजभोगभोगयोःस्त्रियानसज्जेद्भुजयोर्महाभुजा योनाथवर्गाधिमलंघृणोद्धतस्मितावलोकेनचरत्यपोहितुम् ४२ नारदउवाचः इतितौदंपतितत्रसमुद्यसमयंमिथः तांप्रविश्यपुरींराजन्मुमुदातेशतंसमाः ४३ उपगीयमानोललितंतत्रतत्रचगायकैः क्रीडन्परिवृतःस्त्रीभिर्ह्रादिनीमाविशच्छुचौ ४४ सप्तोपरिकृताद्वारःपुरस्तस्यास्तुद्वेअधः पृथग्विषयगत्यर्थतस्यांयाःकश्चनेश्वरः ४५ पंचद्वारस्तुपौरस्त्यादक्षिणैकातथोत्तरा पश्चिमेद्वेअमूषांतेनामानिनृपवर्णये ४६

कनमेंसमीपवैठकेंगानकरीयेहें स्त्रीनकरव्याप्तित्रीडाकरेहें अवस्तुषुप्तावस्थाकहेहें निदाघमेंदयाकाप्रास्थानतामेंप्रवेशकरतभयों ४४ अवतोंद्वारेदिखावतजाग्रतदिरवावेहें तापुरीकेउपरसातद्वारकियेहें द्वेअधस्तकियेहें तापुरीकोंईश्वरहेजाकोंन्यारेदेशनमेंजायवेकेलीयेंद्वेद्वारकीयेहें दोनेत्रदोनासिकाकेछिद्रहें दोआवर्णएकमुखयेसातओरयहलिंगएदोद्वारनीचेकहेंहें ४५ तिनसातनमेंपांचद्वारतोंपूर्वदिशामेंहें ओरएकउत्तरमेंहें एकदक्षिणमेंहें ओरदो

खद्योतकीसीनाईअल्पप्रकासवामनेत्र ओरवलोत जामेंमकास ऐसेदक्षणनेत्रहैं जोदक्षणवांमहोइहैं जोरूपसेहि इशालामेंजाहते ४७ नलनीनलनाएकवाम दक्षिणकौंएकसर्वकौंद्वारएकस्थानमेंरचेहैं सोअवधूतजोघ्राणताकोसं गलेवांधजोदश्यानामेजायहै ४८ मुख्यकहेहैं प्रधानमुखसोसर्वकोंहीद्वारहैं ताकरआपणकहैं ओरदूहत्तविचित्रअन्न तिनमेंजोलेरसनेंद्रीय ओरवागेंद्रीइनकोंसंगलें ४८ हेपतितोहंनामकरदक्षणकर्णसोरिवकेदक्षणदिशामेद्वारहैंद्वारहैं

खद्योताविर्मुखीचप्राग्द्वारावेकत्रनिर्मिते विभ्राजितंजनपदं पातितान्यांद्युमत्सखः ४७ नलिनीनालिनीचप्रा ग्द्वारावेकत्रनिर्मिते अवधूतसखस्ताभ्यांविषयंयातिसौरभम् ४८ मुख्यानामपुरस्ताद्वास्तयापणबहूदनौ विषयौयातिपुरयासर्वज्ञविपणान्विताः ४९ पितृहूर्नृपपुर्याद्वादक्षणेनपुरंजनः राष्ट्रंदक्षिणपंचालंयाति श्रुतधरान्वितः ५० देवहूर्नामपुर्याद्वाउत्तरेणपुरंजनः राष्ट्रमुत्तरपंचालंयातिश्रुतधरान्वितः आसुरीनामपश्चाद्द्वास्तयायातिपुरंजनः ५१ ग्रामकंनामविषयंदुर्मदेनसमन्वितः ५२

ताकरदक्षणपंचालजोनोकर्मकांडसोईभयोदेशः तामेश्रुतमेधरजोश्रुतिवर्णेंद्रीताकोसंगलेंकेजाहे ५० दे हूतामेउत्तरमकर्णसोपुरीकेउत्तरमेद्वारहैं ताकरयहपुरंजनउत्तरपंचालजोनिवृत्तिसास्त्रशोईभयोदेश ताइजोयेश्रुतिधरिजोश्रवणेंद्रीताकोसंगलें ५१ आसुरीनामशिश्नेंद्रीसोपश्चिमद्वारताकरकेंपुरंजनग्राम स्यजननकोहैंसुषजाकरकें ऐसोजोग्रवायहोइसोईभयोदेशताहिजाहैंदुर्मदजोउपस्थेंद्रीताकीसंगलेते ५२

निरतनामगुदापश्चिमकोद्वार ताकरपुरंजनवैशसजोमलविसर्गसोइविषयजामेंजामें लब्धकजोपाउताकोंसंगलहे ५३ येनोंद्वारतिनमेंकपाट ओरयेकृतहस्तयेदोउद्वारअंधहैं कहमुदेहैं तिनद्वारनकरिइंद्रीनकोंअधिपतिपुरंजन चलेहैं पाउन करहाथनकरकर्मकरेहैं ५४ सोपुरंजनसबमुखमनताहिसंगलेंजवाअंतपुरजोहृदयतामेंजाहैं तवस्त्रीबुद्धिप्राप्तजइ द्रीयपरणामइनतेभयोंजोमोहप्रसादहर्षतमसत्वरजकेकार्यतिनेंप्राप्तिहोहे ५५ ऐसेंकर्मनमेंआप्तकविषयनमेंजाकों

निरृतिर्नामपश्चाद्द्वास्तयायातिपुरंजनः वैशसंनामविषयंलुब्धकेनसमन्वितः ५३ अंधावमीषांपौराणांनिर्वाक् पेशस्कृतावुभौ अक्षण्वतामधिपतिस्ताभ्यांयातिकरोतिच ५४ सयर्ह्यंतःपुरगतोविषूचीनसमन्वितः मोहंप्रसादं हर्षंवायातिजायात्मजोद्भवम् ५५ एवंकर्मसुसंसक्तःकामात्मावंचितोबुधः महिषीयद्यदीहेततत्तदेवान्ववर्तत ५६ क्वचित्पिबंत्यांपिबतिमदिरांमदविह्वलः अश्नंत्यांक्वचिदश्नातिजक्षत्यांसहजक्षिति ५७ क्वचिद्गायतिगायंत्यांरुदंत्यां रुदतिक्वचित् क्वचिद्धसंत्यांहसतिजल्पंत्यामनुजल्पति ५८ क्वचिद्धावतिधावंत्यांतिष्ठंत्यामनुतिष्ठति अनुशेतेश यानायामन्वास्तेक्वचिदासतीम् ५९

मनस्त्रीनेंवचनाजाकीनरी ऐसोंअज्ञानीपुरंजनजोरानीचेष्टाकरेहैंताहिअनुवर्त्तितभयो ५६ वहरानीजवमदरापानकरैहैं तवमदमेविह्वलयहावीमदरापानकरेहैं वहजवभक्षणकरेतवयहभक्षणकरेहे ५७ वहगावेतवयहगावेहैं वहरोवेतव यहरोवें वहजवहसैंतवयहवीहसवेलगेहैं वहवातकरेतवयहवातकरेहे ५८ वहदौरेहैंतवयहदौरेहैं वहखडीहोइतवय हखडोहोपरें वहसोवेतवयहसोवेहैं वहजवबैठेहैतवयहबैठेहे ५९

भा॰च॰
७९

वत्सकवत् सुनैत्वपत्नी सुनैहैं वत्स देखैतैं तवयहं देखैहैं वत्सजीजवसंघेहैतैं वयहसंघेहैं वत्सस्पर्शकरेजवयहस्पर्शकरेहैं ६०
ऐसेंमहिषीनैं विशेषकर प्रलंभजाकों करो औरसवप्रसंग त्वाहिलक्षणस्वभावजाकोंठगपोहैं सोयाकेंनोकछुइच्छानहीं परिग्राधीन
ईश्वीउमगनीसीनाईकरैहैं ६१ इतिश्रीभागवतेचतुर्थस्कंधेपंचविंशोध्यायः २५ ऐसेंआत्माकोंउपाधिकृत सुषुप्तावस्थाकहिकरि
अवस्वप्नावस्थाकहैहैं धर्मकहत्बकहैहैं कर्तृत्वभोक्तृत्वादिअभिनिवेशजाकों सोपुरंजनरथमेंचढिपंचप्रस्थवनकोंजातभयो

कृतिसुशृणोतिशृण्वंत्या पश्यंतामनुपश्यतिः क्वचिजिघ्रतिजिघ्रंतं स्पृशंतंस्पृशतिक्वचित् ६० क्वचिच्चशोचतींजाया
मनुशोचंतदीनवत् अनुहृष्यतिहृष्यंतीमुदितामनुमोदते ६१ विप्रलब्धोमहिष्यैवंसर्वप्रकृतिवंचितः नेच्छन्ननुक
रोत्यज्ञः क्लैब्यात्क्रीडामृगोयथा ६२ इतिश्रीभागवतेचतुर्थस्कंधेपंचविंशोध्यायः २५ नारदउवाचः सएकदामहेष्वासो
रथंपंचाश्वमाशुगम् द्वीषंद्विचक्रमेकाक्षंत्रिवेणुंपंचबंधुरम् १ एकरश्म्येकदमनमेकनीडंद्विकूबरं पंचप्रहर
णंसप्तवरूथंपंचविक्रमं २ हैमोपस्करमारुह्यस्वर्णवर्मीक्षयेषुधिः एकादशचमूनाथाःपंचप्रस्थमगाद्वनम् ३

200

रथकहाजोवशाधारणकरौ एकप्रधानहीजुआकहैहैं तीनत्तणजाकेवंधवहैं १ फेरकैसोरथहैं एकमनजाकीवागडोरहैं
एकबुद्धिजाकोसारथी एकहृदयजामेंरथीकेवैठवेकोस्थानहै द्वंद्वसोकमोहहैंजुआकेवंधनजामें पांचकर्मजेहैंगति
प्रकारजाकी २ फिरकैसोरथहैस्वर्णकीहैसोभाजामें तारथपैंचढ स्वर्णहीकोंकवच अर्थातरजोगुणकरआवृत अ
क्षयजाकों एसोंपुरंजनपंचशब्दादिविषयहैं प्रस्थाजकहतेंसानजामें ऐसोंदेषताहिजातभयो ३

७९

वाण

बडेंगरवीलोंगृहणकीनेहैंरागादिकरूपजानें औरभोगादिअभिनिवेशरूपधनुषजामें ऐसोवाद्यमानेसिकारकरत
भयो ४ घोरजाकोस्वभाव फिरदईआसुरीवृत्तिलेकर वातणजेरागादिकतिनकरवनमेंवनकेरहिवेवारेनकोंमारनकरतभ
यों अर्थातरागादिकवाणनकरविषयरूपपशुनकोंअंगीकारकरतभयो ५ तामेंजोअपत्नसंज्ञाकहैहैं होमनमई
कीनिंदाकहोतें जोआसुरीवृत्तिलेहैं पुरंजनपशुनकोंमारतभयो ताहूमैंराजमृगहीकरें औरनहीं ताहूमेंपवि

201

चचारमृगयांतत्रदृप्तआत्तेषुकार्मुकः विहायजायामतदर्हांमृगव्यसनलालसः ४ आसुरीवृत्तिमाश्रत्यघोरा
त्मनिरनुग्रहः न्यहनन्निशितैर्बाणैर्वनेषुवनगोचरान् ५ तीर्थेषुप्रतिदृष्टेषुराजामेध्यान्पशून्वने यावदर्थमलं
लुब्धोहन्यादितिनियम्यते ६ यएवंकर्मनियतंविद्वान्कुर्वीतमानवः कर्मणातेनराजेंद्रज्ञानेनसनलिप्यते ७
अन्यथाकर्मकुर्वाणोमानारूढोनिबध्यते गुणप्रवाहपतितोनष्टप्रज्ञोव्रजत्यधः ८

अपमृनहीं ताहूमैंतितनोंकार्यमात्रअधिकनहीं ऐसेहीजीवकोंविषयसेवनप्रयोजनमात्रहीहैं यथेष्टनहीं
६ ऐसेंविवेकीकर्मकरेहैं ताकोंकर्मीनबंधनकरतानहोहैं ताज्ञानकरकर्मनिबंधनतेंलिप्तनहींहोहैं ७ औरजो
नियमउलंघनकरकर्मकरैहैं सोअंतःकरणअभिरहित याहीतेंकर्तृत्वअभिमानकेंआरूढहोई कर्मनकर
बंधजाहै फिरगुणप्रवाहमेंपर्यो बुद्धिजाकीनष्टभई सोनपरैहै ८

भा॰ च॰
८०

प्रसंगसमाप्ति करिकैं फिर मृगयादिको वर्णन करैहैं तहां विचित्रतेपछी न नकैं ऐसे जो बाण तिन करिके निर्भय हो मात्रजिनके दु
षीया तिन पशुनको नास होत भयो जो दुःख रूप नको दुसह है ९ ऐसे वराह भैंसा गेंडे रोह रीछ और अनेक पशुतिनें मार
तथ्रमकों नही प्राप्त होत भयो १० तापीछे क्षुधा त्रषा करि आतनिवृत्ति होइ घरकों आवत भयो ऐसें खप्नावस्था दिखाय अ
व फिर हूं विवेकवती बुद्धि कर आई कीने है उचित स्नान आहार जानें ऐसौं सेयाकों स्थिल होत भयो ११ धूपचंदनमाला

2०2

तत्र निर्भिन्नगात्राणां चित्रवाजैः शिलीमुखैः विप्लतोभूत्तद्दुःखानां दुस्सहः करुणात्मवान् ९ शशान्वराहान्म
हिषानारगान्रुरुशल्यकान् मेध्यावन्यांश्च विविधान्विनिघ्नं श्रममध्यगात् १० ततः क्षुत्तृट्परिश्रांतो निवृत्तो गृहमे
यिवान् कृतस्नानोचिताहारः संविवेश गतक्लमः ११ तत्राहृष्टः सुदत्यश्च कंदर्पोकृष्टमानसः नविंदत्प्रवरा रोहा गृ
हणीं गृहमेधिनी १२ अंतःपुरस्त्रियोऽपृच्छद्विमनाइववेदिषत् अपिवःकुशलं रामाः सेश्वरीणांयथापुरा १३ न
तथैतर्हिलोचंते गृहेषुगृहसंपदः यदि नस्याद्गृहे माता पत्नीवा पतिदेवता १४

इनकर आपकों पुजनपरेवेन प्रजनकरत भयो ऐसौं सुंदर अलंकृत है सब अंग जाकों सो रानी मैं मनकरत भयो
१२ तब प्रसन्न सुंदर गरवीलो कंदर्पने मन जाकौ खैंचो ऐसो पुरंजन सुंदर जाके नितंब ऐसी रानी कों देखत भयो
राजसी बुद्धि में वर्तमान सात्वकी बुद्धि कों न देखत भयो १३ है प्राचीनवर्हि विमन होइ प्रांतःकरनपुरमें वासी
सखी तिनें पूछत भयो सान्त्वन सहित जो तुम तिनकूं पहिलकी सी नाई कुशल है १४

८०

वा विना पतिलीसी गृहमें संपत्तिन तीहैं जाते घरसो भा नहीदेहैं जा घरमें माता न होइ अथवा पतिव्रता स्त्री न हो
तो कहा विवेक हीन की सी नाई घरमें रहतें जैसे चक्र हीन रथ में हीन हजीवे है १५ दुःख सम्रुद्र में डूबो मैं अज्ञानी ता
माकूं जो पद पद में उद्धार करै है सो समुझाय वेकूं नहीं सो लालिता कहा है १६ जब पुरंजनी की सखी बोली हेनर
नाथ तुम्हारी प्रीत ज्ञान निष्ठा करैहै सो तुम नहीं जानै है विछौना रहित जो भूतल ता पै सो बैठी ताय देषि १७ पुरंजन जो

2०3

यदि नस्याद्गृहे माता पत्नीवा पतिदेवता व्यंगे रथइव प्राज्ञः कोनामासीत दीनवत् १५ क्व वर्तते सा ललना मज्जं
तं व्यसनार्णवे यमामुद्धरते प्रज्ञां दीपयंती पदेपदे १६ रामाऊचुः नरनाथनजानीमः त्वत्प्रियायद्व्यवस्यति भू
तले निरवस्तारे शयानां पश्य शत्रुहन् १७ पुरंजनः स्वमहिषीं निरीक्ष्यावधुतां भुवि तत्संगोन्मथितज्ञानो वैक्ल
व्यं परमं ययौ १८ सांत्वयन्श्लक्ष्णया वाचा हृदयेन विदूयता प्रेयस्याः स्नेहसंरंभलिंगमात्मनि नाभ्यगात् १९
अनुनिन्येथशनकैर्वीरोऽनुनयकोविदः पस्पर्शपादयुगलमाहचोत्संगलालितां २० नूनंत्वकृतपुण्यास्ते भृत्या
येषीश्वराः शुभे कृतागःस्वात्मसात्कृत्वा शिक्षादंडं न युंजते २१

हे सौ अपनी रानी पृथ्वीमें परी है ताय देषि कैसी है
त्यागी है देहकों आहार जानें और ताके संग कर व्याकुल है ज्ञान जाकौ ऐसो परम विकलता कों प्राप्ति होत भयो १८ तब जो
वड दुःखित हृदय करि और मोनें दुरवांणी सों प्यारी कों पूर्व चिन्ह करप्यारी को जो भय सुपताकर व्याकुल कुटिल हि ष्यारि न
सों अपनपे कों न पावत भयो १९ अनुनय मन पूर्णी वीर पुरंजन होले होलैं अनुनय करत भयो सो उचरणनकों स्पर्श करत

८० तासौं जो कहि तासौं पर कैं ... (marginal insertion, partly illegible)

भा॰च॰ ताकी मैं परिरब्ध है ग्रीवा जाकी आलिंगन कीयो है और रहसि मैं अनुकूल जे शब्द वाते तिन करि कै खैंचो है विवेक
८२ जाको प्रमाद ही जाको परिग्रह और साधन जाकै नहीं ऐसो पुरंजन दिन राति दुरत्यय काल को वेग ताहि नहीं जानत
भयो ३ जो पुरंजन बौहुत मोल की सेया पै सोवै है रानी की भुजा है ताकी या जाकै सो अज्ञान कर व्याप्त भयो अपने स्वरू
प को जानत भयो ४ ता स्त्री कर ऐसे रमण करते काम करि है मोह विभूति जाकै चिंताहीन वहू अवस्था आधे क्षण की

तयोपगूढः परिरब्धकंधरो रहोनुमंत्रैरपकृष्टचेतनः न कालरंहो बुबुधे दुरत्ययं दिवानिशेति प्रमदापरिग्रहः ३
शयान उन्नद्धमदो महामना महार्हतल्पे महिषीभुजोपधिः तामेव वीरो मनुते परं यतस्तमोभिभूतो न निजं परं
यत् ४ तयैवं रममाणस्य कामकश्मलचेतसः क्षणार्द्धमिव राजेंद्र व्यतिक्रांतं नवं वयः ५ तस्यामजीजनत्पु
त्रान् पुरंजन्यां पुरंजनः शतान्येकादश विराडायुषोर्द्धमथात्यगात् ६ दुहितॄर्दशोत्तरशतं पुत्र मातृयशस्करीः
शीलौदार्यगुणोपेताः पौरंजन्यः प्रजापते ७ स पांचालपतिः पुत्रान् पितृवंशविवर्द्धनान् दारैः संयोजयामास
इति [illegible] ८

सी नाई व्यतीत होत भई ५ ता पुरंजनी मैं वह पुरंजन ग्यारे सै पुत्र उपजावत भयो ई ही पर नाम ती पुत्र ते पुत्रन ते को
पुत्री न्यून नहीं सो ई गर्भ हस्थ के सो दये केली यें हु सो वे पुत्री कै सी है शील औदार्य गुण करि युक्त पिता माता के यश के करवे
वारी ७ हे प्राचीनवर्हि प्रजापति सो पांचाली को पति पुरंजन के वंस बढावबे वारे पुत्र तिनके स्त्रीन के संग करत भयो और
पुत्रीन को सदृश वरीन कर मिलावत भयो वेदान की स्त्री कौन परिणाम ताके अनंतर दिन चिंता तिन कर और पुत्री बुद्धि हुति ति